CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

गोपाष्टमी

संवत् २०५१, १० नवम्बर १९९४

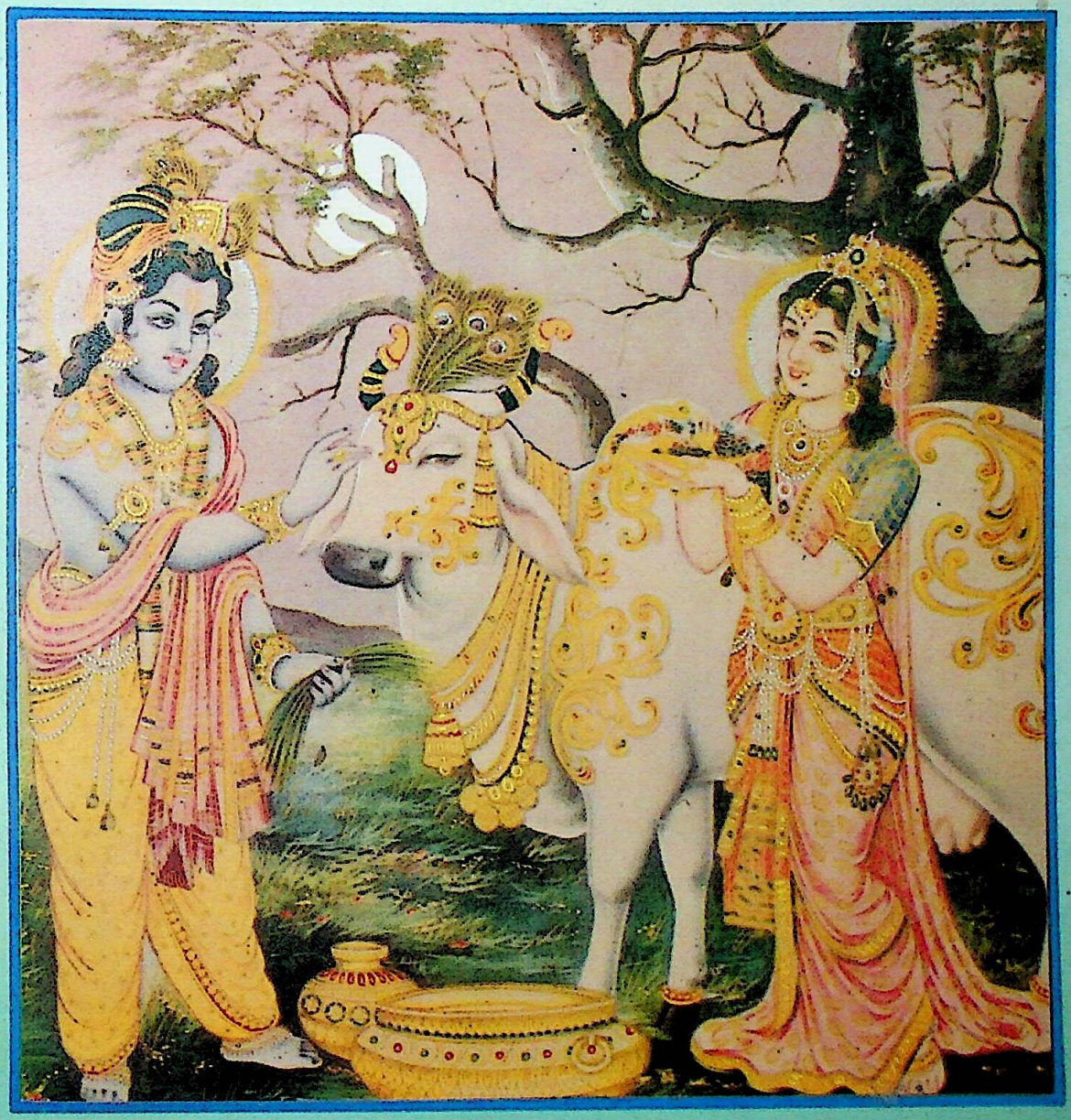

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

शाखा : सदर (गोलघर), बावनबीघा, रामेश्वर, सारंग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना =

HINDALCO INDUSTRIES LIMITED

(India's Leading Producer of Aluminium)

Producers of

PRIMARY METAL
PROPERZI RODS
ROLLED PRODUCTS
EXTRUSIONS

P. O. RENUKOOT-231217
Dist. SONBHADRA
(Uttar Pradesh)

Phone : Pipri (054461) 2079
Gram : **HINDALCO, RENUKOOT**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

प्रधान कार्यालय

के. ४०/२५, दुलहिनजी रोड, गोलघर, वाराणसी

शाखा

गोलघर (सदर), बावनबीघा, रामेश्वर (मधुवन, वृंदावन, पंचशिवाला, पहड़िया), सारंग

आयकर की धारा ८०जी के अंतर्गत पंजीकृत

१०८वाँ वार्षिक कार्य-विवरण

संवत् २०५०-५१

गोपाष्टमी, संवत् २०५१

गुरुवार, १० नवम्बर १९९४

संपादक मंडल

अशोककुमार सराफ

श्यामसुन्दर गिनोड़िया

परागकुमार मोदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शासक-मंडल, संवत् २०५१-५२

श्रीमान् महाराजा बहादुर भू० पू० काशीनरेश श्री विभूतिनारायण सिंह देव	*संरक्षक*
श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	*सभापति*
श्री गोपीकुमार सिंघानिया	*उप-सभापति*
श्री राजकुमार जैन	*मंत्री*
श्री नंदकिशोर रूँगटा	*उप-मन्त्री*
श्री गगनेन्द्रकुमार केडिया	*कोषाध्यक्ष*

सदस्य

श्री राजकुमार साह
श्री परमानंद सराफ
श्री काशीनाथ चौधरी
श्री नन्दलाल जालान
श्री नन्दकिशोर प्रह्लादका
श्री महाबीरप्रसाद डिडवानिया
श्री कुञ्जबिहारी गुप्त
श्री मातादीन अग्रवाल
श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला
श्री दीनदयाल जालान

प्रबन्धकारिणी समिति, संवत् २०५१-५२

श्री महेन्द्रप्रसाद साह	*संरक्षक*
श्री राधेश्याम खेमका	*सभापति*
श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल	*उप-सभापति*
श्री केदारनाथ केजरीवाल	*उप-सभापति*
श्री अशोककुमार सराफ	*प्रधानमंत्री*
श्री श्यामसुन्दर गिनोड़िया	*उप-प्रधानमंत्री*
श्री बालमुकुन्द लोहिया	*कृषिमंत्री*
श्री अरुणकुमार आशर	*कोषाध्यक्ष*

सदस्य

श्री मोहनलाल सरावगी
श्री भगवानदास अग्रवाल
श्री लोकनाथ बूवना
श्री शान्तिलाल जैन
श्री लक्ष्मणदास अग्रवाल
श्री देवेन्द्रकुमार बजाज
श्री पुरुषोत्तमलाल धानुका
श्री प्रदीपकुमार बजाज
श्री जयरामदास शाह
श्री सूर्यकान्त जालान
श्री झाबरमल अग्रवाल
श्री पीताम्बरलाल अग्रवाल

श्री नारायणप्रसाद पसारी

आय-व्यय निरीक्षक, एस० एन० खेमका एण्ड कंपनी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन् १९९५, संवत् २०५१-५२

	जनवरी					फरवरी					मार्च				
रवि	१	८	१५	२२	२९		५	१२	१९	२६		५	१२	१९	२६
सोम	२	९	१६	२३	३०		६	१३	२०	२७		६	१३	२०	२७
मंगल	३	१०	१७	२४	३१		७	१४	२१	२८		७	१४	२१	२८
बुध	४	११	१८	२५		१	८	१५	२२		१	८	१५	२२	२९
गुरु	५	१२	१९	२६		२	९	१६	२३		२	९	१६	२३	३०
शुक्र	६	१३	२०	२७		३	१०	१७	२४		३	१०	१७	२४	३१
शनि	७	१४	२१	२८		४	११	१८	२५		४	११	१८	२५	

	अप्रैल					मई					जून				
रवि	३०	२	९	१६	२३		७	१४	२१	२८		४	११	१८	२५
सोम		३	१०	१७	२४	१	८	१५	२२	२९		५	१२	१९	२६
मंगल		४	११	१८	२५	२	९	१६	२३	३०		६	१३	२०	२७
बुध		५	१२	१९	२६	३	१०	१७	२४	३१		७	१४	२१	२८
गुरु		६	१३	२०	२७	४	११	१८	२५		१	८	१५	२२	२९
शुक्र		७	१४	२१	२८	५	१२	१९	२६		२	९	१६	२३	३०
शनि	१	८	१५	२२	२९	६	१३	२०	२७		३	१०	१७	२४	

	जुलाई					अगस्त					सितम्बर				
रवि	३०	२	९	१६	२३		६	१३	२०	२७		३	१०	१७	२४
सोम	३१	३	१०	१७	२४		७	१४	२१	२८		४	११	१८	२५
मंगल		४	११	१८	२५	१	८	१५	२२	२९		५	१२	१९	२६
बुध		५	१२	१९	२६	२	९	१६	२३	३०		६	१३	२०	२७
गुरु		६	१३	२०	२७	३	१०	१७	२४	३१		७	१४	२१	२८
शुक्र		७	१४	२१	२८	४	११	१८	२५		१	८	१५	२२	२९
शनि	१	८	१५	२२	२९	५	१२	१९	२६		२	९	१६	२३	३०

	अक्टूबर					नवम्बर					दिसम्बर				
रवि	१	८	१५	२२	२९		५	१२	१९	२६	३१	३	१०	१७	२४
सोम	२	९	१६	२३	३०		६	१३	२०	२७		४	११	१८	२५
मंगल	३	१०	१७	२४	३१		७	१४	२१	२८		५	१२	१९	२६
बुध	४	११	१८	२५		१	८	१५	२२	२९		६	१३	२०	२७
गुरु	५	१२	१९	२६		२	९	१६	२३	३०		७	१४	२१	२८
शुक्र	६	१३	२०	२७		३	१०	१७	२४		१	८	१५	२२	२९
शनि	७	१४	२१	२८		४	११	१८	२५		२	९	१६	२३	३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।श्रीहरिः।।

१९९५ वर्ष के पर्व-त्यौहार

१४	जनवरी, शनिवार	.....	मकर-संक्रान्ति
१६	जनवरी, सोमवार	.....	स्नान-दान-व्रत की पौषी पूर्णिमा, शबेबरात
२३	जनवरी, सोमवार	.....	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, स्वामी विवेकानन्द
		.....	जयन्ती, श्री सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
२	फरवरी, गुरुवार	.....	रोजा प्रारम्भ
४	फरवरी, शनिवार	.....	वसन्त पंचमी
१५	फरवरी, बुधवार	.....	माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती
२७	फरवरी, सोमवार	.....	महाशिवरात्रि
३	मार्च, शुक्रवार	.....	ईदुलफितर (ईद)
		.....	श्री रामकृष्ण परमहंस जयन्ती
१६	मार्च, गुरुवार	.....	होलिका दहन
१७	मार्च, शुक्रवार	.....	धुरड्डी, ओली समाप्त (जैन)
१	अप्रैल, शनिवार	.....	विक्रम संवत् २०५२ प्रारम्भ
		.....	चैत्र नवरात्रारम्भ
१३	अप्रैल, गुरुवार	.....	महावीर जयन्ती
१४	अप्रैल, शुक्रवार	.....	डा० अम्बेडकर जयन्ती, वैशाखी, मेष संक्रान्ति
१५	अप्रैल, शनिवार	.....	हनुमज्जयन्ती, ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण
२	मई, मंगवार	.....	अक्षय तृतीया
१४	मई, रविवार	.....	बुद्ध पूर्णिमा
८	जून, गुरुवार	.....	गंगा दशहरा
९	जून, शुक्रवार	.....	निर्जला एकादशी व्रत
३०	जून, शुक्रवार	.....	रथयात्रा
१२	जुलाई, बुधवार	.....	गुरु पूर्णिमा
१	अगस्त, मंगलवार	.....	नागपंचमी
३	अगस्त, गुरुवार	.....	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
१०	अगस्त, गुरुवार	.....	श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन
१५	अगस्त, मंगलवार	.....	स्वतंत्रता दिवस
१७	अगस्त, गुरुवार	.....	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
२९	अगस्त, मंगलवार	.....	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३०	अगस्त, बुधवार	.....	ऋषि पंचमी
८	सितम्बर, शुक्रवार	.....	अनन्त चतुर्दशी
१०	सितम्बर, रविवार	.....	पितृपक्ष प्रारम्भ
२४	सितम्बर, रविवार	.....	पितृविसर्जन
२५	सितम्बर, सोमवार	.....	शारदीय नवरात्रारम्भ, कलश स्थापन
३०	सितम्बर, शनिवार	.....	बैंकों की अर्धवार्षिक लेखाबन्दी
२	अक्टूबर, सोमवार	.....	गाँधी जयन्ती, श्री लालबहादुर जयन्ती
३	अक्टूबर, मंगलवार	.....	विजयादशमी
८	अक्टूबर, रविवार	.....	शरद् पूर्णिमा
२१	अक्टूबर, शनिवार	.....	धनतेरस
२२	अक्टूबर, रविवार	.....	नरक चतुर्दशी, श्री हनुमज्जयन्ती
२३	अक्टूबर, सोमवार	.....	दीपावली
२४	अक्टूबर, मगंलवार	.....	अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, सूर्य ग्रहण
२९	अक्टूबर, रविवार	.....	सूर्य षष्ठीव्रत,
३०	अक्टूबर, मंगलवार	.....	गोपाष्टमी
३	नवम्बर, शुक्रवार	.....	प्रबोधनी एकादशी
७	नवम्बर, मंगलवार	.....	कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयन्ती
७	दिसम्बर, शनिवार	.....	गीता जयन्ती
२५	दिसम्बर, सोमवार	.....	क्रिसमस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला का १०८वाँ वार्षिक कार्य-विवरण

या लक्ष्मीः सर्वभूतानांसर्व देवेष्वस्थिताः ।
धेनुरूपेण सा देवी सर्व पापं व्यपोहतु ।।
ओं नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभयीभ्य एव च ।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योर नमो नमः ।।

जो सब प्राणियों की लक्ष्मी देवताओं में विद्यमान है, वह गौ-रूपिणी देवी हमारे सब पापों को दूर करे । लक्ष्मी-रूपिणी गौओं को नमस्कार । सुरभि कामधेनु की सन्तानों को नमस्कार । ब्रह्मपुत्री गौओं को नमस्कार । इस प्रकार पवित्र कर देनेवाली गौओं को बार-बार नमस्कार ।

परमपूज्य सुमेरुपीठाधीश्वर शंकराचार्यजी महाराज,
गोपाल मन्दिर आराध्या पूजनीया बेटीजी,
माननीय सभापतिजी एवं
उपस्थित गो-सेवी बन्धुओं,

आज गोपाष्टमी के पावन पर्व पर यह गोशाला आप सबके सहयोग एवं संकल्प से गो-सेवा के १०८ वर्ष पूर्ण कर रही है । हमारा परम सौभाग्य है कि यह गोपाष्टमी शंकराचार्यजी के सानिध्य में तथा परमवैष्णव भक्त बेटीजी की उपस्थिति में सम्पन्न हो रहा है ।

भौतिकतावादी युग तथा बढ़ती हुई जनसंख्या में गाय लोगों के घरों से लुप्त होती जा रही हैं । गाय किसी समय प्रत्येक घर की एक सदस्य होती थी, घर के बच्चे जिस आंगन में खेलते थे उसी में बछड़े-बाछियां भी उनके साथ खेलती थीं । अब कहाँ आंगन, कहाँ वे घर, कहाँ वे बच्चे ।

आज ऐसी स्थिति में गोशाला के समक्ष गोरक्षा-गोसंवर्धन एक बहुत बड़ा प्रश्न बनकर खड़ा हो गया है । गोशाला से लोगों की अपेक्षाएँ बढ़ गई हैं । कत्लखाने जानेवाले गोवंश की रक्षा और अधिकाधिक दूध का उत्पादन, गोशाला का मुख्य कार्य हो गया है ।

गोशाला अपने सद्भावियों, प्रेरकों तथा दाताओं से प्राप्त साधनों से यथासम्भव यह कार्य कर रही है । गोशाला की इस समय तीन शाखाएँ कार्यरत हैं । प्रथम सदर, जहाँ यह समारोह हो रहा है, दूसरी पंचक्रोशी मार्ग पर स्थित रामेश्वर जिसकी पंचशिवाला, मधुवन तथा वृन्दावन उपशाखाएँ हैं तथा आजमगढ़ मार्ग पर बावनबीघा । गोशाला की तीनों शाखाएँ अपनी उपशाखाओं सहित अपने साधनों से गोपालन तथा गोसंवर्धन के क्षेत्र में कार्यरत है ।

बावनबीघा में बाबू जगमोहनदास चैरिटेबुल ट्रस्ट, अध्यक्ष, श्री राजकुमार साह के सहयोग से २४ गायों के खटाल का निर्माण हो चुका है । ट्यूबवेल की सबमर्सिब्ल पम्प खराब हो गयी थी, श्री राजकुमारजी ने नयी पम्प प्रदान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की । गतवर्ष कतिपय असुरक्षा के कारणों से यहाँ दूध का उत्पादन स्थगित कर दिया गया था । इस वर्ष बावनबीघा में देशी नस्ल की गायों से दुग्ध उत्पादन का कार्यक्रम है । यहाँ नवनिर्मित दो खटाल हैं, एक और खटाल इस वर्ष निर्मित होगा । यहाँ इस वर्ष लगभग ८००० कुं० हरा चारे का उत्पादन हुआ । गेहूं के उत्पादन से भूसा प्राप्त हुआ है । इसके अलावा नीची भूमि में जहाँ पानी लगता है, धान की फसल भी होती है । यहाँ के विकास कार्यों में श्री बालमुकुन्द लोहिया का प्रमुख योगदान है । उनके साथ श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल का सहयोग बना रहता है ।

रामेश्वर में दुग्ध उत्पादन, गोसंवर्धन तथा गोरक्षा का कार्य विशाल पैमाने पर हो रहा है । रामेश्वर मुख्य भवन में विशेषरूप से दूध देनेवाली गायें हैं । कत्लखाने जानेवाली गाय तथा बैल जो सुपुर्दगी में प्राप्त होते हैं वे मधुवन तथा वृन्दावन में रखे जाते हैं । उनमें जो गाय सर्वथा अनुपयोगी होती हैं वे वृन्दावन में रखी जाती हैं । यहाँ प्रतिवर्ष हजारों गाय तथा बैल शासन से सुपुर्दगी में प्राप्त होते हैं जिनकी रक्षा की जाती है । यहाँ दूध उत्पादन अच्छी मात्रा में होता है । देशी नस्ल की गायों के विकास का कार्य यहाँ कुशलतापूर्वक हो रहा है । वृन्दावन की काफी भूमि ऊसर तथा ऊंची-नीची है जिसे प्रयासपूर्वक उर्वर बनाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि चारे का अधिकाधिक उत्पादन किया जा सके । पंचशिवाला पर हरा चारा उत्पादन के विविध प्रयोग किये जा रहे हैं । कुछ गोवंश भी रखे जाते हैं । सभी उपशाखाओं में गोबर-गैस यन्त्र लगे हुए हैं जिनसे उत्पन्न गैस का उपयोग भी भलीभांति किया जा रहा है । यहाँ के विकास कार्य में श्री सूर्यकान्त जालान का महत्त्वपूर्ण योगदान है । रामेश्वर में सभी उपशाखाओं सहित प्रतिदिन औसतन ६५० लीटर दूध हुआ । इस वर्ष इसमें २५० लीटर प्रतिदिन वृद्धि होने की सम्भावना है । यहाँ देशी नस्ल की अनेक बाछियां तैयार हो रही हैं, जो दुग्ध उत्पादन में सहायक होंगी ।

सदर (गोलघर) में जहां स्थान का अभाव है, पर्याप्त गोवंश नहीं रखे जा सकते । यहाँ गतवर्ष प्रतिदिन औसतन ३०० लीटर दूध का उत्पादन हुआ है । यहाँ इस वर्ष ४० बाछी तैयार हो रही है जो निकट भविष्य में दुग्ध उत्पादन का स्रोत बनेंगी । सर्वश्री श्यामसुन्दर गिनोड़िया, जयरामदास साह, झाबरमल तथा पुरुषोत्तम धानुका यहाँ के कार्यों को कुशलतापूर्वक देख रहे हैं ।

सदर गोशाला में बहुत-सी खटालें हैं जो समाज के ही लोगों के कब्जे में गैरज के रूप में प्रयोग हो रही हैं । इस कारण गौओं को रहने तथा उनके चारा इत्यादि रखने में बहुत ही दिक्कतें आती हैं । स्थानाभाव की वजह से गौएँ रुग्ण हो जाती हैं । कुछ गो भक्तों ने स्वेच्छया गोशाला की भूमि खाली कर गोशाला को अपरिमित सहयोग दिया है । गोशाला उनकी आभारी है । अन्य भाइयों को भी उन्हीं की भाँति गोशाला की भूमि गौओं के हित में खाली कर दें तो गोशाला परिवार जीवन पर्यन्त उनका आभारी होगा और गोशाला अधिकाधिक दुग्ध उत्पादन कर नगर में शुद्ध दूध सुलभ करा सकेगा ।

गायों में खुरपका, मुंहपका रोग बहुत तेजी से होता है और यदि एक गाय को हुआ तो वह संक्रामक हो जाता है, इस कारण सभी शाखाओं में दूध उत्पादन कभी-कभी आशा से अधिक घट जाता है ।

गोशाला का एक ३.११ एकड़ भूखण्ड पहड़िया सारंग तालाब पर है । कतिपय विवाद के कारण इसकी बाउण्ड्री नहीं बन सकी थी । विवाद खत्म हुआ, अब उसकी तीन तरफ की बाउण्ड्री बन गयी है, एक तरफ की बाउण्ड्री तथा दो कमरे और ट्यूबवेल बनाकर गोसंवर्धन तथा गो-चिकित्सा केन्द्र बनाने की योजना है । बाबू मातादीन जी अग्रवाल के सहयोग से पम्प हाउस का निर्माण करने का आश्वासन प्राप्त हुआ है । इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं । दाताओं तथा गोसेवकों के सहयोग से आशा है इस संकल्प की पूर्ति होगी ।

'नन्दिनी'

गोशाला का कार्य बहुमुखी योजनाओं की वजह से बहुत बढ़ गया है । विगत् वर्षों में गोशाला का विकास तो हुआ ही है साथ-साथ बनारस का जनमानस भी इससे जुड़ा । गोशाला के कार्यों एवं योजनाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए 'नन्दिनी' संदेश का शुभारम्भ गोपाष्टमी पर्व १० नवम्बर '६४ से किया जा रहा है । पूर्ण विश्वास है कि 'नन्दिनी' के संदेश से गोरक्षा की भावना जागृत होगी और समाज की आर्थिक, सामाजिक स्थिति उन्नत होगी, साथ-साथ देश की संस्कृति सुरक्षित रहेगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभार

गोशाला के विकास कार्यों में शासक मण्डल तथा प्रबन्ध समिति के सभी सदस्यों का सहयोग मिलता रहा है । अनेक गो-भक्तों तथा दाताओं और संस्थानों ने गो सेवा के लिए गोशाला को विशिष्ट अनुदान प्रदान किये हैं, जिनमें उल्लेखनीय हैं—

मेसर्स—जीवनराम शिवदत्त राय संस्थान के श्री सत्यनारायणजी नवलगढ़िया द्वारा गोग्रास निधि के स्थायी कोष के लिए ढाई लाख रुपए ।

बाबू जगमोहनदास चैरिटेबुल ट्रस्ट द्वारा खटाल तथा सबमर्सिबल पम्प के लिए २,००,०००.०० दो लाख रुपये ।

सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट से एक लाख पचासी रुपए ।

श्री अरविंद जी अग्रवाल (श्रीदास फाउण्डेशन) ।

श्री अभिषेकजी तथा सुरभि शोध संस्थान ।

श्री भानमलजी, गोहाटी । प्रत्येक २५ हजार रुपये ।

श्री बंशीधर अग्रवाल चैरिटेबुल ट्रस्ट से श्री सुशीलकुमार अग्रवाल द्वारा इक्कीस हजार रुपये । इसके अतिरिक्त अन्य अनेक दाताओं ने उदारतापूर्वक गोशाला को अपना महत्त्वपूर्ण अनुदान प्रदान किया है । गोशाला उन सभी दाताओं के प्रति आभार व्यक्त करती है ।

गोग्रास स्थायी कोष योजना के प्रेरक श्री रिषीकेशजी सराफ को प्रणाम करते हैं जिनके सुझाव से योजना का शुभारम्भ हुआ और उनके सद्प्रयास से श्री सत्यनारायण जी नवलगढ़िया (मे० जीवनराम शिवदत्त राय-कलकत्ता) ने ढ़ाई लाख की राशि से इस योजना का श्रीगणेश किया । इन्हें बारम्बार प्रणाम तथा अन्य दाताओं का अभिनंदन जिन्होंने इसमें सहयोग प्रदान किया है । उनमें उल्लेखनीय हैं सर्वश्री रामजीवन भरतकुमार, नन्दलाल मातादीन ट्रस्ट, किशनलाल रिषीकेश, डॉ० प्रेमलता शर्मा, रामकुमार रूँगटा, राजकुमार जैन, राजकुमार केजरीवाल, रामचन्द्र रामविलास झँवर, स्व० महादेवलाल डिडवानिया ।

विभिन्न दाताओं ने गोशाला को उपकरण तथा साधन उपलब्ध कराये हैं । इनमें श्री चन्द्रप्रकाश लढ़ा द्वारा मेसर्स ठाकुरप्रसाद लढ़ा एण्ड कम्पनी, वाराणसी तथा श्री राजेन्द्रप्रसाद अग्रवाल द्वारा मेसर्स अग्रवाल फर्टिलाइजर, वाराणसी ने गोशाला को यूरिया खाद प्रदान की है तथा अन्य दाताओं ने गोपालन हेतु साधन सुलभ कराये हैं । विनम्रतापूर्वक उन्हें साधुवाद । कुछ संस्थान नियमितरूप से गोलक-पेटी के माध्यम से गोशाला को नियमित सहायता प्रदान करते हैं जिनमें विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं—भालोटिया सिल्क हाउस, बनारस आर्ट पैलेस तथा संगम साड़ीज ।

विशेश्वरगंज गल्ला व्यवसाय से व्यापारिक कटौती जो ३ वर्ष पूर्व पुनः प्रारम्भ की गई थी, उस राशि से गोशाला का विकास हो रहा है । इस परम्परा को विशेष प्रगति दे रहे हैं—सर्वश्री आत्माराम अनन्तराम, छन्नूलाल बालकिशन, आत्माराम चुन्नीलाल, चौथीराम चुन्नीलाल, शिवनारायण शम्भूनारायण—इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं ।

इस अवसर पर हम गोशाला के अपने समस्त पदाधिकारियों, सहयोगियों तथा कर्मचारियों की सेवा को नहीं भुला सकते जिनके अथक परिश्रम से गोशाला की सभी शाखाओं का समुचित विकास हो रहा है, उन सभी के प्रति साधुवाद ।

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर गोधूलि की इस बेला में गोपालकृष्ण हम सबको बल प्रदान करें ताकि भगवान् शंकर की इस नगरी में यह गोशाला निरन्तर विकास करते हुए गोवंश का संरक्षण और संवर्द्धन करती रहे ।

गोमाता की जय

गोपाष्टमी
संवत् २०५१

अशोककुमार सराफ
प्रधानमन्त्री
प्रबन्धकारिणी समिति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोग्रास निधि

श्री रिषीकेश जी सराफ इस गोशाला से तथा काशी की समाजसेवी संस्थाओं से अर्धशताब्दी से जुड़े हुए हैं, वे अनेक वर्षों तक गोशाला शासक मंडल के सदस्य रहे हैं, शारीरिक अस्वस्थता के कारण त्यागपत्र देकर अलग हुए, किन्तु गोशाला के प्रति उनकी असीम निष्ठा है । उनके मन में है कि गोशाला के पास एक स्थायी कोष हो, जिससे गोवंश की सेवा निरन्तर होती रहे । श्री सत्यनारायण जी नवलगढ़िया जिनकी युवावस्था काशी में रिषीकेश जी तथा काशी के प्रमुख समाजसेवियों के साथ बीती, जो अब कलकत्ता में स्थायी रूप से रहने लगे हैं, यद्यपि उनके चिरञ्जीव डॉ० दीपकप्रकाश नवलगढ़िया काशी में ही निवास करते हैं को प्रेरित किया और उन्होंने अपने संस्थान सर्वश्री जीवनराम शिवदत्तराय से गोग्रास निधि (स्थायी कोष) के लिए ढ़ाई लाख रुपये प्रदान किये ।

श्री सत्यनारायण नवलगढ़िया

श्री सत्यनारायण जी नवलगढ़िया मारवाड़ी युवक संघ के संस्थापक सदस्यों में से हैं । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम० ए० और कानून की डिग्री ली । बनारस म्यूनिसिपल बोर्ड के १९४४ में सदस्य निर्वाचित हुए । १९५३ में त्यागपत्र दिया । जे० पी० मेहता कालेज के प्रबंधक थे और काशी तीर्थ सुधार ट्रस्ट के सदस्य ।

गोग्रास निधि से प्राप्त ब्याज की राशि गोवंश के पोषण हेतु व्यय की जायगी । इस राशि को यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया में जमा करा दी गयी है । गोशाला रिषीकेश जी के प्रति विनम्र श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करती है और आशा करती है कि अन्य उदारमना गोप्रेमी भी गोग्रास निधि को समृद्ध बनाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे ।

इसी क्रम में निम्नलिखित महानुभावों तथा संस्थानों से गोग्रास निधि के लिए राशि अथवा आश्वासन प्राप्त हुए हैं—

स्वामी आत्मप्रकाश परमार्थ भवन, वाराणसी	१०,०००.००
डॉ० प्रेमलता शर्मा	२१००.००
श्री राजकुमार केजरीवाल	११००.००
स्व० महादेवलाल डिडवानिया	२१००.००
स्व० दुर्गाबाई सांगानेरिया	३६००.००
श्री परागकुमार मोदी	१०००.००
आश्वासन प्राप्त	
श्री रामजीवन भरतकुमार	२१०००.००
श्री नंदलाल मातादीन ट्रस्ट	११०००.००
श्री रामकुमार रूंगटा	५१००.००
श्री किशनलाल रिषीकेश	५१००.००
श्री लक्ष्मीनारायण जी झँवर द्वारा रामविलास रामचन्द्र जी	५१००.००
श्री राजकुमार जैन	५१००.००

आशा है इसी प्रकार अन्य गोभक्तों से भी गोवंश की रक्षा और पोषण हेतु गोग्रास निधि में राशि प्राप्त होगी । सभी दाताओं के प्रति विनम्र आभार ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिशंकर भाभड़ा

उप मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि १० नवम्बर १९९४ को गोपाष्टमी के शुभ अवसर पर सदैव की भाँति इस वर्ष भी १०८वाँ वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा ।

प्राचीन काल से ही गौ हमारी भारतीय संस्कृति से ऐसे जुड़ी रही है कि उसके बिना हम भारतीय संस्कृति की कल्पना ही नहीं कर सकते हैं ।

मैं अधिवेशन की सफलता तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ ।

(हरिशंकर भाभड़ा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो-ग्रास

☞ माँ जन्म देती है, उसके दूध से ४-६ महीने हमें पोषण मिलता है, गाय हमें जीवन पर्यन्त पोषण प्रदान करती है, एक माँ जन्मदात्री है दूसरी पोषणात्री, जो जीवन पर्यन्त हमारे शरीर को पुष्ट करती है, बुद्धि और मन को शुद्ध कर शांति प्रदान करती है ।

☞ ऐसी माँ के निमित्त प्रत्येक संस्कारशील परिवार की यह परम्परा रही है कि प्रतिदिन भोजन के पूर्व गो-ग्रास निकाला जाता था, और गाय को खिलाकर परिवार के लोग भोजन करते थे ।

☞ पहले घर-घर में गाय पाली जाती थी, अतः यह सुविधा थी । अब घर में गो-पालन नहीं हो पा रहा है, अतः गोमाता के निमित्त गो-ग्रास भी नहीं निकल पाता ।

☞ गोशाला की गायों को आपकी ओर से गो-ग्रास देने की व्यवस्था है । इसके निमित्त एक वर्ष की राशि ३६०० रुपये (प्रतिमास ३०० रु०) है । इस हेतु गो-ग्रास निधि की स्थापना का सुझाव दिया गया और मेसर्स जीवनराम शिवदत्त राय कलकत्ता ने ढाई लाख रुपये की राशि प्रदान की जो यूनिट ट्रस्ट में जमा करा दी गयी है । इस राशि के ब्याज से नियमित तथा स्थायी रूप से गो-ग्रास दिया जाता रहेगा । अनेक श्रद्धालु गोशाला को यह राशि प्रदान कर रहे हैं ।

☞ आप भी गो-ग्रास योजना के सदस्य बनिये । गोपाष्टमी को यह संकल्प कीजिए और अपनी गो-ग्रास राशि गोशाला को प्रदान कीजिए ।

दाताओं से निवेदन

गोशाला का प्रधान कार्यालय मैदागिन, गोलघर में के० ४०।२५, दुलहिनजी रोड पर स्थित है ।
दाताओं से अनुरोध है कि इस अनुदान की राशि इसी पते पर भेजकर रसीद प्राप्त करें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोग्रास-दाता

श्रीमती ताराबेन	१०६००.००
मे० रूपदर्शी सारीज़ प्रा० लि०	६५००.००
गुप्तदान	६२६१.००
श्री दास फाउण्डेशन	५९५६.६०
मे० दी इण्डिया टेक्सटाईल्स कं० लि०	५२७९.००
श्री सत्यनारायण जी मोदी	५१००.००
स्व० बाबू श्रीनिवास जी सरावगी	५१००.००
श्री रामनिरंजन जी सर्राफ	५१००.००
मे० प्रवीणकुमार नवीनकुमार	५१००.००
श्री नित्यानंद जी मेहरोत्रा	५१००.००
गुप्तदान	४७९३.००
मे० मिथिला प्लाईउड प्रा० लि०	४५८४.६०
श्री प्रभुनारायण जी	५६००.००
यू० जे० एक्सपोर्ट	३६००.००
मे० नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद	३६००.००
श्री रामकृपा	३६००.००
श्री राजेन्द्र अग्रवाल	३६००.००
श्री राधेश्याम जी खेमका	३६००.००
मे० अमित साड़ी	३६००.००
मे० मोहनदास बृजरतनदास	३६००.००
मे० विश्वनाथ इलेक्ट्रिक इम्पोरियम	३६००.००
श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला	३६००.००
मे० परमेश्वरलाल मानिकचन्द	३६००.००
मे० कलाकुंज एण्ड कं०	३६००.००
मे० राजन सिल्क स्टोर	३६००.००
मे० विनायका ट्रेडिंग कं०	३६००.००
मे० भोलाराम मोतीलाल	३६००.००
श्री विश्वम्भर जी अग्रवाल	३६००.००
कु० उषाभाव सिंहका	३६००.००
श्री महावीरप्रसाद श्यामसुन्दर	३५०१.००
बालव्यास श्रीकांत जी शर्मा	३१००.००
मे० अभिमन्युकुमार अरुणकुमार	२६००.००
मे० रामवल्लभ गिन्नीप्रसाद	२५००.००
मे० लढ़ीया बन्धु	२५००.००
श्रीमती गोमतीदेवी खेमका	२१००.००
स्व० बाबू महादेवप्रसाद डिडवानिया	२१००.००
श्रीमती प्रेमलता शर्मा	२१००.००
श्री चैनराम जी	२१००.००
श्री जोशी जी	१८००.००
श्री ओमप्रकाश जोशी	१२००.००
श्री केशरीचन्द्र	१२००.००
मे० कौशल इन्जीनियरिंग कं०	१२००.००
श्री राजेन्द्र जैन	१२००.००
श्री नारायण जी खेमका	११००.००
सेठ आनंदराम जैपुरिया स्मृति भवन	११००.००
श्री राजकुमार केजरीवाल	११००.००
मे० डायमण्ड एक्सपोर्ट	११००.००
श्री चन्द्रमोहन जी	८००.००
श्रीमती मीनाक्षी खेतान	८००.००
गुप्तदान	७५०.००
श्रीमती रेणुकादेवी आशर	६०२.००
श्री राधेश्याम जी सोनी	५०१.००
श्री ज्वालाप्रसाद	५०१.००
मे० हरपत राय रामचन्द्र राइस मिल	५०१.००
गुप्तदान	५००.००
मे० जे० के० सिल्क	३०१.००
श्री कैलाशचन्द्र	३००.००
गुप्तनाम	३००.००
श्री सत्यनारायण केजरीवाल	१५३.००
श्री के० के० खापरे	१५०.००
श्री संतोषकुमार बाजोरिया	११२.००
श्रीमती सत्यभामादेवी	१०१.००
श्री गोपाल जी केडिया	१००.००
श्री नारायणप्रसाद पंसारी	१००.००
श्री वी० एस० भटनागर	१००.००
श्री रघुनाथप्रसाद चौधरी	९१.००
श्री रामजी नागर	६०.००
श्री बच्चेलाल यादव	५१.००
श्री चन्द्रभान शुक्ला	११.००
योग	**१,७१,०६०.२०**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
के० ४०/२५, दुलहिनजी रोड, वाराणसी-२२१ ००१

फोन विवरण

प्रधान कार्यालय : ३३३४१३ *बावनबीघा : ३८५६०३*

शासक-मण्डल

नाम	निवास	कार्यालय
श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	३३२५६६, ३३४३४९	३५३७४१, ३५३०८२
श्री गोपीकुमार सिंघानिया	४३०७७, ४२८९७	५६१८३, ५३२८२
श्री राजकुमार जैन	३२०६४६	३२०६४६
श्री नंदकिशोर रूँगटा	३११०८२	३११७४४
श्री गगनेन्द्रकुमार केडिया	३६०३८७	३५२०४०
श्री राजकुमार साह	३६००७३	३६००७३
श्री कुंजबिहारी गुप्त	३५४६६०	३७०१४०
श्री काशीनाथ चौधरी	३२१८७४	३२०१७७
श्री नन्दलाल जालान	३२०११६	—
श्री नन्दकिशोर प्रह्लादका	३५३८०६	३५३८०६
श्री महाबीरप्रसाद डिडवानिया	३१०४८४	३२१९१७
श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला	४४२८७, ४३७५९	४४२८७, ४३७५९
श्री परमानंद सराफ	३६०१३८	३२०१३०, ३२०१४०
श्री मातादीन अग्रवाल	३६०८६१, ३६०८६२, ३६०८४७	३२०६०१, ३२००७९
श्री दीनदयाल जालान	३१००७१	३५२९४३

प्रबन्धकारिणी समिति

श्री महेन्द्रप्रसाद साह	३११७५५	३५३६३७
श्री राधेश्याम खेमका	५७१७०, ५२२८४	३५३९५२, ३५३५४६
श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल	३१०२८५, ३११५९६	३१०२८५, ३११५९६
श्री केदारनाथ केजरीवाल	३६०७३०, ३६०७३१	३२२११२, ३२३४३६
श्री अशोककुमार सराफ	३३३५५४	३२०९२०, ३२०१३० ३२०१४०
श्री श्यामसुन्दर गिनोड़िया	३१०३९२, ३१०३९३	४६२३८
श्री बालमुकुन्द लोहिया	३२१२५०	३७०४७९
श्री अरुणकुमार आशर	३३३२१२	३२०१०८
श्री सूर्यकान्त जालान	३१००७१	३५२९४२
श्री पुरुषोत्तमलाल धानुका	३१३०३६	३२१९१०
श्री जयरामदास शाह	३१२६९२	३३३२६०
श्री शान्तिलाल जैन	३३३४२९, ३३३४३६	३३३४७९
श्री नारायणप्रसाद पसारी	३२२३५६, ३२२७१८	३२०१६२
श्री झाबरमल अग्रवाल	३३१२००, ३३१२५९	३३१२००, ३३१२५९
श्री लोकनाथ बूबना	३५३०८५, ३५३६८६	३२२०८३
श्री देवेन्द्रकुमार बजाज	५५०००	५५०००
श्री लक्ष्मणदास अग्रवाल	६५२०९	४४८४३
श्री भगवानदास अग्रवाल	३१११३	३२०११३
श्री प्रदीपकुमार बजाज	३११९४३, ३१२७२३ ३१४२३७, ३१२८४२	३११९४३, ३१२७२३ ३१४२३७, ३१२८४२
श्री मोहनलाल सरावगी	३१०१२३, ३१०९८२	३२०२२४
श्री पीताम्बरलाल अग्रवाल	३१०३३५, ३१०५१५	—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

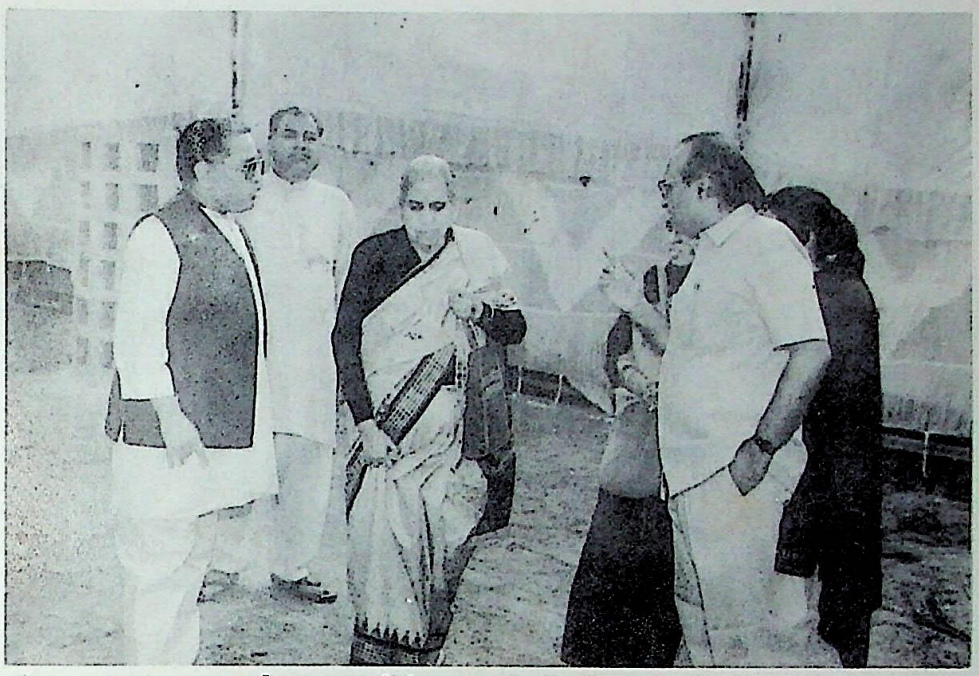

गोशाला का निरीक्षण करती डॉ० प्रेमलता शर्मा
साथ में : श्री राजकुमार जैन तथा श्री अशोककुमार सराफ

२४ नवम्बर १९९३ को सम्पन्न गोपाष्टमी समारोह में
सर्वश्री पुरुषोत्तमदास मोदी, डॉ० प्रेमलता शर्मा तथा महेन्द्रप्रसाद शाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी संवत् २०५१
१० नवम्बर १९९४

गोपाष्टमी हवन का दृश्य
सर्वश्री डॉ० एन० एन० सिनहा, जे० पी० गुप्ता, श्यामसुन्दर गिनोड़िया
अशोककुमार सराफ, भगवानदास अग्रवाल, अरुण आशर तथा जयरामदास शाह

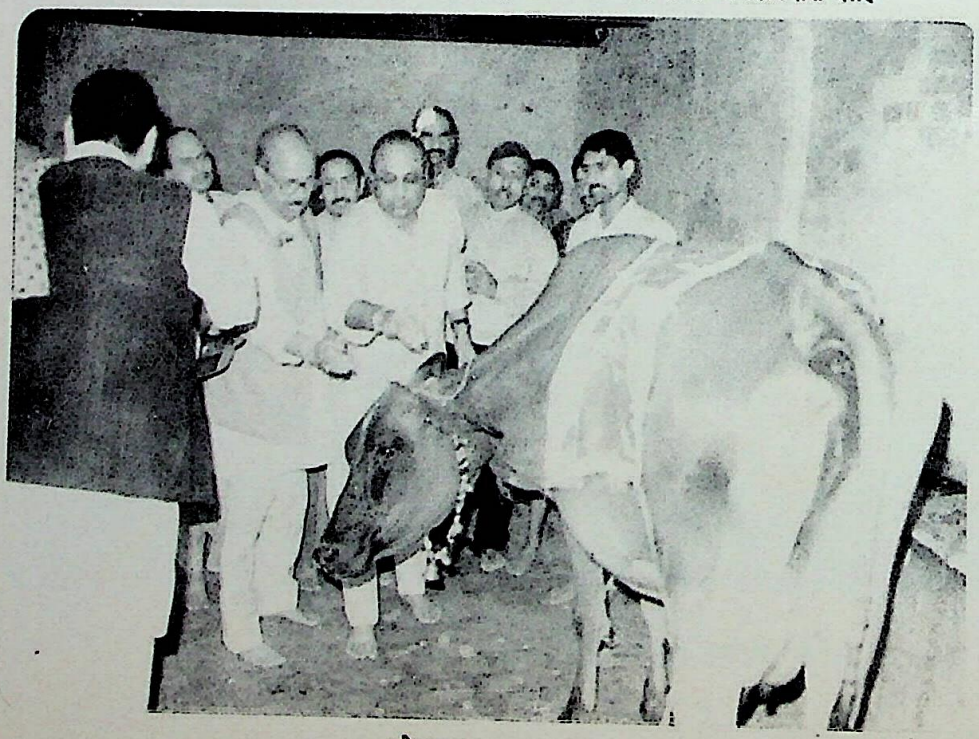

गो-पूजन का दृश्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी समारोह में मंच पर आसीन
सुमेरुपीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी चिन्मयानन्दजी
पुरुषोत्तमदास मोदी, स्वामी आत्मप्रकाशजी, लक्ष्मीशंकर व्यास
राधेश्याम खेमका, शरद्वल्लभा बेटीजी

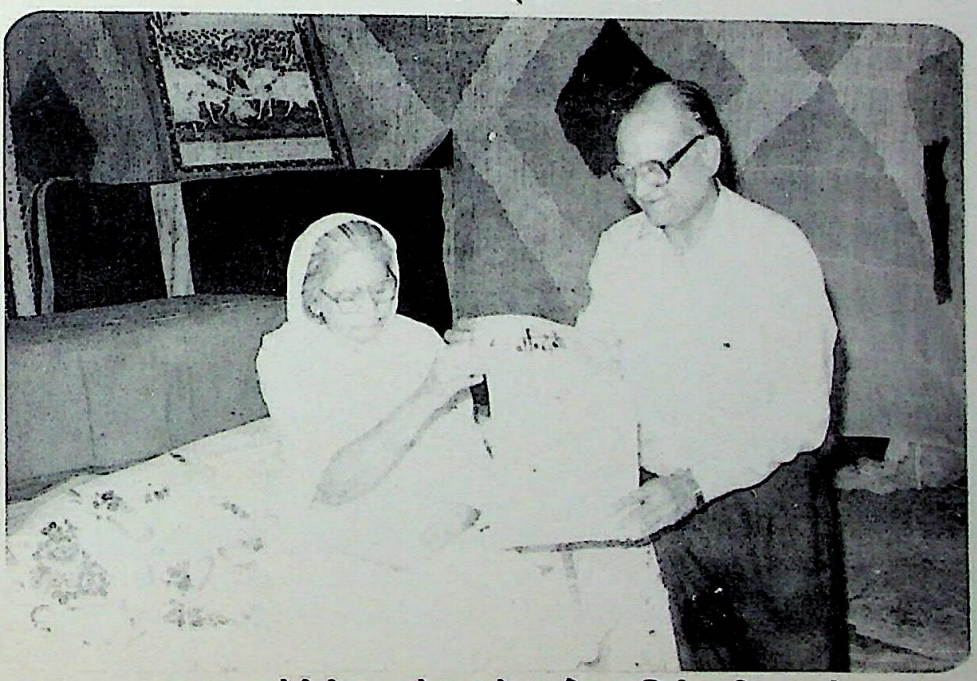

शरद्वल्लभा बेटीजी द्वारा गोशाला से प्रकाशित 'नन्दिनी' मासिक-पत्र के
प्रथम अंक का प्रकाशनोद्घाटन, सम्पादक श्री श्यामसुन्दर गिनोड़िया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

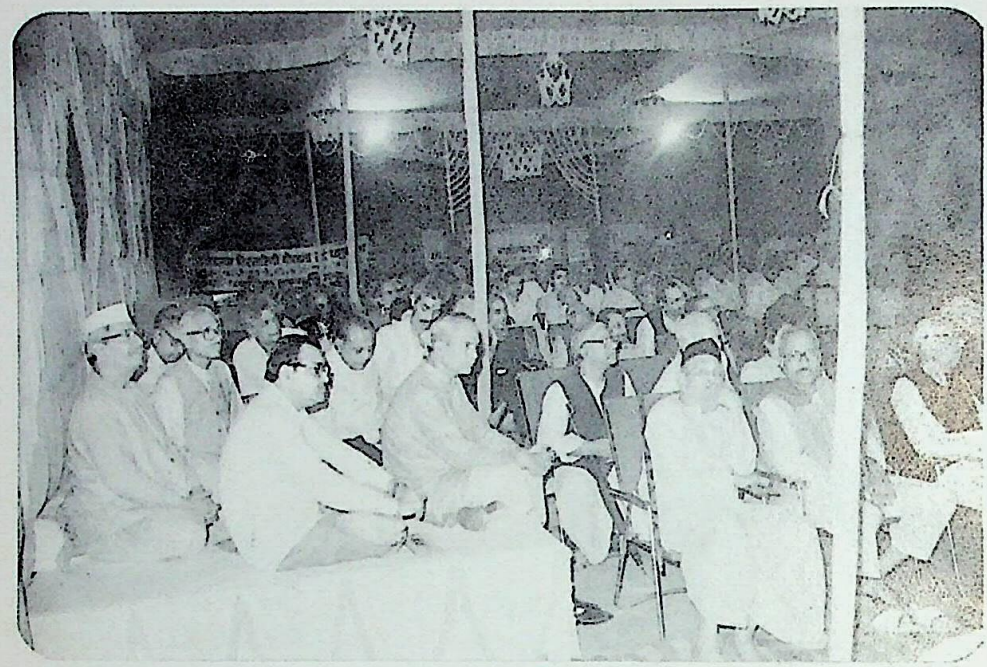

गोपाष्टमी समारोह में उपस्थित गोभक्त श्रोता

बावनबीघा परिसर का निरीक्षण करते हुए : बालव्यास पं० श्रीकान्तजी शर्मा
साथ में : पीछे-सर्वश्री मातादीन अग्रवाल, राजकुमार जैन
अशोककुमार सराफ, श्यामसुन्दर गिनोड़िया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवध धार्मिक अधिकार नहीं : सुप्रीम कोर्ट

नवभारत टाइम्स, २० नवम्बर, १९९४

पश्चिमी बंगाल सरकार की विशेष अपील याचिका रद्द करते हुए उच्चतम न्यायालय ने फैसला दिया है कि भारत में मुस्लिम समुदाय का बकरीद पर गोवध करना धार्मिक अधिकार नहीं है । इस निर्णय से १९७१ में दायर इस मामले पर स्वामी केदारनाथ ब्रह्मचारी तथा २६ अन्य व्यक्तियों को २३ साल बाद न्याय मिल पाया है ।

स्वामी केदारनाथ ब्रह्मचारी की याचिका, जो कलकत्ता उच्च न्यायालय ने १९८२ में भी स्वीकार कर ली थी, लेकिन पश्चिमी बंगाल की मार्क्सवादी सरकार ने इस निर्णय के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर करके स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया था । इस स्थगन आदेश के सहारे पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ सरकार अगले १२ साल के दौरान हर बकरीद पर बड़े स्तर पर गोवध की अनुमति देती रही है ।

न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह, न्यायमूर्ति बी० एल० हंसारिया और न्यायमूर्ति एस० बी० मजूमदार की खंडपीठ ने अपने निर्णय में कलकत्ता उच्च न्यायालय के १९८२ के निर्णय को सही बताया और कहा कि पश्चिमी बंगाल सरकार के पशु वध नियंत्रण अधिनियम १९५० के तहत बकरीद पर गाय काटने की अनुमति देना उचित नहीं है । उल्लेखनीय है कि इस अधिनियम के तहत सांड़, गाय, भैंस जैसे पशुओं को काटने की अनुमति देने का प्रावधान नहीं है, लेकिन मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार इस अधिनियम की धारा-१२ के विशेषाधिकार का उपयोग करके गायों या भैंसों को बकरीद पर काटने की खुली अनुमति देती रही है । इस धारा के तहत राज्य सरकार को धार्मिक, चिकित्सा और अनुसंधान के उद्देश्यों के आधार पर इन पशुओं को काटने की अनुमति दी जाती रही है ।

उच्चतम न्यायालय में अधिवक्ता ए० एस० पुंडीर ने बताया कि बकरीद के मौके पर गाय काटने की अनुमति सरकार इस आधार पर देती थी कि ऐसा करना मुसलमानों के धार्मिक रीति-रिवाजों को पूरा करने के लिए आवश्यक है । लेकिन उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि बकरीद पर गायों का काटना मुसलमानों के धर्म का आवश्यक हिस्सा नहीं है । खंडपीठ ने कहा कि पशु वध नियंत्रण कानून दुधारू पशुओं के वध पर रोकथाम और दूध का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया है । इस कानून में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि स्वस्थ गायों को काटना उचित नहीं है । इस अधिनियम की धारा २ के साथ दी गयी सूची में शामिल पशुओं के वध पर पूर्ण रोक लगाने का प्रावधान है ।

उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय में कलकत्ता उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ अपील करने को भी व्यर्थ का प्रयास कहा । उल्लेखनीय है कि १९५८ में ही उच्चतम न्यायालय एम० एच० कुरैशी बनाम बिहार सरकार के मुकदमे में इस मुद्दे पर स्पष्ट निर्णय दे चुकी है । तब उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया था कि गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने से भारत के संविधान का उल्लंघन नहीं होता है। इसमें विशेष तौर अनुच्छेद २५(१) का उल्लेख था, जिसमें भारत के हर नागरिक को अपने-अपने सम्प्रदायों के अनुसार पूजा-पाठ का अधिकार दिया गया है । इसी निर्णय के आधार पर कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति अनिलकुमार सेन और न्यायमूर्ति बी० सी० चक्रवर्ती ने अपना फैसला लिखा था । पश्चिमी बंगाल सरकार और कुछ मुस्लिम संगठनों को उच्चतम न्यायालय में अपील दायर करने से पशु वध नियंत्रण कानून के तहत आगामी १२ साल तक कलकत्ता उच्च न्यायालय के फैसले को लागू होने से रोकने का लाभ मिल गया । ९ सितम्बर, १९८३ को जारी उच्चतम न्यायालय के इस स्थगनादेश को खारिज करने की अपील विभिन्न हिंदू संगठनों के २७ नेताओं ने भी की थी । २१ फरवरी, १९८५ को दायर इस याचिका को स्वीकार करने के स्थान पर उच्चतम न्यायालय की खंडपीठ ने इस मुकदमे की सुनवाई शीघ्र करने का आदेश दिया था । इसके बाद भी सुनवाई सितम्बर, १९९४ में ही हो पायी । स्वामी केदारनाथ ब्रह्मचारी की ओर से पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और वरिष्ठ अधिवक्ता धर्मवीर सहगल ने पक्ष रखा । दो दिन तक चली सुनवाई में ही इसकी बहस पूरी हो गयी । इसका फैसला इसी सप्ताह सुनाया गया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवध, इस्लाम और न्यायालय

नवभारत टाइम्स, २२ नवम्बर, १९९४

देर आयद, दुरुस्त आयद का मुहावरा शायद ऐसे ही मौकों के लिए बना है, हालाँकि इस मामले में देर यह भी बताती है कि न्यायिक प्रक्रिया की दीर्घसूत्रता का सहारा लेकर किसी सही फैसले को भी २३ साल तक निलम्बित किया जा सकता है । धर्म और राजनीति के कई गलत सम्मिश्रण हमारे सामने आ चुके हैं । ऐसा ही एक गलत सम्मिश्रण रहा है पश्चिम बंगाल का यह निर्णय कि बकरीद के अवसर पर गाय की हत्या करने की अनुमति दी जा सकती है । कलकत्ता उच्च न्यायालय ने १९८२ में ही यह फैसला दे दिया था कि पश्चिम बंगाल पशु वध अधिनियम, १९५० का यह उपयोग विधि-सम्मत नहीं है । राज्य सरकार को इस न्यायिक तथा न्यायपूर्ण फैसले का सम्मान करना चाहिए था, किन्तु तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के गलत आग्रहों के कारण उसने इस निर्णय पर स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया, जो नवम्बर मध्य तक जारी रहा । अब उच्चतम न्यायालय ने कलकत्ता पीठ के निर्णय को बहाल कर साफ-साफ कह दिया है कि बकरीद पर गो-हत्या मुसलमानों के धार्मिक विश्वासों का अनिवार्य अंग नहीं है । अतः उस दिन भी गो हत्या पर प्रतिबंध जारी रहना उनके धार्मिक अधिकारों को किसी भी तरह कुंठित नहीं करता । आशा है, पश्चिम बंगाल सरकार उच्चतम न्यायालय के इस विवेकपूर्ण फैसले का आदर करेगी तथा किसी नए बहाने से यह अनुमति फिर देने का प्रयास नहीं करेगी ।

गो हत्या के सवाल पर हिन्दू-मुसलमान विवाद कई शताब्दियों पुराना है । इसके कारण असंख्य दंगे हो चुके हैं । यह बार-बार स्पष्ट किया जा चुका है कि बकरीद के दिन या किसी भी अन्य अवसर पर, गाय का मांस खाना मुसलमानों के लिए धार्मिक अनिवार्यता तो छोड़िये, किसी प्रकार धार्मिक आवश्यकता भी नहीं है । फिर भी इसका आग्रह कुछ क्षेत्रों में बना रहा है, तो इसीलिए कि कुछ लोग हिन्दू-मुसलमान रिश्तों की रगड़ को बनाए रखना चाहते हैं । भारत में जब-जब और जहाँ-जहाँ ऐसा शासन स्थापित हुआ है, जिसने साम्प्रदायिक सौहार्द के मूल्य को पहचाना है और गो-हत्या पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाया है । वैसे भी हिन्दुओं और मुसलमानों को देश में साथ-साथ रहना है, तो उन्हें एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना सीखना होगा और अपनी ओर से कुछ त्याग कर भी ऐसा माहौल बनाना होगा, जिसमें सौहार्द और सहयोग के मूल्य पल्लवित-पुष्पित हो सकें । यह हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए ही नहीं, सभी समुदायों के लिए वांछनीय है । जहाँ तक निरीह गाय का सवाल है, वह तो किसी वास्तविक विवाद का हिस्सा भी नहीं है । फिर उसे बख्श देना क्या हर तरह से अच्छा नहीं रहेगा ? बल्कि मजा तो तब आये, जब न्यायिक निर्णय के बगैर ही यह तथा इस तरह के काम हों ।

गाय

यह है मेरी प्यारी गाय,
इसके दूध से बनती चाय ।
भूसा-चूनी-चोकर खाती,
हरी घास है चरने जाती ।
चमड़े से जूता बनवाते,
बछड़े से हम हल जुतवाते ।

गोबर से हैं खाद बनाते,
कच्चे घर का फर्श लिपाते ।
बच्चे इसके दूध पर जीते,
रोगी भी इसको हैं पीते ।
दूध गाय का है गुणकारी,
गाय बड़ी ही है उपकारी ।

गंगाप्रसाद हिन्दुस्तानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोरक्षा का अर्थ

महात्मा गांधी

मेरे विचार के अनुसार गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से कम नहीं है और इसे मैं स्वराज्य के सवाल से कई अंशों में बहुत बड़ा मानता हूँ । मैं मानता हूँ कि जिस प्रकार अस्पृश्यता के दोष से मुक्त हुए बिना, हिन्दू-मुसलमान ऐक्य हुए बिना और खादी पहने बिना हम स्वराज्य प्राप्त न कर सकेंगे उसी तरह, मुझे यह भी कहना चाहिए कि जबतक हम यह न जानेंगे कि गोरक्षा किस तरह करनी चाहिए तबतक स्वराज्य कोई चीज नहीं है । क्योंकि ऐसा करने में हिन्दू धर्म की कसौटी है । मैं सनातनी हिन्दू होने का दावा करता हूँ । कितने ही भाई हंसते होंगे कि जो शख्स मुसलमानों में घूमता फिरता है जो बाइबिल की बातें करता है, जो मुसलमानों की पकाई रोटी खाता है, जो अन्त्यज की लड़की को गोद लेता है, उसका अपने लिए सनातनी हिन्दू होने का दावा करना मानो भाषा के साथ अत्याचार करना है । फिर भी मैं सनातनी होने का दावा करता हूँ और मुझे विश्वास है कि एक समय ऐसा आवेगा जब—मेरी मृत्यु के बाद—सब कबूल करेंगे कि गांधी सनातनी था । क्योंकि गोरक्षा मुझे बहुत प्रिय है । बहुत समय पहले 'हिन्दुत्व' पर मैंने 'यंग इण्डिया' में एक लेख लिखा था । वह लेख बहुत विचारपूर्वक लिखा गया है । उसमें हिन्दुत्व के लक्षणों का विचार करते हुए मैंने वेदादि को मानना, पुनर्जन्म को मानना, गीता-गायत्री आदि का मानना, इन लक्षणों के अतिरिक्त 'गोरक्षा के प्रति प्रीति' ही सर्वसामान्य हिन्दुओं के लिए हिन्दुत्व का लक्षण ठहराया था । कोई सवाल करेगा कि १०,००० वर्ष पहले हिन्दू लोग क्या करते थे ? बड़े बड़े विद्वान् और पण्डित कहते हैं कि वेदादि ग्रन्थों में गोमेध का वर्णन है । छठे दरजे में पढ़ते समय संस्कृत पाठशाला में मैंने यह वाक्य पढ़ा था—'पूर्वे ब्राह्मणः गवां मांसं भक्षयामासुः ।' मैंने अपने मन से पूछा 'क्या यह बात सच होगी ?' इस वाक्य के रहते हुए भी मैं मानता आया हूँ कि यदि वेद में ऐसी बात लिखी हो तो भी उसका अर्थ शायद वह न हो, जो हम करते हैं । शायद दूसरा अर्थ हो । मेरे अर्थ के अनुसार, मेरी आत्मा की प्रतीति के अनुसार, मेरे नजदीक, पाण्डित्य अथवा शास्त्रीय ज्ञान आधार रूप नहीं है, आत्मा की प्रतीति ही आधार रूप है—पूर्वोक्त जैसे वचनों का दूसरा अर्थ न हो तो ऐसा होना चाहिए कि वही ब्राह्मण गोभक्षण करते थे जो गाय को मारकर उसे फिर सजीव कर सकते थे । परन्तु ऐसे वाद-विवाद से हिन्दू जनता का सम्बन्ध नहीं । मैंने वेदादि का अध्ययन नहीं किया । बहुतेरे संस्कृत ग्रन्थों को अनुवाद के द्वारा ही मैं जानता हूँ । इसलिए मुझ जैसा प्राकृत मनुष्य इस विषय में क्या कह सकता है ? पर मुझे आत्मविश्वास है और इसलिए मैं अपने अनुभव की बात सब जगह किया करता हूँ । यदि हम गोरक्षा का अर्थ खोजने जायेंगे तो शायद हमें कहीं, एक भी अर्थ न मिले । इससे कदाचित् हमें अपना धर्मरहस्य समझने में कठिनाई होती हो, किन्तु इससे सरलता भी हो जाती है । क्योंकि अनेक बातें हिन्दू जनता के अन्दर स्वाभाविक तौर पर पैठ गयी हैं । एक बालक भी समझता है कि गाय की रक्षा करनी चाहिए, न करें तबतक हिन्दू कैसे ?

परन्तु गोरक्षा करने का वर्तमान तरीका मुझे पसन्द नहीं । हमारी गोरक्षा की विधि को देखकर मेरा हृदय रो उठता है । रोना मुझे पसन्द नहीं । किसी को रोता देखकर मुझे दुःख होता है, क्योंकि हमें तो अभी बड़े-बड़े बलिदान करना है और भारी बलिदान करने वाले रोकर क्या करेंगे ? फिर भी मेरा हृदय गोरक्षा के अनर्थ को देखकर रोता है । कुछ वर्ष पहले 'हिन्द स्वराज्य' में मैंने लिखा है कि हमारी गोरक्षिणी मण्डलियों को गोभक्षक मण्डलियां कह सकते हैं । उसके बाद १९१५ में मैं भारतवर्ष आया । तब से अबतक मेरा मत और अधिक दृढ़ होता गया है । मेरे ऐसे विचार होने के कारण मेरे दिल में यह भाव उठा कि, मैं कैसे गोरक्षा परिषद् का सभापति हूँ, और लोगों को किस तरह अपने विचार समझाऊँ ? परन्तु गंगाधरराव जी ने मुझे तार किया कि आप अपनी शर्तों पर सभापति होंगे । श्री चिकोडी आपके विचार जानते हैं और उनसे बहुत कुछ सहमत हैं । इसलिए मैंने आना कबूल किया । यह तो भूमिका हुई ।

चंपारण में एक जगह गोरक्षा-सम्बन्धी अपने विचारों को प्रकट करते हुए मैंने कहा था कि जो गोरक्षा करना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहता हो उसे यह बात भूल जानी चाहिए कि गोरक्षा में हमें मुसलमानों से या ईसाइयों से करानी है । आज हम ऐसा समझते हुए दिखलाई देते हैं कि दूसरे धर्म के लोग गो-मांस छोड़ दें अथवा गोवध बन्द कर दें तो बस उसी में गोरक्षा की परिसमाप्ति हो जाती है । पर मुझे इस बात में कुछ अर्थ नहीं दिखाई देता । इससे आप यह न समझियेगा कि दूसरों के द्वारा गोवध का होना मुझे पसन्द है अथवा गोवध को मैं बरदाश्त कर सकता हूँ । मैं किसी के भी इस दावे को कबूल नहीं करता कि गोवध से किसी की भी आत्मा को मुझसे अधिक दुःख होता है । मैं नहीं समझता कि दूसरे किसी भी हिन्दू को गोवध से मुझसे अधिक चोट पहुँचती हो । पर मैं क्या करूँ ? अपने धर्म का पालन मैं खुद करूँ या औरों से कराऊं ? मेरी गोरक्षा की प्रतिज्ञा का यह अर्थ नहीं है कि हिन्दुस्तान की ही गायों की रक्षा करें । मैं तो सारी दुनिया की गायों की रक्षा की टेक रखता हूँ । मेरा धर्म मुझे यह शिक्षा देता है कि मुझे अपने आचरण के द्वारा यह बता देना चाहिए कि गोवध या गोभक्षण पाप है, और उसे छोड़ देना चाहिए । मेरा मनोरथ तो इतना बड़ा है कि सारी पृथ्वी के लोग गाय की रक्षा करने लगें । पर उसके लिए पहले तो मुझे अपना घर अच्छी तरह साफ करना चाहिए ।

दूसरे प्रान्तों की बात जाने देता हूँ । गुजरात की ही बात करूँ कि गुजरात में भी हिन्दुओं के हाथों गोवध होता है । आप शायद न मानेंगे, पर आपको पता न होगा कि गुजरात में बैलों को गाड़ी में जोतकर, गाड़ी में मनमाना बोझ लादकर, बैल को नुकीली आरी से गोदते हैं । जिससे खून की धार बहने लगती है । मैं तो इसे गोवध ही कहूँगा, क्योंकि बैल गाय की सन्तान है । पर शायद आप कहें कि यह तो ताड़ना है, वध नहीं । हिंसा की व्याख्या है दूसरों को दुःख देना, यंत्रणा पहुँचाना । यदि बैल को वाचा हो तो वह जरूर कहे कि आप जो रोज मुझे आरी चुभा-चुभाकर सताते हो इससे तो बेहतर है कि एकबारगी कत्ल कर डालो । इस प्रकार बैल पर जुल्म करना मेरी राय में गाय की हिंसा है । एक सिन्धी मुझे कलकत्ते में मिले थे । वे मुझे सुनाया करते थे कि कलकत्ते में गाय पर कैसे-कैसे अत्याचार हो रहे हैं । एक बार मुझे उन्होंने कहा कि ग्वालों के घर जाकर उनकी फूका देकर दूध दुहने की विधि को देखिये । इस खूनी दृश्य को मैंने खुद अपनी आँखों देखा । मुझे विश्वास है कि वह आज भी जारी है । इसके करनेवाले हिन्दू हैं । दुनिया में किसी भी जगह गाय-बैलों की वैसी दुर्गत नहीं है जैसी हमारे यहाँ होती है । हमारे बैलों के बदन पर हड्डी और चमड़ी के सिवा कुछ नहीं होता, फिर भी हम उनपर बेहद बोझ लाद देते हैं । जबतक हमारा यह हाल है तबतक हम गोवध बंद कर देने का अनुरोध औरों से किस तरह कर सकते हैं । भागवत में भारतवर्ष के ह्रास के अनेक कारण बताये गये हैं । उनमें एक कारण यह भी है कि हमने गोरक्षा छोड़ दी है । गोरक्षा करने की हमारी असामर्थ्य के साथ दरिद्रता का घनिष्ठ सम्बन्ध है । आप और खुद मैं भी शहर में रहते हैं । इससे गरीबों की स्थिति की कल्पना हमें नहीं हो सकती । करोड़ों लोगों को एक बार पेट भर खाना नसीब नहीं होता । करोड़ों लोग सड़ा चावल और आटा, नोन और मिर्च खाकर गुजर करते हैं । ऐसे लोग गाय की रक्षा किस तरह कर सकते हैं ? हिन्दुस्तान में अनेक पिंजरा-पोलें जैनों के हाथ में हैं । इनमें बीमार जानवर रखे जाते हैं । वहाँ व्यवस्था या सुविधा जैसी चाहिए वैसी नहीं होती । हमारे यहाँ केवल पिंजरापोलें ही नहीं, बल्कि अच्छी-अच्छी दूधशालाएँ भी होनी चाहिए । बड़े-बड़े शहरों में बच्चों के लिए साफ-स्वच्छ दूध नहीं मिलता । गरीब मजदूरों की औरतें बच्चों को दूध के बदले पानी में आटा घोलकर पिलाती हैं । २३ करोड़ हिन्दुओं के हिन्दुस्तान में स्वच्छ दूध न मिलने का अर्थ इतना ही हो सकता है कि हमने गोरक्षा छोड़ दी है ।

(बेलगांव गोपरिषद में सभापति के आसन से गांधीजी के उद्गार ।)

◆

सौभाग्य सूचक

नये घर में गृहप्रवेश पूजन के समय सुख समृद्धि की कामना से लाई गयी एक गाय ने घर में पहुँचते ही गोबर करके गृहप्रवेश पूजन को सफल बना दिया जिससे घरवाले गदगद हो गये ।

हुआ यह कि दंपत्ति सौभाग्य की वर्षा की कामना से दूसरे तल स्थित अपने नये अपार्टमेंट में गृहप्रवेश के समय एलीवेटर (सचल सीढ़ी) की सहायता से एक गाय व बछड़ा ले आए । गाय ने घर में प्रवेश करते ही गोबर करके सौभाग्य सूचक संकेत से घरवालों को कृतार्थ कर दिया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौ रूपी शतधार झरना

✍ वासुदेवशरण अग्रवाल

(१)

वेदों में भूमि पर आश्रित जीवन की जो कल्पनाएँ हैं उनमें सम्भवतः सबसे अधिक सुन्दर, सत्य, सरस और उपयोगी यह है—

साहस्रो वा एष शतधार उत्सो यद् गौः

(शतपथ ७/५/२/३४)

'सहस्र गुना महान्, सौ धाराओंवाला यह झरना है, जो गौ है ।' सचमुच इस देश की भूमि में प्रकृति ने गो के रूप में सैकड़ों धाराओंवाला बड़ा झरना ही खोल दिया है । यह झरना साहस्र है । वेद की भाषा में जो अपरिमित होता है, जिसकी इयत्ता नहीं, जो महान् से महान् है, उसे साहस्र कहते हैं । यह विशेषण स्वयं सृष्टिकर्त्ता के लिये आता है । उसी का कवि ने गौ के लिये प्रयोग किया है । गौ रूपी झरना साहस्र क्यों है ? इसलिए कि वह कभी छीजता नहीं । और झरनों में जल घटता बढ़ता है, वे परिमित हैं, जैसे प्राकृतिक कारणों से बन गये हैं, वैसे चलते रहते हैं । पर गौ का झरना कितना बढ़ सकता है इसकी हद नहीं है । पहाड़ी झरने और जल-धाराएँ एक देशीय हैं, जहाँ हैं वहीं उपयोग है । पर गौ का झरना सारे देश में, गाँव-गाँव में, घर-घर में, खूंटे-खूंटे पर इच्छानुसार बांधा जा सकता है । जिसके ऊपर चाहो इस झरने की दूधिया धार छोड़ दो, जिस घर को चाहो इस घियाल झरने से भर दो । शतपथ ब्राह्मण ने गौ की जो परिभाषा ऊपर बांधी है, उसका मूल यजुर्वेद में है, जहाँ कहा है—

१. यह झरना सौ धाराओंवाला है;
२. यह झरना सहस्रगुणित (साहस्र) है;
३. यह झरना जल के बीच में से झरकर उसे दूध बना रहा है;
४. यह झरना अदिति रूप है, अनन्त प्रकृति का अपना रूप है ।
५. इस झरने से जनता के लिये घी दुहा जाता है ।
६. हे बुद्धियुक्त प्राणी, तुम्हारे जीवन के जो ऊँचे स्रोत हैं, वहाँ तक पहुँचो और इस झरने की हिंसा मत होने दो ।[1]

गौ के चार थनों में मानो चार समुद्र ही समा गए हैं । उसकी दुग्धाधारिणी धार एक होते हुए भी सौ गुनी है । उसी से दूध, दही, साढ़ी, मट्ठा, लौनी, घी, खोवा, छाछ, लस्सी, पनीर क्या नहीं होता ? गौ की संख्या वृद्धि ज्यामिति वर्ग की तरह दुगने, चौगुने, सौलहगुने, प्रमाण से बढ़ती है । अतएव वह सचमुच सहस्रगुणित या अपरिमित है । पानी को दूध बनाने की शक्ति गौ के झरने में ही है । धरती पर मेघों ने जो घास तिनके उपजाए हैं, उन्हें खाकर गौ इस दूध के झरने को उत्पन्न करती है । जनों के लिये घी की धार के फव्वारे इसी स्रोत से छूटते हैं ।

भारत की स्वराज्यमयी भूमि पर आज क्या चाहिए ?

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनूबलम् ।

(अथर्व ६/४/२०)

'गौएँ चाहिए और शरीर-बल से बलिष्ठ प्रजाएं चाहिए ।' आज इस भूमि पर नित्य बछड़ा चुखानेवाली, दुहने में सहेज गौएँ चाहिए—

अयं धेनुं सुदुघां नित्यवत्सां वशं दुहां ।

(अथर्व ६/४/२१)

(२)

गौ और हमारे जनपद का सम्बन्ध बहुत पुराना है । गौ के रूप, रंग, स्वभाव और शरीर-गठन का सूक्ष्म अध्ययन यहाँ किया गया । हमारी बोलियाँ उनका वर्णन करनेवाले शब्दों से भरी हुई हैं । अनेक शब्द संस्कृत से निकले हैं, कुछ ठेठ बोलियों में जन्मे हैं । अथर्ववेद का नित्यवत्सा शब्द ऊपर आया है । नित्यवत्सा वह गाय है जो सदा बछड़ेवाली रहे, जो एक ब्याँत से लेकर दूसरे ब्याँत तक सदा दूध देती रहे, जिसके नीचे हमेशा बछड़ा चौंखता रहे । पाणिनि ने ऐसी गाय को महागृष्टि कहा है (६/२/३) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहली बार ब्याई हुई पहलवन गाय गृष्टि हुई । वह यदि दूसरी ब्याँत तक बराबर दूध देती चली जाय, तो उसे महागृष्टि कहा जायगा । ऐसी गाय के लिये सूरदास ने ब्रजभाषा के भंडार में से नैचकी शब्द का प्रयोग किया है । नित्यवत्सा की ही संज्ञा नैत्यिकी है, अर्थात् जो नित्य दूध की हो । नैत्यिकी-नैचिकी-नैचिकी-नैचकी यह विकास-क्रम है । हेमचन्द्र के अनुसार नैचिकी गाय सब गायों में बढ़िया मानी गई है (नैचिकी तूत्तमा गोषु, अभिधान चिन्तामणि-४/३३६) । नैचकी गाय बरस बियावर होती है । बरस-बरस पर बियानेवाली गौ के लिये पाणिनि का सरस सूत्र है, समां समां विजायते ५/२/१२, जिसके अनुसार ऐसी गाय पुराने समय में समांसमीना कहलाती थी । पतंजलि ने लिखा है कि जो साल-साल की बियानी हो वह अच्छी गाय है, पर जो बरस बियावर होते हुए हर बार बछिया दे, वह और भी बढ़िया हुई—

गौरियं या समां समां विजायते ।
गोतरेयं या समां समां विजायते स्त्रीवत्सा च ।।
(भाष्य ५/३/५५)

अधिकतर गाएँ दुवास अर्थात् दो दो बरस पर बियानेवाली होती हैं । गाय दसवें महीने बियाती है । लोक में उसे नौ महीने नौ दिन का समय कहा जाता है । जवान बछिया ओसर कहलाती है जो संस्कृत उपसर्या से निकला है (उपसर्या काल्या प्रजने ३/१/१०४) । उसे ही कलोर (संस्कृत काल्या) कहते हैं । गाभिन होने के लिये बूना, साहना, धनाना, फलना, बरदाना आदि कई धातुएं बोलियों में चलती हैं । जो ओसर फलने के लिये रेंकती या रम्भाती नहीं और गुम्म गाभिन होती है, उसे असल धेनु समझते हैं । जो बरधाने से न गाभिन हो, न ब्यावे, वह बहल या बहला कहलाती है । फलने के बाद जो रुके या ठहरे नहीं उसे ठांठ कहते हैं । संस्कृत में उसके लिये अवतोका और वेहत् शब्द हैं । बच्चा गिराने के लिये पछाहीं हिन्दी में तूना, अवधी में अड़ाना, बिहारी में निछाना और अन्य बोलियों में छनना, चूना, बहना, आदि धातुएं हैं । जिसके ब्याने का समय निकट हो उसके लिये वैदिक शब्द था प्रवय्या, और जो सांझ सबेरे में ही ब्यानेवाली हो, उसके लिये पाणिनि काल में एक नया शब्द चल गया था अद्यश्वीना (आजकल में ब्यांतर ५/२/१३) । लोक में इसी को यों कहते हैं कि बियावर गाय या भैंस एक दो दिन पहले से पुट्ठे तोड़ने लगती है, अर्थात् उसके पुट्ठे की हड्डियां कुछ उठ जाती हैं । पहली बार ब्यानेवाली पहलवन या पहिलौठी कहलाती है । ब्याने के छः महीने तक जब दूध देती रहे, तब धेनु कही जाती है । कात्यायन ने उसके लिये अस्तिक्षीरा शब्द का उल्लेख किया है (भाष्य २/२/२४/२१) । जिसका बच्चा बड़ा हो जाय वह बाखड़ी या पूरब में बखैनी कहलाती है, जो संस्कृत बष्कयणी से बना है । दूध देने वाली गाय को अवधी में लगनी और दूध से भागी हुई को छुटानी कहते हैं । जिसका बच्चा जाता रहे (मृतवत्सा) वह वैदिक काल में निवान्या कही जाती थी । श्रौत सूत्र और ब्राह्मण ग्रन्थों में इस शब्द का प्रयोग हुआ है । मेरठ की बोली में वह तोड़ या बिनकट कही जाती है । एक मित्र से ज्ञात हुआ कि पूरबी में अभी तक निवानी शब्द चलता है । देई (स० देवी) वह बछिया होती है, जो देवी-देवता के नाम से छोड़ दी जाती है । बियाने पर उसके दूध में रई नहीं पड़ती, यानी दूध बिलोया नहीं जाता । उसका दूध पीते और दही या खीर खाते हैं । स्त्रियाँ नित्त नेम की जो रोटी निकालती हैं उसे देई गौ खा सकती हैं । ब्राह्मण की तरह देई की मान्यता की जाती है, उसे बेचते नहीं । जब दूध पी चुकते हैं, तो या तो अगले ब्यांत के लिये छुट्टा रख लेते हैं या पुन्न कर देते हैं ।

सीधे स्वभाव की गाय बहुत पसन्द की जाती है । 'गौ' आज तक हमारी बोलियों में उपमान है । 'गौ है' यह बड़ा सार्थक वाक्य है । दुहने में जो भली मानस हो वह सहेज कहलाती है । वेद में उसे सुदुधा कहा है । पृथ्वी की प्रशंसा में एक जगह कहा गया है कि वह हमारे लिये धन समृद्धि की हजार धाराएँ ऐसे देती रहे जैसे अचल भाव से बिना फड़फड़ानेवाली गाय (ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती, अथर्व १२/१) । गायों में कपिला गाय सबसे सीधी और निरीह मानी गई है । कपिला वह गाय है जिसके सींग कानों के बराबर नीचे को मुड़े रहते हैं और डुगडुग हिलते हैं । हँसली की तरह सींग होने के कारण यह गाय हँसली भी कहलाती है । सीधी का उलटा कड़वी, मरखनी, मरखा है । ऐसे तेज स्वभाव की गाय के लिये मेरठ की बोली में एक चुस्त विशेषण सुनने को मिला—ईतरी । बड़ी ईतरी गाय है । यह पुराने वैदिक शब्द 'इत्वरी' से बना है । इत्वर का शब्दार्थ है गमनशील । अथर्ववेद में पृथ्वी को 'अग्रेत्वरी' सबसे आगे रहनेवाली, नेत्री कहा गया है (१२/१/५७) । ई धातु का अर्थ है जाना, उसी से त्वर जोड़ने से इत्वर, इत्वरी बनते हैं । गमनशील तो अच्छा अर्थ था, उसी में कालांतर में कुछ हेठा भाव मिलने से चंचल अर्थ हो गया । सूरदास ने उलाहना देनेवाली गोपियों के मुंह से कहलवाया है—'देखि महरि को कह उठीं सुत कीन्हों ईतर' । मेरठ की बोली में ईतरे बालक मुहावरा खूब चलता है । इतराना इसी से बनी हुई धातु है । झोंकनेवाली चंचल गाय के लिये ईतरी सार्थक शब्द है । भोजपुरी में इसके लिये करकट शब्द है, जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्कृत करटा (दुःखदोह्या तु करटा, हेमचन्द्र ४/३३५) से बना है । सब तरह बेऐब सीधी गाय सुथरी कहलाती है ।

गाय गर्मी नहीं मानती, पर भैंस घाम नहीं सह पाती । जो गाय भैंस की तरह धूप से घबड़ाकर पानी में खड़ी रहना चाहे वह गामर कहलाती है । जो दूध अधिक दे वह दुधार (दोग्ध्री) और जो घी अधिक दे वह घियाल है । जो दुधार और घियाल दोनों हो उसे कसरीली, और इसके विपरीत घी दूध की हेठी को कड्ढा कहते हैं । चुगाई जिसकी देह का मुटापा बढ़ावे वह मुटडंडी कहलाती है । जो छक कर खाने पर ही दूध दे वह करवाल, जो भलीमानस भूखी भी दूध दे वह सहेज, और जो एक ही आदमी से दुहने की आदी पड़ जाय वह इकहत्थी कही जाती है । जो मोटी ताज़ी, खा पीकर फरबे या तैयार हो वह सांवटी, जो हारी हुई हो वह ढोढा, जो बुड्ढी थकी हुई हो वह ढाँढरा या झड़ंबा, और जो दिखाने लायक हो वह दिखनौड़ू कहलाती है । इकबांसिया गाय बड़ी घियाल मानी जाती है । रीढ़ के बांस के पिछले भाग में पुट्ठों के मध्य में केवल बीच की हड्डी दिखाई पड़े और पुट्ठों की दोनों हड्डियां मांस में दबी हुई हों, ऐसी गाय इकबांसिया कहलाती है । जो पतला गोबर करे वह बिसैली कहलाती है । यास्क के निरुक्त में पानी के १०१ नामों में विष भी है । जान पड़ता है कि बहुत पुराने समय में बिसैली शब्द लोक की भाषा में चालू रहा होगा । पीछे चलकर विष शब्द का पानी अर्थ व्यवहार में नहीं रहा । चारों थन इकट्ठे जुड़े हुए हों तो कुल्हियाए थन कहलाते हैं । पपैया थन वे होते हैं जिनमें एक थन के अगले हिस्से में दो भाग हो जायँ, जड़ एक हो, दूध के सोत दो हों, और एक के दबाने से दोनों में से धार निकले । जिसके कुदरती दो ही थन हों वह बेलनी कहलाती है । सिर्फ तीन थनवाली को तेथनी कहते हैं । सींगों के कारण भी गायों के नाम पड़ते हैं पर वे शब्द बैलों के लिये विशेष रूप से काम में आते हैं । जो सीधे ऊपर को उठे हुए हों वे सलाये सींग कहलाते हैं । एक सींग ऊपर एक नीचे को हो तो सरगपताली नाम पड़ता है । सींगों की गठियासी बंध जाय तो उसे कैंडी और जिसके सींग पीछे को जाकर आगे को मुड़े उसे मुहरी कहते हैं ।

(३)

गाय भैंस के शब्द प्रायः एक से हैं । पर कुछ शब्द तो विशेष कर भैंस की प्रकृति या रूप रंग से ही बने थे । गाय की ओसर या कलोर की जगह भैंस की झुटिया कहलाती है । कटरा हो तो झोटा कहलाएगा । मुड़ी हुई सींग को कुन्नी कहते हैं । हेमचन्द्र के अनुसार सींग का एक पर्याय कूणिका भी था (४/२२६) । सम्भवतः दरांतीनुमा सींगोंवाली भैंस के लिये यह शब्द चला । सींग मुड़कर यदि बल जायँ तो उसके लिये मुर्रा और खुण्डी शब्द हैं । लोक में नरदक की खुण्डी भैंस प्रसिद्ध है । नरदक की भैंस, जंगल की घोड़ी, नागौर का बैल ये नामी हैं । जंगल से मतलब बीकानेर-राजस्थान का जंगल हो सकता है जहाँ के राजा जंगलधर पातशाह कहलाते थे । एक पंजाबी लोक गीत में खुण्डी भैंसों का सुन्दर वर्णन मिलता है—"राझां की भैंसें हूर और परी के समान हैं । उनके सींग मुड़ मुड़कर कुण्डे हो गए हैं, मानो सुनार ने बँगड़ी या कड़े बनाये हों । भैंसों का दूध क्या है, शरबत सा मीठा है । उनका घी तो देखो, मिस्री की डली है । जिस समय बाहर जंगल में चरने जाती हैं, अत्यन्त सुन्दर लगती हैं; और जब घास खाकर लौटती हैं, ऐसा जान पड़ता है, मानो बारात में दुल्हे को देखने के लिये लड़कियां उमड़ रही हों ।"[२]

जिसके माथे पर सफेद टीका हो, वह भैंस टीकली और जो गूगली रंग की हो, वह लोई होती है । भैंस की पूंछों के बालों का झुग्गा उसके शेष रंग से अवश्य भिन्न होता है । जिस भैंस का यह झुग्गा भी काला हो वह सौंकाली या कलपूंछी कही जाती है । जो सदा अपनी पूंछ एक ओर को डाली रहे, वह नड्डी या गंडउघार होती है । लोई, सौंकाली, गंडउघार तीनों असहनी अर्थात् अशुभ समझी जाती हैं । पहलवन भैंस झुटिया और तीसरे ब्यांत की लैन कहलाती है । ब्याई हुई ब्यांतड़ और बिकनेवाली बिक्कू कही जाती है । ये दो शब्द गाय के लिये भी समान हैं । दोनों आंखें सफेद हों तो कुंजी और एक आँख सफेद हो तो ताखी कहलाती है । जिस भैंस की टांट से आगे गड्ढा पड़े वह खंदैल और जिसकी टांट (कूबड़) से पीछे गड्ढा पड़े वह कुहेल होती है । कुहेल को भी अशुभ मानते हैं । टूटे सींग की डूंडी और कटी पूंछ की लांडी कही जाती है । ये शब्द गाय बैल के लिये भी हैं । माघ की ब्याई भैंस महावर कहलाती है । भादों की ब्याई गाय और महावर भैंस दोनों अशुभ मानी गई हैं । बहुत दिन की ब्याई भैंस के लिये हेमचन्द्र ने देशीनाममाला में परिहारिणी (चिरप्रसूतामहिषी) शब्द दिया है, परन्तु लोक में बाखड़ी या बखैनी ही चालू है । देशीनाममाला में और भी कुछ अपभ्रंश शब्द आए हैं, जो उस समय में देशी भाषा में चलते थे पर अब लुप्त हो गए हैं । उसके अनुसार दुद्धोलणी वह गाय या भैंस हुई जो एक बार दुहने के बाद फिर दुही जा सके । जो बहुत दूध की गाय हो वह पड्डत्थी, या जो बछड़े के लिये थन में दूध चुरा कर रख ले वह पड्डत्थी कहलाती थी ।

गोशाला के लिये लोक में सार शब्द है, जो शाला का ही रूप है । इसे गोठ (सं० गोष्ठ), खरक, बगार (वह स्थान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहाँ गाएँ बांधी जाती हैं, शब्द सागर पृ० २३५५), गोवाट भी कहते हैं । देशीनाममाला (५/८) में तहल्लिआ शब्द गोठ के लिये हैं, पर लोक भाषा में मुझे वह नहीं मिला । राजस्थान में उसके लिये नोहरा शब्द भी हैं । नोई का अर्थ है बांधने की रस्सी, और हरा सं० गृह से है अर्थात् वह स्थान जहाँ पशु बांधे जाते हों ।

(४)

बैल भारतीय किसान के जन्म के साथी और सखा रहे हैं । किसान के जीवन की गाड़ी खींचनेवाला बैल किसान के लिये ऐसा ही है जैसा देह के लिये प्राण । जसहर चरिउ के कर्त्ता पुष्पदन्त कवि ने बैल की प्रशंसा में ठीक ही कहा है—

विणु धवलेण शयडु किं हल्लई ।
विणु जीवेणु देह किं चल्लई ।।

धौले के बिना कहीं छकड़ा हिलता है ? जीव के बिना कहीं देह चलती है ?

आसाढ़ में पानी बरसने के बाद खेत की पहली फाड़ पांसा कहलाती है । आसाढ़ी की जुताई के लिये ही पांसा की उपाड़ शब्द है । पांसा की जुताई बड़ी कड़ी मानी गई है । तमाम जंगल एक साथ जुताई में आ जाता है और काम की मारामार रहती है । उस गाढ़े समय में दो ही प्राणी हिम्मत नहीं हारते, या तो दधीचि की हड्डी से बने किसान या उनके दृढ़ बैल । उस समय बैल की कमाई से कृतज्ञ किसान का हृदय कह उठता है—

भैया, गाय के जाए कू बड़ी खुदाई है ।

बड़े बूढ़े कह गये हैं 'गेहूँ कू बीस बाह, ईख कू तीस ।' यदि बैल न होते तो कौन छातीफाड़ कर खेतों की असाढ़ी के लिये बीस-बीस तीस-तीस बाहन देता । कराल हल जब खड़े हुए चलते हैं तब बैलों पर भारी जोर पड़ता है, पर फिर भी खेतों में खूँड़ खींच कर हलाई भरते हुए उनके पौरुख नहीं थकते । ऐसे ही माघ पूस के जाड़ों में चरसिये और कीलिये किसान बैलों के बलबूते पर कुओं को खेतों में उलीच कर रख देते हैं ।

किसान का विश्वास है कि यदि गाय की पहली कील (बियाने के बाद का दूध) बछड़ा पी ले तो कैसा ही कड़ा काम हो पसीना नहीं ला सकता । घर के बछड़ों को किसान बहुत ही प्यार करता है । उसका विचार है कि मामा भांजे की जोड़ी बड़े भाग्य से मिलती है । एक ही गाय से उत्पन्न बछड़ा बछिया हों तो बछड़ा मामा हुआ और बछिया का बछड़ा भांजा हुआ । मामा-भांजे की जोट हल में जोत कर किसान फूला नहीं समाता, मानो वह गोई उसके गोपालन की साक्षी भरती है । बाछा (सं० वत्सक), बछड़ा (वत्स, अपभ्रंश प्रत्यय डा), बाछरू-बछरू (सं० वत्सरूप), बछेड़ा (सं० वत्सतरक), बछेडू (सं० वत्सतर + रूप) आदि शब्द बोलियों में गाय के बच्चे के लिये प्रयुक्त होते हैं । बच्चा जब तक घास नहीं खाता, केवल दूध पीता है, तब तक पाणिनि के अनुसार उसकी शकृत्करि संज्ञा थी । मेरठ की बोली में उसे लवारा, भोजपुरी में लेरु कहते हैं । उसके लिए प्राचीन वैदिक शब्द था अतृणाद (वृ० उप० १/५/२) दूध पीने तक वह वत्स या बाछा रहता था । दूध छोड़ने के बाद बछड़ा (वत्सतर) कहलाता था । दो ढाई बरस तक के बछड़े के लिये वैदिक काल में दित्यवाह् शब्द था । पाणिनि ने भी इस शब्द का उल्लेख किया है (७/३/१) । परन्तु दित्य क्या था यह स्पष्ट नहीं होता । सम्भवतः बछड़ों के गले में बांधा जानेवाला डेंगुर दित्य शब्द से (दा बन्धने धातु + त = दित; जो बांधने योग्य हो वह दित्य) अभिप्रेत था ।

बछड़ों और बैलों के दाँतों से उनकी उमर की पहचान की जाती है । जन्म के समय गर्भ में से आठ दूध के दाँत होते हैं । जब तक सच्चे टिकाऊ दांत नहीं निकलते तब तक उसे उदन्त या अदन्त कहते हैं । सात दांत का उदन्त माना गया है—

सात दांत उदन्त को रंग जो काला होय ।
इनको कबहुँ न लीजिये दाम चहै जो होय ।।

दूध के दांत गिरने के बाद ढाई वर्ष की उमर के लगभग बछड़ा दांतता है । पहले दो दांत निकलते हैं और तब उसे दुदन्त (द्विदन्) कहते हैं । जो कुछ पहले ही दुदन्त हो जाते हैं उन्हें भरकदन्ता कहते हैं । भरकदन्ते का उल्टा ऊना होता है । ऊने पर जुआ नहीं रखते । उदन्त गाय का ब्याना बरदाना भी अशुभ है—

उदन्त बरदै उदन्त ब्याय । आप जाय या खसमै खाय ।।

दाँतों का हिसाब इस प्रकार है—

आयु	दाँतों की संख्या	नाम
२ से २ १/२ वर्ष	२	दुदन्त (सं० द्विदन्)
३ वर्ष	४	चौदन्त (सं० चतुर्दन्)
३ १/२ वर्ष	६	छद्दर (सं० षोडन्)
४ वर्ष	८	सं० अष्टदन्

आठ दांत भरने पर बैल पूरा समझा जाता है । चतुर बिहारी स्त्री ने पति को समझाया, हे कान्त ! बैल लेना हो तो दुदन्त बैल बिसाहना (बैल बेसाहै चललह कन्त । बैल बेसाहिह दू दू दन्त ।।) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्कृत के षोडन् (छः दांतवाला) के वजन पर हिन्दी में छद्दड़, सद्दड़, नौदड़ शब्द चालू हैं । ये तीनों असैने समझे जाते हैं । मेरठ की ओर कहा जाता है—

छद्दड़ सद्दड़ सूं कहै चलो मुसर घर जाय ।
घर के अपनी हैंक में पहले पड़ोसी खाय ।।

मुसर, वह बैल जिसकी पूंछ का रंग शरीर के रंग से भिन्न हो । हैंक = हलक । इसी का अवधी रूप इस प्रकार है—

छद्दर कहै मैं आऊं जाऊं ।
सद्दर कहै गुसैयें खाऊं ।।
नौदर कहै मैं नौ दिस धाऊं ।
हित कुटुम्ब उपरेहित खाऊं ।।

बछड़े के जवान होने, बढ़ने और पूरा बैल बनने तक की अवस्थाओं के सूचक कुछ चुस्त शब्द पाणिनि से प्राप्त होते हैं । जो बछड़ा जवानी के उठान पर हो वह जातोक्ष, जो यौवन में भर जाय वह महोक्ष, और जो पूरा बिजार (सांड़) बन जाय वह वृद्धोक्ष कहलाता था । इसी तरह जिसको नाथ कर बैल बनाना होता था उसकी भी तीन सीढ़ियाँ थीं—वत्स, दम्य, बलीवर्द । जवानी आने पर बछड़ों को जब से नाथा जाता है तब से उन्हें नाथहरि कहते थे । बछड़े के जीवन में नाथ डालना महत्वपूर्ण संस्कार था । दम्य हिलावर कहलाता है । बिना हिला हुआ अन्नट कहा जाता है । नया नया बैल अलल (सं० आर्द्रार्द) या अलल बछेड़ा कहलाता है । जिसका कद और उठाव दबा हुआ रह जाय वह नटिया और जो पूरा कद्दावर हो वह धुरंधर कहलाता था । नटिया बैल को देख कर खेत में खड़ी दूब भी किसान से हँसी करती है—

नटिया बरद छोटिया हारी ।
दूब कहै मोर काह उखारी ।।
बाछा बैल बहुरिया जोय ।
ना घर रहे न खेती होय ।।

अतएव किसान के लिये यह सीख है—

नाटा खोंटा बेचि कै चारि धुरंधर लेहु ।
अपना काम निकारि कै औरहु मंगनी देहु ।।

बैल के लिये रगड़न्त का काम होना चाहिए । खूंटे से बँधे-बँधे बछड़ा मट्ठर पड़ जाता है, जैसे पड़े-पड़े जवान आदमी की तोंद निकल आती है—

बांधा बछड़ा जाय मठाय ।
बैठ ज्वान जाय तुंदियाय ।।

अच्छे बैलों की पहचान गाँवों में बड़ी कला और चतुराई से समझी जाती है । छोटा मुँह, ऐंठा कान, यही बैल की है पहचान । अथवा, जिसका ललाट उभरा हुआ, सींग मुड़े हुए छोटे, मुँह गोल, रोएँ नरम और कान चंचल हों ऐसा बैल चलने में ततैया और अनमोल होता है ।[३] जिसकी रान मोटी, पिंडली पतली और पूँछ लम्बी भूमि में खिचड़ती हो उस बैल के मालिक को देखकर दूसरे सिहाते हैं ।[४] जिसकी देह भारी हो, पैर छोटे हों वह सुअरगोड़ा कहलाता है, उसके मुँहमाँगे दाम होते हैं ।[५] जिसके खुरों का रंग बैंगनी हो वह बैंगनखुरा बहुत मजबूत होता है ।[६] कंधे का नीला, देह का गठीला, आँखों का चमकीला बैल पूरा मर्द समझा जाता है; तिसपर यदि उसका लंगोट कसा हुआ हो तो कहना ही क्या ।[७]

बैल का लंगोट (पूंछ का निचला हिस्सा) काले रंग का अच्छा माना गया है । काला कछौटा हो, सुन्दर धौला रंग हो तो फिर ऐसे बैल को छोड़कर किसान को और क्या चाहिए ? उसी के साथ यदि कानों पर लम्बे बाल हों तो सोने में सुगन्ध ही समझिए ।[८]

काले कछौटे से ही क्या हुआ जबतक बैल की आँखें भी काली न हों ।[९] उसकी कजरारी आँखों में रगड़ा सा गिरा हुआ जान पड़ता है । जिसकी रीढ़ दबी हुई हो वह बैल बड़ा जोरावर होता है । ऐसी रीढ़ को बरार (नीची) कहते हैं ।[१०] इससे उल्टा बांसड़ा है जिसकी पीठ का बाँस उभरा हुआ होता है । जल्दी थक जाने के कारण वह हरवाहे को रुला डालता है ।[११]

बैल का ढीला मुतान देह के ढिल्लड़पन का सूचक है । खूब कसा हुआ हिरनमुतान बैल अच्छा माना गया है । ऐसा बैल मिले तो अनबूझे ले लेना चाहिए ।[१२]

पतली पूँछ का बैल पटुआ कहलाता है । पटुआ बैल देखते ही थैली खोल देनी चाहिए ।[१३]

बड़सिंगा बैल मत खरीदो, चाहे यों ही रुपये खोल कर कुएँ में फेंक दो ।[१४] पर ठिंगने सींगवाला मिले तो अवश्य ले लेना चाहिए ।[१५]

जिस बैल के सींग आगे की ओर झुके हों उसे मेरठ की ओर झूंगा, अवधी में घोंची कहते हैं । ऐसा बैल नदी पार दिखाई पड़े तो इसी पार थैली खोल कर रुपये गिनने के लिये तैयार रहो ।[१६] मिल जाने पर उसके बेंचने का सवाल ही नहीं उठता ।[१७]

जिसके सींग गिरनेवाले या गिरैला हों, वे गिर कर ही रहते हैं, रुकते नहीं । सींग की शोभा मुकटा बैल के मस्तक पर दिखाई पड़ती है । उसके सींग कमान की तरह अन्दर मुड़कर फिर थोड़ा ऊपर उठकर आपस में मिल जाते हैं और ऐसे लगते हैं जैसे तोरण हो । ऐसे बैल को किसान विष्णु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का रूप मानते हैं । जिसका एक सींग ऊपर और एक नीचे की ओर हो वह सरगपताली कहा जाता है । इसी को कंसासुरी भी कहते हैं जो अच्छा नहीं समझा जाता ।[१८]

टेढ़ी भौंहवाला (भौंआटेर) बैल भी मालिक पर दाँत रखने से अशुभ है । सींग कानों के बराबर नीचे को दबे हों तो ऐसा बैल कनचप्पी या मीना कहलाता है ।[१९]

बिहारी भाषा में इसे ही मैना कहते हैं । सड़क के उस पार मैना बैल देखना तो इसी पार से लेने देने की बात चला देना ।[२०] क्योंकि यह जरूर अच्छा निकलेगा ।

भेंड़ की तरह उमेठवा सींगवाला बैल भेंड़वाया मेढ़वा, बिना सींग का भुंडा या मुंडा, छोटे सींग का मुठिया या मुठहरा, बालों से ढंके कानवाला झवरा या झूतरा, कटी पूँछवाला बांडा या लांडा, एक सींगवाला एकसिंघा कहलाता है ।

रंग के हिसाब से भी बैल के गुण, दोष पहचाने जाते हैं । बिल्कुल धवल या सफेद रंग का बैल अनमोल है । उसके लिए मांगनेवाला जितना मांगे चार टका और ऊपर गिन देना चाहिए ।[२१]

जाट गूजरों की ठेठ किसानू बोली में बैल के लिये धौला बहुत ही प्रशंसा सूचक शब्द है । लाल रंग के बैल के लिये अवधी किसान चट से अपनी थैली खोल देना चाहता है, पर उसका बिहारी भाई खूब उठ बैठ कर उसे अच्छी तरह देख लेने के पक्ष में है ।[२२]

बैलों के जो रंग किसानों को नहीं रुचते उनमें महुअर (महुआ जैसा पीला) मुख्य है । 'मुंह का मोटा, माथे का पीला, ऐसे बैल के लिये, प्रिये, तुम्हारी क्या सलाह है ?' 'चल जाय तो आधा दाम, नहीं तो पैसा पानी में गया ।'[२३] ऐसा बैल धरती क्या जोत सकता है, एक दो हराई (हल की खूड) भले ही खींच दे; तुरंत मेंड़ पर बैठकर पागुर करना चाहेगा । जिसकी बरौनी (पलक के बाल) सफेद हों, हलवाहे को उसके साथ भी झींकना पड़ेगा । भूरे रंग का बैल भी अच्छा नहीं समझा जाता ।[२४]

बिहारी किसान की स्त्री उसे काले बैल की ओर से सावधान करती है, पर उसकी अवधी बहिन करिया बैल को सत्यानाशी की निशानी समझती है ।[२५]

चितकबरा बैल भी घटिया है, जिसके लिये मोल भाव करने या दांत देखने की जरूरत नहीं ।[२६]

खैरा बैल अवध और बिहार में कत्थई रंग का होता है । मेरठ की ओर गहरे पीले कत्थई रंग को गोरा और आसमानी रंग के बैल को खैरा कहते हैं । खैरा सब दोषों की खान है । जहाँ उसकी खुरी पड़े वहीं सब चापर हो जाता है । अगर गोठ में खैरा कुछ देर के लिये भी आकर बँध जाय तो बुहारी लेकर उसकी लार साफ कर डालनी चाहिए । सम्भव है खैरे के प्रति यहाँ कुछ अन्याय किया गया हो ।[२७]

कभी-कभी तो वह अच्छा चलवैया देखने में आता है । मेरठ की तरफ मुसरिया वह बैल होता है जिसकी पूंछ में सफेद और काले रंग के गंडेदार बाल हों । ऊपर सफेद नीचे काले हों तो मुसरिया लेकिन अगर ऊपर काले, नीचे सफेद बाल हों तो वही चौंरा कहलाता है । मुसर बैल को पछाँह में और पूरब में सब जगह असैना समझते हैं । छद्दड़ सद्दड़ से सलाह करता है, चलो भाई मुसर के घर चलें और उसकी मदद से मालिक को जपकर फिर पीछे पड़ोसियों को समझें । जो कोई मुसरहा बैल खरीदेगा वह राजा भी हो तो पलभर में छत्रभंग हो जायगा । वह ऐसा विकट चापरकरन है कि स्त्री बच्चे घरबार छुड़ाकर भीख मंगवा देता है ।[२८]

जो बैल माथे पर दगीला हो वह सौंख कहलाता है । वह भी बड़ा करामाती है, मुसरहे की भाँति ही मालिक को ललकारता है ।[२९]

अशुभ बैलों में उनासवा की भी गिनती है । जिसकी एक या दो पांसू अर्थात् पसली छोटी हों वह उनासवा (ऊनपार्शुक) कहलाता है । अवधी में इसे नासू कहा गया है । वह राज्य बिलट कर राव से रंक कर डालता है ।[३०]

पुछकटा बैल बाँड़ा कहलाता है । जिसके लम्बे चौड़े शरीर में हड्डी ही हड्डी दिखाई देती है और जिसके गाँव भर तक फैले हुए सींग, जान पड़े, छान का छप्पर भी उठाकर फेंक देंगे, उस बैल के लिये किसान ने अपने प्रेम का व्यर्थ प्रयोग नहीं किया ।[३१] पर सच पूछिये तो किसान जिससे रो देता है वह गादर बैल है । जिसके पल्ले गादर पड़ जाय वह भाग्य का पोच है ।[३२] उसे राज छोड़कर जोग साधना पड़ता है । जब गादर की कृपा से खेतीबाड़ी कुछ पूरी न पड़ेगी, तब जोग तो साधना ही हुआ । गादर की माया अपरम्पार है । किसान कितना ही चुस्त हो गादर पल्ले पड़ जाय, तो धुरियाधाम किए बिना नहीं छोड़ता, किसान का सारा काम पट्ट हो जाता है । गादर को आलस्य का अवतार ही समझिए—

इक दिन रहा अदिनकर फेर ।
तारा पर हमचरी अनेर ।।
केहू बटोही हर हर कीहा ।
अस कै गिरै चेत नहीं रहा ।।
चरवाहे पुपुई लायन जाय ।
घर से गुसैंया खटिया ले आय ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सात पाँच जन लिहेन उठाय ।
लैगे गुलौरी में दिहेन बहाय ।।
आगि लागि हम भितरहिं जरे ।
जुआ देखि के नांहिन निकरे ।।

'एक दिन हम ताल के किनारे छुट्टा चर रहे थे । बदकिस्मती से किसी बटोही ने हर हर शब्द बोल दिया । हमने क्या समझा कि हल आ गया । ऐसे गिरे कि होश न रहा । चरवाहों ने पोई पोई करके बहुत हल्ला मचाया, तब घर से मालिक खटिया ले आए, हमें लादकर घर ले गए और गुड़गोई में लिटा दिया । संयोग से वहाँ आग लग गई, हम वहीं जल मरे, पर टस से मस न हुए ।' गादर बैल की काम के प्रति जो मनोवृत्ति होती है, उसका चित्र उसी के शब्दों में सुनने लायक है—

छाती फाटै खुर भर्राय । खरी बिनौरा के मोरे खाय ।।
डंडा चार बबुर के सहवै । राजा होय गोरुन में रहवै ।।

'हल हेंगा खींचने से छाती फटी जाती है, खुर चिर जाते हैं । कौन खली बिनौले के लालच में पड़ कर झंझट मोल ले, भले ही बबूर के चार डंडे की मार पड़े । अपने राम को तो गोरुओं के बीच मस्त घूमने दो ।' जो गादर होते हैं, ऐसा उपद्रव करते हैं कि कुछ पूछो नहीं; कितना ही मारो आगे पैर नहीं उठाते । जब मारने लगो तो और चार पैर फैला देते हैं कि जितना मारना हो मार लो ।

गादर को गरिआर भी कहते हैं । पछांह में उसके लिये गलिया शब्द है, जो संस्कृत गलि से बना है । गादर के मुकाबले में मेहनती बैल को देखकर किसान को कुछ हिम्मत बँधती है । जिसके छोटे कान हों और पूँछ में बालों की झम्पा झूलन हो, ऐसा बैल मेहनती होता है ।[३३]

किसान के लिये तड़कने-भड़कनेवाले, चौंकने-चमकनेवाले बैल अच्छे नहीं । उनकी वजह से कुएँ में, गाड़ी में जान-जोखिम हो सकता है ।[३४]

मरखना या मरकहा बैल रखने से रोज न रोज कोई उलाहना लिए खड़ा रहेगा ।[३५]

जो लात चलावे वह लतहा होता है ।

खूब कोख तानकर खानेवाला बैल चारु कहलाता है । किसानों का अनुभव है, चारू सो भारू, जो खूब चरता है वह देह में भी तगड़ा रहता है । चारू का उल्टा मनचर अर्थात् कम खानेवाला होता है । जो खाते समय राल बहुत गिराता है, वह रालू कहलाता है । जो बैल भीतर से रस निकाल कर मुँह से गिराते रहते हैं, वे रसउगाल होते हैं ।

बैल को रखने की भी युक्ति है जिससे वह दीर्घजीवी बन सकता है । सार या गोठ को बरसात आने से पहले ही छवा लिया जाय, भूसा रखने का भुसैला भी छवा कर सूखा कर लिया जाय, चौरस धरती में खेत बनाया जाय, किसान का बेटा स्वयं चरावे, भादों के मेह में भी बैल बाँधने का स्थान सूखा रखा जाय, तो बैल बीस बरस तक काम देगा ।[३६]

यदि खरक में धूप, धूल और धुएँ का प्रबन्ध हो तो बैल पच्चीस बरस तक तगड़ा रहेगा । इतना प्रबन्ध करने से मच्छड़, मक्खी, डाँस बैल को तंग नहीं करेंगे और गोरू सार में पूरी नींद और आराम पाएँगे ।[३७]

बैल का एक कौल और है—यदि मुझे छोटे मोटे खेतों में न जोतोगे, यदि मुझे दाहिनी ओर न नाथोगे और यदि गायों को मुझसे न मिलाओगे, तो मैं बीस बरस तक बरदई साधने का दम भरता हूँ ।[३८]

बैल ने ये तीन वचन किसान की भाषा में सूत्र रूप से कहे हैं । पूरे अर्थ तक पैठने के लिये इनकी व्याख्या आवश्यक है । पहला वचन बैल ने मांगा कि मुझे छोटे खेतों में मत जोतो । खेत की जुताई के लिये जब हल चलाकर खूड बनाते हैं तो उसे हलाई भरना या कहीं मांग भरना भी कहते हैं । हलाई खेत के बीच से शुरू होकर बाहर की तरफ फैलती है । मेड़ या डौले के बराबर तीन-चार खूड़ों की धरती छूटी रह जाती है, उसे धीरा कहते हैं, जिसे आखिर में जोता जाता है । हलाई लम्बोतरी पड़ती है और खेत के कोने पर बैल को हर बार मुड़ना पड़ता है । खूड के घुमाव या मोड़ को मोड़ा कहते हैं । चारों कोनों पर खेत का जो भाग छूट जाता है उसे भी जोतना जरूरी है । बीच की जुताई के अन्त में किसान प्रत्येक कोने से बीच की ओर हल चला कर प्रत्येक मोड़ पर छूटी हुई धरती या मोड़े की हलाई भरता है । इसे मोड़े काटना कहते हैं । अगर खेत का एक ही बड़ा चक हो तो बैल को सीधी हलाई करनी पड़ेगी और अन्त में सिर्फ एक बार मोड़े काटने पड़ेंगे । लेकिन अगर बीस बीघे की जोत बैल ने की और बीघे भर का खेत हुआ तो हर बार मोड़े काटने से बैल मर मिटेगा । इसीलिए उलिया कुलिया खेत (अंग्रेजी स्माल होल्डिंग) का जोतना बैल ने अपने लिये जानमारू काम समझा । बार बार मुड़ना बैल के मस्तिष्क और शरीर के लिये अच्छा नहीं । इसीलिए दांय चलाने या अनाज की मणनी करने में भी बैल घबड़ाता है । कोल्हू के बैल की तरह खेती के बैल को जब घूमना पड़ता है, उसके कूल्हे थक जाते हैं । उसका दूसरा कौल है—मुझे दाहिने मत जोतो । बाएँ हाथ का बैल उपराली और दाएँ का तरवाली कहलाता है । हल्का बैल उपराल में और तगड़ा तरवाल में नाधा जाता है । तरवाली को हल-जुए में ज्यादा जोर लगाना पड़ता है । मोड़ पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहुँचकर बायाँ बैल तो खड़ा होकर मुड़ जाता है, पर दायें को अधिक चलकर जुआ खींचना पड़ता है । इसलिए हमेशा दायाँ नाधना बैल की जान खींच लेता है । अगर उलिया कुलिया खेत हुए तो बार बार के मोड़ पर दाहिना बैल मर मिटेगा । दाएँ का एक अर्थ दाँय चलना या मणनी भी होता है । यह काम भी बैल के लिये बड़े कसाले का समझा जाता है ।[३६]

संस्कृत में जिसे सीता कहते हैं बोली में वह खूड कहलाती है । जब हल खूड की तरह जाता है तो उपराली बैल को आहां आहां कहा जाता है । इसे ओनाना कहते हैं । जब पहली खूड से हल हटकर चलता है और खूड मोटी पड़ने लगती है, तब तरवाली यानी दाहिने बैल को तिकतिक का इशारा देकर हाँकते हैं । इसे तिकारना कहते हैं । किसान बैल की भाषा और बैल किसान की भाषा समझते हैं । कबीर ने कहा है—'आहां समझे तिकतिक समझे, पुचकारे से होय खड़ा । कहे कबीर सुनो भाई सन्तो, मूरख से तो बैल भला ।।'

बैल ने दीर्घायु के लिये किसान से जो तीसरा कौल भराया वह है मनुष्य, पशु सबके लिये एकसा जीवन का नियम अर्थात् ब्रह्मचर्य । अथर्ववेद के ऋषि ने जगत् में व्यापक इस मूल्यवान् तत्व को पहचानते हुए कहा था—पृथ्वी में, आकाश में, जंगलों में, गाँवों में विचरने वाले जो पशु और पक्षी हैं, वे ब्रह्मचारी हैं, अर्थात् जीवन के विकास के लिये प्रकृति ने जो नियम स्थिर किए हैं, उनका पालन करते हैं । बैल, घोड़ों के लिये भी शक्ति का स्रोत ब्रह्मचर्य ही है । बैल की शक्ति का सच्चा मर्म जाननेवाले ऋषि ने कहा है—

अनड्वान् ब्रह्मचर्येण

(अथर्व ११।५।१८)

ब्रह्मचर्य से ही बैल अनड्वान् बना है । अनट् छकड़ा, उसको चलानेवाला अनड्वान् । तिबल्दी गाड़ी में बींड़िया बनकर छाती फुलाता हुआ, काले नेत्रों में प्रसन्नता लिए हुए जब बैल आगे आगे चलता है तब उसकी शक्ति और शोभा देखने योग्य होती है । इसी शाक्वरी (कर सकने की) शक्ति के कारण वैदिक भाषा में बैल की एक संज्ञा शाक्वर थी ।

गाय बैलों के लिये किसान का प्यार उनकी सजावट के रूप में प्रकट होता है । वह उनके सींगों को लाल पीले मुंडासे, चेहरे को रंगीन नाथ और गलथनी से, गले को कौड़ियों की माला और जगाधरी की बनी हुई बारीक आवाजवाली चिड़िया—चौंकनी टल्लियों से सजाता है, कन्धों पर झूल डालता है, एवं देह और गले की सासना (गलकम्बल) पर भांति भांति के चित्र लिखता है । जंगल में मठारते हुए, लोटती टांट वाले सांड़ों की दड़ूक में मानो सारे जनपद जन की ध्वनि सुनाई पड़ती है । किसी समय कुरुक्षेत्र, हरियाणा, मथुरा, मत्स्य देश के जंगल गायों और बैलों से भरे हुए थे । विराट देश के द्वैतवन में कुरुराज दुर्योधन की गाएँ छुट्टा चरती थीं । वहीं से राज्य के लिये गो सम्पत्ति प्राप्त की जाती थी । एक बार उसने अपने घोष की जन-संख्या जानने के लिये वहाँ मेला किया, जिसे महाभारत में स्मारण कहा है । पाणिनि ने गायों की गिनती करनेवाले विशेषज्ञ गोसंख्य नामक अधिकारियों का उल्लेख किया है । स्मारण में बछड़े, बछिया, तुरत की ब्याई बाल-गौएँ, ग्याभिन ओसर (उपसृता), तीन बरस के जवान बछड़े (त्रिहायन), सबका अलग-अलग जानकर उनपर अंक और निशान (लक्ष) लगाए गए जिससे अगले वर्ष फिर उनका मिलान किया जा सके ।

(वनपर्व २४०।४-६)

गौ के प्रति देश के प्राचीन भावों को फिर हमें प्राप्त करना है । गौ के शतधार झरने को राष्ट्र के नवोदय में सहस्र धार बनाना होगा । कहते हैं वेदों में बहुत ऊँचा ज्ञान है, हो सकता है । पर उस साहित्य में से जीवन के लिये आवश्यक यदि कुछ चुनना हो, तो एक सूक्त लेकर हम सन्तोष करेंगे, जिसमें भारतीय घरों की अधिष्ठात्री शालादेवी का रूप खड़ा किया गया है ।

हे गृह देवी, जिस नींव पर तुम टिकी हो, वह घी से सींची गई है । उसी में क्षेम भरा है । तुम्हारे उस रूप में वीरों का निवास है जिनके शरीर कभी रिसते नहीं । हे शाला, तुम गोमती हो, गोधन पर तुम टिकी हो । घी दूध की सबल धार तुम्हारे मंगल द्वार में प्रवेश करती है । तुम वह कोठार हो जिसकी छत ऊंची है और जिसमें फटका पछोरा अन्न भरा है । हे देवीशाला, जिस दिन यहाँ छोटा कुमार आवे, उसी दिन उसका भाई कूदता हुआ बछड़ा भी आवे, और उसके साथ आवे संझा को पन्हाती हुई दुधार धेनु । हवा पानी धूप गर्मी अपना अपना चक्कर चलाती हुई इस घर के जीवन को ठीक रक्खें । हवाओं में जो गीलापन है वह घी बनकर हवा में बरसे और हमारी खेतिहर भूमि सब तरह के धान्य से लहलहा उठे ।

हे घर की कल्याणमयी देवी, देवों ने सुमति करके तुम्हें पूर्व में बनाया था, तुमने घास फूस का वस्त्र पहना, वही तुम्हें भाया, और उसी में वीर पुत्र और धन तुमने दिए । तुम्हारे ठाठ का कमरबल्ला (प्राचीन वंश) सत्य के नियम से टिका है । अपने भीतर तुमने जिन्हें पाला-पोसा, वे छीजें नहीं, बल्कि पुत्र पौत्रों के साथ सौ वर्ष तक जिएँ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाँ, इस घर में हमारा तरुण कुमार गाय के बछड़े के साथ आयेगा और फेनिल दूध से भरे गगरे दही के कलशों के साथ आएँगे । हे देवि, घी का पूर्ण कुम्भ यहाँ भर दो जिसमें अमृत की धार मिली हो । फिर घी का मांट पीनेवालों के शरीर पर अमृत का पुचारा फेर दो । यक्ष्मा का नाश करनेवाले अमृत को हमारे इन घरों में उंड़ेल दो ।

(अथर्व ३।१२)

इस गान के सुर में घी दूध की लय है । जिस फूंस के छप्परों में ढाई सौ पीढ़ी सौ-सौ वर्षों तक जीवित रहीं, वे क्षीर गंगा के तट पर बने थे; उनमें मनुष्य के तरुण कुमारों के साथ गायों के कलोर बछड़े भी जीवन के नवमंगल में साझेदार थे । उनमें फेनिल दूध के मांट और चक्का दही के हंडे गृहस्थ की बंहगी में एक साथ लदते थे । पुर और जनपदों में पनपने वाले भारतीय जीवन के ये सच्चे चित्र थे जब उनमें गौ का शतधार झरना झरता था । आज गौ रूपी दूधिया झरने की घर-घर में बाट देखी जा रही है ।

(सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, कालपी से)

◆

टिप्पणी

१. इमं साहस्रं शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिरस्य मध्ये ।
घृतं दुहानमदितिं जनायाग्ने मा हिसीः परमे व्योमन् ।।
(यजु० १३।४)

२. मज्झीयाँ सज्झीयाँ नां, रझिंयां, सारा जग्ग आहँदा वे ।
तेरीयाँ मज्झीयाँ नां, चाकावे, हूरां ते परीयां ।
सिंग तां मज्झीयां दे वलवल कुण्डे हो गये वे ।
ज्यों ता वंगा, चाकावे, सुनियारे ने घड़ियां ।
दुद्ध तां मज्झीयां दा, चाकावे, मिस्री दीयां डलीयाँ ।
घियो तां मज्झीयां दा, चाकावे, मिस्री दीयां उलीयां ।
बाहर जांदीयां जंगल वेला सुहांदीयां ।
घा खा के मज्झीयां घरांनूं मुड़ियां,
ज्यों जन्नवलाहे नूं दुक्कीयां कुडीयां ।।
(यह लोक-गीत मुझे श्री देवेन्द्र सत्यार्थी जी की कृपा से प्राप्त हुआ था ।)

३. सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवे गोल ।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल ।।

४. पतली पेंडुली मोटी रान । पूँछ होई भुंई में तरियान ।।
जाके होवे ऐसी गोई । वाकौ तकैं और सब कोई ।।

५. मीहीं रोवां पतरी पूँछी सुअर गोड़ा जो पाए ।
मांगन वाला जितनइ मांगे उतनेइ दाम दे आए ।।

६. नीला कंधा बैगन खुरा । कबहुँ न निकलै कंता बुरा ।।

७. फेंट बंधीला देह गठीला, आँखों का चमकीला ।
भाखै नानकचन्द मरद हैं, बर्ध कंध का नीला ।।

८. करिया काछी धौरा बान । इन्हें छांड़ि जनि बेसह्यो आन ।।
कार कछौटी सुनरे बान । इन्हें छांड़ि जनि बेसह्यो आन ।।
बिहारी भाषा में भी कसे हुए और काले काछ वाले बैल की प्रशंसा है ।
काछ कसौटी सांओर बान । ई छांड़ि किनिहि मत आन ।।

९. बैल लीजै कजरा । दाम दीजै अंगरा ।।

१०. स्वेत रंग और पीठ बरारी ।
ताहि देखि जनि भूल्यो अनाड़ी ।।

११. बाँसड़ औ मुँह धौरा । उन्हें देखि चरवाहा रौरा ।।

१२. हिरन मुतान औ पतली पूँछ । बैल बैसाहो कन्त बेपूँछ ।।

१३. जहँ देखै पटवा के डोर । तुरतहिं दिहै थैलिया छोर ।।

१४. बड़सींगा जनि लीजौ मोल । कुएँ में डारो रुपिया खोल ।।

१५. छोटे सींग औ छोटी पूँछ । ऐसे का बेसह्यो बे पूँछ ।।

१६. घोंची देखै बहि पार । थैली खोले बहि पार ।।

१७. जिसके सींग न्यूँ । उसे बेचै क्यूँ ।।
न्यूँ = इस तरह के, तर्जनी और मध्यमा उँगलियों को बीच से मोड़ कर झूँगा के सींगों की अनुकृति ।

१८. सरगपताली भौंआ टेर । अप्पन खाय परौसिया हेर ।

१९. मियनी बैल बड़ो बलवान । तनिक में करिहै ठाढ़े काम ।।

२०. जब देखिह मैना । तब एहि पार से करिह बैना ।।

२१. जहाँ देखिहो रूपा घंबर । टका चार बरु दीहऊ अंबर
।।अवधी।।
जब देखिह रूप धौर । टका चार दीह उपरौड़
।।बिहारी।।

२२. जहां वां देखिह लोह बैलिया ।
तहँवां दीहा खोलि थैलिया ।।
जब देखिह बैरिया गोल ।
उठ बैठ के करिह मोल ।।
ग्रियर्सन, बिहार प्रेजेंट लाइफ, पृ० २९० । बैरिया—लाल बेर के रंग का ।

२३. मुंह का मोट माथ का महुअर ।
इनहू का कछु कहब बहुअर ।।
चलै तो आधा दाम तरे ।
नहीं दाम पानी में परे ।।
(अपने पूज्य गुरु श्री पं० जगन्नाथ जी से प्राप्त पाठ)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुंह का मोट माथ का महुआ ।
इन्हें देखि जनि मल्यौ रहुआ ।।
धरती नहीं हराई जोते ।
बैठ मेंड़ पर पगरु करै ।।

पं० रामनरेश त्रिपाठी का पाठ, हमारा ग्राम साहित्य, पृ० ३९२ ।

उजर बरौनी मुंह का महुआ । ताहि देख हरवाहा रोआ ।।

पं० श्रीकृष्ण विशारद का पाठ, घाघ और भड्डरी की कहावतें १-४६ ।

२४. बैल बेसाहन जाओ कन्ता । भूरे का मत देखौ दन्ता ।।
२५. करियउ का कुछ कहब जोय । तबहु दहियर जावै खोय ।।
२६. बरद बेसाहन जाओ कंता । कबरे के जनि देखहु दन्ता ।।
२७. बरद बिसाहन जाओ कंता । खैरा का जनि देखो दंता ।।
जहाँ परै खैरे की खुरी । तो कर डारै चापर पुरी ।।
जहाँ परै खैरे की लार । बढ़नी लेके बुहारो सार ।।
२८. बैल मुसरहा जो कोई लेय । राज भंग पल में कर देय ।।
त्रिया बाल सब कुछ छुट जाय । भीख मांग के घर-घर खाय ।।
२९. सौंख कहै मोर देख कला । बे मेहरा का करौं घरा ।।
३०. नास करै राज का नास ।
३१. डग डग डोलन फरका पेलन कहाँ चले तुम बांडा ।
पहले खाइब रान पड़ोसी गोसैंए कब छांडा ।।
३२. वह किसान है पातर । जो बरदा राखै गादर ।।
ताखा भैंसा गादर बैल । नारि कुलच्छनि बालक छैल ।।
इनसे बाचैं चातुर लोग । राज छाड़ि के साधैं जोग ।।
३३. पूँछ झम्पा औ छोटे कान । ऐसे बरद मेहनती जान ।।
३४. बैल चमकना जोत में औ चमकीली नार ।
ये वैरी हैं जान के लाज रखै करतार ।।
बैल तरकना टूटी नाव । ये काहू दिन लेहैं दांव ।।
३५. बैल मरखना चमकुल जोय ।
वा घर ओरहन नित उठि होय ।।
३६. समरथ जोते पूत चरावै । लगते जेठ भुसैला छावै ।।
भादों मास उठे जो गरदा । बीस बरस तक जोतो बरदा ।।
३७. धूप धूर धूवां जो जहवां । बरद पचीस बरस रह तहवां ।।
३८. ना मोंहि नाधो उलिया कुलिया, ना मोंहि नाधो दाएं ।
बीस बरस तक करौं बरदई, जो ना मिलिहैं गाएं ।।
३९. मरद निकौनी बरदै दांय । दुभरी चलनी में दुख पांय ।।

मर्द खेत की निराई में, बैल मणनी में और गर्भिणी रास्ता चलने में दुःख पाती हैं ।

मन की पवित्रता

एक बार वाराणसी में प्रातःकाल की मधुर बेला में लोग गंगा-स्नान कर रहे थे । गहराई की आशंका से कुछ ब्राह्मणों का जल में प्रवेश करने का साहस नहीं हो रहा था । वहीं एक किनारे पर सन्त कबीर भी स्नान कर रहे थे । ब्राह्मणों की आशंका को देखते हुए उन्होंने अपना लोटा मांजकर ब्राह्मणों को दिया जिससे वे सुविधापूर्वक स्नान कर सकें ।

कबीर का लोटा देख कर ब्राह्मण भड़क उठे । वे चिल्लाये—'अरे जुलाहे ! लोटे को दूर रख, हमें छूना नहीं, तुम्हारे लोटे से स्नान करके हम अपवित्र हो जायेंगे ।'

इस पर कबीर दास बड़ी गंभीरता से बोले—'मैंने लोटे को कई बार मिट्टी से मांजा और गंगाजल से धोया फिर भी यह साफ नहीं हुआ तो मेरी समझ में यह नहीं आता कि दुर्भावनाओं से भरा हुआ तुम्हारा यह तन गंगाजल में स्नान से कैसे पवित्र हो पायेगा ?'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो-सेवा में तन-मन-धन से जुटने का आह्वान

✍ डॉ० प्रेमलता शर्मा

यह 'आह्वान' किसके लिये है ?

उसके लिये नहीं—जो केवल गोमाता की जय बोल कर सन्तुष्ट रहना चाहता हो ।

उसके लिये अवश्य है—जिसके चित्त में गोमाता के लिए कुछ न कर पाने के कारण छटपटाहट हो, कुछ न कुछ करने की अकुलाहट हो—भारत में गाय-बैल की दुर्दशा देख-सुन कर जिसे तड़पन होती हो, जिसकी बेचैनी छलक पड़ती हो—जो भारत को केवल भूखण्ड नहीं, अपितु विशिष्ट सांस्कृतिक चेतना का पुञ्ज समझता हो ।

उसके लिये भी है—जिसे गोरक्षा की बात में दकियानूसीपन की गन्ध आती हो ।

इस आह्वान को सुन लिया हो तो आइये, अपना-अपना कर्तव्य मार्ग हम अपने-अपने स्वधर्म के अनुसार तय करें, और इस प्रक्रिया में जिस हृदय-मन्थन में से गुजरना अनिवार्य हो, उसके लिए तैयार रहें ।

यदि हम

१. शिक्षक या विद्यार्थी हैं तो मानव-जीवन में श्रम का स्थान, श्रम में नर-बल के साथ पशु-बल का सहयोग और मानव की बुद्धि-मेधा के संवर्धन में गोदुग्ध का स्थान समझें-समझायें ।

२. माता-पिता हैं तो अपनी सन्तान को ताजा गोदुग्ध; छेना, छेना व दूध की मिठाई का ही सेवन करायें और उनमें गोमाता के प्रति कृतज्ञता का भाव-बीज बोयें । बाजारू कृत्रिम पोषक द्रव्यों का उपयोग यथासम्भव न करें ।

३. चिकित्सक हैं तो गोवंश की चिकित्सा में परम्परा प्राप्त नुस्खों, औषधियों, जड़ी-बूटियों की खोज करें और मानव-स्वास्थ्य की रक्षा में गोदुग्ध, गोमूत्र आदि की महिमा उजागर करें ।

४. अर्थशास्त्री हैं तो श्रम-केन्द्रित अर्थ-व्यवस्था में गाय-बैल का स्थान समझें-समझायें । पूँजी-केन्द्रित अर्थव्यवस्था को सर्वग्रासी बनने से रोकने के उपाय सोचें । गोवंश के प्रति समग्र दृष्टि विकसित करें, जिसमें दुग्ध; खाद, जलावन, जोत और ढुलाई का यथोचित स्थान हो । इस दृष्टि के अनुसार गाय-बैल जीवन के अन्तिम क्षण तक अनुपयोगी नहीं होते—इस सत्य को प्रतिष्ठित करें ।

५. कृषि-शास्त्री हैं तो केन्द्रीय खाद को रासायनिक खाद की तुलना में वरीयता कैसे मिले, इसके उपाय सोचें । विषाक्त रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर गोमूत्र के प्रयोग पर अनुसन्धान करें, करायें ।

६. व्यवसायी या उद्योगपति हैं तो गोमांस, गोचर्म आदि के व्यापार और निर्यात बन्द करने-कराने का उद्यम करें, और उद्योग में गाय की खाद्य-वस्तुओं का (अन्य वस्तु बनाने में) उपयोग न बढ़े, इसका ध्यान रखें ।

७. कृषक हैं तो गोसेवा को कृषि का अभिन्न अङ्ग बनाये रखें । बैल को हटा कर 'ट्रैक्टर' आदि न लायें ।

८. वकील या कानून के ज्ञाता हैं तो गोरक्षा-सम्बन्धी कानूनों का पालन कराने के लिये निःशुल्क पैरवी करें, या सलाह दें और गाय के शोषण के स्थूल-सूक्ष्म रूपों का, उनके पोषक निहित स्वार्थों का पर्दाफाश करें ।

९. न्यायाधीश हैं तो गोरक्षा-सम्बन्धी कानूनों के छिद्रों की आड़ में जोर पकड़ती गोहत्या का प्रतिकार करें ।

१०. नीति-निर्धारक हैं तो भारतीय समाज में गाय के केन्द्रीय स्थान को समझ कर तदनुसार आर्थिक, औद्योगिक, शैक्षणिक, निर्यात-सम्बन्धी नीति बनायें ।

११. धर्माचार्य-सन्त-महन्त हैं तो मठों-मन्दिरों में गोदुग्ध-गोघृत के ही उपयोग का नियम बनायें ।

१२. चिन्तक-विचारक हैं तो मानव-जीवन के 'संस्कार' में गोवंश के साथ प्रेममय सम्बन्ध के मर्म को प्रकट करें ।

१३. पत्रकार हैं तो गोरक्षा के प्रयत्नों के समर्थन और गोवंशनाश के दुश्चक्र के विरोध के लिए जनमत तैयार करने के उद्देश्य से तत्सम्बन्धी समाचारों को प्राथमिकता दें ।

१४. कवि या लेखक हैं तो गोवंश की मूक वेदना को वाणी दें, जिससे पत्थर पिघलें और उपेक्षा-उदासीनता के स्थान पर करुणा-संवेदनशीलता जागे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५. पुलिस अधिकारी या कर्मचारी हैं तो गोरक्षा के कानूनों को तोड़नेवालों को पकड़ने तथा दण्डित कराने में सहयोग करें । चोरी-छिपे गोवध, अवैध लदाई और राज्यान्तरण इत्यादि को रोकें ।

१६. कत्लखाने के अधिकारी या कर्मचारी हैं तो कानून के छिद्रों की आड़ में गोवध को बढ़ावा देने का और स्वस्थ गाय-बैलों को भी 'अनुपयोगी' करार देने का घोर पाप करते हुए यह न समझें कि आप प्रत्यक्ष गोहत्या नहीं कर रहे हैं ।

१७. मांसाहारी हैं तो कम से कम मानव-जीवन के लिए सर्वाधिक उपयोगी पशु—गो-वंश (किसी भी आयु व स्थिति के गाय-बछड़ा-बछिया-साँड़) का मांस वर्जित रखें ।

१८. सामान्य नागरिक हैं तो—(१) अपने घर में निकलने वाले सब्जी-फल के छिलकों, भूसी, चोकर आदि को अलग रखें, कूड़े में न मिलायें—यह सामग्री किसी गाय का ग्रास बने, इसका उपाय करें ।

(२) सुविधा हो तो एक गाय अवश्य पालें ।

(३) गोदुग्ध को भैंस-दूध के समान दाम दें । दोनों की तुलना सूक्ष्म गुणवत्ता से करें, न कि ऊपरी गाढ़े-पतलेपन से या 'फैट' की कमी-बेशी से ।

(४) नगरों में प्रत्येक बस्ती में ताजा गोदुग्ध सुलभ हो सके, इसके लिए गोशालाओं की स्थापना के लिए आवाज उठायें ।

(५) गोवंश का महत्व केवल 'हिन्दू' के लिए नहीं, भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए है, इस सत्य को समझें-समझायें ।

(६) 'हिन्दुहिं मधुर न देहिं, कटुक तुरुकनि न पियावहिं'—इस ऐतिहासिक वाक्य का सतत स्मरण करें ।

(७) गोसेवा, गोरक्षा के प्रयत्नों में यथाशक्ति आर्थिक सहायता दें ।

(८) जो निरामिषभोजी (शाकाहारी) हैं वे किसी भी नाम वाले वनस्पति घी का, और उससे बनी वस्तुओं का उपयोग न करें क्योंकि उसमें मृत-चर्बी (अधिकतर गाय की) मिली होती है । यों भी वनस्पति घी हृदयरोग का कारण बनता है । सादे खाद्य तेलों का उपयोग करें ।

(९) हम सबके हाथ किस प्रकार परोक्ष रूप से गाय के रक्त में सने हैं—इसे समझें और स्वीकारें ।

हम सब

जागें !.....सोचें !.....समझें !.....बोलें !....करें !

◆

ज्ञान-वैराग्य और भक्ति की त्रिवेणी

वृंदावन में अपने दो पुत्रों के साथ, विलाप करती हुई एक तरुणी के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए नारदजी ने उससे उसके दुःख का कारण पूछा । उस तरुणी ने कहा—मेरा नाम भक्ति है और ये दोनों मेरे पुत्र हैं—ज्ञान और वैराग्य । मैं इनकी मां अभी भी जीवित हूँ, जबकि इन दोनों की मेरे रहते हुए ही मृत्यु हो रही है । अपनी करुण गाथा सुनाते हुए भक्ति ने कहा कि मैं द्रविड़ देश में पैदा हुई, कर्नाटक में बढ़ी, कहीं-कहीं महाराष्ट्र में भी सम्मानित हुई और गुजरात पहुँचकर बूढ़ी हो गयी । वहाँ से चलकर वृंदावन आई । वृंदावन आते-आते मेरा यौवन फिर लौट आया । मैं दिन-रात नवांगना होती जा रही हूँ, परन्तु मेरे इन दोनों पुत्रों के स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ । मां युवती और पुत्र जर्जर वृद्ध ! यह कैसी विडंबना है ?

नारदजी ने विचार कर इस विपरीत दशा का कारण वृंदावन में भक्ति की प्रबलता और ज्ञान-वैराग्य की उपेक्षा बताया । युवती भक्ति के निवेदन से पसीज कर नारदजी ने उन दोनों वृद्धों के कान में मंत्रोच्चार कर कहा, 'ज्ञान जागो···वैराग्य जागो ।' मगर उन दोनों बूढ़ों ने आँख न खोली । तब नारदजी भक्ति को ज्ञान-वैराग्य सहित वहीं छोड़ कर बदरिकाश्रम पहुँचे और सारा दृश्य सनकादि ऋषियों के सामने रखा ।

सनकादि ऋषियों ने नारदजी को बताया कि ज्ञान और वैराग्य को सचेत करने का एकमात्र उपाय श्रीमद्भागवत का श्रवण है । श्रीमद्भागवत की महिमा के विषय में भली प्रकार जानकर नारदजी ने पहली बार हरिद्वार के समीप आनंद नामक स्थान पर श्रीमद्भागवत सप्ताह का आयोजन किया । तब से यह परंपरा आज तक चली आ रही है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोहत्या और नरहत्या में कोई अन्तर नहीं है

✍ श्री कैलाश वाजपेयी

आज गोपाष्टमी है । गउओं और बैलों को सजाने का दिन है । पर साथ ही साथ गोधन के साथ हमारे दुर्व्यवहार के स्मरण का भी दिन है । इस्राइल में एक दीवार है जिसका नाम है—विलखती दीवार । यहाँ आकर यहूदी लोग अपने ऊपर हुए अत्याचारों के लिए विलाप करते हैं । इसी के समानान्तर अब जर्मनी के एक गिरजाघर की बाहरी दीवार पर भी तरह-तरह के पोस्टर हर दिन उखाड़े-लगाए जाते हैं । इन पोस्टरों पर प्रतिरोध की भाषा में तरह-तरह के वाक्य लिखे रहते हैं । ये वाक्य शोषण, अन्याय, हत्या और दुनिया भर में छाई तबाही की कहानी कहते हैं जिनमें पशु-हत्या से लेकर तेजाबी वर्षा तक के प्रति सरोकार व्यक्त किया गया होता है । इसी शोक संतप्त दीवार पर इन गर्मियों में एक घायल पशु का रेखाचित्र कुछ इस तरह बनाया गया था कि वह पृथ्वी की आकृति से मिलता जुलता था और नीचे लिखा था—हमारी घायल पृथ्वी माता—अवर वून्डेड प्लैनेट । हमारे पुराणों में पृथ्वी की आकृति गोरूप में ही वर्णित हुई है । पश्चिम में इन दिनों सबसे अधिक चिन्ता पृथ्वी को लेकर है जो ह्रासमान पर्यावरण के कारण जल्दी ही न रहने योग्य हो जाएगी ।

घायल पशुनुमा (गो) पृथ्वी का यह रेखाचित्र ही हमें सहजतः उस मथक का स्मरण दिलाता है जिसमें दुःख से दबी पृथ्वी, सृष्टा के पास जाकर अपनी व्यथा-कथा कहती है । भविष्यवादियों का कहना है, हम विपर्यास से घिर चुके हैं । प्रकृति में उद्‌भव और पराभव का जो क्रम था, उसमें व्यतिक्रम पैदा हो गया है । हम सभी ने मिलकर यह व्यतिक्रम पैदा किया है । हम यह भूल गए हैं कि हम दिक् यात्री हैं, हम सब एक बहुत बड़े यान पर सवार हैं और हमारे इस यान का नाम पृथ्वी है । हम इतने मूढ़ हैं कि जिस यान पर सवार हैं, उसी में कील ठोंक रहे हैं ।

शुद्ध दृग्विषयक दृष्टि से हमें अभी इसी वक्त यह समझ लेना चाहिए कि हम पृथ्वी पर विचरते, सबसे अधिक क्रूर और स्वार्थी प्राणी हैं । हमारी देह का तापमान सिरकादियन स्पन्दन के अनुरूप घटता-बढ़ता है । हमें अंधेरे से डर लगता है । हम अनजाने ही सूर्य के आने की प्रतीक्षा करते हैं । हम अनिवार्यतः भोगी हैं । प्रकृति अगर हमें मारपीट कर सुला न देती होती तो हमने पृथ्वी के शेष जीव भी खा डाले होते । अभी भी हमारे मद के प्रताप से सत्रह जीववंश हर दिन समाप्त हो जाते हैं । तानजानिया स्थित जीव-शोध-संस्थान के विशेषज्ञ मार्टिन डेल के अनुसार, एमिनो एसिड की गणना के बाद पता चलता है कि घोड़े और हममें बावन असमानताएँ हैं जबकि बानर और हममें मात्र दो असमानताएँ हैं, बहुत विकसित होने पर हमारा स्वभाव जब सरलतम हो चुका होता है, तब हम गो के सबसे अधिक निकट होते हैं मगर हमारी निरन्तर विकासमान सभ्यता और आहारवृत्ति ने हमें सबसे अधिक जानवर बना दिया है । हम पूरी पृथ्वी पर पनपती जीव शृंखला के, बुरी तरह प्रसिद्ध हत्यारे हैं और हममें यह बर्बरता गलत खानपान और जीवन विरोधी अनुसन्धान के कारण आई है । हमारे दाँत और हमारी आँतों की लम्बाई से स्वतः प्रमाणित है कि हमें प्रकृति ने जानवर खाने के लिए नहीं बनाया था । हमारी रचना मांसाहार के लिए नहीं हुई थी । मगर विकसित राष्ट्रों को सम्भवतः यह तर्क स्वीकार्य नहीं होगा । जीवन का सबसे बड़ा विरोधी है अमेरिका । पृथ्वी विरोधी, यह अमेरिका प्रतिवर्ष कई अरब टन धुआँ, करोड़ों टूटी कारें, टनों रद्दी और साढ़े तीन सौ अरब गैलन कारखानों का मलबा पैदा करता है । कम लोगों को ज्ञात है कि वाशिंगटन से अस्सी किलोमीटर दूर अमेरिका की एक रसायनशाला है । इस प्रयोगशाला में अमेरिका ने ऐसे-ऐसे द्रव्य बनाए हैं, जो स्वभाव में एक बेढब वैपरीत्य पैदा करते हैं । इनमें 'ऐंजेल ड्रग' खाकर बिल्ली चूहे से लाड़ लड़ाने लग जाती है । 'बी जेड' ड्रग के प्रभाव से स्मृति में व्यतिरेक पैदा हो जाता है । ध्यान अतीत की किसी एक ही घटना पर अटककर रह जाता है, सबसे दुखद बात यह है कि इनमें से कई रसायनों का प्रयोग अमेरिका ने, बिना बताए पशु और मनुष्यों पर किया जिसके कारण लोगों को भक्ष्य-अभक्ष्य, स्व और पर का भेद ज्ञान ही नहीं बिसरा, अपना नाम और पता भी बिसर गया । इस रासायनिक प्रयोग की प्रतिक्रिया भी शोकाकुल दीवार (वैलिंग वाल) पर टंगे एक पोस्टर पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिध्वनित हुई जिनमें वधिक का चेहरा पशु और वध की जाती गाय का चेहरा सदय, सात्विक व्यक्ति जैसा दिखाया गया था ।

जितनी नृशंसता के साथ पशु हमारे देश में कटते हैं, उसका अन्दाज तो सिर्फ ईदगाह के निकट जाकर ही लगाया जा सकता है । कातिल और व्यापारी पशुओं को भरभरकर अधमरी स्थिति में यहाँ लाते हैं और इतनी रोगोत्पादक परिस्थितियों में उन्हें इस तरह तड़पाकर मारते हैं कि कुम्भीपाक नरक का वर्णन फीका पड़ जाता है । हत्याघर की क्षमता से तीन गुणा अधिक पशु यहाँ कटते हैं जिनमें से अधिकांश रुग्ण होते हैं । यही मांस पाँच सितारा होटलों में परोसा जाता है ।

पिछले दिनों ब्रितानी मुनाफाखोर कातिलों ने एक नयी तरकीब की और वह यह कि जो गाएँ मर जातीं या दूध देने में अक्षम हो जाती हैं, उन्हें समूचा पीसकर, दूसरी गायों के भोजन में एक रसायन के साथ मिलाकर खिला दिया । यह सोचकर कि मृत और अक्षम गायों का प्रोटीन युक्त मांस दूसरी गायों का दूध बढ़ा देगा, उन्हें और अधिक पुष्ट भी कर देगा । मुनाफाखोर व्यापारी अथवा फिर उद्योगपति के शैतानी दिमाग की माया, गायों ने यह नयी तरह का भोजन, रसायन की मदद से खूब खाया । शाकाहारी गाय को मांसाहारी बना दिया उद्योगपति ने । सूचना के लिए हम बता दें कि पूरे पश्चिम में, गाय-बैल, सूअर, भेड़-बकरी, खरगोश, हिरन और मुर्गियाँ सभी को फसल की तरह उगाया जाता है । फिर जल्दी से जल्दी फसल की ही तरह काट दिया जाता है ।

गाय को मांसाहारी बनाने के परिणाम कुछ समय बाद सामने आए । गायें पागल होने लगीं । योरोप में एक नया रोग फैला 'मैड काउ डिजीज' यानी पागल गो-रोग । अब चूँकि गायों में यह रोग फैला तो जाहिर है गाय खाने वालों में भी फैला । क्योंकि आप जो खाते हैं, कालान्तर में वह आपके ही चयापचया को प्रभावित करता है । 'पागल गो-रोग' की समस्या से ब्रिटेन अभी भी जूझ रहा है । सब 'ब्रिटिश बीफ' खरीदने से कतराने लगे हैं । विस्तार भय से हम यहाँ 'पागल गो रोग' के लक्षण नहीं लिख रहे । बूचड़खाने की ओर ले जाए जानेवाले हर पशु को यह आभास हो जाता है कि उसके साथ क्या घटित होने जा रहा है । क्रोध और विवशता के परिणाम स्वरूप उसके शरीर की ग्रंथियाँ 'एसीटोन' नामक एक तरह का तेजाब छोड़ती हैं, जिस समय उसे मारा जा रहा होता है उस समय वह लगभग बावला हो गया होता है । यही मांस जब बाजार में बिकने आता है, तब जहरीला हो गया होता है । 'मांसाहार-सौ तथ्य' के लेखक नेमिचद्र जैन के अनुसार ऐसा मांस खानेवाले मनुष्यों में ऐंठन, तनाव, सन्निपात, मिर्गी एवं आकस्मिक मृत्यु जैसे अनेक रोग घर कर लेते हैं ।

इस समय दिल्ली में लाखों लोग मधुमेह के शिकार हैं । मिनिसोट्टा यूनिवर्सिटी के महामारी विज्ञान विशेषज्ञ डॉ० डेविड स्नोडौन का कथन है कि मांसाहार की अनुपस्थिति ने हमारे निष्कर्षों को अधिक पुष्ट किया है । २५०० लोगों पर २१ वर्षों तक किए गए अध्ययन से पता चलता है कि न केवल मधुमेह बल्कि गठिया, मूत्राम्ल और कई अन्य रोगों का उत्स, मांसाहार में छिपा है । अमेरिका में प्रतिवर्ष सत्ताइस करोड़ पचास लाख रोगी डाक्टरों की शरण में जाते हैं, जिनमें से हर ग्यारह में से एक उच्च रक्तचाप से पीड़ित होता है कारण सिर्फ मांसाहार है । एक औसत अमेरिकी प्रतिवर्ष करीब १२० किलो मांस खाता है । जिसे प्राप्त करने के लिए लगभग एक टन अनाज खर्च होता है । यदि वह सीधे १२० किलो अन्न खाए तो इतने अनाज से वर्ष में आठ व्यक्तियों का काम चल सकता है । प्रोफेसर जार्ज वर्गस्ट्रॉर्म के अनुसार सिर्फ अमेरिका में पशुजगत जितने वनस्पति-खाद्य का उपभोग करता है, उतने से विश्व की आधी आबादी का पेट भरा जा सकता है ।

स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क में की गयी खोज से पता चलता है कि अमेरिका में ४७००० से भी अधिक ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, जिन्हें माता-पिता के मांसाहारी होने के कारण कई बीमारियाँ जन्म से ही लगी होती हैं ।

एक कीट होता है ब्रेनबग । कई मांसाहारियों के शरीर में पहुँचकर इस कीट को अपना प्रभाव दिखाने में दस वर्ष लग जाते हैं ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की बुलेटिन संख्या ६३७ के अनुसार मनुष्य के शरीर में लगभग १६० बीमारियाँ सिर्फ मांस खाने से प्रविष्ट होती हैं । जर्मनी के 'ग्रीन ग्रुप' के एक विशेषज्ञ का कहना है कि पृथ्वी पर प्रदूषण एवं पर्यावरण के अस्वच्छ होते चले जाने के पीछे एक कारण यह भी है कि पिछली दशाब्दियों में लोग तेजी के साथ मांसाहारी हुए हैं ।

पहले कभी पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, 'धर्म के नाम पर पशुबलि बर्बरता है' । हमारा कहना है कि धर्म के ही नाम पर क्यों, सुरुचि के नाम पर भी, परिष्कृत अभिरुचि वाला किसी दूसरे का गोश्त खा कैसे सकता है । अपने को सस्पन्द कहने वाले कमजोरों के पक्षधर कवियों, लेखकों, चित्रकारों और बुद्धिजीवियों की शोषण के खिलाफ पहली आवाज यह होनी चाहिए कि सरकारों को यह आज्ञा किसने दी कि हर शहर में हत्याघर खोले जाएँ और बजाए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके कि पशुओं के लिए चरी भूमि आरक्षित हो, उनकी आँखें फोड़कर उनके पाँव और पसलियाँ तोड़कर उन्हें कूड़े की तरह ठेले में ठसाठस भरकर बूचड़खाने लाया जाए और फिर घोर पिछड़े तौर-तरीकों से उनका वध किया जाए ।

सन् १९५९ में फोर्ड फाउंडेशन ने इस देश की खाद्य समस्या का निवारण करने के लिए एक सुझाव यह दिया था कि जितने अधिक से अधिक पशु खत्म किए जा सकते हों, कर दिए जाएँ । मगर भारत में पन्द्रह वर्ष रहकर यहाँ की परिस्थितियों का अध्ययन कर जर्मनी के जुगनर लेन्स ने इस सुझाव को आत्मघाती बताया । सन् १९८७ में पशुधन विशेषज्ञ डॉ० पी० एन० भट्ट ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही थी । कृषि का अधिकतर कार्य बैलों से होता है । इनसे मिलनेवाली ऊर्जा ४०,००० मेगावाट के बराबर है । इनसे देश को २७,००० करोड़ रुपयों का लाभ होता है । इनमें देश की ४० खरब संपत्ति लगी हुई है । इस सबके बावजूद पूरे देश में २८०० प्रमाणित कत्लगाह हैं । बंबई के पास देवनार में एशिया का सबसे बड़ा और दुनिया का नंबर दो का हत्याघर है । शायद इसी विसंगति से तिलमिलाकर तीन वर्ष पूर्व आयोजित पशु संरक्षण गोष्ठी में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने कहा था, 'मैं यह बता देना चाहता हूँ कि पशुओं तथा मनुष्यों के बीच का भेदभाव मनुष्य द्वारा भगवान, अल्लाह, ईश्वर और सभी धर्मों के संतों के आदेशों के विरुद्ध उनके शोषण के लिये किया गया है ।' याद रहे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था : 'मेरी राय में गोहत्या तथा नरहत्या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।'

◆

गायों की दुर्दशा की चरम सीमा

गोसेवा या गोरक्षा की बात को आज दकियानूसीपन समझा जाने लगा है । भारतीय संस्कृति की रीढ़ है गोसेवा, किन्तु उसकी बात करना आज नक्कारखाने में तूती की आवाज़ जैसा होकर रह गया है । आज की यन्त्रप्रधान सभ्यता में गौ के प्रति संवेदना या सहानुभूति का कोई स्थान नहीं बचा है । इसके परिणाम भयङ्कर हैं, दूरगामी हैं और गहरे हैं ।

महानगरों में और नगरों में भी गाय की दुर्दशा विशेष चिन्तनीय है । वाहनों के यातायात के बीच गायों को खुला छोड़ दिया जाना, कूड़े के ढेरों में से खाद्य बीनने के लिए उन्हें छोड़ देना मनुष्य की क्रूरता और बधिरता के परिचायक हैं । कोई यह सोचता ही नहीं कि नगरों की वर्तमान स्थिति में गायों के लिए क्या व्यवस्था हो सकती है ? मैंने दिल्ली में पालम हवाई अड्डे के सामने भी गायों को घूमते देखा है । अर्थ-पिशाच लोग जब नई कालोनी बनवाते हैं तब जान-बूझ कर उसमें छोटा सा भूखण्ड ऐसा छोड़ देते हैं जिसमें गायें रखी जाती हों । इससे कालोनी का पूरा भूखण्ड ग्रामीण क्षेत्र घोषित हो जाता है, और सस्ते दामों पर वह जमीन मिल जाती है, बाद में गायों के नाम पर रखी जमीन भी हड़प ली जाती है और गायों के पालक उन्हें सड़क पर छोड़ने को विवश हो जाते हैं । प्रत्येक परिवार अपने लिए गोपालन करे, इस विकेन्द्रित व्यवस्था का कोई विकल्प नगरों या महानगरों के लिए सोचा ही नहीं गया है । वाहनों से घायल गायें, या कूड़े के ढेरों में मुँह डालती हुई गायें देख कर आँसू पीकर रह जाना पड़ता है ।

सरकार की असंवेदनशीलता का एक ही नमूना काफ़ी है कि गायों के चारे-दाने का भी निर्यात किया जा रहा है; इस कारण कीमतों के बढ़ने से गोपालन दूभर होता जा रहा है । गाय को मनुष्य की भाँति अवध्य मानने वाला भारत देश आज गोमांस का निर्यात कर रहा है, इससे बढ़कर शोचनीय बात क्या हो सकती है ?

प्रेमलता शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

बजरंग डिडवानिया

सेठ जयदेव डिडवानिया मेमोरियल ट्रस्ट

सी-के० २३/२३, रानीकुआँ, चौक

वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३२१९२६, ५२४३३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहकारी डेयरी आंदोलन

✍ श्री वी० कुरियन

मैं जानता हूँ कि भारत के अधिकांश नागरिकों ने उदारीकरण और विश्वव्यापीकरण का खुले दिल से स्वागत किया है । वे यह जानकर बहुत प्रसन्न हैं कि उन्हें भी यूरोप, उत्तरी अमेरिका और जापान के लोगों की तरह ही सुविधाएँ हासिल होंगी । हमारे देश के सामने आज यही भ्रम सबसे बड़ी मुसीबत है । मैं अपने जीवन और अनुभव के बारे में बताना चाहूँगा, ताकि मेरा मकसद स्पष्ट हो जाए ।

डेयरी के क्षेत्र में मेरा प्रवेश महज एक संयोग था । आनंद में मैं एक सरकारी मक्खन कारखाने में नियुक्त हुआ । उस काम में मैं बहुत कुछ कर नहीं सका, क्योंकि वहां करने के लिए कुछ था ही नहीं । मैंने सरकार को कई बार लिखा कि मेरे पास कोई काम नहीं है, इसलिए मुझे विरमित कर दिया जाए । इससे मेरे वेतन पर होनेवाले खर्च को बचाया जा सकेगा । संयोग से मेरे कार्यालय के बगल में एक छोटा सा सहकारी संस्थान था । वह संस्थान यह साबित करने के लिए संघर्षरत था कि डेयरी के व्यवसायी अपने व्यवसाय को स्वयं चला सकते हैं । यहां मैं उस संस्थान का संक्षिप्त इतिहास बताना चाहूंगा ।

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान औपनिवेशिक सरकार काफी चिंतित हो गयी, क्योंकि बंबई में रहनेवाले अधिकतर अंगरेज बीमार पड़ रहे थे । नगर की दुग्ध आपूर्ति पर शक हुआ । इसलिए सरकार ने एक विशेषज्ञ को बुलाने का फैसला किया । उन दिनों, और आज भी, विशेषज्ञ का मतलब होता था गोरी चमड़ी वाला कोई व्यक्ति । सो ब्रिटेन से एक विशेषज्ञ बंबई दुग्ध आपूर्ति का अध्ययन करने आया । मैं उसकी रिपोर्ट के एक वाक्य को उद्धृत करना चाहूंगा : 'लंदन के गटर के पानी का स्तर बंबई में आपूर्ति होनेवाले दूध से अच्छा है ।'

उन दिनों भी कैरा जिला मिल्क शेड के लिए विख्यात था । वास्तव में एक उद्यमी पारसी ने वहां एक डेयरी की स्थापना की थी और उसके उत्पाद 'पोल्संस' के ब्रांड से बेचे जाते थे । उन दिनों पोल्संस पूरे देश में प्रसिद्ध था, जैसा कि आज अमूल है । बंबई सरकार ने फैसला किया कि कैरा जिले से दूध मंगाना बेहतर होगा । उन्होंने पोल्संस से संपर्क किया । जब यह सुनिश्चित हो गया कि आनंद से रेल द्वारा दूध सुरक्षित रूप से बंबई तक लाया जा सकता है, पोल्संस को बंबई में दूध की आपूर्ति का ठेका दे दिया गया । इस फैसले से अनेक लोग खुश हुए । बंबई के उपभोक्ता खुश थे कि उन्हें कम कीमत पर अच्छा और ताजा दूध मिलता था । पोल्संस वाले खुश थे कि उन्हें अच्छा लाभ मिल रहा था । शायद सबसे अधिक खुश स्थानीय विक्रेता थे, जो अपने एकाधिकार के कारण दूध उत्पादकों के लिए कीमत तय करते थे । सिर्फ उत्पादक ही इस फैसले से अप्रसन्न थे, क्योंकि काफी कम कीमत मिलती थी ।

अंत में ये उत्पादक सरदार बल्लभ भाई पटेल के पास सुझाव मांगने गये । सरदार पटेल एक विद्वान व्यक्ति थे । वह जानते थे कि स्वतंत्रता का सही अर्थ अपना झंडा और संसद होने से आगे भी कुछ है । स्वतंत्रता का सही अर्थ आर्थिक स्वावलंबन तथा संसाधनों पर नियंत्रण है । इसलिए उन्होंने उत्पादकों को सुझाव दिया कि वे एक सहकारी संस्था बना लें और अपने द्वारा उत्पादित दूध को स्वयं खरीद कर उसकी बिक्री करें । उन्होंने मोरारजी देसाई से किसानों को संगठित होने में मदद करने को कहा । जब शुरू में दो सहकारी समितियां गठित हो गयीं, तब अध्यक्ष के चुनाव के लिए एक बैठक हुई । जब मोरारजी देसाई ने पूछा कि इस पद की जिम्मेदारी स्वीकार करने की इच्छा किसे है, अनेक लोग खड़े हो गये । एक व्यक्ति पेड़ के नीचे चुपचाप बैठा हुआ था । मोरारजी ने पूछा : 'त्रिभुवन दास, तुम अध्यक्ष बनना नहीं चाहते हो ?' त्रिभुवन दास पटेल ने जवाब दिया कि वह अभी जेल से छूटे हैं और बहुत से काम करने हैं । इसलिए वह अध्यक्ष बनना नहीं चाहते हैं । तब मोरारजी ने किसानों से कहा कि वे त्रिभुवन दास पटेल को चुन लें । यह एक बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव था ।

जब बंबई के दुग्ध आयुक्त ने इस नये को-ऑपरेटिव से दूध खरीदने से इनकार कर दिया, तब उत्पादक फिर सलाह के लिए सरदार पटेल के पास गये । वह सलाह एकदम स्पष्ट थी—वे पोल्संस को दूध की आपूर्ति तब तक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं करें, जब तक उन्हें अपने द्वारा उत्पादित दूध को बेचने का अधिकार न मिल जाए । एकता और आत्मबलिदान का एक उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए कैरा के दूध उत्पादकों ने बंबई के लिए दूध दुहना बंद कर दिया । अंततः दुग्ध आयुक्त, जो एक अंगरेज थे, कैरा आये । जब उन्होंने उत्पादकों से बातचीत की, तो उन्हें पता चला कि उत्पादकों की सिर्फ एक मांग है—उन्हें बंबई में अपने को-ऑपरेटिव के जरिये दूध की आपूर्ति करने की इजाजत दी जाए । तब दुग्ध आयुक्त के सहायक, जो एक भारतीय थे, ने अपने बॉस को यह मांग स्वीकार कर लेने को कहा । उनका मानना था कि कुछ सप्ताह बाद ये उत्पादक आपस में झगड़ा करेंगे और तब फिर से पूर्व की व्यवस्था कायम हो जाएगी । इस तरह कैरा जिला को-ऑपरेटिव दूध उत्पादक संघ ने बंबई में दूध की आपूर्ति का अधिकार हासिल किया । यहां मैं बताना चाहूंगा कि यह सब आनंद में मेरे आगमन से बहुत पहले हो चुका था । समय की मेरी पहचान बहुत सटीक है और मैं यहां तब पहुंचा, जब ये संघर्ष जीते जा चुके थे ।

हालांकि समय-समय पर इस को-ऑपरेटिव के साथ कुछ समस्याएं आती रहीं । त्रिभुवन दास पटेल मेरे पास आते थे और उन समस्याओं पर विचार करते थे । इस विचार-विमर्श के दौरान मैंने उन्हें एक नये पास्यचुरीकरण यंत्र में निवेश करने की सलाह दी, क्योंकि उस वक्त को-ऑपरेटिव प्रथम विश्वयुद्ध के जमाने के यंत्र से काम चला रहा था । इसी बीच सरकारी सेवा छोड़ने के मेरे प्रयास का फल निकला । भारत सरकार ने मेरा इस्तीफा स्वीकार कर लिया और मैंने राहत की सांस ली । मैं अपना कैरियर बनाने के लिए आनंद छोड़ने की तैयारी में जुट गया । जब यह तैयारी अंतिम चरण में थी, त्रिभुवन दास मेरे घर आये । उन दिनों मैं एक गैरेज में रहता था, क्योंकि कैरा में केरल के अविवाहित और मांसाहारी इसाई के लिए इसके अलावा कोई मकान नहीं था, त्रिभुवन दास मेरे जाने के बारे में सुन चुके थे । उन्होंने मुझसे कहा कि मेरी सलाह पर को-ऑपरेटिव ने एक महंगा उपकरण खरीदा है और जल्दी ही यह पहुंचने वाला है । इस उपकरण की स्थापना और संचालन में मदद कौन करेगा ? तब उन्होंने मुझसे पूछा कि मुझे नौकरी मिली या नहीं । मैंने इसका उत्तर 'नहीं' में दिया, परंतु कहा कि मुझे जल्दी ही अनेक प्रस्ताव मिलेंगे । वेतन के बारे में मेरी उम्मीद जानने के बाद त्रिभुवन दास ने मुझसे कहा कि क्या मैं उपकरण के चालू होने तक को-ऑपरेटिव के लिए काम करना चाहूँगा । वह एक चतुर गुजराती थे । उन्होंने वेतन के बदले मुझे एक नियत राशि देने का प्रस्ताव दिया । वह को-ऑपरेटिव की कीमत पर मुझे रखना नहीं चाहते थे । परंतु जब काम समाप्त हुआ, उन्होंने मुझे रुकने के लिए कहा, मैं रुक गया और आनंद में रहते हुए मुझे ४० वर्ष से भी अधिक हो गये हैं । मैं यहाँ बिताये एक भी क्षण को व्यर्थ नहीं मानता ।

यदि आप सुबह या शाम को किसी डेयरी को-ऑपरेटिव में जाएं, तो आप दूध दुहने के लिए पुरुषों-महिलाओं की कतारें देखेंगे । उन कतारों में आप हरिजनों को ब्राह्मणों से आगे देखेंगे, क्योंकि हरिजन वहां पहले पहुंचे । आप महिलाओं को पुरुषों और गरीबों को धनी से आगे पाएंगे । इसका मतलब क्या है । हरिजन और ब्राह्मण अपने-अपने दूध एक ही बर्तन में मिलते देखते हैं । क्या सदियों पुरानी जाति व्यवस्था को दूध में डुबाने का यह प्रयास नहीं है ?

बहुत से गांवों में डेयरी को-ऑपरेटिव सोसाइटी के पक्के मकान हैं । यह मकान आधुनिक सुविधाओं से युक्त हैं । इनमें मक्खियां नहीं रहती हैं, क्योंकि सफाई का काम नियमित रूप से होता है। जिन बर्तनों में दूध निकाला जाता है, उन्हें अच्छी तरह से धोया जाता है । इससे दूध निकालने वालों को सफाई का पाठ पढ़ाया जाता है ।

वर्षों पूर्व जब कैरा जिले में कोई भैंस बीमार होती थी, उसके सींग में काला धागा बांधकर उसे मरने के लिए छोड़ दिया जाता था, परंतु अब, पिछले कई वर्षों से, जब कोई जानवर बीमार पड़ता है, किसान को-ऑपरेटिव में आता है और एक घंटे के भीतर पशु चिकित्सक उसके यहां पहुंच जाता है, जो जानवर मर सकते थे, उन्हें बचाया जाता है । क्या यह सामान्य पशु चिकित्सा विज्ञान है अथवा यह सीख कि आधुनिक दवाएं हमारे जीवन को किस तरह ऊंचा उठा सकती हैं ?

कई वर्ष पूर्व कैरा को-ऑपरेटिव ने महिला सदस्यों को आनंद आने और डेयरी का दौरा करने की व्यवस्था की । उन्हें कृत्रिम गर्भाधान केंद्र में ले जाया जाता था और गर्भधारण के चमत्कार के बारे में बताया जाता था । क्या इससे महिलाओं को प्रजनन प्रक्रिया समझने तथा इसे नियंत्रित करने की सीख नहीं मिलती थी । बाद में, महिलाएं चारा संयंत्र का दौरा करती थीं । वहां एक अधिकारी उन्हें प्रोटीन, विटामिन, खनिज के महत्व के बारे में समझाता था । वह इस बात पर भी जोर देता कि गर्भवती गाय और बछिया के लिए पौष्टिक आहार कितना जरूरी है । क्या यह सिर्फ पशु आहार का पाठ था या फिर गर्भवती महिलाओं और लड़कियों के आहार के बारे में सीख थी ?

संभवतः प्रजातंत्र का पाठ सबसे महत्वपूर्ण है । हर वर्ष हरेक को-ऑपरेटिव सोसाइटी के सदस्य बैठक करते हैं । वे अपनी सोसाइटी के काम-काज की समीक्षा करते हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और भविष्य की योजना बनाते हैं । तब वे अगले वर्ष के लिए बोर्ड के सदस्यों का चुनाव करते हैं । बाद में हरेक सोसाइटी के अध्यक्ष बैठक कर संघ के निदेशकों का चुनाव करते हैं । बाद में प्रदेश फेडरेशन के निदेशकों का चुनाव होता है । यहां शांतिपूर्वक डेयरी को-ऑपरेटिव के करीब ८० लाख सदस्य निचले स्तर से लोकतांत्रिक ढांचा बनाते हैं । यहां नेता यह समझते हैं कि काम-काज और चुनाव के बीच एक संबंध है । यहां हमारे किसान यह सीखते हैं कि वे यथार्थ में अपनी किस्मत को नियंत्रित कर सकते हैं ।

एक राष्ट्र के रूप में हम अपने उद्देश्य का भाव खो चुके हैं, जिन महिलाओं और पुरुषों ने हमारी आजादी के लिए संघर्ष किया और जानें दीं, उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं किया था कि हम स्टार टी वी देख सकें और कोका-कोला खरीद सकें । उन्होंने एक ऐसे देश के निर्माण के लिए संघर्ष किया और जानें दीं, जहां हमारा प्रत्येक नागरिक मिलकर एक अच्छा राष्ट्र बना सके, और इस अच्छाई से हम महान् बन सकें । उस वक्त हम मनुष्यों की समानता के सिद्धांत में विश्वास करते थे । आज वह बात नहीं है । हम देखते हैं—कि हमारे गांव और झोपड़पट्टियां समुचित भोजन, साफ पानी, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और अन्य आधारभूत सुविधाओं से वंचित हैं । आजादी के समय हमने एक ऐसा राष्ट्र बनाने का संकल्प किया था, जो कल्याणकारी और न्यायपूर्ण हो ।

वह संकल्प आज टूट चुका है । उपभोक्तावाद से पीड़ित, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा छिद्रित, भ्रष्टाचार से जला, अपनी लालच से प्रेरित हमारा संपन्न वर्ग दो देश बना रहा है । धनवानों का एक छोटा देश, जो गरीबों के बड़े देश के श्रम का फल खा रहा है । बार-बार हमने सरकार को इस बात के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश की है कि हमारे ग्रामीण लोगों का भी भारत की महानता में दावा हो । परंतु दुर्भाग्य से किसानों के लाभ के छोटे से परिवर्तन को भी विदेशी निवेश के हितों के लिए बलि चढ़ा दिया गया है ।

हमारे देश और विश्व में हर जगह आज हर व्यक्ति इस मुगालते में है कि सब कुछ ठीक-ठाक है । यहां प्रचुर सामग्री है । और हमेशा रहेगा । यहां पारंपरिक ऊर्जा संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं और उन्हें व्यर्थ में खर्च करने की अनुमति दी जा सकती है ।

हम यह सब खुद को खतरे में डालकर करते हैं । सिर्फ इसलिए नहीं कि दुनिया गरीबों और अमीरों, उत्तर व दक्षिण में विभाजित होकर जीवित नहीं रह सकती, बल्कि इसलिए कि हम अपनी आत्मा की कीमत पर ऐसा करते हैं । लालच और स्वार्थ पर आधारित जीवन जीने में कोई लाभ नहीं है । अंततः जैसे पौष्टिक आहार के बिना एक शरीर नष्ट होता है, पवित्र कार्यों के प्रति संकल्प के बगैर आत्मा भी नष्ट हो जाएगी ।

जब मैं छोटा था, मैं सोचता था कि अच्छी शिक्षा, अच्छी स्थिति और काम करने का अच्छा अवसर पाकर हम भाग्यशाली हैं । मैं यह भी सोचता था कि संपन्न वर्ग को अपनी विद्वता उस वर्ग की ओर मोड़नी चाहिए, जो सुविधाविहीन है । यह हम ऐसा कर सके, तो हमारा देश प्रगति करेगा । मैं आज भी यह मानता हूं । मैं मानता हूं कि यदि हमारा शिक्षित-संपन्न वर्ग निजी हितों और भौतिक सुख को अलग कर दे, तो हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों के अनुरूप देश का निर्माण कर सकते हैं । हम ऐसा देश बना सकते हैं, जो न्यायपूर्ण होगा, जहां ग्रामीण जनता की बातों का न सिर्फ सम्मान होगा, बल्कि उसे बेहतर भविष्य का आधार बनाया जाएगा, जहां मानव संसाधन नष्ट नहीं होगा, बल्कि खिलेगा । उस देश की सुविधाएं कुछ ही नहीं, सभी को प्राप्त होंगी ।

◆

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय

मैं गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कराने के लिए केन्द्र सरकार से अनुरोध करूंगा । राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध आदि शंकराचार्य, नानक, दयानंद, गांधी और विनोबा भावे की अहिंसा प्रधान संस्कृति के इस देश में गो वंश का वध अत्यन्त दुःखद और निन्दनीय है । इस देश में गाय को माता मानकर पूजा जाता है । भारत में गो वंश की हत्या और देश से मांस के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाय । भारत जैसे कृषि प्रधान देश में पशुओं का भारी महत्त्व है । हमारी अर्थव्यवस्था भी इन पर निर्भर करती है । इसलिए आवश्यक है कि पशुओं की पूरी तरह रक्षा की जाय । इसके लिए देश से मांस का निर्यात बंद होना चाहिए ।

शृंगेरी पीठाधीश्वर जगद्गुरुशंकराचार्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हार्दिक शुभकामना :

किशनचन्द मेहरा

MOHANLAL KISHANCHAND

MANUFACTURERS OF BANARASI SAREES

CHOWK, VARANASI, U. P. (INDIA)

Phone : 322692 (Off.), 43245-48631 (Resi.)
Gram : **KALANIRMAN**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय : राष्ट्रीय पशु

✍ अशोक कुमार सराफ

हमारे महान् हिन्दू धर्म का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक आधार क्या है, इसका ज्ञान इस वैज्ञानिक युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है । हिन्दुओं के अनेकानेक देवी-देवताओं के विभिन्न स्वरूपों की जो कल्पनाएं ऋषियों ने की थीं, उनमें अनेक गूढ़ तत्व एवं रहस्य छिपे हुए हैं । उन रहस्यों को जानने के लिए हमें अपनी दृष्टि को सूक्ष्मदर्शी बनाना होगा । हिन्दू धर्म में कर्ममय मानव-जीवन को सही मार्ग और दिशा देने वाली जो अनमोल बातें हैं, उन्हें सामने लाने की आवश्यकता है । धर्म और धार्मिक आस्था का प्रवाह सर्वदा समय के समानान्तर गतिमान होना चाहिए । यदि धर्म एक ही स्थान पर स्थिर रहे और उसे युग का नया चिन्तन व्यावहारिकता के नये धरातल पर लाने की चेष्टा न करे तो उसमें नाना प्रकार के अन्ध विश्वास, विकार और भ्रान्ति-मूलक तत्व उसी प्रकार भर जाते हैं, जैसे एक स्थान पर एकत्र प्रवाहहीन जल को दूषित करने वाली चीजें अपने आप उत्पन्न होने लगती हैं । अपने धर्म के प्रति आज हम जों बढ़ती हुई अनास्था और भ्रांतियां देख रहे हैं, उनके मूल में उपर्युक्त कारण प्रधान हैं ।

कुछ लोग पुरानी बातों को रूढ़िवादी, दकियानूसी और पुरानी (आउट आफ डेट) कह कर त्याज्य समझते हैं । जब कि वे अच्छी और हितकारी हो सकती हैं और कुछ लोग नवीन तथा आधुनिक बातों को इसलिए ग्राह्य समझते हैं कि वे आधुनिक और प्रगतिशील होती हैं । ऐसा करना उचित नहीं, बल्कि नई या पुरानी बातों को हित-अहित, शुभ-अशुभ और पश्य-अपश्य की दृष्टि से विवेकपूर्वक परीक्षा करके त्याज्य या ग्राह्य समझना चाहिए । सिर्फ पूर्वाग्रह और हठवादिता के आधार पर निर्णय करना हानिकारक होता है । मूढ़ व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के विश्वास के अनुसार चलता है ।

पुराणभित्यैव न साधुसर्व नचापि सर्व नवभिव्यवघम् ।
सन्तः परीक्ष्या न्यवरद्भजन्ते मूढ़ः पद्प्रत्यनैयबुद्धिः ।।
—*कालिदास*

इसी बात को बल देते हुए हमने कई धार्मिक आस्थाओं को रूढ़ि कह कर त्यागा है जिसके दुष्परिणाम का आयाम इतना भयंकर होकर सामने आया है जिससे उबरने में कई दशक लग जायेंगे । जैसे जंगलों का विनाश तथा गंगा की पवित्रता को नष्ट किया जाना । अब पुनः वृक्षारोपण व गंगा की पवित्रता कायम की जा रही है ।

गौरक्षा एवं गौपूजन की बात जब चल रही होती है तब अधिकतर अपने को बुद्धिजीवी कहने वाला वर्ग इसे रूढ़िवादी परम्परा से जोड़ देता है । गौरक्षा को धर्म के साथ जोड़ने की रूढ़िवादी परम्परा की सोच हमें बदलनी होगी । उसका वास्तविक अर्थ समझना होगा ।

हमारे ऋषि-मुनि विचारक, चिन्तक एवं वैज्ञानिक थे । इनका विशिष्ट ज्ञान ही विज्ञान है—विज्ञान ही धर्म है । विज्ञान गलत नहीं होता, जो सबको मान्य, तार्किक व सही होता है—प्रत्येक युग में । तब तो यह भी सही होना चाहिए कि धर्मों के संस्थापक हमेशा किसी बेहतर चीज़ की खोज में ही रहते होंगे । इसी खोज का एक परिणाम गाय है । जिसे पूर्ण धार्मिक कह सकते हैं अथवा पूर्ण वैज्ञानिक भी । आधुनिक युग के वैज्ञानिक गाय के दूध की गुणवत्ता के साथ-साथ इसके गोबर तथा मूत्र की उपयोगिता मानव-जाति के लिए कितनी आवश्यक व उपयोगी है, यह पुनः सिद्ध कर चुके हैं । मात्र यही एक ऐसा पशु है जिसके मलमूत्र को पवित्र माना गया है । यह प्रकृति की बहुमूल्य देन है । गौरक्षा, गौपूजन की भारतीय परम्परा अर्थव्यवस्था व समाज-व्यवस्था की रीढ़ है, इसके मूल में हमारा जीवनदर्शन है । हमारे पूर्वजों—ऋषि-मुनियों (वैज्ञानिक) ने हजारों वर्ष पूर्व बड़े ही व्यापक दृष्टिकोण से गौसेवा प्रारम्भ की थी ।

दुःख इस बात का है कि इस प्रकृति की नियामत को बड़े तेजी से काटा जा रहा है—नष्ट किया जा रहा है । ऐसा न हो कि इसे भी नष्ट कर पुनः अन्वेषण करने का आह्वाहन किया जाय । जब तक काफी देर हो चुकी होगी । अतः यह जीव पूर्णतः नष्ट हो, उसके पहले ही हम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभी मनुष्य जाति को सचेष्ट हो जाना चाहिए और इसकी रक्षा में तन-मन-धन से लग जाना ही बुद्धिमानी होगी । इसकी रक्षा से हमारी संस्कृति, अस्मिता की रक्षा हो सकेगी । हमारा देश आर्थिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होगा और बेरोजगारों को रोजगार प्रदान हो सकेगा । बढ़ते हुए गंदे विचार, बिगड़ती हुई मानसिकता में सुधार होगा । जिससे समाज, राष्ट्र व विश्व समृद्धिशाली व पुष्ट बनेगा । पुनः भारत विश्व-गुरु बन—

सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत ।।

का सन्देश सार्थक कर सकेगा ।

भारत महान् देश है, इसने विश्व कल्याणार्थ बहुमूल्य रत्न दिये हैं, इसीलिए तो इसे भारतमाता की संज्ञा दी गयी है । इन्हीं रत्नों में गाय भी एक रत्न है । आज ही के दिन को, हमारे महान् युगपुरुष, विश्वगुरु, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गोचारण किया और गौ को मानवता के साथ जोड़ गोपाष्टमी पर्व नाम दिया ।

इस पावन पर्व की सार्थकता पर बल देते हुए हम आह्वान करें कि गौ पूर्ण रक्षित हो और राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय ताकि हमारी सदियों पुरानी संस्कृति की छाप पूरे विश्व पर पुनः अंकित हो सके ।

◆

With Best Compliments from :

NUPUR

BPL

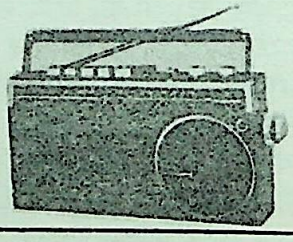

EXCLUSIVE SHOP
Rathyatra Market, Ground Floor
VARANASI

M 1760-2H. 8W PMPO. Mini and Slim, Compact Radio Cassette Recorder with Full Audio Stop.

Phone : 323436

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौ का मालिक

✍ अमृता प्रीतम

उसके जिस्म का रंग भूरा था, थन एकदम काले नहीं थे, पर काली झलक मारते थे । इसलिए गाँववालों ने उसका नाम 'कपिला गौ' रखा था ।

कपिला ने जितनी बार अपनी टूटी टाँगों पर भार डालकर उठने की कोशिश की, उतनी ही बार ज़ोर से अर्राकर वह ज़मीन पर गिर गई थी । अब उसमें और हिम्मत नहीं थी । हाँफते हुए उसने घास की सीलन को चाटने के लिए जीभ निकाली, पर घास में पानी की तरावट की जगह गरम, नमकीन लहू-सा लगा ।

उसने रात को अपने साथ घास चरने के लिए आई हुई बाकी नौ चितकबरी गायों को अपनी पथराई आँखों से ढूँढ़ने की कोशिश की, पर आस-पास उसे दूर से, बहुत दूर से केवल कुछ आवाज़ें सुनाई दीं····

एक कड़कती आवाज़ थी, "गऊ माता पर यह जुल्म ! ये हत्या करने वाले पापी, हत्यारे····!"

दूसरी चीखती आवाज़ थी, "जिस देश में इस तरह पाप होता है, जहाँ कोई धर्म-कर्म नहीं रहा, वह देश डूब जाएगा····"

और फिर पता नहीं कितनी आवाज़ें थीं जिन्होंने उगते हुए सूरज की रोशनी पर जैसे हमला बोल दिया हो····

आवाज़ें पास भी हुईं, दूर भी, और फिर खामोशी छा गई ।

कपिला का जिस्म सुन्न होता जा रहा था, और खुर उसके गिर्द बह रहे खून में डूब रहे थे । उसे लगा—जैसे कुछ लोग फ़ौजी वर्दियों में उसके पास घूम रहे हैं····

वे लोग जिधर देख रहे थे, कपिला ने भी पथराती आँखों से उधर देखा—दूर एक हवाई जहाज़ पड़ा हुआ था !

कोई कह रहा था, "सर, मेरी दूसरी डार्क नाइट फ्लाइंग एक्सरसाइज़ थी, बिना लैंडिंग लाइट्स के 'टेक ऑव' करने की ब्रीफिंग थी····"

"फिर ?" किसी ने पूछा ।

वह कह रहा था, "सर, मैंने टेक ऑव करने से पहले के वाइटल एक्शंस किए, और जहाज़ को रनवे पर लाइन-अप कर लिया । ब्रेकों पर छह हज़ार आर० पी० एम० तक पावर खोली, और ब्रेक छोड़ दिए । और इंजन पावर 'टेक ऑव' आर० पी० एम० तक खोल दी । बाहर देखा तो रनवे-लाइट्स के बिना कुछ नहीं दिख रहा था ।"

"फिर ?" किसी ने पूछा ।

"सर ! हवाई जहाज़ रोल करता था । स्पीड बढ़ रही थी । मिडल मार्कर पर स्पीड एक सौ पैंतीस नॉट्स पर पहुँच गई । मैंने कण्ट्रोल स्टिक को अपनी तरफ खींचा । मैं उस वक्त इंस्ट्रूमेण्ट की तरफ देख रहा था । हवाई जहाज़ का नोज़-व्हील ऊपर को उठा, अचानक बहुत ज़ोर के झटके महसूस हुए ।"

"मैंने इंजन एकदम बन्द कर दिए, और ब्रेक लगा दिए । इस तरह लगा जैसे कोई ज़ोर-ज़ोर से हवाई जहाज़ को झकझोर रहा हो ।"

"मुझे खयाल आया कि कहीं जहाज़ का टायर न फट गया हो !···जहाज़ रनवे से एक तरफ उतरकर दरख्तों की तरफ या ग़ड्ढों में जा गिरा था । पर मैं रनवे की लाइट दोनों तरफ देख सकता था । इतने में जहाज़ का दायाँ पहिया टूट गया और जहाज़ एकदम दायीं तरफ़ मुड़कर रनवे के नीचे उतर गया । रगड़ के कारण जहाज़ पर से चिनगारियाँ निकल रही थीं ।"

"उस वक्त नेवीगेटर कहाँ था ?" कोई पूछ रहा था ।

किसी ने उत्तर दिया था, "सर, मैं इसका नेवीगेटर हूँ । 'टेक ऑव' के समय मैं क्रैश सीट पर बैठा था । जहाज़ रुक गया तो मैंने एन्टरेंस-डोर को खोलने की कोशिश की, पर वह डोर जाम हो चुका था । फिर मैंने देखा, जहाज़ का नोज़-सैक्शन टूट चुका था, वहाँ एक बड़ा छेद हो गया था । मैं उसी छेद में से बाहर निकल गया ।"

"तुम बाहर किस तरह निकले ?"

"सर, मेरे पास एक ही तरीका था कि मैं बाहर निकलने के लिए अपनी सीट-कैनोपी को जैटीसन करता । कैनोपी को खोलने के लिए मैंने बटन दबाया, वह कुछ ऊपर हुई, पर फिर अपनी जगह आ गई । हवाई जहाज़ खड़ा था, इसलिए नीचे हवा का बहाव नहीं था । मैं जहाज़ में कैद था । हाथों से मैंने कैनोपी को उठाने की कोशिश की, पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उठाई नहीं गई । फिर मैंने खड़े होकर सिर के ज़ोर से कैनोपी को उठाने का प्रयत्न किया । वह ऊपर हुई तो हाथों के ज़ोर से मैंने उसे आगे करके बाहर छलाँग मार दी । बाहर आकर देखा कि हवाई जहाज़ के दाहिने विंग का एक हिस्सा टूटकर एक तरफ पड़ा हुआ था । रनवे के इर्द-गिर्द खून ही खून था और गायें मरी पड़ी थीं । हमें डर था कि शायद जहाज़ को आग लग जाएगी, इसलिए हम यहाँ से दौड़कर दूर जा खड़े हो गए ।"

फिर आवाज़ आई, "पर ये गउएँ यहाँ एयर-फील्ड में आईं किस तरह ?"

"सर, हमें कुछ पता नहीं ।"

"यह तफतीश होती रहेगी, पर इस वक्त तुम्हें बाहर खतरा है । तुम दोनों अपनी सीमा से बाहर न जाना । गाँव में हमारे खिलाफ जलूस निकल रहे हैं । मुज़ाहरे हो रहे हैं !"

कपिला की जान टूट रही थी । पर अभी निकली न थी । आँखें कभी पल-भर को खुलतीं, फिर मुँद जातीं ।

रोशनी अँधेरे में बदल रही थी । उसे लगा जैसे उसके समीप कई लोग जमा हो गए हैं । कई आवाज़ें उसके कानों में पड़ीं····।

"इन मरी हुई गउओं के मालिक कौन हैं ?"

कपिला को लगा—फिर एक खामोशी छा गई है । कोई कुछ नहीं कह रहा है····

"तुम लोग, जिनकी भी गउएँ हैं, अपने-अपने नाम लिखा दो । तुम्हें तुम्हारी मरी हुई गउओं का मुआवज़ा दिया जाएगा ।"

फिर बड़ी आवाज़ें आईं, जैसे सारे लोग एक साथ बोल रहे हों····।

"एक गऊ मेरी थी, हुज़ूर ! गोरी गऊ ! मेरा नाम शेरा है ।"

"एक गऊ मेरी थी, हुज़ूर ! 'तीनथनी' नाम रखा है ।"

"एक मेरी थी, हुज़ूर, 'लुड़ी' गऊ····"

बहुत-सी आवाज़ें थीं, बहुत-से नाम, और फिर कोई कड़कती आवाज़ आई, "तुमने बीस नाम लिखवा दिए हैं, पर गायें सिर्फ दस हैं । सब झूठ बोल रहे हो !"

कपिला ने बुझती आँखों को खोलकर अपने और अपने साथ की गायों के मालिकों को पहचानने की कोशिश की । कुछ चेहरे पहचाने हुए भी लगे, पर कुछ एकदम अजनबी थे, पता नहीं कहाँ से आ गए थे···कपिला ने अपने मालिक मोहना का चेहरा पहचाना । उसे अपने बछड़े की बड़ी याद आई और उसने गले के सारे ज़ोर से रँभाकर कुछ कहना चाहा, पर गले में से आवाज़ न निकल सकी ।

कड़कती आवाज़ में कोई कह रहा था, "तुम इसीलिए अपने को गउओं का मालिक बता रहे हो कि तुम्हें मुआवज़ा मिलेगा । पर तुम मरी हुई गउओं के झूठे मालिक हो !"

फिर पता नहीं सब कहाँ चले गए । सारी आवाज़ें अँधेरे में डूब गईं । पता नहीं कि यह रात का अँधेरा था या कपिला की आँखों में फैला मौत का अँधेरा····· पता नहीं कब, कितनी देर बाद फिर कुछ आवाजें उभरीं, "बोल, चौकीदार ! ये गायें एयर-फील्ड में किस तरह आईं ? पता लगा है कि घास चरने के लिए ये यहाँ रोज़ रात को आती थीं । इनके मालिक तुझे हर महीने रिश्वत देते थे····तुझ पर रिश्वत का केस···"

कपिला के होश-हवास गुम हो रहे थे । कोई बात कानों में पड़ती थी, कोई नहीं । जिस्म से मक्खियाँ उड़ाने के लिए उसने पूँछ को हिलाना चाहा, पर पूँछ अब हिलती न थी····

फिर एक आवाज़ आई, "वे सब—शेरा, रक्खा और बीस लोग—कहाँ चले गए ? अब कोई किसी गाय का मालिक नहीं बनता, सब कह रहे हैं—हुज़ूर, ये गाएँ हमारी नहीं थीं···सिर्फ इसलिए कि उन्हें पता लग गया है कि हमारा जो पैंतीस लाख का हवाई जहाज़ तबाह हो गया है, उसका हरजाना गायों के मालिकों को देना पड़ेगा···"

कपिला ने अपने मालिक मोहना का स्मरण किया, पर वह आसपास कहीं नहीं था···

कपिला को याद आया—एक बार मोहना बीमार पड़ा था, राज़ी नहीं हो रहा था, तब एक सयाने ने उसे बताया था कि मंगलवार को आटे का एक पेड़ा वह अपनी गऊ को अपने हाथ से खिलाया करे···

कपिला के मरे-मरे अंगों को भी भूख-सी लग आई—आटे का पेड़ा ! मंगलवार···क्या आज मंगलवार नहीं ? मोहना···क्या मोहना उसका मालिक नहीं ? ····उसका कोई मालिक नहीं ?

कपिला की पथराती आँखों को एक हिलती-सी चीज़ का झाँवला पड़ा—शायद मोहना आ गया !···अपनी मरती गऊ के जिस्म पर एक बार हाथ फेरने के लिए आ गया ?

उसने फैली हुई आँखों से पहचानने की कोशिश की—उसके जिस्म पर कुछ छू रहा था—बहुत कोमल···स्निग्ध···मोहना के हाथों से भी कोमल···और उसने आँखों से गिरती पानी की आखिरी बूँद से पहचाना—उसका बछड़ा पता नहीं कैसे वहाँ आ पहुँचा था, और अपनी जीभ से मरती हुई माँ का जिस्म चाट रहा था···।

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

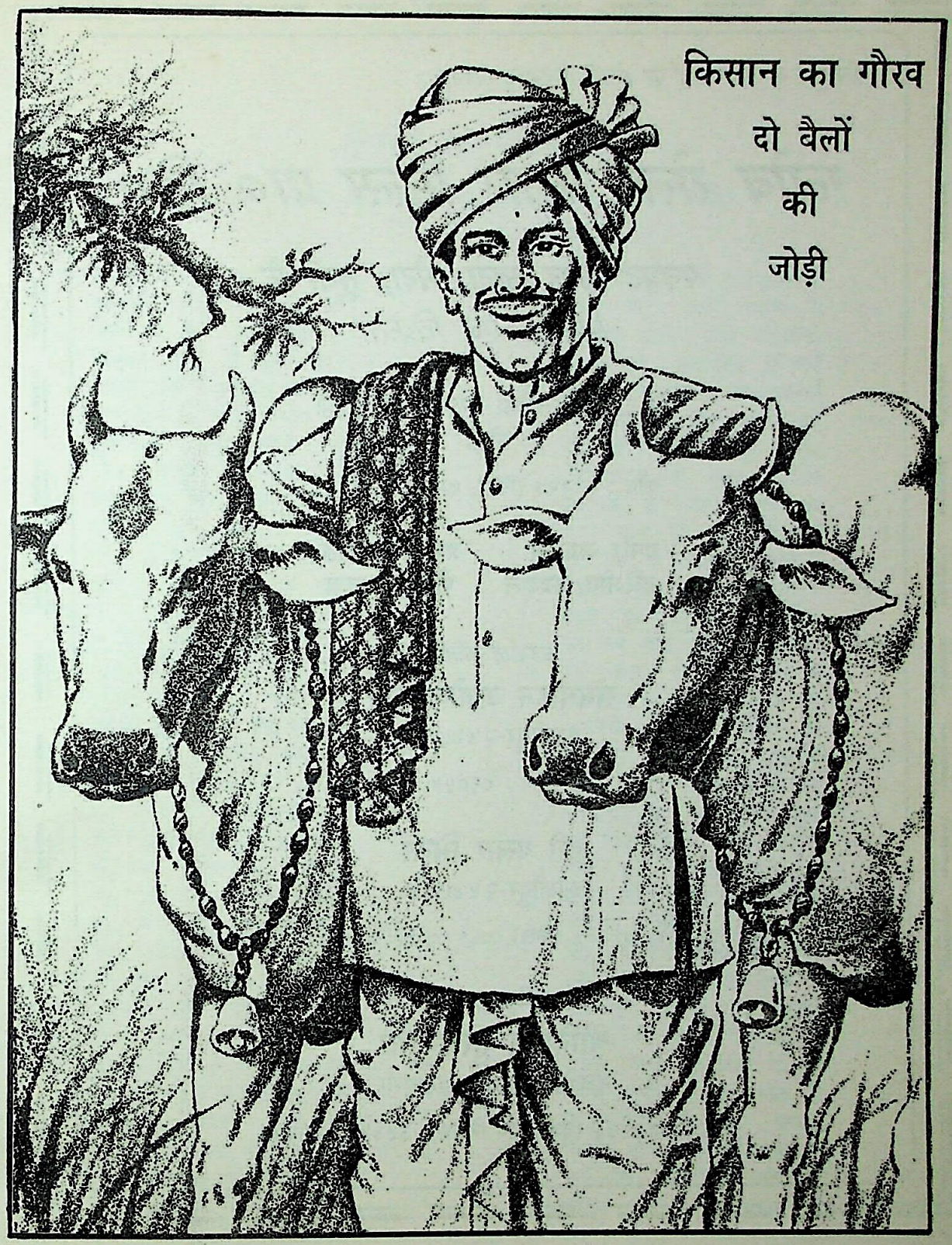

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

ग्लोब रोलर फ्लोर मिल्स प्रा० लि०

पनघट ब्राण्ड आटा, मैदा, सूजी के

निर्माता एवं विक्रेता

ए-६/१, परसखैड़ा इण्डस्ट्रियल एरिया
बरेली

फोन : ७४२२७ (मिल), ७२०४२ (निवास)

प्रमोद अग्रवाल **अशोक अग्रवाल**
हरिओम अग्रवाल **पीयूष अग्रवाल**

सहयोगी प्रतिष्ठान

राममोहन अशोककुमार
काशीपुर-२४४७१३

फोन : ८६०५४

हरी फ्लोर मिल्स
काशीपुर-२४४७१३

फोन : ७५३९४, ७५३९५ (मिल), ८६१८८-८६०३, ७५४९४ (आवास)

अधिकृत एजेन्ट

श्रीनिवास सुरेशकुमार
मच्छोदरी पार्क, वाराणसी

फोन : ३३११४६ (दुकान एवं निवास), ३३३४७७ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल का आशीर्वाद

(वध-स्थल पर ले जाये जाते हुए गाय और बैल के बीच संवाद)
(१ = गाय, २ = बैल)

१. आओ बैठो, बात करें कुछ
दुख-सुख की, जीने-मरने की ।
२. बातों से अब क्या होना है,
किसको फुर्सत है सुनने की ? ।।१।।
नक्कारों की धड़-धड़ में औ'
आपा-धापी की भगदड़ में ।
तूती के-से क्षीण स्वरों को
कौन सुनेगा उठा-पटक में ।।२।।
१. कहते हो तुम ठीक, परन्तु
फिर भी, चुप रहने से अच्छा ।
मरने से पहले अपना 'जीवन-
रहस्य' कह लें हम सच्चा ।।३।।
२. चलो यही अब होने दो,
हम-मूकों की भाषा सुनने को
मिलें नरों को नये कान औ'
संवेदन के गुर पढ़ने को ।।४।।
१. वैदिक युग की याद करो तो
[1]जब तुम ब्रह्मज्ञान कहते थे ।
सत्यकाम जाबाल-संग, वन-
में स्वच्छन्द विचरते थे ।।५।।
२. अरे ! कहाँ की याद दिला दी !
वह सब सपना-सा लगता है ।
फिर क्या लौट सकेंगे वे दिन !
दुख का अन्त नहीं दिखता है ।।६।।
१. माना, लौट नहीं सकते दिन
कालचक्र आगे चलता है ।
फिर भी आस्था की धरती का-
सूरज कभी नहीं ढलता है ।।७।।
२. क्या कहती हो ? आस्था के अब
दिन लद चुके, न कुछ कहना ही ।
उत्तम है, उसकी बातों का
मन ही के मन में रहना ही ।।८।।
१. फिर भी याद नहीं मिटती है,
'जाति-स्मृति' पेंगें भरती हैं ।
कुछ भी कर लो, आस्थाओं की
गहरी जड़ें नहीं मरती हैं ।।९।।
२. तो फिर चलो, जड़ों को सींचो
शायद दिन कुछ फिर ही जाएँ ।
भूली भटकी भाव-बदरियाँ
जनमानस में घिर ही आएँ ।।१०।।
१. वेदों से कुछ आगे बढ़कर
[2]नाट्यशास्त्र की बात करें हम
प्रेक्षागृह में हम लोगों के
प्रथम वास की याद करें हम ।।११।।
२. हाँ, वह तो 'अदृष्ट'[3] कथा है
उसको भला कौन समझेगा ?
आज 'दृष्ट' का युग है भद्रे !
वह सब कोई क्यों समझेगा ? ।।१२।।
१. हाँ, 'अदृष्ट' तो 'गोष्ठी'[4] के भी
नामकरण में छिपा हुआ है ।
'दृष्टादृष्टों' की जोड़ी में
युग का चिन्तन भरा हुआ है ।।१३।।
२. छोड़ो, 'दृष्ट' पकड़ कर ही हम
अद्यतनों से बात करें कुछ ।
जो भाषा वे समझें, उसके
वर्णों की पहचान करें कुछ ।।१४।।
१. अच्छा, लो, कृषि में हम सबका
योगदान किसको भूला है ?
गोबर हम-तुम दोनों का, औ'
हल तुम पर ही नित झूला है ।।१५।।
२. हल औ' हलधर तो चुनाव-
चिह्नों में शोभा पाता है ।
धरती जोते 'ट्रेक्टर' तो ही
'सभ्य' -जनों के मन भाता है ।।१६।।
१. ट्रेक्टर को जो खाद्य चाहिए
उसकी तो निश्चित सीमा है ।
वहाँ कहाँ 'मण्डलमय' गति[5] जो
जीवन की सच्ची महिमा है ।।१७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२. सीमा की तो कौन कहे ?
तत्काल काम चल जाने दो अब ।
मांस हमारा निर्यातित कर
'तेल' करें आयातित, लो सब ।।१८।।

१. बलिहारी इस मति की, जिसके
जीवन के प्रति नेत्र मुँदे हैं ।
मण्डलमय गति भूली जिसको
तम से जिसके मार्ग रुँधे हैं ।।१९।।

२. जीवन की अवगणना ही तो
सब दोषों की जड़ में दिखती ।
उससे तरु में 'काष्ठ-राशि' औ
'मांस-राशि' हम-तुम में दिखती ।।२०।।

१. सच कहते हो, वृक्ष-लता भी
हम-तुम-सम काटे जाते हैं ।
दोनों से पैसे जो मिलते
आपस में बाँटे जाते हैं ।।२१।।

२. पैसा ही क्या चरम 'अर्थ'[६] है ?
हा ! यह कैसी विडम्बना है !
पशु औ' तरु तो मानव के चिर-
सङ्गी, नहिं नवीन घटना है ।।२२।।

१. लगता है यन्त्रों के मद में
मानव 'अर्थ' भुला बैठा है ।
जो 'साधन' है, 'साध्य' उसे कह
सब सन्तुलन गँवा बैठा है ।।२३।।

२. नर-बल पशुबल का सहचर बन-
कर ही यन्त्र सही चलता है ।
है इतिहास सभ्यता का यह
इसमें सबका हित पलता है ।।२४।।

१. आज इसी को तोड़ चला नर
जीवन-विमुख खड़ा होने को ।
नर-केन्द्रित यह नई व्यवस्था
विष का बीज चली बोने को ।।२५।।

२. यह विष केवल हम-तुम को ही
नहिं, नर को भी ले डूबेगा ।
[७]रक्तबीज के सदृश यही नित-
नये अनर्थों को सिरजेगा ।।२६।।

१. क्या कोई भी तरणोपाय न
आज बचा है इस विनाश से ?
देर हो चुकी बहुत, पर कहो,
कैसे छूटे नर कुपाश से ? ।।२७।।

२. बहुत कठिन है, ठहरो लेकिन
बात अभी रह गई अधूरी ।
यन्त्र-सभ्यता की विनाश-लीला
की कथा हुई नहिं पूरी ।।२८।।

१. अच्छा ! अब तुम मुखर हो उठे !
पहले तो कुछ कतराये थे ।
मुझे बड़ा सुख इसमें भैया !
कब-से तुम सहते आये थे ।।२९।।

२. तुमने जब से छेड़ दिया है,
तब से सत्य कथा कहने को ।
मचल उठा है जी, सब कुछ ही
लाग-लपेट बिना कहने को ।।३०।।

१. यह शुभ है, हम दया न माँगे,
पर मनुष्य को उसका ही हित
कह डालें, फिर जो चाहे सो
करे, रहें हम सदा सत्य-रत ।।३१।।

२. हम दोनों की बातें सचमुच
नर के ही हित कही गई हैं ।
उसके और हमारे हित में
कुछ भी तो टकराव नहीं है ।।३२।।

१. चलो, आज के ही युग का
इतिहास बन्धु तुम कह डालो ।
भारत में कितना वचनभङ्ग
है घटित हुआ, सब कह डालो ।।३३।।

२. पहले कुछ इतिहास पुरातन
कह लूँ तब फिर अधुना की ।
बात करेंगे हम-तुम मिलकर
वचनभङ्ग की घटना की ।।३४।।

१. चलो बढ़ो फिर आगे, सुन लूँ
क्या कहने को शेष रह गया ?
दुर्गति की लम्बी यात्रा में
कौन पड़ाव विशेष रह गया ? ।।३५।।

२. हम तुम थे अवध्य घोषित,
कुछ मुस्लिम युग में हुआ प्रहार ।
उसका सिक्खों ने डटकर प्रतिकार
किया था, सत-बल धार ।।३६।।

१. सभी प्रहारों के विरोध में
सिक्खों का उज्ज्वल बलिदान ।
भूल नहीं सकते हम-तुम गुरु-
गोविन्द सिंह का यशोगान ।।३७।।

२. सच है, पर भूले अकबर को,
जिसका निकला था फ़रमान ।
हमें अवध्य पुनः घोषित कर
जिसने पाया था बहुमान ।।३८।।

१. याद करो फिर अँगरेजों के
शासन में नव-तन्त्र चला था ।
हिन्दू-मुस्लिम को बिलगाने का
नवीन षड्यन्त्र चला था ।।३९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२. उस कुचक्र में सच हम लोगों
का शोषण भरपूर हुआ था ।
हमें बनाकर मुहरा, अँगरेजों
ने अपना काम किया था ।।४०।।

१. लोकमान्य था तिलक कि जिसने
अँगरेजों को था ललकारा ।
'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार'
दिया, उसने यह नारा ।।४१।।

२. 'स्वराज्य होते ही गोहत्या-
पाँच मिनट में बन्द करेंगे !'
ऐसा भी वह कहता था, हा !
कैसे उसको भूल सकेंगे ? ।।४२।।

१. उसके बाद महात्मा गाँधी
क्या कहते थे—याद किसे है ?
'गोहत्या मेरी हत्या है'—
चिन्ता उसकी आज किसे है ? ।।४३।।

स्वामी करपात्री जी औ' प्रभु-
दत्त ब्रह्मचारी जी ने भी ।
कितने सत्याग्रह-उपवासों की
शृङ्खला महान् बना दी ।।४४।।

२. सन्त विनोबा भी आखिर में
सब कुछ तज गोरक्षा के ही ।
व्रती बने थे, पर उनको तो
'भारतरत्न' बना कर के ही- ।।४५।।
शासन ने दे दी तिलाञ्जलि;
कभी 'धर्म' तो कभी 'अर्थ' की
आड़ लिया करते शासकजन
शङ्कायें बस उठा व्यर्थ की ।।४६।।

१. देवनार-सत्याग्रह अब भी
सतत चला करता है, देखो ।
'गो-गीता-पदयात्रा' कितनी
निकली हैं—इनको भी देखो ।।४७।।

२. कहीं किसी की पूछ नहीं है
जिनके हाथों में अधिकार ।
उनको केवल 'अर्थ' सूझता,
अल्पदृष्टि कैसी दुर्वार ।।४८।।

१. चलो, अर्थ को ही समझें हम,
ऊर्जा और उर्वरक लेकर ।
इन दोनों में गो-कुल द्वारा
जो कुछ सम्भव उसे कूत कर ।।४९।।

२. अधुना अर्थ-व्यवस्था में तो
पूँजी की ही है भरमार ।
उसमें जो पूँजी विदेश की,
उसकी तो नित-नई बहार ।।५०।।

१. कीटनाशकों-उर्वरकों के
रसायनों के बृहदुद्योग ।
अरबों-खरबों की पूँजी से
चलते, उनका जो उपयोग ।।५१।।
आज हो रहा, वह जीवन का
महावधिक है, यह मत भूलो ।
त्वरित लाभ की मृगमरीचिका,
उसके धोखे में मत फूलो ।।५२।।

२. सच कहती हो, धीमी गति से
ये सब हरते जीवन-सार ।
दुर्घटना हो जाए-तब तो
करते अमित जीव-संहार ।।५३।।

१. गोबर-मूत्र हमारे उर्वर-
कारी, कीट-विनाशक भी हैं ।
धरती को देते नवजीवन
दोषरहित, गुणधारक भी हैं ।।५४।।

२. इतना ही नहिं, विकिरण को भी
रोक सके वह शक्ति भरी है ।
हम लोगों के गोबर में औ,
श्वासक्रिया में, बात खरी है ।।५५।।

१. यह सब तो है ठीक, किन्तु यह
पूँजी का जो निकृष्ट वैभव ।
उसके चलते गुण-दोषों की
विवेचना बन गई असम्भव ।।५६।।

२. सार यही तब तो निकला अब
हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न नहीं है ।
पूँजी औ' श्रमजीवन के बिच
किसे चुनें ? बस प्रश्न यही है ।।५७।।

१. यह विश्लेषण सच्चा है, पर
कौन इसे देखे-समझेगा ?
सबने पूँजी का मद चाखा,
कौन इसे परखे-समझेगा ? ।।५८।।

२. तुमने ही तो कहा कि मरने-
से पहले सब कुछ कहना है ।
फिर क्यों घोर निराशा के स्वर ?
हमें अविचलित ही रहना है ।।५९।।

१. ठीक कहा तुमने, हमको तो
सत्य बात कह जाना है ।
कुछ भी करे मनुष्य, हमें तो
सत्पथ पर ही जाना है ।।६०।।

२. तब तो, बातें बची-खुची जो
उनको भी कह डालें हम ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हम लोगों पर बीता जो अन्याय
उसे कह डालें हम ।।६१।।

१. याद मुझे आता है हम लोगों-
के खाद्यों का निर्यात ।
जिससे हमें पालना दूभर,
यह कैसा अति-मार्मिक घात ? ।।६२।।

२. कानून बने जो गोरक्षा-हित
उनमें छिद्र भरे कितने ?
उन छिद्रों की आड़ ले रहे
मनुज छल-भरे हैं कितने ? ।।६३।।

१. गाय 'दूध का यन्त्र' नहीं है,
उसकी सत्ता है व्यापक ।
उसे यन्त्र समझो मत मानव !
यह चिन्तन जीवन-घातक ।।६४।।

२. यह तो है ही, फिर हम लोगों-
की नस्लों का किया विनाश ।
नस्ल विदेशी बढ़िया मानी
यह भी कैसा सत्यानाश ।।६५।।

१. यदि विदेश की नस्ल बड़ी है,
धरा यहाँ की यदि घटिया है ।
तब तो मनुजों को विदेश की
नस्ल मिले-यह भी बढ़िया है ।।६६।।

२. सच कहती हो किन्तु आज भी
मनुज कहाँ इस धरती का है ?
चिन्तन-भावन सब कुछ उसका
बाहर की ही धरती का है ।।६७।।

१. बाहर की धरती में भी तो
टॉलस्टॉय रस्किन जैसे ।
उपजे जीवन-रसिक कि जिनकी
सुध भी नहीं हमें, कैसे ? ।।६८।।

२. स्वातन्त्र्योत्तर-काल बली है,
जिसमें यह सब कुछ निपजा है ।
जो विदेश के शासन में हो-
सका न, वह सब अब उपजा है ।।६९।।

१. चिन्तन का दासत्व सुनो—
प्रत्यक्ष गुलामी से बढ़कर है ।
उसका ही परिणाम बोलता-
'सभ्य'-जनों के सिर चढ़कर है ।।७०।।

२. इसीलिये गोधन की चिन्ता
दकियानूसीपन कहलाती ।
बाघ-शेर-सूअर की चिन्ता
'जीवदया' का दर्जा पाती ।।७१।।

१. क्यों भूले हो-हम 'बहुसंख्यक',
'अल्पसंख्यकों' को लेकर ।
हमें भूलना ही 'फ़ैशन' है,
इसे त्याग दें जन क्योंकर ? ।।७२।।

२. उतरन-चिन्तन से उबरें जब
शासक, नेता, बुद्धिधनी ।
तब कुछ बिगड़ी बात बनेगी
पनपेगी न कुमति इतनी ।।७३।।

१. तब यह भी मति उपज सकेगी
किस प्रकार नव-तकनीकों से
निर्मल यन्त्र-व्यवस्था सम्भव
मेल रखे जो हम-जैसों से ।।७४।।

छोड़ो, किन्तु कहीं तो शायद
कुछ भारत का सत्त्व बचा हो ।
उसे हमारी बात समर्पित
जिसको जीवन-तत्त्व पचा हो ।।७५।।

२. जय बोलें हम समग्र जीवन
की ! शुभ-सुन्दर-चिन्मय की !
जिसके साथ सदा पनपी है
अभिन्नता शुचि मृण्मय की ।।७६।।

१. चलो कह लिया जो कहना था,
अब हममें दुख-लेश नहीं है ।
मरना तो है ही, पर अब कुछ
कह देने को शेष नहीं है ।।७७।।

२. चिन्ता है बस एक कि यदि हम
नष्ट हुए तो नर-समुदाय ।
नष्ट हो रहेगा, यह निश्चित
उसका कहीं न तरणोपाय ।।७८।।

१. स्थूल ही नहीं, सूक्ष्म नाश की
बात कही है, यह समझें तो ।
शायद उपजे बुद्धि कि जिससे
जीवन-मर्म कहीं समझें वो ।।७९।।

२. एक बात अन्तिम कहता हूँ—
मानव ! तुम तो मतवाले हो ।
घोर प्रकृति-दोहक बनकर तुम
हाय ! भयङ्कर मद पाले हो ।।८०।।

१. शाप नहीं देते हम, नर !
तुम स्वयं सत्य को भजो परख कर ।
हम तो नित्य असीसेंगे ही
तुमको मनु का पुत्र समझ कर ।।८१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टिप्पणी

१. छान्दोग्य उपनिषद् (४/४-५) में उल्लेख है कि सत्यकाम जाबाल को गुरु-आचार्य ने चार सौ गायों के साथ वन भेज दिया था; और कहा था कि ये एक सहस्र हो जायँ, तब यहाँ लौटना । जब वे एक सहस्र हो गयीं, तब एक बैल ने ही सत्यकाम को बताया, और ब्रह्मोपदेश भी दिया ।

२. सर्वलक्षणसम्पन्ने कृते नाट्यगृहे शुभे । गावो वसेयुः सप्ताहं सह जप्यपरैः द्विजैः ।। (ना० शा० ३/१) कहा गया है कि नाट्यगृह (सभी सुलक्षणों से युक्त, विधान के अनुसार) बन जाने पर उसमें सबसे पहले एक सप्ताह तक गायें निवास करें, उनके साथ गायत्री-जप करते हुए ब्राह्मण वहाँ रहें । इस प्रकार गायों के श्वास व गोबर आदि से वह स्थान बाह्य रूप से शुद्ध होगा, एवं गायें निश्चिन्त भाव से बैठेंगी—सुख से रहेंगी, तब ब्राह्मणों द्वारा गायत्री-जप व घोष होता रहेगा एवं शुद्ध चिन्तनमय जीवन जिया जाएगा—तो उस स्थान के वायुमण्डल में शुद्ध स्पन्दन बने रहेंगे । इस प्रकार उस भवन एवं भूमि की अन्तर्बाह्य शुद्धि होने पर ही वह स्थान कलाकार्य के योग्य बनेगा ।

३. भारतीय चिन्तनधारा में प्रत्येक कर्म के दो स्तरों के फल उत्पन्न होना देखा गया है १. **दृष्ट**—जो स्थूल रूप से दिखाई देता है—जैसे गायों के श्वास-गोबर-मूत्र आदि से वातावरण की शुद्धि (कीटाणु-रहित होना, आणविक-दूषण से रहित होना, त्वचा मुलायम एवं निरोग होना इत्यादि), २. **अदृष्ट**—फल वह है जो सूक्ष्म है, बाहरी इन्द्रियों को दिखाई नहीं देता, तुरन्त पकड़ में नहीं आता, और कब, कैसे, कहाँ वह फलेगा—इसका कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता । किन्तु किसी न किसी रूप में वह फल मिलता अवश्य है, उसे स्थूल भाषा में 'पुण्य' या 'पाप'—रूप से कहा गया । यों भी—जिस धरती पर अच्छे कार्य होते रहे हों वहाँ बाद में भी रहने वालों को सुख-अनुभव होता है, चित्त प्रसन्न रहता है, अच्छे विचार आते हैं, और जहाँ क्रूर व हिंसक घटनायें होती रही हों वहाँ वातावरण में बेचैनी, दुःख, क्रूरता-भरे स्पन्दन तैरते हैं यह अनुभवसिद्ध है ।

४. **गोष्ठी** शब्द का भी अर्थ है वह स्थान जहाँ पर गायें बैठती हों । प्राचीन-काल में ऋषि-मुनि एवं चिन्तक-मनीषी जन चिन्तन एवं चर्चा के लिये, ग्रन्थ-प्रणयन के लिये वह स्थान चुन कर बैठते थे जहाँ पर वन में विचरती गायें स्वाभाविक रूप से आ कर बैठती-विश्राम करतीं—आराम से उठती-बैठती-जुगाली करती रही हों । उसी स्थान पर चिन्तन करने से,—प्रश्नोत्तर व चर्चा-विचारणा करने से बुद्धि सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तरों तक कार्य करने या पहुँचने में समर्थ बनेगी ऐसा अनुभव था । ऐसे सूक्ष्म-चिन्तन के लिये होने वाली बैठकों को ही 'गोष्ठी' कहा गया था ।

५. **मण्डलमय गति**—बीज से वृक्ष, वृक्ष से पुनः बीज उत्पन्न होने के समान चक्र चलना । गोवंश के रूप में (बहुत स्थूल दृष्टि से भी देखें तो) ऊर्जा की मण्डलमय गति बनी रह सकती है—आगे-आगे बछड़े-बछिया-गाय-बैल पैदा होते रहने से उनके गोबर-मूत्र आदि से खाद व ईंधन, दूध से पोषण, बैलों द्वारा खेती और भार-वहन आदि का अक्षय क्रम चलता रह सकता है ।

६. **अर्थ**—इस शब्द का पहला अर्थ है चाहने योग्य या चाही गयी वस्तु, या वह वस्तु जिससे कामना पूरी होती हो; आवश्यकता की पूर्ति होती हो । उसका एक साधन या माध्यम होने के नाते ही 'धन' को 'अर्थ' कहा गया । धन भी केवल 'पैसा' नहीं;—'जीवन का उपाय' धन शब्द का अर्थ है । सम्यक् व स्वस्थ मानव जीवन के लिये सबसे पहला उपाय गायों का दूध व गोबर-मूत्रादि तथा बैल आदि को समझा गया—इसीलिये धन का पहला पर्याय 'गोधन' हुआ था; समृद्धि की गणना या माप की इकाई गोधन ही बना था ।

७. **रक्तबीज**—'दुर्गासप्तशती' में आये एक असुर का नाम—जिसकी गर्दन या कोई अङ्ग काटने पर जितने रक्तविन्दु धरती पर गिरते थे उतने ही नये असुर (उसी पहले के समान बलशाली) पैदा हो जाते थे । उनको भी काटने पर फिर उनके रक्त की बूँदों से और-और उतने वैसे ही राक्षस पैदा होते जाते थे । रक्त का कण ही मानो बीज बन जाता था । इसी दृष्टान्त को लेकर एक से असंख्य की उत्पत्ति में 'रक्तबीज' की उपमा दी जाती है ।

८. **देवनार-सत्याग्रह**—बम्बई के निकट 'देवनार' नामक स्थान पर—जहाँ बड़े पैमाने पर बैलों के वध का कत्लखाना है (बहुत बड़ी संख्या में प्रतिदिन वहाँ बैलों का वध हो रहा है) वहाँ—सन्त विनोबाजी ने ११ जनवरी १९८२ से सतत् सत्याग्रह (वध रोकने के लिये) आरम्भ कराया था । महाराष्ट्र-गुजरात एवं देशभर से गोरक्षा-कार्यरत सर्वोदय-सेवकों का वहाँ जाना एवं क्रमिक शृंखला में सत्याग्रह अब तक सतत् चल रहा है, पर उसकी कोई परवाह शासनतन्त्र को नहीं रही है ।

९. बाघ-शेर जंगली सूअर आदि वन्य पशुओं की तथा ह्वेल आदि समुद्री प्राणियों की सुरक्षा के लिये 'जीवदया' के नाम से बड़े समारम्भ से प्रयत्न हो रहे हैं; वह भी होने ही चाहिये इसमें सन्देह नहीं, किन्तु उसके साथ ही उस राशि का दसवाँ-बीसवाँ भाग भी यदि गोवंश की रक्षा एवं गाय-बैलों की उत्तम भारतीय नस्लों की सुरक्षा के लिये व्यय हो तो मनुष्य जाति के लिये बहुत उपकारी होगा ।

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हम लोगों पर बीता जो अन्याय
उसे कह डालें हम ।।६१।।

१. याद मुझे आता है हम लोगों-
के खाद्यों का निर्यात ।
जिससे हमें पालना दूभर,
यह कैसा अति-मार्मिक घात ? ।।६२।।

२. कानून बने जो गोरक्षा-हित
उनमें छिद्र भरे कितने ?
उन छिद्रों की आड़ ले रहे
मनुज छल-भरे हैं कितने ? ।।६३।।

१. गाय 'दूध का यन्त्र' नहीं है,
उसकी सत्ता है व्यापक ।
उसे यन्त्र समझो मत मानव !
यह चिन्तन जीवन-घातक ।।६४।।

२. यह तो है ही, फिर हम लोगों-
की नस्लों का किया विनाश ।
नस्ल विदेशी बढ़िया मानी
यह भी कैसा सत्यानाश ।।६५।।

१. यदि विदेश की नस्ल बड़ी है,
धरा यहाँ की यदि घटिया है ।
तब तो मनुजों को विदेश की
नस्ल मिले-यह भी बढ़िया है ।।६६।।

२. सच कहती हो किन्तु आज भी
मनुज कहाँ इस धरती का है ?
चिन्तन-भावन सब कुछ उसका
बाहर की ही धरती का है ।।६७।।

१. बाहर की धरती में भी तो
टॉलस्टॉय रस्किन जैसे ।
उपजे जीवन-रसिक कि जिनकी
सुध भी नहीं हमें, कैसे ? ।।६८।।

२. स्वातन्त्र्योत्तर-काल बली है,
जिसमें यह सब कुछ निपजा है ।
जो विदेश के शासन में हो-
सका न, वह सब अब उपजा है ।।६९।।

१. चिन्तन का दासत्व सुनो—
प्रत्यक्ष गुलामी से बढ़कर है ।
उसका ही परिणाम बोलता-
'सभ्य'-जनों के सिर चढ़कर है ।।७०।।

२. इसीलिये गोधन की चिन्ता
दकियानूसीपन कहलाती ।
बाघ-शेर-सूअर की चिन्ता
'जीवदया' का दर्जा पाती ।।७१।।

१. क्यों भूले हो-हम 'बहुसंख्यक',
'अल्पसंख्यकों' को लेकर ।
हमें भूलना ही 'फ़ैशन' है,
इसे त्याग दें जन क्योंकर ? ।।७२।।

२. उतरन-चिन्तन से उबरें जब
शासक, नेता, बुद्धिधनी ।
तब कुछ बिगड़ी बात बनेगी
पनपेगी न कुमति इतनी ।।७३।।

१. तब यह भी मति उपज सकेगी
किस प्रकार नव-तकनीकों से
निर्मल यन्त्र-व्यवस्था सम्भव
मेल रखे जो हम-जैसों से ।।७४।।

छोड़ो, किन्तु कहीं तो शायद
कुछ भारत का सत्त्व बचा हो ।
उसे हमारी बात समर्पित
जिसको जीवन-तत्त्व पचा हो ।।७५।।

२. जय बोलें हम समग्र जीवन
की ! शुभ-सुन्दर-चिन्मय की !
जिसके साथ सदा पनपी है
अभिन्नता शुचि मृण्मय की ।।७६।।

१. चलो कह लिया जो कहना था,
अब हममें दुख-लेश नहीं है ।
मरना तो है ही, पर अब कुछ
कह देने को शेष नहीं है ।।७७।।

२. चिन्ता है बस एक कि यदि हम
नष्ट हुए तो नर-समुदाय ।
नष्ट हो रहेगा, यह निश्चित
उसका कहीं न तरणोपाय ।।७८।।

१. स्थूल ही नहीं, सूक्ष्म नाश की
बात कही है, यह समझें तो ।
शायद उपजे बुद्धि कि जिससे
जीवन-मर्म कहीं समझें वो ।।७९।।

२. एक बात अन्तिम कहता हूँ—
मानव ! तुम तो मतवाले हो ।
घोर प्रकृति-दोहक बनकर तुम
हाय ! भयङ्कर मद पाले हो ।।८०।।

१. शाप नहीं देते हम, नर !
तुम स्वयं सत्य को भजो परख कर ।
हम तो नित्य असीसेंगे ही
तुमको मनु का पुत्र समझ कर ।।८१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टिप्पणी

१. छान्दोग्य उपनिषद् (४/४-५) में उल्लेख है कि सत्यकाम जाबाल को गुरु-आचार्य ने चार सौ गायों के साथ वन भेज दिया था; और कहा था कि ये एक सहस्र हो जायँ, तब यहाँ लौटना । जब वे एक सहस्र हो गयीं, तब एक बैल ने ही सत्यकाम को बताया, और ब्रह्मोपदेश भी दिया ।

२. सर्वलक्षणसम्पन्ने कृते नाट्यगृहे शुभे । गावो वसेयुः सप्ताहं सह जप्यपरैः द्विजैः ।। (ना० शा० ३/१) कहा गया है कि नाट्यगृह (सभी सुलक्षणों से युक्त, विधान के अनुसार) बन जाने पर उसमें सबसे पहले एक सप्ताह तक गायें निवास करें, उनके साथ गायत्री-जप करते हुए ब्राह्मण वहाँ रहें । इस प्रकार गायों के श्वास व गोबर आदि से वह स्थान बाह्य रूप से शुद्ध होगा, एवं गायें निश्चिन्त भाव से बैठेंगी—सुख से रहेंगी, तब ब्राह्मणों द्वारा गायत्री-जप व घोष होता रहेगा एवं शुद्ध चिन्तनमय जीवन जिया जाएगा—तो उस स्थान के वायुमण्डल में शुद्ध स्पन्दन बने रहेंगे । इस प्रकार उस भवन एवं भूमि की अन्तर्बाह्य शुद्धि होने पर ही वह स्थान कलाकार्य के योग्य बनेगा ।

३. भारतीय चिन्तनधारा में प्रत्येक कर्म के दो स्तरों के फल उत्पन्न होना देखा गया है १. **दृष्ट**—जो स्थूल रूप से दिखाई देता है—जैसे गायों के श्वास-गोबर-मूत्र आदि से वातावरण की शुद्धि (कीटाणु-रहित होना, आणविक-दूषण से रहित होना, त्वचा मुलायम एवं निरोग होना इत्यादि), २. **अदृष्ट**—फल वह है जो सूक्ष्म है, बाहरी इन्द्रियों को दिखाई नहीं देता, तुरन्त पकड़ में नहीं आता, और कब, कैसे, कहाँ वह फलेगा—इसका कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता । किन्तु किसी न किसी रूप में वह फल मिलता अवश्य है, उसे स्थूल भाषा में 'पुण्य' या 'पाप'—रूप से कहा गया । यों भी—जिस धरती पर अच्छे कार्य होते रहे हों वहाँ बाद में भी रहने वालों को सुख-अनुभव होता है, चित्त प्रसन्न रहता है, अच्छे विचार आते हैं, और जहाँ क्रूर व हिंसक घटनायें होती रही हों वहाँ वातावरण में बेचैनी, दुःख, क्रूरता-भरे स्पन्दन तैरते हैं यह अनुभवसिद्ध है ।

४. **गोष्ठी** शब्द का भी अर्थ है वह स्थान जहाँ पर गायें बैठती हों । प्राचीन-काल में ऋषि-मुनि एवं चिन्तक-मनीषी जन चिन्तन एवं चर्चा के लिये, ग्रन्थ-प्रणयन के लिये वह स्थान चुन कर बैठते थे जहाँ पर वन में विचरती गायें स्वाभाविक रूप से आ कर बैठती-विश्राम करतीं—आराम से उठती-बैठती-जुगाली करती रही हों । उसी स्थान पर चिन्तन करने से,—प्रश्नोत्तर व चर्चा-विचारणा करने से बुद्धि सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तरों तक कार्य करने या पहुँचने में समर्थ बनेगी ऐसा अनुभव था । ऐसे सूक्ष्म-चिन्तन के लिये होने वाली बैठकों को ही 'गोष्ठी' कहा गया था ।

५. **मण्डलमय गति**—बीज से वृक्ष, वृक्ष से पुनः बीज उत्पन्न होने के समान चक्र चलना । गोवंश के रूप में (बहुत स्थूल दृष्टि से भी देखें तो) ऊर्जा की मण्डलमय गति बनी रह सकती है—आगे-आगे बछड़े-बछिया-गाय-बैल पैदा होते रहने से उनके गोबर-मूत्र आदि से खाद व ईंधन, दूध से पोषण, बैलों द्वारा खेती और भार-वहन आदि का अक्षय क्रम चलता रह सकता है ।

६. **अर्थ**—इस शब्द का पहला अर्थ है चाहने योग्य या चाही गयी वस्तु, या वह वस्तु जिससे कामना पूरी होती हो; आवश्यकता की पूर्ति होती हो । उसका एक साधन या माध्यम होने के नाते ही 'धन' को 'अर्थ' कहा गया । धन भी केवल 'पैसा' नहीं;—'जीवन का उपाय' धन शब्द का अर्थ है । सम्यक् व स्वस्थ मानव जीवन के लिये सबसे पहला उपाय गायों का दूध व गोबर-मूत्रादि तथा बैल आदि को समझा गया—इसीलिये धन का पहला पर्याय 'गोधन' हुआ था; समृद्धि की गणना या माप की इकाई गोधन ही बना था ।

७. **रक्तबीज**—'दुर्गासप्तशती' में आये एक असुर का नाम—जिसकी गर्दन या कोई अङ्ग काटने पर जितने रक्तविन्दु धरती पर गिरते थे उतने ही नये असुर (उसी पहले के समान बलशाली) पैदा हो जाते थे । उनको भी काटने पर फिर उनके रक्त की बूँदों से और-और उतने वैसे ही राक्षस पैदा होते जाते थे । रक्त का कण ही मानो बीज बन जाता था । इसी दृष्टान्त को लेकर एक से असंख्य की उत्पत्ति में 'रक्तबीज' की उपमा दी जाती है ।

८. **देवनार-सत्याग्रह**—बम्बई के निकट 'देवनार' नामक स्थान पर—जहाँ बड़े पैमाने पर बैलों के वध का कत्लखाना है (बहुत बड़ी संख्या में प्रतिदिन वहाँ बैलों का वध हो रहा है) वहाँ—सन्त विनोबाजी ने ११ जनवरी १९८२ से सतत् सत्याग्रह (वध रोकने के लिये) आरम्भ कराया था । महाराष्ट्र-गुजरात एवं देशभर से गोरक्षा-कार्यरत सर्वोदय-सेवकों का वहाँ जाना एवं क्रमिक शृंखला में सत्याग्रह अब तक सतत् चल रहा है, पर उसकी कोई परवाह शासनतन्त्र को नहीं रही है ।

९. बाघ-शेर जंगली सूअर आदि वन्य पशुओं की तथा ह्वेल आदि समुद्री प्राणियों की सुरक्षा के लिये 'जीवदया' के नाम से बड़े समारम्भ से प्रयत्न हो रहे हैं; वह भी होने ही चाहिये इसमें सन्देह नहीं, किन्तु उसके साथ ही उस राशि का दसवाँ-बीसवाँ भाग भी यदि गोवंश की रक्षा एवं गाय-बैलों की उत्तम भारतीय नस्लों की सुरक्षा के लिये व्यय हो तो मनुष्य जाति के लिये बहुत उपकारी होगा ।

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवेदन

काव्य नहीं यह, बारह वर्षों का मन्थन है उफन चला ।
घुटन भरी थी जो अन्तस् में उसका लावा बह निकला ।।
समानधर्मा होंगे जो भी, उनको यह रुचिकर होगा ही ।
उदासीन जन को शायद कुछ विचलित कर डाले अब भी ।।
सत्याग्रहरत आत्मीयों के हित ये बरसे हैं शोले ।
उनकी दीर्घ तपस्या अब तो फल लाये, मधुरस घोले ।।
शासन को है स्मरण दिलाना वादे पूरे करने का ।
बिना कठोर सत्य को पाले, यह कलङ्क नहिं मिटने का ।।
बरस अठारह तक गोसेवा का प्रसाद छक-छक पा कर ।
मेरा अन्तस् भीग उठा है गौ की करुणा को छू कर ।।
भीगे अन्तस् की वाणी यह मरुओं का सिञ्चन कर दे ।
संस्कृति के चिन्तक-भावक जन के मानसघन को भर दे ।।
कुमति दूर हो, भावजगत् में सुमति-समीर सदा सरसे ।
सूखी बंजर धरती में भी गौ की करुणा नित बरसे ।।

'आम्नाय'
२०६/१, नन्दनगर के पास, करौंदी
वाराणसी-२२१ ००५

निवेदिका
प्रेमलता शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूध को बहने दो

महाराष्ट्र सरकार का डेयरी विकास विभाग हर दिन ३६ लाख लीटर दूध खरीदता है और २६ लाख लीटर दूध बेचता है । बाकी ७ लाख लीटर दूध समुद्र में रोजाना बहा देता है । अकेले वरली सी-फेस में पचास हजार लीटर दूध बहाया जाता है । बाकी दूध समुद्र में डालने के लिए गोरेगांव वाले रास्ते का इस्तेमाल होता है । यहां यह ध्यान रहे कि सरकार समुद्र में दूध बहाने के लिए किसी विदेशी तकनीक का इस्तेमाल नहीं करती । दूध बहा देने के तरीकों के मामले में हम नितान्त स्वावलम्बी हैं और शुद्ध भारतीय तरीकों से दूध का अर्घ्य अरब की खाड़ी में चढ़ा देते हैं ।

जब कुछ लोग कहा करते थे कि प्राचीन भारत में दूध-दही की नदियां बहा करती थीं तो कम से कम मैं विश्वास नहीं करता था । मैं इसे भाषा का आलंकारिक प्रयोग ही समझता रहा । मेरे ख्याल से सात लाख लीटर दूध को एक सीमेंट की नहर बना कर दूध की नदी बहाने का प्रत्यक्ष प्रदर्शन महाराष्ट्र सरकार कर सकती है और देश भर के लोगों को इसे दिखाया जा सकता है । इससे महाराष्ट्र पर्यटन का भी विकास होगा और देश को अहसास होगा कि सचमुच कभी भारत में दूध-दही की नदियां बहा करती थीं ।

जब अखबार वालों ने पूछा तो विभागीय अधिकारियों ने सफाई दी कि वह सिर्फ खराब हो गये दूध को ही बहाते हैं । यह न भी पूछा जाय कि दूध खराब कैसे हो जाता है और रोजाना क्यों खराब हो जाता है या इसी तकनीक के दूध का पूरी तरह स्विटजरलैंड और अन्य देशों में कैसे पूरा इस्तेमाल हो जाता है तो भी यह तो पूछा ही जा सकता है कि पीने के उपयुक्त न रहने पर भी दूध के पाउडर बनाने का काम तो हो ही सकता है । समुद्र में नीले पानी को सफेद करने का क्या तुक है ? यह उम्मीद छोड़ देनी चाहिए कि सात लाख लीटर दूध बहाने से कभी न कभी सारा समुद्र ही दूधिया हो जाएगा । मुझे इस अनुमान में दम नजर आता है कि दूध से वसा निकालने के बाद उसको समुद्र में बहाया जाता होगा, जैसा अक्सर बहुत से विभागों में होता है । इसके परिणामस्वरूप विभाग पर चर्बी छा जाने की बजाय उसके कुछ अफसरों पर चर्बी छा जाती है जिसे वह अपने नैतिक स्वास्थ्य की कीमत पर भी बर्दाश्त कर लेती है ।

देखा जाय तो रोजाना पचास लाख रुपये के दूध की बर्बादी सालाना कोई एक सौ अस्सी करोड़ रुपये की पड़ती है । जिस बम्बई में अभी इसी साल आठ हजार करोड़ रुपये का घोटाला हो गया, वहां १५ करोड़ रुपया महीना और १८० करोड़ रुपया सालाना का नुकसान क्या मायने रखता है ? और सच पूछा जाय तो यह नुकसान है भी नहीं । यह तो कुछ सौ-पचास लोगों का लाभ ही है । लोग नासमझ हैं, कहते हैं कि फुटपाथ पर रहने वाले या झुग्गियों-चालों में रहने वाले बच्चों को यह दूध मुफ्त में दिया जा सकता था । पहले तो यह समझ लेना चाहिए कि विभाग के नियमों के अनुसार दूध मुफ्त में नहीं दिया जा सकता । फिर यह सोचना चाहिए कि यह दूध जो समुद्र में जाता है, वह आखिरकार मछलियों का स्वास्थ्य ठीक करता होगा और ऐसी पौष्टिक मछलियां अंततः बम्बई की आबादी के स्वास्थ्य को और बेहतर बनाती होंगी । दूध के तत्व घूम-फिर कर मनुष्य शरीर में ही आते होंगे । इसलिए दूध को समुद्र में बहाने दो, रोको मत ।

दीनानाथ मिश्र
दैनिक जागरण, वाराणसी
२८ नवम्बर, १९९३

नाली में बहा दिया

दूध की नदियां आज भी देश में बह रही हैं । यह बात और है कि भूख से लोग मर भी रहे हैं और करोड़ों बच्चों को दूध नसीब नहीं होता । ये सिर्फ सरकारी लापरवाही या बाजार की मजबूरियां नहीं हैं, इन वजहों से अगर एकाध सड़क नहीं बनी या एकाध ट्रेन या हवाई जहाज लेट हो गए तो चल सकता है । लेकिन लाखों लीटर दूध समुद्र में बहाया जा रहा है, इसका मतलब है कि हमारे तंत्र ने और उसे चलाने वाले लोगों ने अपना विवेक और शर्म भी समुद्र में बहा दी है । इतने लाख टन दूध का मतलब सिर्फ कुछ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करोड़ रुपए नहीं होता, इतने पैसे अगर कहीं और डूब जाएं तो कोई दुख नहीं होना चाहिए, लेकिन दूध का अर्थ सिर्फ पैसा नहीं है कम से कम हमारे देश में और हमारी संस्कृति में इसका बहुत व्यापक अर्थ होता है । अन्न को नष्ट करना या फेंकना हमारे यहां बहुत बुरा मानते हैं । लेकिन अपने देश और अपनी संस्कृति से हमारे राज करने वाले लोगों का रिश्ता क्या है, यह सब जानते हैं । इसलिए अगर महाराष्ट्र सरकार का संबंधित विभाग लाखों लीटर दूध नालियों में और समुद्र में बहा देता है तो आश्चर्य नहीं होता, सिर्फ दुख होता है ।

अर्थशास्त्र वैसे भी एक स्वायत्त शास्त्र बन गया है, ऐसा बताते हैं । उसका मनुष्य की स्थिति से, संस्कृति से, नैतिकता से कोई संबंध नहीं है या उनके अध्ययन में इन चीजों को दरकिनार करने की कोशिश की जाती है । इस अंदाज में गुलामी की प्रथा का अध्ययन करने वाले और उसे प्रकारांतर से जायज ठहराने वाले अर्थशास्त्रियों को इस साल का नोबेल पुरस्कार भी दिया गया है । यानी अर्थशास्त्र सिर्फ मुनाफे का और आर्थिक तत्वों में संतुलन का शास्त्र हो गया है । ऐसे में दुनिया भर में अनाज के व्यापार को बड़े देशों के लिए फायदेमंद बनाए रखने के लिए लाखों टन अनाज, फल, सब्जियां समुद्र में डुबा दी जाती हैं । ऐसा भी नहीं है कि दुनिया भर में जो लोग भूखों मर रहे हैं, उनका इससे कोई रिश्ता नहीं है । जहाँ भी भूख है, बदहाली है, वह इस अर्थव्यवस्था की वजह से पैदा हुई है । इन इलाकों में लोग कभी अपने लिए अन्न पानी जुटा लेते थे लेकिन इस अर्थव्यवस्था ने उन्हें दबोचा, उन्हें अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया और भूखों मरने के लिए छोड़ दिया । दूसरी ओर ये ही लोग टनों अनाज और दूसरी खाद्य सामग्री समुद्र में बहा रहे हैं ।

यह क्रूर मजाक है कि इस तरह हम अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में शामिल हों । हमारे देश में बच्चे दूध के लिए तरसते रहें और हम दूध को पानी में फेंकते रहें । सरकार का कहना है कि उसके पास प्रोसेसिंग क्षमता कम है और सहकारी समितियों से उन्हें सारा का सारा दूध खरीदना पड़ता है । ऐसे में बहुत सारा दूध खराब हो जाता है और उसे बहा देना पड़ता है । किसी और मामले में लापरवाही या कुव्यवस्था हो तो बरदाश्त भी किया जा सकता है । लेकिन कम से कम किसी भारतीय मनुष्य को इतना संवेदनशील तो होना चाहिए कि दूध की ऐसी बरबादी को तुरंत रोके ।

लेकिन इस घटना से यही पता चलता है कि हमारे राज करने वाले लोग निहायत असंस्कारी और संवेदनहीन लोग हैं । इसलिए हमने अपनी अर्थव्यवस्था को बरबादी और विनाश की अर्थव्यवस्था बना डाला है । भारतीय समाज भौतिक और मानसिक आध्यात्मिक स्तरों पर दरिद्र कभी नहीं रहा, लेकिन फिजूलखर्ची और बरबादी को उसने कभी अच्छा नहीं माना, जबकि आधुनिक पश्चिमी अर्थव्यवस्था के ये ही बुनियादी तत्व हैं । लेकिन सहज मानवीयता और संवेदनशीलता अगर हो तो इनकी व्यर्थता और क्रूरता समझ में आ सकती है । एक ओर कालाहांडी और एक ओर वरली के समुद्र में बहता दूध, हमारे राज्यकर्ताओं के लिए चुल्लू भर पानी में डूबने के लिए काफी हैं ।

जनसत्ता
नवम्बर, १९९३

सागर में फेंका गया दूध

यह वही देश है, जहाँ दूध की नदियाँ बहा करती थीं । ऐसे आदर्श वाक्यों से स्कूली पुस्तकें भरी रहती हैं । लेकिन आज का यथार्थ यह है कि महाराष्ट्र सरकार हर साल २५ करोड़ ५५ लाख लीटर दूध बहा रही है लेकिन किसी के उपयोग के लिए नहीं, भंडार न कर सकने के कारण समुद्र में बहा रही है, एक तरफ मदर डेयरी (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड) का पहचान चिह्न एक 'बूँद' है जो हमें याद दिलाती है कि दूध हमारे लिए कितना कीमती है, दूसरी तरफ महाराष्ट्र सरकार है जो इस कदर दूध को समुद्र में फेंक रही है । ऐसा नहीं है कि महाराष्ट्र की जरूरत पूरी होने के बाद यह फेंका जा रहा है । दूध की किल्लत और आसमान छूती महँगाई आज भी वैसी ही है, लेकिन इन तमाम बातों की परवाह किये बगैर यह जनहित के विरुद्ध है जो वहाँ की डेरियाँ कर रही हैं । इसका सबसे प्रमुख और एकमात्र कारण है उत्पादन, भंडारण और वितरण में तालमेल का अभाव । बल्कि यह कहना ज्यादा संगत होगा कि हमारे यहाँ आवश्यक वस्तुओं के वितरण की कोई नीति ही नहीं है । यह सनसनीखेज खबर तो सिर्फ दूध के बारे में है । गेहूँ, चावल, खाद्य तेल, किरासन और तमाम चीजों का हाल भी कहाँ अच्छा है, जिनका सम्बन्ध आदमी की बुनियादी जरूरतों के साथ है, इसी तरह पिछली बरसात में केवल दक्षिण भारत में ही ६६ हजार टन गेहूँ मालगाड़ी के वैगनों में खड़ा-खड़ा भींगता और सड़ता रहा क्योंकि खाद्य निगम के गोदामों में गेहूँ रखने की जगह ही नहीं थी । जबकि इससे पहले वर्ष (१९९२) में हमें ३० लाख टन गेहूँ विदेशों से मँगाना पड़ा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह विसंगति क्यों है ? एक तरफ किल्लत है तो दूसरी तरफ चीजें बरबाद हो रही हैं । जब कभी किसी समाधान की बात होती है तो सरकारी विशेषज्ञ किसी नए निगम या बोर्ड के गठन का सुझाव देते हैं । दक्षिण भारत के पशुपालन मंत्रियों ने अपने राज्यों में दूध की इस विसंगति को दूर करने के लिए दक्षिणी दुग्ध ग्रिड बनाने का सुझाव दिया है । लेकिन क्या 'ग्रिड' कोई समाधान है ? क्यों ये लोग बार-बार केन्द्रीकरण की बात करते हैं ? क्यों सुविधाओं का विकेन्द्रीकरण नहीं करते ? गाँधी जी क्यों इस देश में अप्रासंगिक करार दिये गये हैं ? जबकि सच यही है कि इन तमाम विसंगतियों की जड़ में केन्द्रीकरण ही कुंडली मारकर बैठा है । हर राजनीतिक दल सत्ता में आने से पहले सार्वजनिक वितरण प्रणाली सुधारने की बात करता है । आर्थिक सुधारों को लागू हुए दो वर्ष हो गये हैं लेकिन सार्वजनिक वितरण प्रणाली आज भी वही जर्जरित हालत में पड़ी हुई है ? इसे सुधारे बिना अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण का क्या अर्थ है ? कभी भी ऐसी केन्द्रीय भंडारण क्षमता नहीं हो सकती कि बरबादी रोकी जा सके ।

नवभारत टाइम्स
२५ नवम्बर, १९९३

◆

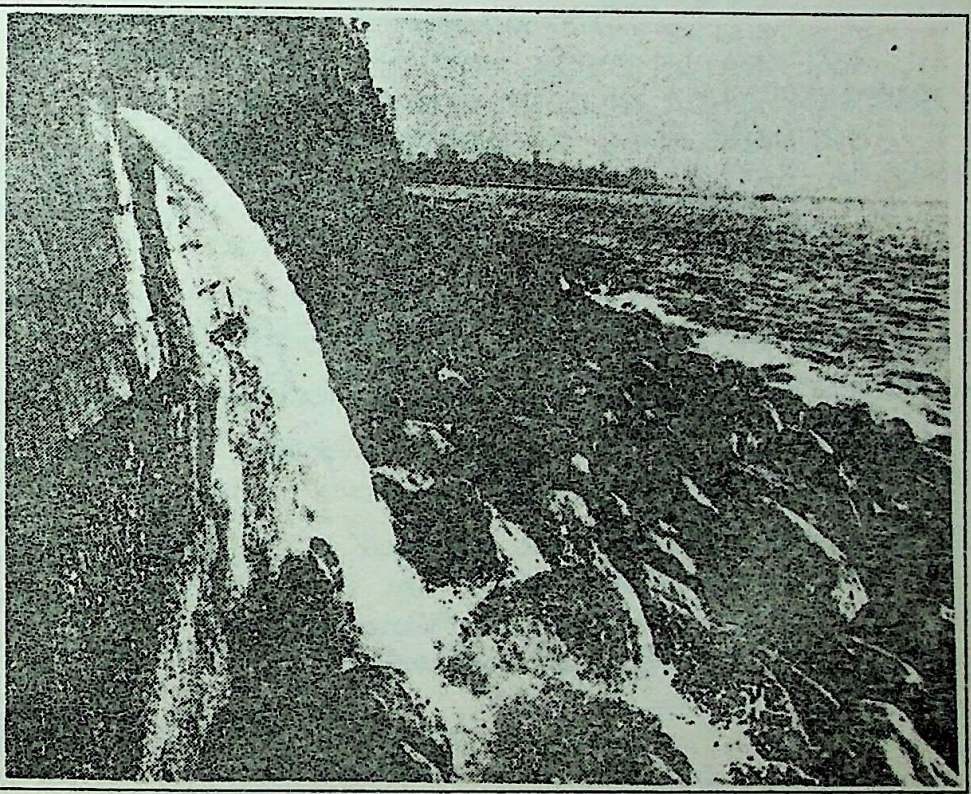

सरकारी वरली डेयरी से समुद्र में छोड़ी जा रही दूध की धार ।

(फोटो : जनसत्ता)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

AGRAWAL ELECTRIC COMPANY

Authorised Dealer

G.E.C., BAJAJ, PHILIPS, DOWELLS, INCAB, PERMACEL
CROMPTON, CINNI, TULLU, L&T SWICHGEAR

VISHESHWARGANJ, VARANASI-221 001
Phone : 331670, 331672 (Off.), 310734, 310735, 331671, 331675

Sister Concern

GENERAL ELECTRICALS

Authorised Dealer

KELVINATOR, ONIDA, VIDEOCON, BPL-INDIA
SHRIRAM HONDA, MILCENT, VENUS WATER HEATERS
TORNADO, G.E.C., CROMPTON, MICRO OVEN

BANSPHATAK, VARANASI-221 001
Phone : 63043, 64155 (Shop), 331671, 310734 (Resi.)

AGRAWAL ELECTRIC AGENCIES

DEALER IN ALL KINDS OF ELECTRICAL AND MECHANICAL GOODS

MACHODARI, VARANASI-221 001

Authorised Dealer

'English Electric', Fusegear, 'Kirloskar' & 'Atul' Diesel
Generating Set, Portable Shreeram Honda 'WOLF'
Electrical Portable Tools 'Varuna' Pump,
'Suguna' Deep well
&
Submersible Pump

Phone : 330080

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गर्भवती गाय तथा नवजात बच्चे की देखभाल

गाय का औसत गर्भकाल २७०-२६० दिन का होता है । गर्भावस्था के ५ माह व्यतीत होने पर प्रतिदिन के राशन में बढ़ोतरी कर देनी चाहिए ।

(१) जर्सी क्रास गाय = ०.५ किलो०

(२) होल्सटीन क्रास गाय = १.० किलो०

ताकि बढ़ता हुआ भ्रूण पर्याप्त पौष्टिक तत्व पाता रहे तथा माता पशु का स्वास्थ्य भी ठीक रहे । जब पशु ७ माह की गर्भावस्था में हो तो उसका दूध दुहना बन्द कर देना चाहिए ।

गर्भवती गाय को ब्याने से २ माह पूर्व अलग (आवास में) रखना चाहिए तथा कैल्शियम की पर्याप्त मात्रा देते रहना चाहिए, ताकि ब्याने के उपरान्त मिल्क-फीवर रोग से मुक्ति मिल सके ।

ब्याने से २ माह पूर्व गाय को उचित ढंग से कीटाणु-नाशक घोल से साफ किये गये तथा काफी हवादार व पर्याप्त ब्याने हेतु स्थान रखने वाले गृह में या प्रसूति कक्ष में रखना चाहिए ।

गर्भवती गाय की देखभाल करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि फ़र्श से फिसलकर उसके चोट न लग जाये । अच्छा हो कि बर्फ़ीदार कटान युक्त (हैरिंगवोन पैटर्न) का फ़र्श प्रयुक्त किया जाये ।

गर्भवती गाय को ब्याने से २ माह पूर्व से ही यदि ४०-६० ग्राम लिवोल प्रतिदिन दिया जाये तो ब्याने में भी सुविधा होगी तथा प्रजनन सम्बन्धी किसी भी रोग होने की सम्भावना कम हो जायेगी । यह लिवर को उत्तेजित करके शरीर को पुष्ट बनाता है ।

ब्याना (जनन प्रक्रिया)—ब्याने वाले पशु के निम्न लक्षण होते हैं—

१. बाँक तथा योनि में सूजन आ जाती है तथा पूँछ की जड़ के चारों ओर के तन्तुओं में शिथिलता आ जाती है ।

२. जैसे-जैसे ब्याने का समय निकट आता जाता है, पशु बेचैन हो जाता है तथा बार-बार बैठता व उठता है और बाद में एक साइड से लेटकर ब्याने हेतु ज़ोर लगाता रहता है ।

३. बार-बार के ज़ोर लगाने से प्रथम गुब्बारा फूट जाता है तथा दूसरा बड़ा गुब्बारा जिसमें बच्चा बन्द होता है, दिखाई देने लगता है ।

४. यह दूसरा बैग भी फट जाता है तथा पशु के लगातार ज़ोर लगाते रहने से बच्चे की जनन प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है । वास्तव में सामान्य स्थिति में बच्चा जनने में १ या २ घंटे तक लग जाते हैं । बच्चे के जन्म लेने में यदि कोई असामान्य स्थिति दिखाई दे तो तुरन्त ही पशु चिकित्सक को बुलाकर जनन कार्य कराना चाहिए ।

५. ब्याने के पश्चात् वाह्य जनन अंग, कोख, पुट्ठे तथा पूंछ इत्यादि को शुद्ध गर्म पानी में (गुनगुना) जिसमें लाल दवा (पोटेशियम परमैंगनेट) मिली हो, से धोना चाहिए ।

६. पशु को भरकाई में रखना चाहिए, ताकि उसे सर्दी न लगे ।

७. सामान्यतया पशु ४ घंटे में जेर बाहर निकाल देता है । यदि १२ घंटे बाद तक भी जेर न डाली गई हो तो, तुरन्त पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए । इस दशा में हर्बल औषधि रिप्लैंटा का उपयोग भी अति उत्तम होता है ।

८. जेर गिरते ही उसको कहीं ले जाकर मिट्टी में दबा देना चाहिए, ताकि पशु इसको ख़ा न जाये, जेर खा लेने से पशु को अपच हो जाता है तथा दुग्ध की मात्रा में ह्रास हो जाता है ।

९. यदि उचित रूप से पशु को आहार न दिया गया हो तो ब्याने के बाद मिल्क-फ़ीवर से ग्रसित होना सम्भावित है । यदि ऐसी कोई बात नज़र आये तो पशु-पालक को सावधानी बरतनी चाहिए और यह सर्वोत्तम होगा कि ब्याने के पश्चात् थनों से पूरा दूध २, ३ दिन तक न दुहा जाये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०. मैस्टाइटिस (थनैला) रोग निवारण हेतु पशु चिकित्सक से नियमित जांच कराते रहना चाहिए ।

११. सर्वप्रथम गाय को ब्रान मैश गुनगुने पानी में भिगोकर दे देना चाहिए ।

१२. ब्याने के २, ३ दिन बाद हल्की दस्तावर खुराक जैसे—रागी, गेहूँ, जई, दलिया या अधपका पिसा हुआ चना तथा हरी घास भी दी जा सकती है । दाना धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए तथा दो सप्ताह के अन्त तक ही दाने की पूर्ण मात्रा देनी शुरू करनी चाहिए । ब्याने के २ माह बाद तक इण्डियन हर्ब्स द्वारा निर्मित 'लिवोल' अवश्य दें, इससे पशु का चयापचय (Metabolism) बढ़ने के कारण प्रसूति तथा प्रजनन व्याधियों से बचाव रहेगा ।

१३. **कन्सन्ट्रेट (दाना)**

गाय—१.० किलो स्वास्थ्य रक्षा हेतु + ४०% भाग कुल दुग्ध-उत्पादन का ।

१४. **पानी**—पानी की प्रचुर मात्रा का प्राविधान हर समय रहना चाहिए ।

१५. ब्याने के बाद कुछ दिन तक ४०-६० ग्राम 'रिप्लैंटा' प्रतिदिन दिया जाये तो जेर इत्यादि को बच्चेदानी से साफ करके निकाल देता है तथा बच्चेदानी सिकुड़ कर पुनः गर्भ धारण हेतु शीघ्र ही योग्य हो जाती है । जेर न गिराने की दशा में दिन में दो बार ६ दिन तक 'रिप्लैंटा' दें तथा ६ दिन तक केवल दिन में एक बार ही इसको दिया जा सकता है ।

१६. ब्याने के बाद से यदि पशु को 'गैलोग' ५० ग्राम प्रतिदिन दिया जाता रहे तो उसके दूध बनाने की क्षमता अन्त तक बनी रहेगी तथा थन बन्द होने या थनैला (मैस्टाइटिस) व बाँक की सूजन इत्यादि की व्याधाओं से पशु मुक्त रहेगा ।

नवजात बच्चे की देखभाल

जैसे ही बच्चा उत्पन्न हो, तैसे ही सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि म्यूकस व लसलसा पदार्थ (श्लेष्मिक द्रव) तथा गर्भकाल का द्रव्य नाक के नथुनों तथा मुँह से निकल चुका है अथवा नहीं । यदि न निकला हो तो साफ़ कपड़े से पोंछ कर निकाल देना चाहिए । उत्पन्न होते ही बच्चे को अलग से दूध देना प्रारम्भ कर देना चाहिए । बच्चे को मां के पास से हटा देना चाहिए ताकि गाय बच्चे को चाटने न पाये । बच्चे को स्वच्छ व सीलन रहित स्थान पर रख देना चाहिए । श्लेष्मिक द्रव को बाहर निकालने के लिए नाक को आहिस्ता से दबाना चाहिए, ताकि बच्चा स्वतंत्रता पूर्वक व सरलता से पूरा सांस ले सके । यदि श्वास प्रक्रिया में कुछ कठिनाई हो रही हो तो कृत्रिम विधि से श्वास दिलाना चाहिए । इसके लिये बच्चे को पिछली टांगों के बीच के जोड़ से (हाक ज्वाइंट) पकड़ कर भूमि तल से थोड़ा ऊपर उठाकर बच्चे को आहिस्ता से घुमाना चाहिए । इस तरीके से बच्चे के नथुने तथा हवा की नली में यदि कोई रुकावट या अवरोधक द्रव होगा तो वह निकल जायेगा तथा श्वसन केंद्र भी उत्तेजित हो जायेगा ।

दूसरा तरीक़ा यह भी है कि बच्चे की छाती भीतिका की (सीने की) मालिश करते हुए धीरे-धीरे दबाना तथा छोड़ने की क्रिया करनी चाहिए तथा बच्चे के मुखद्वार के मुँह से हवा प्रवाहित करनी चाहिए, ताकि श्वसन तथा रक्त परिभ्रमण चालू हो जाये ।

बच्चे का वज़न तौल कर नोट कर लेना चाहिए । बच्चे को उठने में सहायता करते हुए उसकी मां के पास थन चौंखने हेतु ले जाना चाहिए । दूध चौंखने से पूर्व थन तथा बाँक को अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए ।

प्रथम दुग्ध जिसको खीस (कोलोस्ट्रम) कहते हैं, बच्चे को पैदा होने के ३ घंटे के अन्तर्गत शीघ्र पिला देना चाहिए । खीस में एन्टीबोडीज (रोग से लड़ने वाले प्रोटीन तत्व) प्रचुर मात्रा में होते हैं, जो कि बच्चे की बीमारियों से रक्षा करते हैं तथा थोड़ा दस्तावर होने के कारण कब्ज़ नहीं होने देते ।

पैदा होने के बाद बच्चे की नाभि नाल को टिंचर आयोडीन से भिगोकर उस पर बोरिक एसिड पाउडर छिड़क देना चाहिए, ताकि संक्रमण से रक्षा हो सके । यदि थोड़े मोटे स्वच्छ मज़बूत धागे से टिंचर आयोडीन में भिगोकर नाभि से एक इंच की दूरी पर नाभि नाल को बांध दिया जाये और लटके नाल को बंध से नीचे साफ़ कैंची से काट दिया जाये तो और अच्छा रहेगा । २-३ दिन में नाल स्वयं सूख कर झड़ जाता है । बाद में ड्रेसिंग, आयोडीन-टिंचर तथा बोरिक एसिड पाउडर से कर देनी चाहिए ।

चौंखने (दूध चूसने) के २-३ घंटे बाद बच्चा अक्सर प्रथम शौच करता है, जिसे मिकोनियम कहते हैं । यदि ऐसा न करे तो एक लीटर गुनगुने पानी में एक चाय की चम्मच भरा खाने का सोडा (सोडा बाईकार्ब) डालकर एनिमा (वस्ति की क्रिया) कर देना चाहिए ।

प्रायः बच्चे को अपनी मां के पास से स्थाई रूप से प्रथम या २-३ दिन के दूध चौंखने के बाद से पृथक् कर देना चाहिए, ताकि प्रबन्ध में आसानी व बच्चे के लालन-पालन में किये जाने वाले श्रम व्यय में कटौती सम्भव हो सके ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बच्चे की सींग दाग़ने की क्रिया शीघ्र ही १०-१५ दिन के अन्दर अवश्य कर देनी चाहिए । इसके लिए दाग़ने की क्रिया करके या सिल्वर नाइट्रेट लगा कर सींग-स्थान पर सींग के ऊपरी तल को जलाकर कीटाणुनाशक औषधि एक्रीफ्लेविन का १ : १०० अनुपात का घोल लगा देना चाहिए ।

इस क्रिया को करने से पूर्व सींग-स्थान के बाल कैंची से गोलाई के साथ जड़ तक साफ़ कर देने आवश्यक हैं । प्रयुक्त कैंची भी कीटाणुनाशक घोल (पोटाश पानी) से धुली होनी चाहिए ।

बच्चे के टीकाकरण का कार्य भी निम्न तालिका के अनुसार सम्पादित करवा लेना चाहिए—

१. १५ दिवस की आयु पर = गल-घोटू सीरम का वैक्सीनेशन

२. ०३ माह की आयु पर = एन्थ्रेक्स वैक्सीनेशन

३. ३-५ -४ माह की आयु पर = ब्लैक क्वार्टर (चरचरी लंगड़िया रोग) का वैक्सीनेशन

नवजात बच्चे का आहार

डेरी उत्पादन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि बच्चों (विशेष कर बछियों) का लालन-पालन इस प्रकार किया जाये कि अल्प समय में ही वे प्रजनन के योग्य हो जायें ।

स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा आर्थिक कारणों के तहत बच्चों द्वारा दूध चौंखना छुड़ा देना चाहिए । इसको अपना लेने के पश्चात् औसत दर्जे का पौष्टिक आहार बग़ैर अधिक या कम खिलाये बच्चों को दिया जा सकता है । यदि 'हिमालयन बतीसा' २०-३० ग्राम प्रतिदिन प्रति बच्चे को दिया जाये तो इससे पाचन संस्थान का कोई रोग नहीं होगा तथा बढ़ोत्तरी में भी सहायता मिलेगी ।

बच्चे को उसके उत्पन्न होने के आधा घंटे के अन्दर ही कोलोस्ट्रम (खीस) पिला देना चाहिए तथा दूध पिलाते रहना चाहिए, तत्पश्चात् दिन में २ बार भी दूध दिया जाना अनिवार्य है ।

पशु को दूध दुहते ही (शरीर ताप के समान) थोड़ा गर्म करके बच्चे को तुरन्त पिला देना चाहिए ।

पैदा होते ही बच्चे का दूध चौंखना छुड़ा देना चाहिए, इसके लिए निपिल द्वारा या फिर बाल्टी इत्यादि से पिलाने की आदत डाल देनी चाहिए, किन्तु सफ़ाई का विशेष ध्यान रखा जाये । शुरू से ही बच्चे को बहुत कम सिखाने की आवश्यकता होती है कि खुली बाल्टी से दूध किस प्रकार पिया जाये । शरीर भार के अनुसार ही बच्चे के लिए दुग्ध की मात्रा निर्धारित की जाती है । प्रथम ३ सप्ताह में शरीर भार का १/१० भाग, अगले दूसरे सप्ताह में शरीर भार का १/१५ भाग तथा बाद में शरीर भार का १/२० भाग दूध पिलाना चाहिए ।

अच्छी क़िस्म का मुलायम हरा चारा तथा स्टार्टर बच्चे के बाड़े या कक्ष में सुलभता पूर्वक मिलता रहना चाहिए । काफ़ स्टार्टर निम्न प्रकार बनाया जाता है—

१. पीली मक्का का दाना	३० भाग
२. जई पिसी हुई	२० भाग
३. सोयाबीन का चूर्ण	१० भाग
४. मूंगफली की खली	२५ भाग
५. शीरा	१० भाग
६. कैल्शियम फास्फोरस	२० भाग
७. ट्रेस खनिज-कापर, कोबाल्ट आयोडीन, मैग्निशियम तथा आयोडीन इत्यादि	०१ भाग
८. मिनरल मिक्सचर	०२ भाग

आर्थिक उपलब्धि हेतु २ सप्ताह के बच्चे का दूध शनैः-शनैः छुड़ाया जा सकता है तथा उसके स्थान पर काफ़ स्टार्टर दिया जा सकता है तथा बच्चे का दूध ३० दिन की आयु तक पूर्ण रूप से बन्द किया जा सकता है ।

३ माह की आयु में परिपक्व होने तक बच्चों को स्वतन्त्र रूप से हरा चारा देना चाहिए । यथा—मक्का, ज्वार, जई, बरसीम इत्यादि । इनको 'हे' तथा साइलेज भी दिया जा सकता है । इसके अतिरिक्त उनको पौष्टिक दाना भी विभिन्न मात्रा में दिया जाना चाहिए । यथा—१ किलो से ३ किलो प्रतिदिन, जो कि चारे की पौष्टिकता के आधार पर अनुमानित होना चाहिए ।

आयु की अपेक्षा भार ही शीघ्र परिपक्वता लाने में निर्णायक है । अतः भरसक प्रयास करना चाहिए व हमारा यही लक्ष्य भी होना चाहिए कि कम से कम समय में बच्चे का अपेक्षाकृत अधिक शरीर भार बढ़े और इसके लिए हमें बच्चों को स्वतन्त्रता पूर्वक खिलाना चाहिए ।

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

ROSHANLAL SAREES (P.) Ltd.

Manufacturers Of

ALL KINDS OF BANARASI & PRINTED SAREES

CK. 25/1-A, Chowk, VARANASI
(U. P.), INDIA

Phone : 320167, 320174 (Show Room), 42967 (Fact.)
Fax No. : 0091-542-323706

ROSHANLAL SHYAMLAL

ARES PRINTS

CK. 25/1-A, Chowk, VARANASI-221 001
(U. P.), INDIA

VASUDHARA

HOUSE OF SAREES

A-30, Westend Colony, NEW DELHI-110 021

Phone : 3010105, 3015845

Registered Office
30/35, Maldahiya, VARANASI-221 002

Phone : 320167, 320174 (Off.), 46961, 46126 (Resi.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतेन्दु कृत– गोमहिमा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी अपने जीवन-काल में भारतीयों की आर्थिक स्थिति विशेषकर गोधन एवं कृषि हेतु बहुत चिंतित रहते थे । इनके विकास द्वारा दुःख-दारिद्र्य को दूर करने का उपाय बताते थे । गोसेवा को आर्यजनों का पुनीत कर्त्तव्य एवं विशिष्ट साधन बताया । इस सेवा के आध्यात्मिक एवं जीवनदायक पक्षों को लेकर एक अपील अपनी 'गोमहिमा' रचना में सन् १८७० में प्रगट किया था । उस रचना को उद्धृत किया जाता है जो आज भी उतनी ही सार्थक है जितनी सौ वर्ष पूर्व थी ।

गिरीशचन्द्र चौधरी
भारतेन्दु भवन, चौखम्भा, काशी

गोमहिमा

आर्य्य शास्त्र के सब ग्रन्थों से गऊ के रक्षण आदि के अतुल माहात्म्य का संग्रह ।

श्री हरिश्चन्द्र के अर्थ संगृहीत और प्रकाशित हुआ ।

अरिहु दन्त तृन धरहिं ताहि नहिं मारि सकत कोइ ।
हम सन्तत तृन चरहिं बचन उच्चरहिं दीन होइ ।।
अमृत पय नित स्रवहिं बच्छ महि थम्भन जावहिं ।
हिन्दुहि मधुर न देहिं कटुक तुरकहि न पिआवहिं ।।
कह नरहरि अकबर सुनहु बिनवत गउ जोरे करन ।
अपराध कौन मोहि मारियत मुए चाम सेवत चरन ।।

श्री बाबू हरिश्चन्द्र की प्रसन्नता हेतु
गोपीनाथ पाठक ने बनारस लाइट यन्त्रालय में मुद्रित किया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोमहिमा

आर्य्य भ्राता गण !

जब से यवन गण के कण्टक मय चरण इस आर्य्य भूमि में आए तब से गउओं पर जो दुःख है वह हम लोगों का जी ही जानता है । यद्यपि अंग्रेज लोग भी गो भक्षक हैं किन्तु प्रथम तो मुसलमानों की अपेक्षा इनकी संख्या ही अति अल्प है, दूसरे इनका बहुत सा मांस बिदेश से आता है, तीसरे इनके अर्थ जो हत्या होती है वह प्रकाश रूप से नहीं होती । केवल मुसलमानों की हत्या ऐसी है जिससे संतत हम लोगों को दुःख होता है । विशेष दुःख इस बात से होता है कि अंग्रेज लोग भी इन्हीं का पक्ष करते हैं । इसका कारण अति स्पष्ट है । हमको एक अंगुल भूमि बैठने को नहीं उनकी रूम ईरान मिस्र अरब काबुल अनेक राज्य बर्तमान हैं । हम अत्यन्त मृदु वह अति कठोर । हमारी दास वृत्ति अभ्यसित उनकी नवीन होने के कारण अनभ्यसित । हमारे धर्म का मूल शान्ति उनका खड्ग । इधर आलस्य उधर उद्योग । और सबसे मुख्य यह कि इधर फूट उधर एका । कचहरी के अमला, वकील, मुखतार, वेश्या और कारीगर इन बिबिध रूपों से हम लोगों में वे मिल ऐसे रहे हैं कि छूटना कठिन । ऐसा तो कोई ही माई का लाल होगा जो इन कष्टों को सह कर इनका सहबास इनका व्यवहार और इनका सम्बन्ध छोड़ दे । किन्तु हम लोगों को यथा साध्य यत्न तो करना ही चाहिए । अब प्रश्न यह है कि इसका उपाय क्या है ? प्रथम उपाय हम लोगों को

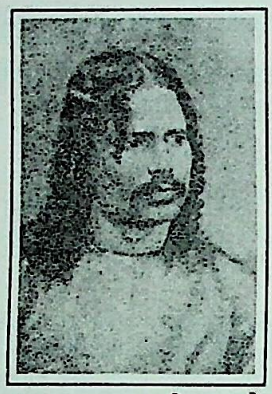

असाध्य—सरकार सुनती नहीं—साम दान भेद केवल इन्हीं तीन नीतियों से काम लेना है । बड़ी-बड़ी गोशाला कीजिए । चन्दा कीजिए । बहुत सी गऊ खरीदिए । मुसलमानों को हाथ जोड़िए, समझाइए, लालच दीजिए, हिन्दुओं ही के कारण तुम्हारी जीविका है यह निश्चय करा दीजिए, इसका उदाहरण उनको प्रत्यक्ष करके दिखला दीजिए । सरकार से भी चाहे सुने चाहे न सुने हल्ला करते जाइए, अखबारों में भी धूम मचाए रहिए । महीने में एक लेख इसी पर सही, आपुस में सदा इसका चर्चा रखिए चाहे काम हो चाहे न हो बके जाइए बस यही सब उपाय हैं । सरकारी कान कोलाहल से बड़ी अरुचि रखते हैं हौरा रहेगा तो अवश्य कुछ होगा । कालनीति के प्रभाव भारतवर्ष के और बिषय-मात्र में आप लोगों का धमनीगत रक्त स्रोत शीतल और स्थगित है केवल एक इसी के नाम से कुछ उत्तप्त और प्रधावित होता है इसमें भी शिथिल हुआ तो इतिश्री और जीवन संस्कार आशा मात्र की समाप्ति है इसको दूर तक सोच लीजिए । उसी आर्य्य तेजोमय रक्त को सतेज करने ही को यह संग्रह प्रकाशित होता है लीजिए और देखिए कि आप के यावत् पूर्व पुरुष मात्र को इस बिषय का कितना आग्रह था, और कुछ नहीं हो सकता तो प्रकाश बध निवारण हो जाय तो भी हम कृतार्थ होंगे । इति।।

हरिश्चन्द्र

मानवता की उदारता

स्वनामधन्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी इतने उदार और दानवीर थे कि एक बार टिकट के लिए भी पैसे न रहे । जो पत्र आते थे, उनका उत्तर सादे लिफाफे में रखकर और पता लिखकर मेज पर रखते जाते थे । एक दिन एक मित्र मिलने आये तो वस्तुस्थिति ताड़ गये । नौकर को पांच रुपए का एक नोट दिया और टिकट मंगाये । मित्र ने अपने हाथ से टिकट लगाये और नौकर द्वारा पोस्ट आफिस भिजवा दिये । उसके बाद जब वे मित्र आते तो भारतेन्दु जी उनके जेब में पांच का नोट जबरदस्ती डाल देते थे । एक दिन मित्र ने कहा—'इसका मतलब यह है कि मैं आया ही न करूँ ?' तब भारतेन्दु जी ने हंसकर उत्तर दिया—आपने ऐसे समय में वह पांच का नोट मुझे कर्ज दिया था कि यदि मैं रोजाना एक पांच का नोट आपको दूं तो भी साल भर बाद मेरी मानवता मुझसे कहेगी कि 'अब भी तुझ पर उक्त मित्र का पांच रुपये कर्ज बाकी है ।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोबर आयात की असलियत

✍ श्री राय सिंह

हजारों वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण ने कृषि प्रधान भारत में गोवंश का महत्व समझाने के लिए गोवर्धन पूजा की परंपरा आरंभ की थी । गोवर्धन पूजा का लक्ष्य था लोगों को यह समझाना कि यदि मनुष्य विवेक से काम ले तो पशु के उचित प्रयोग से ही कृषि उत्पादन में नए कीर्तिमान स्थापित किए जा सकते हैं । पर सबसे महत्वपूर्ण बात थी कि किसी ने तब गोबर आयात करने की कल्पना भी न की होगी । वे तो भारत को स्वावलंबी बनाने के लिए देश में ही उपलब्ध गोबर जैसी बेकार समझी जाने वाली वस्तु का उचित उपयोग करने की परंपरा स्थापित करना चाहते थे और अपने प्रयोग में वे सफल भी रहे ।

सन् १९४७ में स्वाधीनता मिल जाने के बाद तथाकथित पाश्चात्य कृषि विशेषज्ञों के कहने पर गोबर के कंडों को जलाने की निंदा इसलिए की जाने लगी कि इसके प्रयोग से वातावरण दूषित होता है और गोबर को सीधा खाद के रूप में इस्तेमाल न करने से कृषि उत्पादन में घाटा पड़ता है । ये कृषि विशेषज्ञ भूल गए कि ग्रामीण भारत में गोबर के कंडे जला कर किसान वनों की सुरक्षा में एक बड़ा महत्वपूर्ण योगदान देता है । यदि वह अपना भोजन पकाने के लिए कंडों का प्रयोग न करता तो उसे वनों को काट-काट कर लकड़ी से अपना काम निकालना पड़ता । इन शहरवासी विशेषज्ञों को यह पता नहीं था कि गोबर के कंडों की राख का खेत में प्रयोग करने से फसल को आवश्यक कैल्शियम की मात्रा प्राप्त होती है व राख हानिकारक कीटाणुओं का नाश करने में भी लाभकारी है । भारत में गाय, भैंस, भेड़-बकरी आदि पशुओं के गोबर की कोई कमी नहीं है इसलिए किसान उसे कंडों के रूप में ऊर्जा के लिए प्रयोग में लाएं या गोबर को सीधा खेतों में खाद के लिए इस्तेमाल करें तो उसमें किसी को आपत्ति करने की गुंजाइश ही कहां है ?

आज से ग्यारह वर्ष पूर्व १९८३ में भारत सरकार ने एक विशेष दल का गठन किया था जिसे देश में उपलब्ध गोबर के बारे में सही आंकड़े तैयार करने का काम सौंपा गया था । इस विशेषज्ञ दल के अनुसार एक अरब चार सौ करोड़ टन गोबर भारत में प्रति वर्ष उपलब्ध था । १९९४ में उपलब्ध गोबर में कमी न आकर वद्धोत्तरी ही हुई है । अनुमान यह लगाया जाता है कि अब भारत में प्रति वर्ष दो अरब टन गोबर उपलब्ध है । इतनी बड़ी मात्रा में अपने ही देश में गोबर की उपलब्धि के बावजूद भारत सरकार को क्या सूझी कि हजारों मील दूर हालैंड से गाय, भैंस, भेड़, बकरी का ही नहीं बल्कि सूअर का गोबर आयात करने की सोची ? गोबर का आयात तो अपने में ही अशोभनीय है । और फिर सूअर के गोबर का आयात तो आपत्तिजनक भी हो सकता है । शायद वर्तमान भारत के नेता और अधिकारी यह भूल गए हैं कि १८५७ में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध मुसलमान सिपाहियों ने बगावत तब की थी जब उन्हें पता चला कि जो कारतूस उन्हें दागने के लिए दी गई थी उनके ऊपर सूअर की चर्बी का गिलाफ चढ़ा हुआ था और कारतूस का प्रयोग करने से पहले प्रत्येक सिपाही को अपने दांतों से वह सूअर की चर्बी हटा कर ही कारतूस बंदूक में डाल कर इस्तेमाल करना होता था । इस्लाम में तो सूअर को नापाक पशु माना गया है और उसी नापाक पशु का गोबर देश में आयात करने से पहले नेताओं और अधिकारियों को जनता की भावनाओं का तो कम से कम ख्याल रखना चाहिए था ।

भावनाएं तो अपनी जगह हैं पर सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भी सूअर के गोबर का आयात करना खतरनाक साबित हो सकता है क्योंकि सूअर के गोबर में कुछ ऐसे कीटाणु और जीवाणु होते हैं कि वे कुछ भूमिगत सब्जियों के सेवन जैसे गाजर, मूली आदि द्वारा मनुष्य की अंतड़ियों में पहुंच कर खूनी पेचिश के अलावा आंतों में हुक वर्म (आंत की तह पर चिपकने वाला कीड़ा) की बीमारी का कारण भी बन सकते हैं । हालैंड से सूअर का गोबर आयात कर के भारत सरकार केवल धार्मिक भावनाओं की ही अनदेखी नहीं कर रही है बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी खतरे में डाल रही है । प्रश्न उठता है कि हालैंड से सूअर का गोबर आयात करने की सरकार ने क्यों और कैसे ठानी ?

इसी वर्ष जुलाई में गैट विषय पर इंडियन काउंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स की आयोजित गोष्ठी में जब मैंने भारत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरकार की विदेश से मल-मूत्र आयात करने की नीति के बारे में आपत्ति उठाई तो उपस्थित केंद्रीय मंत्री बलराम जाखड़ ने आश्वासन दिलाया कि इस प्रकार की वस्तु का सरकार कोई आयात नहीं कर रही है और न ही सरकार ने किसी को भी इस प्रकार के आयात की अनुमति ही दी है । जब जाखड़ का ध्यान इस आयात के बारे में छपी दैनिक अखबारों की खबरों की ओर दिलाया तो उन्होंने कहा—ऐसी खबर केवल एक अफवाह है । कुछ दिनों बाद २८ जुलाई को केंद्रीय व्यापार मंत्रालय ने हालैंड से गोबर आयात को निगेटिव लिस्ट में रखने की घोषणा की और सितंबर में एक वक्तव्य में दोहराया गया कि सरकार ने गोबर के आयात की अनुमति नहीं दी है । यह वक्तव्य जारी करना इसलिए आवश्यक था क्योंकि दिल्ली के आसपास के गांवों के किसानों ने घोषणा कर दी थी कि वे पचास टन गोबर संसद भवन के दरवाजे पर लाकर डालेंगे ताकि सब सांसदों को मालूम हो जाए कि भारत में गोबर की कोई कमी नहीं है और विदेश से गोबर आयात करने की आवश्यकता नहीं है ।

सरकार का कहना है कि गोबर का आयात अभी तक नहीं हुआ है । ठीक है पर सरकार का यह दावा करना कि यह खबर केवल अफवाह है, सरासर झूठ है । इसलिए इस विषय पर सही तथ्यों को जानने के लिए इस बात का भी पता लगाना आवश्यक है कि दरअसल असलियत क्या है ।

हालैंड की राजधानी हेग के नजदीक वासेनार नामक बस्ती में सीजवान बीवी नाम की डच कंपनी ने भारत को सूअर का गोबर निर्यात करने की पहल की । हालैंड के कृषि मंत्रालय में खाद सलाहकार कमेटी के सामने इस डच कंपनी के सुझाव को इसलिए रखा गया था कि हालैंड का कृषि मंत्रालय गोबर के इस निर्यात पर उन्हें सब्सिडी दे । डच सरकार कमेटी के अनुसार हालैंड के कृषि मंत्रालय ने विश्व बैंक से संपर्क किया और विश्व बैंक ने सुझाव दिया कि भारत की कृषि समस्याओं के संदर्भ में हालैंड के गोबर का निर्यात भारत के लिए उचित रहेगा ।

हालैंड की सीजवान बीवी कंपनी के अनुसार भारत की दो संस्थाओं से भी गोबर निर्यात के बारे में संपर्क किया गया । ये दो भारतीय संस्थाएं हैं—इंडियन डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड अर्थात् भारतीय दुग्ध उत्पादन विकास बोर्ड और मद्रास की ई० आई० डी० पैरी लिमिटेड कंपनी । इन दोनों संस्थाओं ने हालैंड की सीजवान बीवी कंपनी को सलाह दी कि भारत की जमीन को उपजाऊ रखने के लिए प्राकृतिक खाद जरूरी है क्योंकि भारत की भूमि में पोषक तत्वों की कमी हो रही है । कहा जाता है कि भारत की इन दोनों संस्थाओं ने कुछ ऐसे ब्लाकों में शोध किया जहां रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल के कारण मिट्टी भुरभुरी हो चुकी थी । इस प्रक्रिया को तकनीकी भाषा में लीचिंग कहा जाता है । जिसे सरल भाषा में कहा जाता है कि रासायनिक उर्वरकों ने जोंक की भांति धरती के पौष्टिक खून को चूस डाला है और इसी कारण इंडियन डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड ने कह डाला कि संपूर्ण भारतीय भूमि में ही पौष्टिक तत्वों में कमी आ रही है ।

हालैंड की सरकार के सामने समस्या फालतू पड़े तीस लाख टन गोबर को कहीं न कहीं फेंक देने की है । डच विशेषज्ञों के अनुसार यदि अपने फालतू गोबर का शीघ्रातिशीघ्र ही कहीं निर्यात नहीं किया गया तो वहां एक से डेढ़ करोड़ टन तक गोबर जमा हो जाएगा जो हालैंड में अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न कर देगा ।

हालैंड ने अपने फालतू पड़े गोबर की समस्या से निपटने के लिए अपने गोबर से लदे तीन जहाज दक्षिण अफ्रीका और पश्चिम अफ्रीका के तटीय देशों में भेजे थे पर इन देशों के स्वास्थ्य अधिकारियों ने गोबर लदे इन जहाजों को हालैंड वापस कर दिया क्योंकि इनका कहना था कि हालैंड के सूअरों का गोबर भूमि के लिए लाभदायक होने के बजाय हानिकारक अधिक है । एक अधिकारी ने तो इसे जहरीले गोबर की संज्ञा भी दे दी । यह कह कर कि इसके इस्तेमाल से जमीन जहरीली हो जाएगी, इसे वापस कर दिया ।

हालैंड की सीजवान बीवी कंपनी के अनुसार भारत को गोबर निर्यात करके भेजने से पूर्व ही इस गोबर से पहले अपने इस्तेमाल के लिए गोबर गैस बनाई जाए और फिर गैस निकाले इस गोबर को तरल रूप में टैंकरों में भर कर भेजा जाए जिन टैंकरों से डच बंदरगाहों पर खनिज तेल लाया गया था । सीजवान बीवी कंपनी की योजना के अंतर्गत तरल गोबर से भरे इन टैंकरों को गुजरात के रेतीले तट पर उंड़ेल दिए जाने की योजना है ताकि सूरज के ताप से यह तरल गोबर सूख जाए और उसके बाद हालैंड के इस गोबर को भारतीय किसानों को बेचा जाए ।

इन सब तथ्यों से स्पष्ट है कि हालैंड से गोबर आयात करने की योजना तो बना ली जा चुकी थी पर किसानों के कड़े विरोध के कारण हालैंड से अभी तक गोबर का आयात नहीं हो पाया है । ये तथ्य इस बात का संकेत भी देते हैं कि भारत के किसान को अब अपने हितों की रक्षा के लिए हमेशा चौकन्ना रहना पड़ेगा और यदि आवश्यक हुआ तो हानिकारक आयातों के विरुद्ध कार्रवाई भी करनी पड़ेगी क्योंकि अभी गोबर आयात की संभावना समाप्त नहीं हुई है । हालैंड की सीजवान बीवी कंपनी के डायरेक्टर एचपीआर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रिंस अभी भी भारत के चक्कर लगा रहे हैं और यह प्रमाणित करने के प्रयास में लगे हुए हैं कि उनके देश के गोबर के इस्तेमाल से ही भारत में प्रदूषण को रोका जा सकता है और स्वच्छ वातावरण कायम रखा जा सकता है । तथाकथित कुछ भारतीय विशेषज्ञों ने भी सुर में सुर मिला कर इसी प्रकार का राग अलापना आरंभ कर दिया है । अब तो परोक्ष रूप से यह धमकी दी जा रही है कि एक अप्रैल १९९४ को गैट समझौते पर हस्ताक्षर कर देने के बाद भारत हालैंड से गोबर आयात करने के लिए बाध्य है । चाहे हालैंड कितना ही बहलाए-फुसलाए या धमकियां दे भारत का किसान अब अपने हितों के प्रति जागरूक हो गया है । इसलिए भारत सरकार के लिए यही बेहतर होगा कि भारतीय किसानों की बेहतरी और कृषि उत्पादन की सुरक्षा के लिए कारगर कदम उठाए और दूसरे देशों के मल-मूत्र के आयात की नीति से परहेज करे ।

◆

कोल्हू के नए बैल

देश की अर्थव्यवस्था को खोलने और उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में शामिल करने का हल्ला तो अभी-अभी शुरू हुआ है लेकिन धीरे-धीरे यह कारोबार तो जाने कब से चल रहा है । जैसे अपने यहाँ के गाय बैलों का अंतर्राष्ट्रीयकरण बहुत पहले से चल रहा है । विदेशी नस्लों से निषेचित संकर गाय-बैल तैयार करना अपनी नस्लें सुधारने का तरीका माना गया । लेकिन इससे कई दिक्कतें पैदा हुईं । जैसे अपनी ग्रामीण जनता इस बात से परेशान है कि संकर नस्ल के बैलों के कूबड़ गायब होते जा रहे हैं । कूबड़ इसलिए जरूरी है कि उसके बिना बैल, हल और गाड़ी नहीं खींच सकते । संकर नस्ल के बैलों के इस अंतर्राष्ट्रीयकरण से और क्या-क्या हुआ यह अलग विषय है लेकिन कूबड़ का गायब होते जाना भी गंभीर मसला है । अब किसानों को यह सलाह दी जा सकती है कि बैलगाड़ी और हल जैसी चीजों से ऊपर उठकर ट्रैक्टर और कार वगैरह के बारे में सोचें । जैसे एक आधुनिक किस्म के रसोई के बर्तन के विज्ञापन में एक स्त्री देगची, कढ़ाई, तवा वगैरह दरवाजे के बाहर फेंक देती है क्योंकि उसके पास यह नया फ्राइंग पैन आ गया है । कुछ पुराने किस्म के ख्यालों वाले लोगों को बर्तनों को इस तरह फेंक देना बहुत बुरा और असंस्कृत किस्म का कर्म लग सकता है लेकिन इस जमाने में हल और बैलगाड़ी चलाना और कढ़ाई में खाना बनाना ही असंस्कृत है ।

इंग्लैण्ड के राजघराने की एक लड़की की कहानी है कि उसे एक बार एक गरीब आदमी पर निबंध लिखने को दिया गया । उस बेचारी ने न कभी गरीब आदमी देखा था न गरीबी । सो उसने निबंध इस तरह शुरू किया— 'एक गरीब आदमी था । उसका खानसामा भी बहुत गरीब था, उसका कोचवान भी बहुत गरीब था । उसके सारे नौकर-चाकर भी बहुत गरीब थे ।' वैसे ही अपने यहाँ के अंग्रेजीदां वर्ग ने बहुत पहले पश्चिम के बारे में एक निबंध लिखना शुरू किया है— 'पश्चिम बहुत श्रेष्ठ है । वहाँ के लोग बहुत श्रेष्ठ हैं, उनके विचार श्रेष्ठ हैं, उनकी जीवन शैली श्रेष्ठ है, उनके गाय-बैल भी बहुत श्रेष्ठ हैं, उनके कुत्ते श्रेष्ठ हैं, वगैरह वगैरह ।' इसलिए आजादी के बाद या उसके पहले से भी भारत को सुधारने की कोशिशें चलीं । यह पाया गया कि हमारे आचार-विचार से लेकर तो गाय-भैंस तक बुरी हैं और उन्हें सुधारना चाहिए । हमारी गाय-भैंसों को सुधारने का तरीका यह था कि उनका संकर विदेशी नस्ल की गाय-भैंसों से कराया जाए । उसे सुधारने से जो कुछ बिगड़ा वह धीरे-धीरे सामने आ रहा है ।

गाय अपने यहाँ दूध देने की मशीन नहीं है, उसका समूचे जीवन में स्थान है । लेकिन सफेद क्रांति और इस किस्म के विचारों में दूध का उत्पादन और कारखाने में कल पुर्जे बनाने में कोई खास फर्क नहीं है इसलिए दोनों ही चीजों में एक ही किस्म के तौर तरीके इस्तेमाल किए जाते हैं इसलिए ग्लोबलाइजेशन में बैल के कूबड़ का कोई महत्त्व नहीं है । जब बैल के कूबड़ का महत्त्व नहीं है तो हल का और बैलगाड़ी का भी नहीं है । ट्रैक्टर का महत्व है, पेट्रोल और डीजल का है, उसके लिए विदेशी मुद्रा का है और विदेशी मुद्रा के लिए कर्ज का या विदेशी पूंजी का है । बैल का कूबड़ इन सबके खिलाफ है इसलिए विदेशी नस्लों के साथ संकर में वह धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है । कोल्हू तो खत्म हो गया, उसकी जगह तेल के लिए साल्वेंट एक्स्ट्रैक्शन प्लांट आ गए, लेकिन हमारे नीति निर्माता, कोल्हू के बैल की तरह एक ही विचार के ईर्दगिर्द चक्कर लगा रहे हैं, बैल का गायब होता कूबड़ यही बताता है ।

'जनसत्ता' की सम्पादकीय टिप्पणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

चम्पा लाल सन्स

फैन्सी साड़ियाँ, मैचिंग एवं सलवार सूट के विक्रेता

चौक, वाराणसी
फोन : ३५२२५५

MADRAS CLOTH STORE

SUITINGS, SHIRTINGS & DRESS MATERIALS

CHOWK, VARANASI
Phone : 322774

Raymond's	BINNY	OCM
DIGJAM	VIMAL	dinesh

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौ : भारतीय संस्कृति की पर्याय

✍ श्री श्यामसुन्दर गिनोड़िया
एडवोकेट, उपप्रधान मंत्री
श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

भारतीय संस्कृति में गौ की सेवा व रक्षा पर बराबर बल दिया गया है । यह हमारी संस्कृति से बहुत ही गहरायी से जुड़ी है । ऋग्वेद से अथर्ववेद की यात्रा तय करते हुए 'गौ' ब्रह्ममयी मां भगवती हो जाती है । वेदों ने गो को सृष्टि रूप में देखा और सृष्टि को गौस्वरूपा । गौ को विश्व देवी कहा और गति का द्योतक माना । ऐसी मान्यता प्रदान की कि गौ के सम्पूर्ण अंगों में वेद, उपनिषद, शास्त्र, देवता, ऋषि, मुनि, लोकालोक आदि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निवास करता है । अथर्ववेद के अनुसार गौ के अंग-अंग, रोम-रोम में प्रजापति, इन्द्र, विष्णु, शिव, धाता, अग्नि आदि तमाम देवता वास करते हैं । इसके अतिरिक्त इनके बैठने, चलने, ठहरने आदि दैनंदिन क्रियाओं में भी अनेक देवताओं की अभिव्यक्ति होती है । यथा, बैठी गाय अग्नि स्वरूपा है, बैठे बृषभ की जोड़ी अश्विनीकुमार है । गौ पूरब की दिशा में ठहर जाती है तो इन्द्र स्वरूपा है, दक्षिण में यम, पश्चिम में साक्षात् धाता एवम् उत्तर में सविता रूपिणी है । (अथर्व० ६/७)

महर्षि वशिष्ठ ने इक्ष्याकु वंशी राजा सौदास से गौ की महिमा का गुणगान करते हुए कहा कि हम नित्य गौओं को देखें, और गायें भी हमें देखें । हम गौओं के हों और गौयें हमारी हों । गौ हैं तो हम हैं । अर्थात् उन्होंने गौ के अस्तित्व में अपना अस्तित्व-बोध किया ।

गौ को हिन्दू धर्म एवम् संस्कृति की पर्याय मानते हुए महात्मा गांधी ने कहा है गाय में मैं समस्त मानवेतर प्राणियों के दर्शन करता हूं । गौ-रक्षा विश्व को हिन्दू धर्म की देन है और जब तक गौ-रक्षा करने वाले हिन्दू दुनिया में मौजूद हैं, तब तक हिन्दू धर्म भी जीवित रहेगा ।

गौ और भारतीय संस्कृति की जब चर्चा होती है तब यह तथ्य प्रकाश में आता है कि इस देश के प्रायः सभी अंचलों में हिन्दू परिवारों में गाय की पूजा होती है । असम-मणिपुर-मेघालय-त्रिपुरा प्रदेशों में शुभ कार्यों का आरम्भ करते हुए मकर-संक्रान्ति की प्रातः बिहू उत्सव के प्रारम्भ में गाय की पूजा का प्रचलन है । भारत के दक्षिण प्रदेशों में मकर संक्रांति के तीसरे दिन गाय की पूजा की जाती है, मध्व पोंगल अर्थात् गोरस से पोंगल बनाया जाता है । भादों कृष्ण त्रयोदशी एवम् अश्विन शुक्ल पूर्णिमा को देश भर में गौ पूजा होती है । कार्तिक कृष्ण द्वादशी गोवत्स द्वादशी के रूप में मनाते हुए गाय की पूजा की जाती है । कार्तिक शुक्ल अष्टमी गोपाष्टमी के रूप में मनाया जाता है और उस तिथि को गाय की सेवा-पूजा विशेष तौर पर की जाती है । ऐसी मान्यता है कि आज ही के दिन श्री यशोदाजी ने अच्छा मुहूर्त दिखवाकर श्री कृष्ण एवम् श्री बलदाऊ के हाथ में लकुट कमरिया दे गोचारण हेतु गोवत्सों के साथ भेजा था । श्री कृष्ण ने गौ प्रेमवश ही इन्द्रपूजा का निषेध किया, उनका मान मर्दन कर कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (दीपावली के दूसरे दिन) गौ पूजन एवम् गोवर्धन पूजन का प्रचलन किया । उन्होंने इस प्रकार कृषि प्रधान भारत में गौ पूजन को विधिवत् प्रतिस्थापित किया और मान्यता दी कि कृषि की शक्ति गोमाता है ।

गौ के साथ ही उसके अवशिष्ट गोबर का भी प्रयोग भारतीय संस्कृति में विभिन्न रूपों में किया जाता है । प्रत्येक हिन्दू परिवार में कोई भी अनुष्ठान प्रारम्भ करने से पूर्व भूमि को गोबर से लीपने का आम चलन है । भारत के अधिकांश गांवों में और विशेषकर कच्चे मकानों में प्रायः गोबर का लेप किया जाता है । ऐसी धारणा है कि गोबर लीपने से घर-आंगन स्वच्छ, शीतल और सुखप्रद बन जाता है । एक विशेष बात तो यह है कि प्रायः पूजा-अनुष्ठान में अन्य देवी-देवताओं को विभिन्न अन्न एवम् आटों के ढेर पर प्रतिष्ठित कर उनकी पूजा करते हैं परन्तु कोई भी पूजा-यज्ञ प्रारम्भ करते समय सर्वप्रथम जिस गणेश की पूजा करते हैं उन्हें गौ-गोबर पर ही प्रतिष्ठित करते हैं । भारत के पश्चिमी प्रदेशों में दशहरा के पर्व पर गौ-गोबर का दस पिण्ड बना कर उगा जो, रोली, दधि, मीठा चावल आदि चढ़ा कर पूजा

(शेष पृष्ठ ६५ पर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौ-माता की महिमा : एक सत्यकथा

✍ डॉ० जगदम्बाप्रसाद बरनवाल
काशी विद्यापीठ

हिन्दू संस्कृति में ऐसी मान्यता है कि मनुष्य को शरीर त्याग करने के पश्चात् ईश्वरलीन होने के क्रम में वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है और इस दुष्कर यात्रा में गौ-माता सहायक होती हैं । उनकी पूंछ पकड़ कर मृतात्मा उक्त नदी पार कर जाता है । इसीलिए मनुष्य जीवनकाल में और विशेषकर मृत्यु-शय्या पर गोदान करता है । जीवन के अन्तिम क्षणों में गौ की पूंछ पकड़ कर दान देने की प्रायः सभी हिन्दू की इच्छा होती है । गौमाता का एक चमत्कार मैंने देखा और इस घटना ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया । गौ कृपा का यह भी स्वरूप होता है, यह साक्षात् सामने दिखायी दिया । उक्त सत्य घटना का उद्धरण आपके समक्ष है ।

८२ वर्षीया मां एक लम्बे अरसे से अस्वस्थ चल रही थीं । उनकी बलवती इच्छा थी कि अपने दोनों पुत्रों, पुत्र वधुओं, पौत्रों, पौत्र वधुओं, पुत्रियों एवं दामादों के बीच प्राण त्याग करें । मजे की बात यह थी कि उन्होंने अपनी मनःदशा किसी से कही भी नहीं, परन्तु जो घटनाक्रम घटित होते थे, वे इसी को व्यक्त करते थे । बड़ा पुत्र उच्च पदाधिकारी देश भर में भ्रमण करने वाला, नौकरी के कारण घर से दूर रहने वाला और बड़ी बहू भी पति के साथ । छोटा पुत्र एवं पौत्र गण उद्योगपति एवं अपने उद्योग में अधिकांशतः व्यस्त थे । परन्तु जीवन के अन्तिम मास में मां ने अपनी शारीरिक दशा कुछ ऐसी कर ली थी कि परिवार का कोई भी सदस्य व्यस्त रहते हुए भी उन्हें छोड़ने की स्थिति में नहीं था । कभी-कभी तो लगता था कि सभी उनके जीवन की अन्तिम घड़ी की प्रतीक्षा में हों । आश्चर्य की बात यह थी कि चिकित्सीय परीक्षण में कोई शारीरिक विकार नहीं, मात्र वृद्धावस्था के कारण शैथिल्य को छोड़कर ।

मां ने अपनी शारीरिक दशा को देखते हुए धीरे-धीरे अन्न का त्याग किया, तत्पश्चात फल व जूस का भी, दवा लेना भी बन्द कर दिया था । जीवन के अन्तिम एक पक्ष में तो मात्र गंगाजल पर रहीं, दूध का भी त्याग कर दिया । इसके बाद भी शरीर एकदम निर्मल, स्वच्छ एवं शान्त । उनकी आँखें खुली रहती थीं और वे सभी को देखती थीं परन्तु किसी से कुछ भी नहीं कहती थीं । यदा-कदा उनके मुखारविन्द से 'राम' नाम उच्चरित होता था । गंगा जल पर रहने के कारण परिवार जन समय-समय पर उन्हें गंगाजल चम्मच से मुख में डालते थे और इस प्रकार प्रायः अधिकांश सदस्य रातों दिन उनके इर्द-गिर्द रहते थे । अन्तिम सप्ताह में उन्होंने किसी से बात करना भी बन्द कर दिया । डाक्टरों ने उनकी जांच की और कहा कि सारी इन्द्रियां ठीक प्रकार से कार्य कर रही थीं । इसे 'कोमा' की स्थिति भी नहीं कही जा सकती थी । शारीरिक दशा देख कर भी सभी आश्चर्य करते थे । क्योंकि १५-२० दिनों से अन्न, फल का रस, पुनः दूध का त्याग करने के बाद भी उनके शरीर में कोई दोष नहीं था । मुखमण्डल उसी प्रकार उज्ज्वल व शान्त था ।

धीरे-धीरे परिवार में चर्चा होने लगी कि 'मां' की इस प्रकार की स्थिति कब तक चलेगी । मां द्वारा अन्न, फल रस, दूध का त्याग करने एवं मात्र गंगाजल ग्रहण करने से सभी के मन को बड़ा क्लेश था । परन्तु मां इन सब बातों से निश्चिंत शान्त मुद्रा से निर्विकार भाव से बिस्तर पर पड़ी थीं । परिवार में बात उठी की कहीं मां का मन किन्हीं बातों-विषयों में तो नहीं रम रहा है जिसके कारण वह शरीर त्याग नहीं कर रही हैं ।

अन्त में निश्चित हुआ कि किसी अच्छे ज्योतिषी से इनके सम्बन्ध में बात की जाय । परिवार के एक सदस्य के साथ मैं एक ज्योतिषी के पास गया । कुछ प्रतीक्षा के बाद जब हम लोग इनके समक्ष गये और उनसे अपने आने का प्रयोजन तथा मां की स्थिति के बारे में बताया तो उन्होंने कुछ विचार कर कहा कि मां के हाथ से छुला कर गुड़ गाय को खिलायी जाय । चौबीस घन्टे में कुछ परिणाम अवश्य मिलेगा । यदि ऐसा न हो तो दूसरे दिन गोशाला में गायों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को हरी घास खिलाया जाय । मां को निश्चित ही मनःक्लेश से शान्ति मिलेगी ।

तदनुसार, मां के हाथ से छुला कर उस दिन दोपहर को गुड़ गौ को खिलाया गया । मां की स्थिति यथावत बनी रही । पुनः दूसरे दिन प्रातः ७ बजे गौशाला में गायों को हरी घास खिलायी गयी । एक चमत्कार सा हुआ । अपराह्न दो बजे मां का मुखमण्डल संज्ञाशून्य हो गया और धीरे-धीरे शरीर ठंडा पड़ने लगा । लगभग आधे घन्टे में वह देवलोक वासी हो गयीं । अपने पति के पास चली गयीं । गौमाता में इतनी शक्ति है, इसका आभास उसी दिन हुआ । गौमाता सचमुच महान् हैं और अपने संतानों के कष्टों को हर लेती हैं । यह हम हैं कि इसे नहीं समझ पाते हैं ।

◆

पृष्ठ ६३ का शेष

जाता है । महाभारत के शांति पर्व में उद्धृत कथा के अनुसार सुख-समृद्धि की साक्षात्कार मूर्ति मां लक्ष्मी ने स्वयं गौओं से आग्रह कर और उनकी अनुमति से उनके अवशिष्ट 'गोबर' में वास करना स्वीकार किया । कहने का तात्पर्य यह है कि गौमूत्र-गोबर तक का भारतीय संस्कृति में एक उपयोगी महत्व है ।

गौमाता के साथ ही गौवंशों की भी पूजा-अर्चना का भारत में प्रचलन है । 'नंदी' भगवान शंकर का वाहन है और सभी शिव मंदिरों एवं शिवालयों में वह साक्षात् विराजमान है और श्रद्धालुओं द्वारा पूजित है । महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि अनेक प्रदेशों में 'नंदी' का पृथक मंदिर भी है । आज भी विष्णु का 'चरणोदक' बनाने में जो पंच गव्य तैयार किया जाता है उसमें तीन द्रव्य दूध, दधि एवम् घृत गाय के दूध से ही तैयार होते हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गौमाता हमारी संस्कृति की पर्याय बन गई है । गोपाष्टमी के पुनीत पर्व पर इनकी विशेष सेवा करें तथा इनकी रक्षा का संकल्प लें इसी में भारत देश एवम् सम्पूर्ण मानव समाज का हित है ।

◆

पर्यावरण और गाय

इस भूतल और इसके इर्द-गिर्द में बसने वाले चल-अचल, चेतन-अचेतन प्राणी और वस्तु के सहजीवन से जो संतुलन बना हुआ है, जो परिस्थिति पैदा हुई है, उसे पर्यावरण कहा जाता है ।

इस पर्यावरण में से सारा प्राणी-जगत् पोषण प्राप्त करता है । पर्यावरण के संतुलन पर उसकी सुरक्षा निहित है ।

इस पर्यावरण को शुद्ध रखने में और भूमि-मानव को अपने संतान के साथ-साथ पोषण देने की अद्भुत क्षमता गोवंश में प्रकट हुई है ।

उसके दूध पर उसका बछड़ा और मानव पुष्ट होता है, उसके गोबर से भूमि की भूख मिटती है । उसके मूत्र से रोगोत्पादक कीटाणुओं को नियंत्रण में रखने की शक्ति है । उसके गोबर में अणुविकरण का प्रभाव कम करने की क्षमता है । उसका घी जलाने से निकला पवित्र धुआँ आसमान को सुगंधित, शुद्ध रखता है । कल-कारखानों से निकली जहरीली वायु से पृथ्वी का छत ओजोन पटल को छेद हो रहे हैं, जिससे सूरज के अति उष्ण नील किरणों से पृथ्वी में गरमी बढ़कर तबाही होने के आसार दिख रहे हैं । उस ओजोन-पटल में हुए छिद्रों को पाटने की क्षमता गाय के घी का दीया जलाने के बाद निकले धुएं में है, यह प्रमाणित हुआ है ।

गोवंश को छोड़कर यंत्रों द्वारा हम अपने व्यवहार, उद्योग, आवागमन, कृषि की जोत आदि करने लगेंगे तो पृथ्वी में के खनिज सदा के लिए समाप्त होंगे । हवा, पानी, भूमि-उत्पाद में भयंकर प्रदूषण बढ़ेगा । गोवंश निरंतर उपजने वाला, शाश्वत स्रोत है । घासफूस खाकर वह भूमि-मानव उसके बछड़ों को पालती है, जो खेती, परिवहन आदि में मददगार होते हैं । और रोगनिवारक शुद्धि-कारक भी हैं । इस तरह गाय पर्यावरण की पुष्टिरक्षा करती रहती है ।

गाय स्नेहमयी है, वातावरण में प्यार का सर्जन करने से शांति सद्भाव बनाये रखने में मददगार है । खाती कम है, देती अधिक है । इस तरह धरती को भी गाय धारण किये हुए है, पर्यावरण का संतुलन बनाये रखने में उसकी अहम भूमिका है ।

संकट की वैतरणी - पार करावे गाय ।
भूखे को रोजी-रोटी - भूमि को दे खाद गाय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर सुमंगल की मंगल कामना :

बेनी प्रसाद लोहिया

सुमंगल

विशिष्ट साड़ियों का भव्य शो-रूम

वैवाहिक बनारसी साड़ियाँ, फैन्सी प्रिण्टेड साड़ियाँ, परम्परागत साड़ियाँ

घाघरा चुन्नी सेट • रीयल बेलबूटी • पीला चुनड़ी

घाट चोला **कांजीवरम्** **बालूचरी** **गढ़वाल**

कोतवालपुरा (बाँसफाटक), वाराणसी

फोन : ३२१७२२ (दुकान), ५२६०२ (घर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुगल शासन में गोवध निषेध

✍ श्री गोवर्धनलाल पुरोहित

मुसलमान जब भारतवर्ष में आये, तब वे इस देश की परंपराओं एवं मान्यताओं से परिचित नहीं थे । वे हमसे भिन्न जलवायु एवं भौगोलिक स्थिति के देश से आये थे । मांसाहारी होने के कारण प्रारंभिक मुस्लिम शासक गो रक्षा के लिए इतने सचेष्ट नहीं थे जितने मुगल शासक थे । इस युग में मुगल शासक पूरी तरह भारतीयता के रंग में रंग गये थे ।

भारत में मुगल शासन की नींव डालने वाला बाबर बहुत ही उच्च चरित्र एवं उदार विचारों का शासक था । इतिहास-वेत्ता रामफल सिंह ने 'हिन्दू मुस्लिम सांस्कृतिक एकता के इतिहास' के तीसरे भाग में बाबर के वसीयतनामे का विस्तृत वर्णन किया है । इसमें हुमायूं को हिदायत दी गई थी कि मुगल राज्य के अंतर्गत मंदिर या पवित्र स्थानों को कभी न तोड़ना । इसी भाग में हुमायूं के गोभक्त चरित्र का उल्लेख है । हुमायूं के पास पचास गायें थीं । वह केवल गाय का दूध पीता था और उसने कभी गोमांस का भक्षण नहीं किया ।

मुगल सम्राट अकबर एक राष्ट्रीय शासक थे । हिन्दी भाषा के अनेक कवियों को उन्होंने राज्याश्रय प्रदान किया । दरबारी कवि सम्राट का केवल यशोगान ही नहीं करते थे वरन् उनको सतपथ पर चलने के लिए प्रेरित करते थे । इस प्रकार के कवियों में 'नरहरि' जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है । उन्होंने अपने समय में गोरक्षा के लिए एक सशक्त अभियान छेड़ दिया था । सम्राट अकबर का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए एक दिन उन्होंने एक गाय को सम्राट के फरियाद स्थल पर लाकर खड़ा कर दिया । गाय की ओर से एक मार्मिक प्रार्थना कवित्त के रूप में सम्राट के सामने प्रस्तुत की—

अरिहि दंत तिनु धरे, ताहि नहिं मारि सकत कोई ।
हम सतत तिनु चरहिं, वचन उच्चरहि दीन होई ।।
अमृत पय नित स्त्रवहि, वच्छ महि थमन जावहिं ।
हिन्दुहिं मधुर न देहिं, कटुक तुरुकनि न पियावहिं ।।
कह कवि नरहरि अकबर सुनो विनवति गऊ जोरे करन ।
अपराध कौन मारियत, मुए हु चाम सेवई चरन ।।

नरहरि जी की वाणी में गाय की पीड़ा से सम्राट अकबर का हृदय पसीजे बिना नहीं रहा और उन्होंने तुरन्त ही देशव्यापी गोवध निषेध की आज्ञा प्रसारित कर दी । इतना ही नहीं गोहत्या करने वाले की मृत्युदण्ड देने की घोषणा कर दी । अबुल फजल ने 'आइने अकबरी' भाग एक, पृष्ठ १६३ पर इसका स्पष्ट उल्लेख किया है कि 'सम्राट अकबर ने अपने राज्य में गोवध पर पाबन्दी लगा दी ।' तत्कालीन हिन्दी कवि ने भी तथ्य की पुष्टि करते हुए लिखा—

नरहरि कवि सों गऊ की विनती सुनि,
सांची गुन खलन पै कै मअत आकससी ।
अकबर जारि परवाने किये न मारिबे के,
चाहिहुं महीपन लखानी बात हकसी ।
व्यापि गयो दुकम दिल्ली पति को हिन्द भरि,
वाजिब विचारी मन अति कै कर कसी ।
जीवन कसाइन को गाइन की देत भयो,
गाइन की मौत ले कसाइन को बकसी ।

अकबर के बाद जहांगीर और शाहजहां ने भी गोवध निषेध की नीति जारी रखी । औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान अवश्य थे परंतु हिन्दू मान्यताओं के प्रति उनकी पूरी आस्था थी । इतिहास में ऐसे कितने ही उदाहरण हैं, जिनमें हिन्दू मंदिरों को भूमि देने एवं आर्थिक सहायता करने के प्रमाण मिलते हैं । औरंगजेब के बड़े भाई दारा शिकोह तो हिन्दू मान्यताओं के प्रति पूरी तरह समर्पित थे ।

अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के समय गो-हत्या करने वाले को प्राणदण्ड देने की व्यवस्था थी । अंग्रेजों द्वारा प्रकाशित प्रेस लिस्ट तथा 'तारीखे उरुजे सल्तनते इंग्लिशिया' नामक ग्रंथ के पृ० ६८८ पर स्पष्ट अंकित है कि 'सुप्रसिद्ध विद्वान मौलाना फजले हक खैराबादी' ने बहादुरशाह के प्रशासन के लिए जो संविधान तैयार किया था उसकी प्रथम धारा यह थी कि 'बादशाह के राज्य में कहीं भी गाय जिबह न की जाए ।'

उस समय के प्रसिद्ध खबरनवीस जीवनलाल ने अपनी बहुचर्चित डायरी में दिनांक २८ जुलाई १८५७ को उल्लेख किया कि बादशाह ने जनरल तथा सेना के सभी अधिकारियों के पास इस आशय के पत्र भेजे कि 'ईद के अवसर पर कोई गाय जिबह न हो, यदि किसी ने ऐसा किया तो उसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोप से उड़ा दिया जायेगा । गोवध के लिए प्रोत्साहित करने वाले को भी प्राणदण्ड दिया जायेगा ।' प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स-३ एस ३१ के अनुसार बादशाह के आदेश से २८ जुलाई १८५७ को यह घोषणा की थी कि 'कोतवाल शहर को ज्ञात हो कि कोई भी मुसलमान शहर के ईदुलजुहा में गऊ का वध कदापि न करे । यदि कोई आदेश का उल्लंघन करेगा तो उसे मौत की सजा दी जायेगी ।'

सेनापति के आदेश से शहर कोतवाल मुबारकशाह ने शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि गाय का जिबह न किया जाये । सेनापति ने दूसरे दिन कोतवाल को यह आदेश दिया कि 'शहर की नाकेबन्दी की जाये कि, बकरीद के तीन दिन तक शहर में गाय तथा बैल बेचने के लिए न लाये जाएं । जिस मुसलमान के घर में पालतू गाय है, उसे कोतवाली में बंधवा दिया जाए और वहां उनकी पूरी हिफाजत की जाये । पालतू गाय की कोई छिपाकर वध करेगा तो उसे मौत की सजा दी जायेगी ।'

सेनापति के इस आदेश के अनुपालना में कोतवाल मुबारकशाह ने हजरत जहांपनाह को निवेदन करते हुए लिखा कि 'मुसलमानों के घरों में इतनी पालतू गायें हैं कि इन सभी को कोतवाली में बांधना संभव नहीं है । अतः गायों के मालिकों से मुचलके ले लिये जायें कि वे गायों का वध नहीं करेंगे । समय समय पर इसकी जांच की जाये कि गायें जीवित हैं या नहीं ।' गाय के न मिलने पर संबंधित व्यक्ति को मृत्युदण्ड दिया जाए (प्रेस लिस्ट ऑफ म्युटिनी पेपर्स-६१, संख्या २४५) ।

◆

गोबर की अनिवार्यता

आज अमेरिका ही नहीं, अन्य विकसित देश भी कृषि में प्रयुक्त हो रहे रसायनों के चलते जाने-अनजाने कई घातक परिणामों की चपेट में आ चुके हैं । अब तक लगभग २८ करोड़ एकड़ भूमि का बंजर हो जाना और प्रतिवर्ष लगभग ५० लाख एकड़ भूमि की उर्वरा-शक्ति का नष्ट हो जाना उनके लिए चिंताजनक विषय बन चुका है । एक शोध निष्कर्ष के अनुसार इन देशों में रासायनिक उर्वरकों और कीट व. रोगनाशी रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग के पश्चात प्रतिवर्ष प्रति एकड़ भूमि की लगभग १२ टन सतही उपजाऊ मिट्टी नष्ट हो जाती है एवं भूमि की ऊपरी सतह अपेक्षाकृत कठोर बन जाती है, जो उसकी उर्वरा शक्ति को बाधित कर देती है ।

आज हमारी सरकार गोबर जैसी बेकार-सी समझी जाने वाली वस्तुओं के आयात की दिशा में उत्सुकता दिखा रही है, तो आखिर इसका कारण क्या है ? आज सरकार ही नहीं हमारे कृषि विशेषज्ञ भी समझ चुके हैं कि एक सीमा के बाद उर्वरकों एवं रोग कीटनाशी रसायनों के बूते न केवल उत्पादन में बढ़ोत्तरी असंभव है, बल्कि बढ़ी हुई उत्पादन-दर को कायम रख पाना भी असहज-सा प्रतीत होने लगा है । इसी आशंका से त्रस्त हमारे कृषि विज्ञानी अब कृषि नीतियों में परंपरागत विधियों सहित अन्य सुरक्षित विकल्पों का समावेश करते दृष्टिगोचर हो रहे हैं । नीदरलैंड से आयात की जाने वाली गोबर-लीद हमारे देश के लिए प्रदूषणकारी सिद्ध होगी अथवा कृषि क्षेत्र के लिए उपयोगी, यह तो उसकी प्रकृति पर निर्भर करता है । इतना अवश्य कहा जा सकता है कि गोबर की उपयोगिता कृषि के क्षेत्र में बढ़ चुकी है । अब कृषि विज्ञानी भूमि की दीर्घकालीन उर्वरता की प्राप्ति के लिए रासायनिक उर्वरकों की अपेक्षा गोबर से निर्मित कार्बनिक खादों अथवा अन्य सुरक्षित विकल्पों को ही आधार मानने को विवश हैं ।

इंडियन सोसायटी ऑफ सॉयल साइंस, १९९० की विभिन्न फसलों की उपज पर जैविक कार्बनिक पदार्थों के प्रभाव से संबद्ध रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि १०-१५ टन कार्बनिक खादों के प्रयोग के फलस्वरूप धान, गेहूँ, मक्का, सोयाबीन एवं तोरिया की उपज में क्रमशः १२.६, १६.२, २१.८, ३.० एवं २.६ क्विंटल प्रति हेक्टेयर की वृद्धि हुई । मृदाविज्ञानियों के निष्कर्षों के अनुसार एक टन कार्बनिक खाद में न केवल नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश की उचित मात्रा उपलब्ध है, बल्कि इनमें अन्य तत्व, जैसे कैल्शियम १.२ किलोग्राम से ३.७ किलोग्राम, मैग्नीशियम ०.८ से २.६ किलोग्राम, गंधक ०.५ से ३.१ किलोग्राम, लोहा ४० से ६३० ग्राम, तांबा ५ से १५ ग्राम, बोरोन १० से ६० ग्राम और मालिब्डेनम ०.५ से ५.५ ग्राम उपलब्ध होते हैं, जो किसी न किसी रूप में फसल उत्पादन को बढ़ाने में सहायक होते हैं ।

आज देश में गोबर से बने कृषि उपयोगी खादों की कमी के कारण हैं—आधुनिक कृषि की दिशा-दशा निर्धारण में पशुओं को कम महत्व देना और उपलब्ध पशु-मल के अधिकांश भाग का कृषि के बजाय अन्य कार्यों में प्रयुक्त होना अथवा इसका उपयोग न होना । यह एक दुःखद सत्य है कि आज देश में जिस मात्रा में गोबर उपलब्ध है, उसका लगभग ६० प्रतिशत अंश खाद के काम आने के बजाय ईंधन आदि पर खर्च कर दिया जाता है और ४० प्रतिशत अंश का ही उपयोग कृषि क्षेत्र में खाद के रूप में सहज-संभव हो पाता है । इसलिए इस ओर सचेत होते हुए इसकी अधिकाधिक उपयोगिता कृषि के क्षेत्र में ही सुनिश्चित करनी पड़ेगी । इसके साथ ही, खाद बनाए जाने वाले अन्य पदार्थों, जिन्हें हम अनुपयोगी समझते हुए उन पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं, उनका भी अधिकाधिक प्रयोग खाद निर्माण की प्रक्रिया में करना होगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

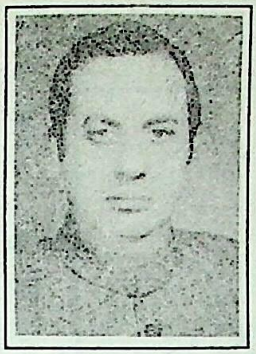

गाय मानव जीवन का प्रतीक है

✍ श्री वी० डी० अग्रवाल
महामंत्री, पूर्वी उत्तर प्रदेश लघु उद्योग संघ

गाय केवल एक पशु ही नहीं है बल्कि मानव-जीवन की रक्षा के लिए एक वरदान है । गाय की सम्पूर्ण दिनचर्या किसी न किसी रूप में केवल मानव कल्याण के लिए ही होती है । मसलन—

☞ प्रातःकाल मनुष्य जब सोकर उठता है और गौ का दर्शन करता है तो उसे एक अजीब तरह की आत्मसंतुष्टि का आभास होता है जिसका शब्दों में वर्णन करना असम्भव है ।

☞ गाय से जो दूध प्राप्त होता है वह जन्मते बच्चे से लेकर अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति के लिए सम्पूर्ण पौष्टिक आहार होता है । इसे निर्विवाद रूप से संसार के चिकित्सा विज्ञान के सभी लोग स्वीकार करते हैं तथा दूध पीने की सलाह आवश्यक रूप से देते हैं क्योंकि यह मानव के लिए सम्पूर्ण भोजन है ।

☞ गाय के दूध से केवल दूध ही नहीं प्राप्त होता है बल्कि इससे नानाप्रकार के अन्य सुस्वादु आवश्यक तत्त्व व पदार्थ भी प्राप्त होते हैं । जैसे—घी, दही, छाँछ, क्रीम, खोवा व पनीर । उपरोक्त सभी वस्तुएँ केवल खाद्य पदार्थ ही नहीं बल्कि अनेकानेक औषधि के रूप में भी काम आती है ।

☞ गाय को चरने के लिए केवल घास तथा पेड़ों की हरी पत्तियाँ ही चाहिए जो कि मानव जीवन के लिए कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती है बल्कि इससे जंगल में पेड़ों के नीचे की जमीन की निराई व सफाई होती है । उपर्युक्त चारे के बदले में लगभग ग्रहण किये गये चारे के बराबर ही गोबर व गौमूत्र विसर्जित होता है जो कि बेशकीमती खाद का कार्य करते हैं । इससे जमीन उपजाऊ होती है, जंगल के पेड़ों को स्वाभाविक रूप से अति उत्तम किस्म की आवश्यक खाद प्राप्त होती हैं । इससे पेड़-पौधे पुष्ट होते हैं । हरे-भरे पेड़ मानव जीवन के लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं यह तो सर्वविदित ही है ।

गाय द्वारा विसर्जित गोबर व गौमूत्र घर में मानव के लिए कितना उपयोगी है इस पर नजर डालें—

☞ गोबर गैस प्लान्ट से गोबर गैस प्राप्त होती है जिससे घर में चूल्हे जलाये जाते हैं, गाँव में रोशनी होती है तथा बचा हुआ पदार्थ उत्कृष्ट खाद होती है जो कि खेतों को उपजाऊ बनाती है ।

☞ गोबर मकानों को साफ-सुथरा रखने के लिए लिपाई के काम आता है । मकानों की छतों व दिवालों पर तापरोधक का कार्य करता है । गोबर के कण्डे जलावन के काम आते हैं । जलने के बाद गोबर की राख कीटनाशक दवा के रूप में हरी फसल को बचाने के कार्य के प्रयोग में आती हैं ।

इस प्रकार गाय हमारे परिवार की एक महत्त्वपूर्ण सदस्य है जो हर प्रकार हमें पोषण और रक्षण प्रदान करती है, बदले में हमसे हमारे प्रयुक्त न आने वाले पदार्थ की अपेक्षा करती है ।

◆

सत्य का प्रथम प्रयोग

गाँधी जी के विद्यालय में निरीक्षक निरीक्षण के लिए आये । गाँधी जी की कक्षा में आकर उन्होंने एक डिक्टेशन बोला । उस डिक्टेशन में एक शब्द 'कैटिल' था, जिसे गाँधी जी ने अशुद्ध लिखा । उनके अध्यापक ने उन्हें पैर से गलती ठीक करने का संकेत दिया, किन्तु गाँधी जी ने उस शब्द को यथावत् रहने दिया । यह उस महान् पुरुष के जीवन में सत्य का प्रथम प्रयोग था, जिसके आधार पर चलकर वे 'युगपुरुष' व 'राष्ट्रपिता' कहलाये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

MANSAROVAR SAREES

CK. 23/13, RANI KUAN
CHOWK, VARANASI

Phone : 320128 (Shop), 322874, 321442 (Resi.)

ALL KINDS OF BANARASI SAREES, FANCY POT VARIETIES AND DRESS MATERIALS

Sister Concern
ABHISHEK SELECTION

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्कृत वाङ्मय में गो की महिमा

✍ श्री नयनेशकुमार शाह

संस्कृत साहित्य के आदि ग्रन्थ वेदों से लेकर अद्यावधि विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों में गो की महिमा का विशद विवेचन प्राप्त होता है । वेदों में गो, उस्रा, उस्रिका, चतुष्पद व कर्की शब्दों से गौ को सम्बोधित किया गया है ।[१] गाय के बछड़े को उस्रिका कहते हैं और इसे वेदों ने अवध्य माना है ।[२] अथर्ववेद व शतपथ ब्राह्मण में गाय को पवित्र एवं गो-माँस भक्षक को बुरा कहा गया है ।[३] वाचस्पत्यम्, शब्दकल्पद्रुम, अमरकोश, हिन्दी विश्वकोश आदि कोश ग्रन्थों में गाय के ३४ नाम प्राप्त होते हैं—अघ्ना, अघ्न्या, अदिति, अधमा, अनडुही, अनड्वाही, अर्जुनी, इज्या, इला, उस्रा, कल्याणी, गौरी, गौः, जगती, द्विड़ा, दोग्ध्री, धेनु, पावनी, बहुला, भद्रा, भूरिमही, महा, महिषी, मही, माता, माला, महेन्द्री, रोहिणी, विलिनाचि, शर्करी, शृंगिणी, सुरभि, सुरभी, सौरभेयी । गायों में 'कामधेनु' सर्वश्रेष्ठ है । यह 'स्वर्ग की गाय' है । कामधेनु सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली मानी गई है । कामधेनु के विभिन्न अंग-प्रत्यंगों में सभी देवताओं एवं ऋषि-महर्षियों का निवास बताया गया है—

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रूद्रः प्रतिष्ठितः ।
मध्ये देवगणाः सर्वे रोमकूपे महर्षयः ।।
नागाः पुच्छे खुराग्रेषु ये चाष्टौ कुलपर्वताः ।।
मूत्रे गंगादयो नद्यो नेत्रयोः शशिभास्करौ ।।
येन यस्यास्तनौ वेदाः सा धेनुर्वरदास्तु मे ।

अर्थात् इसकी पीठ में ब्रह्मा, गले में विष्णु, मुख में रुद्र, मध्यभाग में समस्त देवता, रोमों में महर्षिगण, पूँछ में नाग, खुराग्रों में महेंद्र, मलय, सह्य, शक्ति, क्रक्ष, विन्ध्य और पारियात्र आदि ये आठ प्रधान पर्वत, मूत्र में गंगा आदि नदियाँ, दोनों नेत्रों में चन्द्र-सूर्य और स्तनों में वेद स्थित हैं । वह गौ मुझे वर देनेवाली हो । कामधेनु की पुत्री का नाम नन्दिनी है । वर्तमान समय में विद्यमान सभी गायें इसकी ही संतति बतलायी गयी हैं ।

वेदों के अनुसार गायों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अपमान करने वाला भी घोर नरक का भागी बनता है तथा उसका सर्वनाश निश्चित है—

यश्च गां पदा स्फुरति प्रत्यंग सूर्यं च मेहति ।
तस्य वृश्चामि ते मूलं न छायां करवोपरम् ।।
(अथर्व० १३।१।१)

अर्थात् जो गाय को पैर से ठुकराता है तथा सूर्य के सम्मुख मूत्रोत्सर्ग करता है, उस पुरुष को मैं जड़-मूल से काट गिराता हूँ । उसके पश्चात् तू अपनी छाया यहाँ नहीं करेगा । गायों को वैदिक युगीन मनुष्य अपने इतना सन्निकट मानते थे कि उनके लिए भी स्थान का प्रबंध अपने घरों में ही करते थे ।[४] गोभिल गृह्यसूत्र के अनुसार पशुओं से मानवों का सम्बन्ध निकटतर होता गया । पशुओं के प्रति लोगों के वही भाव हो गये, जो परिवार के लोगों के साथ होते थे । गोवत्स के उत्पन्न होने पर उसकी माता के चाटने के पहले उसके ललाट का स्वामी के द्वारा चाटा जाना, पौष्टिक माना गया । गोवत्स के जन्म के अवसर पर वैदिक मन्त्रों के पाठ होते थे । गोशाला में नित्य सन्ध्या के समय गौओं को सुगन्धित द्रव्यों के गन्ध से आह्लादित किया जाता था ।[५] उपनिषदीय कालीन मानवीय भावनाओं के अनुसार जिस प्रकार नक्षत्रों में ज्योति होती है, उसी प्रकार पशुओं में यश होता है, मानते थे ।[६] विष्णुपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण के स्वयं गौमय हो जाने तथा अपना नाम गोविन्द एवं गोपाल रखने मात्र से लोगों की अभिरुचि गो-सेवा की ओर प्रवृत्त हुई ।[७] भगवान् श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण बाल्यकाल गायों की सेवा करने एवं वनों में गाय चराने में व्यतीत हुआ । गो-चारण एवं माखन-लीला उनकी प्रसिद्ध ही है । कार्तिक शुक्ल अष्टमी को प्रतिवर्ष गोपाष्टमी का पर्व मनाने की परम्परा उन्हीं की देन है । भगवान् कहते हैं—

गावो में अग्रतः सन्तु गावो में सन्तु पृष्ठतः ।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।।

विशेष उत्सवों के अवसर पर गाय, बैल और बछड़ों में हल्दी-तेल का लेप कर दिया जाता था । इनको अनेक रंगों से रंगकर मोर-पंख, पुष्पमाला, वस्त्र और सोने की मालाओं से सजाया जाता था । दान देने के अवसर पर भी गौओं को सोने के आभूषणों से अलंकृत किया जाता था ।[८]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाल्मीकि रामायण के अनुसार गायों में स्वभावतः सम्पन्नता होती है—"विद्यते गोषु सम्पन्नम्" (वा० रा० युद्धकाण्ड १६/६) । अध्यात्म रामायण में गाय की तुलना समस्त धन एवं सम्पत्ति से की गई है ।[६] महाभारत कालीन राजाओं और राजकुमारों को अपने हाथों से गौओं तथा पशुओं की सेवा करने का पुण्यभाव था । महाराजा नल, नकुल एवं सहदेव पशुपालन के विशेषज्ञ थे । इस युग में गाय का दूध अमृत माना गया और प्रतिष्ठा चाहने वालों के लिए गौ सर्वश्रेष्ठ साधन के रूप में प्रसिद्ध हुई । सहदेव गौओं को चराने, दूहने, गिनने आदि के कामों में निपुण था । इनको ये काम अत्यन्त प्रिय थे ।[१०]

ज्योतिष शास्त्रीय ग्रन्थ बृहत्संहिता में मात्र गाय की चेष्टा देखकर पालक के भावों के शुभाशुभ फल का वर्णन मिलता है—

गावो दीनाः पार्थिवस्याशिवाय पादैर्भूमिं कुट्टयन्त्यश्च रोगान् ।
मृत्युं कुर्वन्त्यश्रुपूर्णायताक्ष्यः पत्युर्भीतास्तस्करानारुवन्त्यः ।।
अकारेण क्रोशति चेदनर्थो भयाय रात्रौ वृषभः शिवाय ।
भृशं निरुद्धा यदि मक्षिकाभिस्तदाशु वृष्टिं सरमात्मजैर्वा ।।
आगच्छन्त्यो वेश्म बम्भारवेण संसेवन्त्यो गोष्ठवृद्धये गवां गाः ।
आर्द्राङ्ग्यो वा हृष्टरोम्ण्यः प्रहृष्टा धन्या गावः स्युर्महिष्योऽपि चेवम् ।।
(बृहत्संहितायां गवोंगिताध्यायः)

अर्थात् गौ के अतिशय दीन भाव अवलम्बन करने से राजा का अमंगल, इसी तरह पैर से भूमि कुरेदने पर रोग, चक्षु अश्रुपूर्ण होने पर मृत्यु एवं अकारण अविरत डकारने पर पालक को चोरभय हुआ करता है । रात्रिकाल को गाय के अकारण शब्द करने पर भय होता है, किन्तु वृषभ के शब्द करने पर मंगल होता है । यदि गौ छोटी-छोटी मक्षिका और छोटे-छोटे कुत्ते से तड़ित हो तो शीघ्र वृष्टि होती है । जब मैदान से गाय सन्ध्या समय लौटती है और यदि उस समय हम्बा शब्द करती हुई बहुतों के साथ गोष्ठ में प्रवेश करे तो गोष्ठ की वृद्धि होती है । गोगण के आर्द्रांगी और हृष्टलोमा होने पर धन तथा हर्ष की उन्नति होती है । इसी तरह महिषी भी फल देती है ।

संस्कृत के गद्य एवं पद्य साहित्य में गौ को सर्वोत्तम स्थान प्राप्त होने का उल्लेख यत्र-तत्र मिलता है । गाय को काव्यों में गौ, धेनु, सौरभेयी, रोहिणी आदि नामों[११] से उद्बोधित किया गया है । कालिदास के रघुवंश, कुमारसंभव और ऋतुसंहार में, अश्वघोष के बुद्धचरित और सौन्दरनन्द में, भारवि के किरातार्जुनीयम् में, माघ के शिशुपालवध में, श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् में, सुबन्धु के वासवदत्ता में तथा बाणभट्ट के हर्षचरितम् और कादम्बरी में न्यूनाधिक रूप से गौ का वर्णन मिलता है । इन साहित्यकारों के ग्रन्थों के आलोडन करने पर यह तथ्य स्वयमेव प्रगट हो जाता है कि इन लोगों का भारतीय संस्कृति के प्रति बहुत गहरा लगाव था । भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च स्थान को प्राप्त, हिन्दू मात्र की वन्दनीया एवं पूजनीया गोमाता का वर्णन इसका स्पष्ट प्रमाण है । मानव एवं गाय का सम्बन्ध प्राचीन काल से माता-पुत्र का रहा है । मनुष्य को अपना नाम गौ से जोड़ने पर गर्व होता था । अश्वघोष विरचित सौन्दरनन्द में गोदत्त एवं गवांपति नामक योगाभ्यासियों के नाम आए हैं ।[१२] गाय के प्रताप से उत्पन्न व्यक्ति गोदत्त कहलाता है जबकि बहुत सी गायों का स्वामी गवांपति कहा जाता है । भारवि ने अहीर जाति को गौ के अत्यधिक सम्पर्क में रहने के कारण उनका कुटुम्बी कहा है ।[१३] भारतीय परम्परा में गाय को कष्ट देना घृणित एवं निन्दित कर्म माना गया है । संस्कृत काव्यकारों ने गौ को सर्वोत्तम धन के रूप में प्रतिष्ठित किया है । ब्राह्मणों को गाय एवं स्वर्ण देने की परम्परा भी इसी बात की द्योतक है कि गाय भी सोने के सदृश एक सम्पत्ति है । राजा शुद्धोदन ने ब्राह्मणों को सोना व गायें दीं ।[१४] गाय एक पालतू पशु है । अतः इसका निवास मानव के साथ ही होता है । गाय के निवास की व्यवस्था इतनी उत्तम होती थी कि गाय की अनुपस्थिति में लोग वहाँ बैठकर सभादि करते थे । भगवान् श्रीकृष्ण ने गायों के रहने के स्थान पर मण्डलाकार बैठे ग्रामवासियों को देखा जो आपस में बातचीत कर रहे थे ।[१५] धेनु का अपने बछड़ों के प्रति हार्दिक स्नेह का वर्णन शब्दातीत है । भारवि ने अपने किरातार्जुनीयम् काव्य में इसी चित्र को मूर्त रूप में उपस्थित किया है । गायें शाम को चरागाह से लौटते समय वेग से पृथ्वी पर दौड़ नहीं सकती थीं, क्योंकि वे अपने-अपने बच्चों का स्मरण करके उत्कण्ठित हो गई थीं जिसके कारण उनके पीन पयोधरों से क्षीर की अमृतमय धारा बह रही थी ।[१६]

संस्कृत काव्यों में उपमित धेनु

अन्य पशुओं से अलग गाय को संस्कृत काव्यकारों ने विशेष रूप से उपमित किया है । गाय पृथ्वी की भाँति मनुष्यों का आजीवन पालन-पोषण करती है इसलिए कालिदास ने नन्दिनी को पृथ्वी से उपमित किया है । पृथ्वी जिस प्रकार मानवीय अभीष्ट को पूर्ण करने वाली होती है उसी प्रकार नन्दिनी भी दिलीप के लिए कामनाओं को पूर्ण करने वाली थी । गाय जन्मदात्री माँ से भी बढ़कर है क्योंकि माता का दूध तो केवल बचपन में ही पुत्र की पुष्टि करता है परन्तु गाय का दूध तो आजीवन पुत्रवत् मानव के लिए पुष्टिवर्धक,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वरोगनिवारक एवं कल्याणकारक होता है । गाय की उपमा बर्फ की धवलित चट्टानों से की गई है ।[१७] गाय का निर्मल मन एवं हृदय अत्यधिक मनमोहक होता है । वाणी एवं गाय की तुलना करते हुए सौन्दरनन्द में कहा गया है कि मंत्री वाणी के स्तन हैं, स्पष्ट अभिव्यक्ति गलकदम्ब हैं, सन्दर्भ दूध है एवं प्रतिमान सींग है । इस प्रकार की वाणी को पीकर मैं (नन्द) उसी प्रकार तृप्त हो गया हूँ जिस प्रकार क्षुधाकुल बछड़ा गाय का दूध पीकर होता है ।[१८] प्राचीन भारतीय ऋषि परम्परा में ऋषियों के तेज से इनके आश्रम इतने आलोकित होते थे कि इनकी समानता गोदुग्ध से की गई । दिव्याश्रमों के पार्श्ववर्ती स्थान गायों के समुदाय से प्रसारित दूध से धवलता को प्राप्त होते थे ।[१९] रघुवंश में यश की स्वच्छता की समानता गाय के दूध की धवलता से की गई है । भगवान् बुद्ध को ज्ञान रूप दूध देनेवाली गाय कहा गया है ।[२०]

महाकवि कालिदास ने सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली कामधेनु की पुत्री नन्दिनी का कथानक के रूप में अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में विशेषतया तथा विशदतया वर्णन किया है । रघुवंश के प्रारम्भिक तीन सर्गों में राजा दिलीप की गोभक्ति का हृदयग्राही चित्र उपस्थित किया गया है । कामधेनु की पुत्री नन्दिनी वसिष्ठ मुनि के आश्रम में रहने वाली गाय है, जिसकी सेवा इक्ष्वाकुवंशीय राजा दिलीप ने की । नन्दिनी कामधेनु के सदृश ही सब फलों को देने वाली है । स्वयं नन्दिनी ने अपने मुख से राजा दिलीप को समझाया है कि मैं केवल दूध प्रदान करने वाली गाय मात्र नहीं हूँ अपितु प्रसन्न होने पर सब फलों को देती हूँ । राजा दिलीप बड़े ही धर्मात्मा, आचारवान्, दृढ़प्रतिज्ञ, साहसी एवं इतने तेजस्वी थे कि जब ये जंगल में चलते थे तो व्याघ्रादि हिंस्र पशु हिंसाभाव का परित्याग कर देते थे । ऐसे राजा को बहुत दिनों तक कोई सन्तान नहीं हुई । इससे चिन्तित होकर राजा एवं इनकी पत्नी सुदक्षिणा अथर्ववेद के विद्वान गुरु वसिष्ठ से अपनी पीड़ा बताई । त्रिकालदर्शी गुरु वसिष्ठ ने सन्तान न होने का यह कारण बताया कि एक बार कामधेनु कल्पवृक्ष की छाया में बैठी थी । उस समय आपने स्त्री मिलन की उत्सुकता से कामधेनु की परिक्रमा नहीं की । इस प्रकार आप से कामधेनु ने रुष्ट होकर नन्दिनी की सेवा किये बिना पुत्र न होने का शाप दे दिया । अतः महर्षि वसिष्ठ ने दिलीप को कहा कि वह नन्दिनी को कामधेनु का प्रतिनिधि समझकर अपनी पत्नी सहित श्रद्धापूर्वक यदि उसकी सेवा करें तो मनोवांछित पुत्र की प्राप्ति हो सकती है । इस प्रकार राजा अपनी लक्ष्य सिद्धि को जानकर अपनी पत्नी के साथ वन में ऋषि के आश्रम में रहकर ऋषि गाय 'नन्दिनी' की अत्यधिक निष्ठापूर्वक सेवा-शुश्रूषा करने लगे । २१ दिनों तक गाय की छाया की भाँति अनुसरण करते हुए सेवा करते रहे । इसके विश्राम करने पर विश्राम, सोने के पश्चात् स्वयं सोते तथा उसके जागने से पहले स्वयं जागते, यह राजा की प्रतिदिन की दिनचर्या बन गई । बाईसवें दिन नन्दिनी ने दिलीप की परीक्षा लेने के निमित्त एक सिंह को उपस्थित किया जो स्वयं उसी को फाड़ने के लिए उद्यत था, तब नन्दिनी ने करुण क्रन्दन किया । उसके आर्तस्वर को सुनकर उसके रक्षार्थ राजा ने सिंह से जी जान से लड़ने के अनन्तर पराजय स्वीकार कर उसके समक्ष अपने प्राणों को समर्पित करने का निश्चय किया ताकि शाम को अपने बछड़ों से मिलने को उत्सुक नन्दिनी मुक्त हो सके । लेकिन सिंह अपने वचनों से राजा को विचलित करने का अनेक प्रकार से प्रयत्न करता रहा । वह राजा को समझाता है कि एक गाय के लिए अपने आपको समर्पित नहीं करना चाहिए । आप तो काफी दूध देनेवाली करोड़ों गायें देकर अग्नि के तुल्य गुरु को प्रसन्न कर सकते हैं । गाय मुक्ति प्राप्त करने के लिए छटपटाती हुई राजा को आकुल नेत्रों से देखती है । तदनन्तर नन्दिनी के रक्षार्थ राजा अपने को आँख बन्दकर उस सिंह के समक्ष समर्पित कर दिया । किन्तु तत्क्षण राजा देखते हैं कि वहाँ केवल नन्दिनी खड़ी है जिसके स्तनों से कामनाओं को पूरा करने वाली रसनामयी दूध की अमृतधारा प्रवाहित हो रही है । राजा ने गाय की परिक्रमा की । इस प्रकार महाराजा दिलीप ने अपने मनोवांछित फलों को प्राप्तकर सप्रसन्न गुरु वसिष्ठ से आज्ञा लेकर आश्रम से लौट गए ।

महाकवि कालिदास ने रघुवंश के तृतीय अंक में गोमूत्र के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए एक वृत्तान्त का वर्णन किया है जिसके अनुसार राजा दिलीप ने जब पुत्र के युवा होने पर अश्वमेध यज्ञ का निश्चय किया । इस निमित्त एक घोड़ा युवराज रघु के नेतृत्व में छोड़ा गया । इस घोड़े को देवराज इन्द्र ने छल से चुरा लिया, तब वहाँ नन्दिनी उपस्थित हुई । नन्दिनी का मूत्र आँखों में लगाने मात्र से रघु को सब स्पष्ट दिखाई देने लगा ।[२१]

आयुर्वेदिक ग्रन्थों में गो-पदार्थों का महत्व

गोमाता की सेवा से हमें मुख्य रूप से अमृतमय दुग्ध की प्राप्ति होती है । दुग्ध के सेवन से स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की प्राप्ति होती है तथा अनेक प्रकार के रोगों से हमारी रक्षा भी होती है । बल की प्राप्ति, आयु की वृद्धि, रक्तविकार, वात-पित्त-कफजन्य नानाविध उपद्रवों एवं हृदय रोग में यह विशेष लाभप्रद है ।[२२]

गौ-दुग्ध के विषय में भावप्रकाशकार का कहना है कि काली गौ का दूध वातनाशक तथा अधिक गुणवान होता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है । पीली (ताम्र) गौ का दूध वात तथा पित्त का शामक होता है, श्वेत गौ का दूध कफकारक तथा गुरु होता है और चितकबरी गौ का दूध वातनाशक होता है—

कृष्णाया गोभवेद् दुग्धं वातहारि गुणाधिकम् ।
पीताया हरते पित्तं तथा वातहरं भवेत् ।
श्लेष्मलं गुरुं शुक्लाया रक्तचित्रा च वातहृत् ।।

(भावप्रकाश दुग्धवर्ग ६)

गौदुग्ध से निर्मित विभिन्न पदार्थों (दधि, मट्ठा, मक्खन, घृत आदि) का भी गौदुग्ध से भी अधिक महत्व बतलाया गया है । दधि के सेवन से भोजन में रुचि उत्पन्न होती है एवं भूख में वृद्धि होती है । प्रतिदिन दधि के प्रयोग से शरीर में सुन्दरता, बल में वृद्धि एवं गठीलापन आता है । विशेषकर मरोड़ के साथ दर्द होने पर, मूत्रमार्ग में पीड़ा होने पर तथा ठण्ड लगकर आने वाले ज्वरों में दधि का सेवन श्रेष्ठ माना गया है ।[२३] मट्ठा मानवों के लिए अमृततुल्य है । इसके द्वारा नष्ट हुए रोग पुनः प्रभावशाली नहीं होते । कहा जाता है कि स्वर्ग में देवताओं के लिए जैसे अमृत का महत्व है वैसे ही भूलोक में मनुष्यों के लिए मट्ठे की उपादेयता है—

न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः ।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ।।

(भावप्रकाश तक्रवर्ग ६)

पौरुषत्व के विकास में, पाचन संस्थान के रोगों में तथा वातजनित व्याधियों में मट्ठे का प्रयोग विशेष हितकारी है । मट्ठे के सेवन से क्षुधा में वृद्धि तथा कफ का नाश होता है ।[२४]

यद्यपि मक्खन का प्रयोग सामान्यतः सभी के लिए लाभदायक है तथापि बालक एवं वृद्धों के लिए इसका सेवन विशेष रूप से अमृत तुल्य है । पुरुषत्व की वृद्धि, सुन्दरता में निखार, शक्ति में वृद्धि, भूख बढ़ाने वाला, रक्तविकार जनित रोगों में, बवासीर, अतिसार, तपेदिक, वात-पित्त-कफ के असंतुलन से होने वाली व्याधियों एवं खांसी में यह विशेष उपयोगी है । हृदय को कार्य करने की शक्ति इससे प्राप्त होती है ।[२५] जो गुण मक्खन के हैं वही गुण गोघृत में भी पाये जाते हैं । इसके अतिरिक्त नेत्रशक्ति के विकास में, बुद्धि को तीक्ष्ण करने में, शरीर की कान्ति, तेज एवं ओज प्रदान करने, युवावस्था को चिरकालिक एवं दीर्घायु बनाए रखने में गोघृत विशेष सहायक माना जाता है ।[२६]

गौ का मूत्र सुपाच्य, अग्निदीपक, बुद्धिवर्धक, पित्तकारक तथा वातकफनाशक है । केवल गौमूत्र पीने से कण्डू, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, अतिसार, वातव्याधि, मूत्राघात, कास, कुष्ठ, उदररोग, कृमिरोग तथा पाण्डुरोग नाश हो जाता है । यह विशेष रूप से प्लीहोदर, श्वास, शोथ तथा मलरोध को नष्ट करता है । कान में डालने से कर्णशूल को नष्ट करता है ।[२७]

गोबर—दुर्गन्धनाशक, शोधक, वीर्यवर्द्धक, कान्तिप्रद और लेपन के लिए स्निग्ध तथा मल को दूर करता है । इसके साथ ही गोबर का प्रयोग मृतगर्भ को बाहर निकालने के लिए, गुदभ्रंश के लिए, पसीना बंद करने के लिए एवं खुजली निवारण के काम आता है । गोबर की राख शोधक, व्रण को दूर करने वाली, धान्यवर्द्धक, कीटनाशक और शीतनिवारक होती हैं । पेट के छोटे-छोटे कृमियों के नाश में, दाँत की दुर्गन्ध और मसूड़े के दर्द पर इसका विशेष प्रयोग किया जाता है ।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि गौसेवा तथा उसके पालन-पोषण से पुरुषार्थ-चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) की प्राप्ति सहज है । अतः प्रत्येक मानवों का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार गोपालन या गो-दुग्ध सेवन अवश्य करे । जो गोपालन न कर सके वह प्रतिदिन गाय को गो-ग्रास अवश्य दे ।

◆

टिप्पणी

१. ऋग्वेद १/१७३, १/३, ८, १९०; यजुर्वेद २३/३, अथर्ववेद ४/३८, ६/७; शतपथ ब्राह्मण २/४, ३/१३ ।
२. ऋक्० ५/५८/६ ।
३. वैदिक माइथोलाजी पृ० २८७ ।
४. अथर्ववेद ३/१२/३ ।
५. गोभिल गृह्यसूत्र ३/६/३-५ ।
६. तैत्तिरीयोपनिषद् भृगुवल्ली १०/३ ।
७. विष्णुपुराण ५/१२/१२ ।
८. श्रीमद्भागवत महापुराण १०/५/७, ८ तथा १०/७/१६ ।
९. अध्यात्म रामायण अयोध्याकाण्ड ७/११२ ।
१०. महाभारत वनपर्व २३८/२०, २३९/४-६, ६८/२-६, ७१/१२-१८, विराटपर्व ३/३, वनपर्व यक्ष-युधिष्ठिर संवाद ।
११. नैषधचरित १/१७७, सौन्दरनन्द १६/५०, किरातार्जुनीयम् १७/२०, ४/१३; रघुवंश २/१, ३, बुद्धचरित २३/१५, शिशुपालवध १२/४० ।
१२. 'गोदत्त' सौन्दरनन्द १६/८८ एवं गवांपतिश्च' वही १६/९१ ।
१३. किरातार्जुनीयम् ४/१३ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१४. बुद्धचरित २/३६, १/८४ ।
१५. शिशुपालवध १२/३ ।
१६. किरातार्जुनीयम् ४/१०, ६ ।
१७. वही ४/१२ ।
१८. सौन्दरनन्द १८/११ ।
१९. हर्षचरितम् पृष्ठ २४ ।
२०. बुद्धचरित २४/५१ ।
२१. रघुवंश ३/४१ ।
२२. गव्यं पवित्रंच रसायनंच पथ्यंच हृद्यं बलपुष्टिदं स्यात् ।
आयुः प्रदं रक्तविकारपित्तत्रिदोषहृद्रोगविषापहं स्यात् ।।

(हारीतसंहिता १।८)

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलम् ।
गुरु मन्दं प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः ।।
तदेवंगुणमेवोजः सामान्यादभिवर्धयेत् ।
प्रवरं जीवनीयानां क्षीरमुक्तं रसायनम् ।।

(चरकसंहिता २७।२१८)

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः ।
शीतलं स्तन्यकृत्स्निग्धं वातपित्तास्रनाशनम् ।।
दोषधातुमलस्रोतः किंचित्क्लेदरं गुरु ।
जरासमस्तरोगाणां शान्तिकृत्सेविनां सदा ।।

(भावप्रकाश दुग्धवर्ग ७, ८)

२३. रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम् ।
पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं मंगल्यं बृंहणं दधि ।।
पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे ।
अरुचो मूत्रकृच्छे च कार्श्ये च दधि शस्यते ।।

(चरकसंहिता २७।२२५-२२६)

अम्लंस्वादुरसं ग्राहि गुरुष्णं वातरोगजित् ।
मेदः-शुक्रः-बल-श्लेष्म-रक्तपित्ताग्नि-शोफकृत् ।।
स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम् ।
वातापहं पवित्रंच दधिगव्यं रुजापहम् ।।

(हारीतसंहिता १।८।३०,३१)

गव्यं दधि विशेषेण स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं हृद्यं पुष्टिकृत्पवनापहम् ।
दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं दधिगुणाधिकम् ।।

(भावप्रकाश दधिवर्ग १०)

२४. तक्रं ग्राहि कषायाम्लं स्वादुपाकरसं लघु ।।
वीर्योष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ।
ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्संग्राहि लाघवात् ।।
किंच स्वादुविपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपणम् ।
अम्लोष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ।
कषायोष्णविकासित्वाद्रौक्ष्याद्यापि कफाहपम् ।।

(भावप्रकाश तक्रवर्ग ३-५)

गव्यं त्रिदोषशमनं पथ्य श्रेष्ठं तदुच्यते ।
दीपनं रुचिकृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ।।

(हारीतसंहिता १।८)

शोफार्शोग्रहणीदोष मूत्रग्रहोदरारुचो ।
स्नेहव्यापादि पाण्डुत्वं तक्रं दद्याद्गरेषु च ।।

(चरकसंहिता २७।२२९)

२५. संग्राहि दीपनं हृद्यं नवनीतं नवोद्घृतम् ।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नमर्दितारुचिनाशनम् ।।

(चरकसंहिता २७।२३०)

नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णबलाग्निकृत् ।।
संग्राहि वातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत् ।
तद्धितं बालके वृद्धं विशेषादमृतंशिशोः ।।

(भावप्रकाश नवनीतवर्ग १,२)

२६. विपाके मधुरं वृष्यं वतपित्तकफापहम् ।
चक्षुष्यं बलकृन्मेध्यं गव्यं सर्पिर्गुणोत्तमम् ।।

(हारीतसंहिता १।८।७३)

स्मृतिबुद्ध्यग्निशुक्रोजः कफमेदोविवर्धनम् ।
वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीज्वरापहम् ।।
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।
सहस्रवीर्यं विधिभिर्घृतं कर्मसहस्रकृत् ।।

(चरकसंहिता २७।२३१,२३२)

गव्यं घृतं विशेषेण चक्षुष्यं वृष्यमग्निकृत् ।
स्वादुपाककरं शीतं वातपित्तकफापहम् ।।
मेधालावण्यकान्त्योजस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नं वयसः स्थापकं गुरु ।।
बल्यं पवित्रमायुष्यं सुमंगल्यं रसायनम् ।
सुगन्धं रोचनं चारु सर्वाज्येषु गुणाधिकम् ।।

(भावप्रकाश घृतवर्ग ४-६)

२७. गौमूत्रं कटु तीक्ष्णोष्णं क्षारं तिक्तकषायकम् ।
लघवग्निदीपनं मेध्यं पित्तकृत्कफवातहृत् ।।
शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्व क्षिमुखरोगजित् ।
किलासगदवातामव स्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ।
कासश्वासापहं शोथकामलापाण्डुरोगहृत् ।।
कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मातिसारमदरुदामयमूत्र-
रोधान् ।
कासं सकुष्ठजठरक्रिमिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति ।।
सर्वेष्वपि च मूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोऽधिकम् ।
अतोऽविशेषोत्कथने मूत्रं गोमूत्रमुच्यते ।।
प्लीहोदरश्वासकास शोथवर्चोग्रहापहम् ।
शूलगुल्मरुजानाह कामलापाण्डुरोगहृत् ।
कषायं तिक्ततीक्ष्णं च पूरणात्कर्णशूलनुत् ।।

(भावप्रकाश मूत्रवर्ग १-५)

तीक्ष्णं चोष्णं क्षारमेवं कषायं बल्यं मेध्यं श्लेष्मवातान्निहन्ति ।
भेदि रक्तपित्तशमं करोति गुल्मानाहोन्माददोषापहं च ।।
भ्रशंखहनुकण्ठकमुखानां च रोगान्गुल्मातिसारगुदमारुतनेत्रगदान् ।
कासं सकुष्ठं जठरकृमिकोशजालंगोमूत्रमेकमपि पीतमहानि हन्ति ।।

(हारीतसंहिता १।९।२, ३)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर समस्त मारवाड़ी समाज की

हार्दिक शुभकामना

श्री

मारवाड़ी युवक

संघ

लक्सा, वाराणसी

फोन : ५४६१२

उमाशंकर अग्रवाल
अध्यक्ष

विजय मोदी
मंत्री

फोन

निवास : ३११५८८, ३१३०१५
कार्यालय : ३५२४६६, ३५४४६६

निवास : ३५२९११, ५६४६६
कार्यालय : ३२०५३२, ३२२९११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमरत्व का रहस्य

बाजस्रवस् नाम के एक ऋषि थे । उन्होंने एक बड़ा यज्ञ रचा । यज्ञ के अन्त में उन्होंने अपना सर्वस्व दान दे दिया ।

दक्षिणा में दी गई गायों को जब बाजस्रवस् के पुत्र नचिकेता ने देखा तो वह मन में सोचने लगा कि पिताजी यह कैसा दान कर रहे हैं । दान तो प्रिय वस्तु का होता है । ये गायें तो अब स्वयं न पानी पी सकती हैं, न भर-पेट चारा चर सकती हैं । इनकी एक-एक हड्डी दीखती है । इनके थनों में दूध की एक बूंद भी नहीं है । ऐसी शिथिल गायों का दान आनंदलोक में कैसे फलित हो सकता है ।

श्रद्धा और करुणा से नचिकेता का हृदय भर आया । उसने पूछा—पिताजी ! आप मुझे किसे दे रहे हैं ?

बाजस्रवस् ने कोई उत्तर नहीं दिया । दूसरी बार पूछने पर भी वे चुप रहे । पर तीसरी बार जब नचिकेता ने हठ किया तो वे क्रुद्ध हो उठे और उनका उत्तर था—मैं तुझे मृत्यु को दूँगा ।

तब नचिकेता अतिथि रूप में यम के द्वार पर पहुँचा । तीन दिन और तीन रात नचिकेता वहाँ भूखा पड़ा रहा । यम का ध्यान उसकी ओर नहीं गया । तीन दिन बाद आचार्य यम आकर उससे बोले—मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ । तुम मेरी प्रतीक्षा में रहे कि जब मैं आऊँ, तभी भोजन करोगे । यह पाप भूल से मुझसे हो गया । मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे तीन वर मांग लो ।

नचिकेता ने पहला वर मांगा—मेरे पिता गौतम का चित्त शान्त हो जाये । वह क्रोध को जीत लें । जब मैं यहाँ से लौट कर जाऊँ, वे प्रसन्न होकर मुझसे बोलें ।

दूसरा वर नचिकेता ने यह मांगा—मैं उस अग्नि का उपदेश लेना चाहता हूँ जो स्वर्गलोक को प्राप्त करा देती है । जिससे मनुष्य अमर हो जाता है ।

उस रहस्यमयी तीन प्रकार का अग्नि का उपदेश यम ने उसे दिया और उसका नाम 'नचिकेता अग्नि' रख दिया । अग्नि से आशय उस तप-साधना से था, जिससे ब्रह्म यज्ञ पूरा होता है और मनुष्य शोक से पार होकर अमर हो जाता है ।

तीसरा वर नचिकेता ने जो मांगा, वह था आत्मतत्त्व के सम्यक ज्ञान का और यही सबसे उत्कृष्ट था ।

यम ने अनेक प्रकार के प्रलोभन नचिकेता को दिये, सभी सांसारिक सुखों और सम्पदा के । किन्तु नचिकेता तैयार नहीं हुआ । आत्मज्ञान के बदले वह अन्य कुछ भी नहीं लेना चाहता था । सुखों के सारे ही साधन उसके आगे तुच्छ थे । बोला—मैं तो यही वर मांगता हूँ, जिससे आत्मतत्त्व का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकूं ।

तब यम ने 'प्रेय' और 'श्रेय' दोनों मार्गों का विवेचन करते हुए श्रेय का उसे उपदेश दिया । विद्या और अविद्या का भेद खोला । नित्य और अनित्य का अन्तर बतलाया । ब्रह्माण्ड और पिंड का तारतम्य समझाया ।

अमरत्व का रहस्य नचिकेता के सामने प्रकट हो गया । हृदय की गांठ खुल गई । संशय दूर हो गया । वह उसे मिल गया, जिसके लिए वह तड़प रहा था । उसने जान लिया कि—आत्मा न तो जन्म लेता है, न मरता है । वह सनातन है, नित्य है ।

यम ने नचिकेता को 'ब्रह्मयुक्त' बना दिया, मलहीन कर दिया ।

◆

पसीने की पवित्र कमाई करो और मिल बांटकर खाओ । सबसे प्रेम करो, सबकी सेवा करो, अपना आचरण पवित्र रखो । हृदय को शुद्ध बनाओ और अपने जीवन को ऊँचा उठाओ ।

गुरुनानक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन-रक्षक है दही

आयुर्वेद में दही को परम शुष्क, भूख बढ़ाने वाला, पाचन में सहायक, रक्त को साफ करने वाला, विष नाशक, हृदय व मस्तिष्क को शीतलता व शक्ति प्रदान करने वाला, स्निग्धकारी, यकृत की शक्ति को बढ़ाने वाला, वात कफ नाशक, पेट के रोग व अर्शनाशक बताया गया है । इसके अलावा यह अतिसार, अपच, प्रमेह, श्वेत कुष्ठ का नाश करता है ।

भारत में सदियों से दही का उपयोग खाने, सौंदर्य प्रसाधनों (औषधि के रूप में) एवं मांगलिक अवसरों, जैसे यज्ञ, हवन, विवाह आदि अवसरों पर किया जाता है । हमारे यहां विदाई के समय या मांगलिक कार्य के प्रस्थान के समय दही खिलाने का प्रचलन है । कई स्थानों पर मेहमानों का स्वागत दही की लस्सी व छाछ के साथ किया जाता है । आज भी जिस घर में छाछ बनायी जाती है, वह संपन्नता का प्रतीक माना जाता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से दही के रासायनिक संगठन में पानी ८९ प्रतिशत तथा ठोस भाग १०.९ प्रतिशत होता है । ठोस भाग में चर्बी ४ प्रतिशत, लेक्टोज २.९ प्रतिशत, प्रोटीन ०.८ प्रतिशत तथा कैल्शियम फास्फोरस-लोहा विटामिन ए बी व सी पाये जाते हैं ।

प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि दूध की अपेक्षा दही अधिक लाभकारी है । दही में अन्य खाद्य-पदार्थों की अपेक्षा पोषक तत्व अधिक मात्रा में विद्यमान रहते हैं । कुछ अमेरिकी वैज्ञानिकों ने चूहों पर प्रयोग किया है । उससे यह रहस्य उद्घाटित हुआ है कि जिन चूहों को दही खिलाया गया, उनका विकास दूध और मट्ठा पीने वाले चूहों की अपेक्षा १५ से २० प्रतिशत अधिक हुआ ।

नवीन खोजों के अनुसार दही खाने से दिल की बीमारियों से बचा जा सकता है । समझा जाता है कि दही में एक ऐसा खाद्य-पदार्थ मौजूद रहता है, जो रक्त में कोलेस्ट्रोल को कम करके दिल के दौरे को रोकता है ।

दही के अन्य उपयोग

दही के साथ ईसबगोल की भूसी लेने से दस्त रुक जाते हैं । दस्त लगने पर दही के साथ चावल खाना लाभदायक रहता है ।

दही या छाछ में काली मिट्टी मिलाकर सिर धोने से बाल मुलायम, चमकीले व घने हो जाते हैं । स्नान से पूर्व दही को बालों में डालकर अच्छी मालिश करें, ताकि बालों की जड़ों तक दही पहुँच जाए । दही में वे सभी पोषक तत्व हैं, जिनकी कि बालों को आवश्यकता रहती है । दही के प्रयोग से खुश्की व फियास समाप्त हो जाती है । दही के साथ आटा या बेसन मिलाकर उबटन करने से त्वचा मुलायम हो जाती है, क्योंकि दही में होने वाले बैक्टीरिया हमारी त्वचा को मुलायम रखने में सहायक होते हैं । चेहरे पर झाइयां दूर करने के लिए मूली का रस तथा दही को मिलाकर चेहरे पर लगायें ।

पेट में वायु (गैस) बनने की शिकायत—भोजन के बाद दही की छाछ में चुटकी भर अजवाइन व काला नमक मिलाकर खाने से गैस में आराम मिलता है । यह प्रयोग कब्जियत से भी छुटकारा दिलाता है तथा बवासीर में भी लाभकारी है ।

दही के नियमित सेवन करनेवालों को दस्त, अपच, गैस की शिकायत नहीं रहती है । दही की ठंडी मलाई पलकों पर लेप करने से गर्मी व जलन में राहत मिलती है । अनिद्राग्रस्त रोगियों को दही या छाछ का नियमित सेवन करना चाहिए । गाय के दूध से बने दही की सिर में मालिश करने से अनिद्रा में आराम मिलता है ।

आज्ञाकारी नंदी

एक समय की बात है । शिव का वाहन नंदी बैल अपने स्वामी की पहरेदारी कर रहा था । भोलेशंकर पार्वती जी के साथ विहार कर रहे थे । इस बीच भृगु उनके दर्शन करने आये । नंदी बैल ने उन्हें गुफा के भीतर नहीं जाने दिया । क्रुद्ध होकर भृगु नंदी को शाप दिया । पर वह निर्विकार भाव से भृगु का मार्ग रोके रहा । शिव पार्वती की आज्ञा को वह टाल नहीं सकता था । नंदी की कर्तव्यनिष्ठा और आज्ञाकारिता पर शिवशंकर हमेशा मुग्ध रहते । एक बार रावण ने अपने हाथ पर कैलाश पर्वत उठा लिया । नंदी ने क्रुद्ध होकर अपने पांव से ऐसा दबाव डाला कि रावण का हाथ ही दब गया । जब तक उसने शिव की आराधना करके उनसे क्षमा नहीं मांगी, नंदी ने उसे छोड़ा ही नहीं । इसीलिए नंदी बैल शक्ति सम्पन्नता और कर्तव्यनिष्ठता का प्रतीक माना जाता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोरक्षा : अस्तित्व और बोध का प्रश्न

✍ रामेश्वर मिश्र 'पंकज'

गाय के संबंध में कोई भी चर्चा उसकी आर्थिक महत्ता और खेती में उपयोगिता के बिना पूरी नहीं होती । बहुत बार तो वह आरंभ ही इस मुद्दे से होती है और गाय के सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक पक्ष पर हावी होती हुई वहीं तक सीमित हो जाती है । शायद अर्थप्रधान दृष्टि के कारण हो या अपनी परंपरा के विस्मरण से हो कि गाय के संबंध में उपयोगिता की कसौटी को ही प्रधान मान लिया जाता है । भारत में गोपूजन, गोसेवा और गोरक्षण को सदा ही धर्म कर्त्तव्य समझा जाता रहा है । प्राचीन भारत में धर्म संबंधी धारणा अत्यंत व्यापक थी । वह कभी भी मत या संप्रदाय का द्योतक नहीं रहा बल्कि सभी मत संप्रदायों का लक्ष्य रहा है । संप्रदाय धर्म के संबंध में समूह विशेष की दृष्टि का ही नाम था । वैदिक काल में सामान्य धर्म की धारणा सत्य और ऋत मूलक थी । उसका अर्थ निश्चित व्यवस्था या सिद्धान्त, सनातन सिद्धान्त, प्रथम सिद्धांत आदि रहे हैं । साथ ही धार्मिक क्रिया संस्कार एवं विधि भी इसके अंतर्गत आते थे । गोभक्ति का स्वरूप भी धर्म के इसी संदर्भ में समझना चाहिए । ऋग्वेद के दसवें मंडल के २८ वें सूक्त में आए एक मंत्र से लेखक ने स्पष्ट किया है कि गाय का अर्थ भौतिक भी है और आध्यात्मिक भी । लेकिन वैदिक दृष्टि में भौतिकता और अध्यात्म अथवा पदार्थ और आत्मा कोई परस्पर विरोधी विभाग नहीं है । इसलिए यहां आध्यात्मिक आधिदैविक और आध्यात्मिक अर्थ परस्पर संग्रहित और संश्लिष्ट है । उन्हें अलग अलग नहीं किया जा सकता ।

कठिनाई यह है कि वेदों के प्रति या प्राचीन संस्कृति के प्रति हमारी समझ अपनी साधना से विकसित नहीं हुई है । वह भारतीय संस्कृति के विरोधियों या आक्रमणकारी जातियों की प्रचार योजना से उपजी है । जिसके पीछे निहितार्थ रहा है । निहित उद्देश्य भारतीय समाज में हीनता की भावना भरना और दासता के संस्कार ठूंसता रहा है ताकि भारतीय समाज चिरंतन काल तक उनका गुलाम बना रहे । वेद उपनिषदों और भारतीय धर्मशास्त्रों की उन्होंने इसीलिए अपने अनुकूल व्याख्याएं कीं । इसके लिए ब्राह्मणों से संस्कृत सीखने और शास्त्र पढ़ने के प्रयास किए । अंग्रेजों की दुर्भावना से परिचित ब्राह्मणों ने उन्हें अपनी विद्यानिधि नहीं सौंपी तो ब्राह्मणों को संकीर्ण, दयनीय, कूपमंडूक आदि कहा और उन्हें दुत्कारा लताड़ा । निहित स्वार्थ के लिए संस्कृत और शास्त्र पढ़ने सीखने वाले अंग्रेज-पंडितों की ही स्थापनाएं हैं कि वैदिक काल में गायों की बलि दी जाती थी या यज्ञ हिंसा प्रधान कर्मकांड होते थे या धार्मिक आयोजनों में विभिन्न प्रकार की उच्छृंखलताएं प्रचलित थीं और विभिन्न वर्ण जाति के लोग एक दूसरे के प्रति घोर असहिष्णु थे । निहित स्वार्थ प्रेरित इन स्थापनाओं का ही शिक्षा में वर्चस्व है कि आधुनिक शिक्षित समुदाय इस लकीर से हट कर सोच ही नहीं पाता ।

वैदिक वाङ्मय से लेकर पौराणिक ग्रंथों और साहित्यिक रचनाओं में गाय को एक स्वर से माता का संबोधन दिया गया है । पूर्व वैदिक एवं वैदिक युग से लेकर बारहवीं शताब्दी तक गाय के प्रति भारत में मातृत्व की भावना सर्वमान्य रही है । गाय को माता कहा और पूजा जाता रहा है । गाय का सवाल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के स्वरूप से जुड़ा है और इसीलिए राष्ट्रीय जीवन से भी सीधा जुड़ा है । इसलिए राष्ट्रीय आर्थिक जीवन के स्वरूप निर्माण के प्रश्न भी इससे जुड़े हुए हैं ।

भारतीयों के लिए गाय का महत्व सिर्फ ऐतिहासिक संदर्भ में ही नहीं है । बल्कि पौराणिक पुराकथात्मक संदर्भों में भी वह सर्वोपरि है, जो अहिंसा प्रधान, आत्म बोधात्मक और सनातन भारतीय संस्कृति को संवर्धन का सामूहिक संवेग उत्पन्न करती है । अतः स्वाधीनता संग्राम और उसके बाद भी गोरक्षा महाभियान के समर्थन के लिए जन जन का उमड़ उठना भारतीय जन में अपनी संस्कृति के प्रति शील और संवेग की विद्यमानता का ही परिचायक है । आज वह संवेग सामान्यतया शिथिल है और हमारे दैनंदिन सामाजिक जीवन में अपनी संस्कृति का प्रभाव अत्यल्प है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो पूजा भारतीय संस्कृति का केंद्रीय प्रतीक है । इसलिए जब भी यहां राज कर रही विदेशी सत्ताओं ने भारतीय समाज का दमन और अपमान करना चाहा तो गाय का वध कराया । जान-बूझ कर जनता की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए गाय को मारा गया । कुरान शरीफ में गोहत्या का कोई अनिवार्य विधान नहीं है तब भी भारत में शासक रहते समय मुस्लिम समुदाय ने गो हत्या को अपने सर्वाधिक मूल्यवान अधिकारों में माना । स्पष्ट रूप से इसका लक्ष्य भारतीयों का अपमान करना ही था । मंदिरों, पूजा गृहों, ज्ञान केंद्रों, विद्या केंद्रों, साधना केंद्रों तथा उनके प्रमुख व्यक्तियों को नष्ट करना जिनका लक्ष्य रहा है उन्होंने ही गो-वध भी किया । यद्यपि हिंदुओं से मेल जोल बढ़ाने वाले मुस्लिम शासक भी हुए और उन्होंने गोहत्या को निषिद्ध रखा । बाबर, अकबर, जहांगीर, हैदरअली, अहमदशाह जैसे बादशाहों के नाम इस संदर्भ में लिए जा सकते हैं । दंगे की असामान्य उत्तेजनाओं के दौर को छोड़ दें तो सामान्यतः भारतीय मुसलमान गोरक्षा के विरुद्ध कभी नहीं रहे । उनमें यह विरोध सायास भरा जाता रहा है । गाय के प्रति भारतीय मुसलमानों की सहज और स्वाभाविक प्रवृत्ति १८५७ के सैन्य विद्रोह में सबसे मुखर देखी जा सकती है । इस प्रथम स्वाधीनता संग्राम में गाय की एक प्रमुख प्रतीकात्मक भूमिका रही है । आजादी की लड़ाई लड़ रहे इन लोगों में सभी संप्रदाय के लोग थे और उनका नेतृत्व बाबर के एक वंशज बहादुरशाह जाफर ने किया था । लेकिन मुगल काल में गोहत्या के ढेरों प्रसंग हैं । छिटपुट और अभियान के स्तर पर अरसे तक गायों का वध किया जाता रहा । उद्देश्य बहुसंख्यक भारतीय समाज का अपमान करना ही था ।

अंग्रेजों ने अपने साम्राज्यवादी विस्तार के लिए गोरक्षा का विरोध आवश्यक समझा था । भारत में गाय के निहितार्थ और उसका सांस्कृतिक महत्व वे भलीभांति जानते थे । उनका उद्देश्य सिर्फ भारत की आर्थिक लूट ही नहीं था बल्कि भारतीय समाज को अपने आदर्शों के अनुसार ढालना भी था । इसीलिए जहां एक ओर भारतीय शिल्पियों को उजाड़ा गया, कृषि व्यवस्था को चौपट किया गया, वहीं देश में बनी वस्तुओं की जगह यूरोप से आयातित कलईदार बर्तनों और अल्यूमीनियम के सामानों की बिक्री को बढ़ावा भी दिया गया । विचारों, रीति-रिवाजों और मान्यताओं और जीवन पद्धति में हस्तक्षेप और परिवर्तन भी इसी मानसिकता की उपज थी ।

गाय चूंकि भारतीय संस्कृति और अस्मिता का केंद्र रही है । उस केंद्र से प्रेरित हो कर जीवंत भारतीय समाज ने अंग्रेजी साम्राज्य को लगातार चुनौतियां दी । उसके खिलाफ संघर्ष छेड़ा और जारी रखा । अंग्रेज सरकार संघर्ष और उसके परिणामों से भलीभांति परिचित थी । १८९३ में भारत सरकार के सचिव सी० जे० स्याल द्वारा मद्रास, बंबई, बंगाल, उत्तर पश्चिमी प्रांत, अवध और बंगाल के सचिवों तथा मध्यप्रदेश के मुख्य कमिश्नर के नाम जारी गोपनीय परिपत्र में यह चिंता और संघर्ष को विफल करने की रणनीति का खुलासा देखा जा सकता है ।

गाय का प्रश्न तब लोगों को कितना आंदोलित करता था, इसकी झलक उस समय के अखबारों, सरकारी रिपोर्टों और अफसरों के पत्र व्यवहार में दिखाई देती है कि लोग केवल गोहत्या के विरोध में ही संगठित नहीं थे, बल्कि गाय की रक्षा, उसके संवर्धन और पोषण के लिए भी सजग थे । यह सजगता हिंदुओं के साथ मुसलमानों में भी परिलक्षित होती थी ।

गांधीजी के नेतृत्व में गोरक्षा आंदोलन ने एक नया और स्फूर्तिवान मोड़ लिया । उन्होंने गाय के सवाल को स्वाधीनता की लड़ाई से जोड़ा । गोरक्षा के सवाल पर उन्होंने एक अवसर पर लोकमान्य तिलक से कहा था कि स्वराज्य हमें गोरक्षा की शक्ति देगा । २४ दिसंबर १९२४ को बेलगांव में गोरक्षा परिषद के अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा—कई बातों में मैं गोरक्षा के प्रश्न को स्वराज्य के प्रश्न से भी बड़ा मानता हूं । जब तक हम यह न मान लें कि गोरक्षा किस तरह करनी चाहिए तब तक स्वराज्य की कोई स्थिति नहीं है ।

गोवध पर पूरी तरह पाबंदी भारत की राजनैतिक और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा प्रश्न है । यहां की परंपरा और संस्कृति को देखते हुए इस पर किंचित भी विचार करना जरूरी नहीं था । संविधान या राष्ट्रध्वज की मर्यादा रक्षा के लिए विचार की कहाँ जरूरत होती है । ये जीवन चेतना और गौरवगरिमा से जुड़े प्रतिमान हैं । गोरक्षा का सवाल इन प्रतिमानों से कम महत्वपूर्ण नहीं है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्ण गो-हत्या बंदी कानून की आवश्यकता

✍ श्री राधेश्याम खेमका

भारतवर्ष परतन्त्रता की बेड़ी में जब जकड़ा था, तभी से गो-हत्या बंदी की चर्चा चल रही है । उन दिनों महात्मा गाँधीजी ने कहा था कि "स्वराज्य का सबसे पहला कार्य देश में गोहत्या बंद करना होगा ।" स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पूर्णरूप से गो-हत्या बंदी के लिए देश में बड़े-बड़े आन्दोलन और सत्याग्रह हुए, अनशन और उपवास किये गये । देश के संत-महात्मा, साधु-संन्यासी और सद्गृहस्थों ने स्वयं को गिरफ्तार कराकर भारत सरकार की जेलों को भरा । कितने ही महापुरुषों ने इस जघन्य कार्य को रोकने के लिए अपना बलिदान भी दिया । परिणामस्वरूप कुछ प्रदेशों में गोहत्या-बंदी कानून बनाया गया, पर ये कानून प्रायः अधूरे थे । इन प्रदेशों में पूर्ण रूप से गोहत्या तब तक बंद नहीं हो सकती जबतक इन कानूनों को सुधार कर उसका कार्यान्वयन तत्परतापूर्वक न किया जाय । आज भी इन प्रदेशों से गोवंश कलकत्ता आदि नगरों में पहुंचाये जा रहे हैं, जहाँ के कसाईखानों में इन्हें कत्ल किया जाता है, यह देश का दुर्भाग्य है । भारत-भूमि के किसी भी कोने में यदि गो-रक्त गिरता है तो यह देशवासियों के लिये अत्यन्त लज्जा की बात है । भारतीय संस्कृति की दुहाई देनेवाले देश के सपूत नागरिक जो राज्य-सत्ता के उच्च शिखर पर आज अवस्थित हैं, वे यह भूल जाते हैं कि 'गाय' इस देश की संस्कृति की आधारशिला है । सृष्टि का आधार 'माँ' होती है । इसीलिए भारतीय मनीषियों ने 'गौ' को 'माता' शब्द से सम्बोधित किया । माता जीवन की सर्वोपरि श्रद्धा का केन्द्र होती है । अतः 'गाय' देश की सर्वोच्च श्रद्धा-विन्दु पर अवस्थित है । फिर भी हम जगद्धात्री 'गौ' के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने में तो समर्थ नहीं हो पा रहे हैं, बल्कि एक कृतघ्न के रूप में गौ माता के सब उपकारों को भूलकर स्वार्थवश हमने आसुरी वृत्ति को अपना रखा है ।

आज भी पश्चिम बंगाल, केरल, मेघालय, आसाम, मिजोरम आदि भारत के अनेक प्रदेशों में गो-हत्या धड़ल्ले से हो रही है । सर्वाधिक कष्ट की बात तो यह है कि डिब्बा-बंद गो-मांस अरब देशों को निर्यात किया जाता है तथा बदले में अन्य सामान उनसे लिया जाता है । यह हिन्दू जाति और इस देश के वासियों के लिए महान् कलंक है । आज देश में हिंसा, हत्या और आतंकवाद का बोलबाला हो रहा है । एक मानव दूसरे मानव की हत्या करने में संकोच नहीं करता, सभी संत्रस्त हैं । वास्तव में यह सब गो-हत्या-जैसे पाप का ही दुष्परिणाम है । अतः देश के कर्णधारों को शीघ्र चेतना चाहिए । गोवंश-हत्या बंदी का एक मजबूत कानून केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाया जाना चाहिए, जिससे देश के सम्पूर्ण भागों में गो-हत्या पूर्णतः बंद हो जाय । साथ ही 'भारत सरकार' को अन्य देशों के साथ गो-मांस का निर्यात और व्यापार अविलम्ब बंद कर देना चाहिए । इसके लिए यदि विधान में संशोधन करने की आवश्यकता हो तो यह भी यथाशीघ्र कर लेना उचित होगा ।

जब तक केन्द्रीय सरकार पूर्ण गो-हत्या-बंदी का कानून नहीं बनाती है, तब तक प्रदेश-सरकारों को विशेष जागरूकता की आवश्यकता है । प्रदेश-सरकारें पूर्ण गोवंश-हत्या-बंदी कानून का कार्यान्वयन अपने प्रदेशों में तत्परतापूर्वक करें तथा अपने मार्ग से गौओं को कसाईखानों में न ले जाने दें । गौओं के रख-रखाव और उनके पालन-पोषण का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए । गोशालाओं और गो-सदनों में अपाहिज, लूली, लंगड़ी तथा वृद्ध गौओं के रखने की और उनके खाने-पीने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए । इन गो-सदनों और गोशालाओं को उदारतापूर्वक सरकारी अनुदान देकर समृद्ध बनाने की आवश्यकता है, जिससे हम अपने गोधन को सुरक्षित कर सकें और इस देश की संस्कृति को बचाकर कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हों ।

('कल्याण' से साभार)

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

अशोक कनफेक्शनरी वर्क्स

न्यू मार्केट, डिब्रूगढ़ (आसाम)
फोन : २०६७५, २२६७५

शाखा

गुप्ता ब्रदर्स

कार्यालय : बी० २०/४४ ए, भेलूपुर, वाराणसी-२२१ ००१
दुकान : के० ४३/५३, बंगाली बाड़ा, विशेश्वरगंज, वाराणसी-२२१ ००१

विक्रेता

कनफेक्शनरी, बिस्कुट व उच्चकोटि की चाय

फोन : ३१०७८१ (निवास), ३३२४४१ (दुकान)

आप गौ पाल कर देखिए
सुख, समृद्धि, शान्ति आपके पास होगी ।

गो सेवा, महान् सेवा

सेठ घनश्यामदास लक्ष्मीदेवी गिनोड़िया चैरिटेबुल ट्रस्ट, वाराणसी

सेठ घनश्यामदास गिनोड़िया

दीन, दुःखी, असहाय की सेवा ही भगवान् की सेवा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवंश की रक्षा से ही समग्र विकास सम्भव

✍ श्री सूर्यकान्त जालान

महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा से काशी में १०८ वर्ष पूर्व श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला की स्थापना हुई । इसकी रामेश्वर शाखा राजस्थान से आये पण्डित झॉबरदत्त जी शर्मा के सत्संकल्प का परिणाम है । मात्र १३ वर्ष की आयु में ही पंचक्रोशी यात्रा करते समय अन्तःप्रेरणा से उनके पाँव रामेश्वर में रुक गये और उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए १९५४ तक गोसेवा का एक आदर्श प्रस्तुत किया । उनके गोलोकवासी होने के बाद गौशाला उपेक्षित हो गई । गौशाला में पुनः जागृति १९८६ में इसके शताब्दी समारोह वर्ष में आयी । गौशाला के कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि कसाइयों से छुड़ाई गई या सड़कों पर उपेक्षित घूमती अथवा किसानों द्वारा बोझ समझी जाने वाली कोई गाय या गोवंश (गाय, बैल, बाछा, बाछी, साँड़) गौशाला में आयेंगे तो उन्हें सम्भाला जायेगा ।

इस संकल्प के बाद १९८६ से अब तक ५०,००० से भी अधिक गोवंश बचाये गये । उनमें से उत्पादक गोवंश गाँव वालों को पालने के लिए दिया गया । जिन गायों को ग्रामीणों व किसानों ने अनुपयोगी मानकर नहीं लिया, वैसे १४०० से अधिक गोवंश गौशाला में हैं । उन गायों की गौशाला में समुचित देख-रेख हुई । जिससे ८५० लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित हो रहा है । श्री रामेश्वर गौशाला की लगभग ४०० एकड़ भूमि है, जिसमें से ३०० एकड़ भूमि अभी भी दूसरों के कब्जे में है । १०० एकड़ भूमि गौशाला के पास है, वह भी बिलकुल ऊसर व बंजर थी । गौशाला की यह स्थिति १९५४ से १९८६ तक बन्द व उपेक्षित रहने से हुई । गोरक्षा में सक्रिय सहयोग देने से ही गौशाला में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये । इन कार्यों को एक सुनिश्चित दिशा में आगे बढ़ाने का मार्गदर्शन दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष माननीय नानाजी देशमुख और देशभर के जाने-माने विचारकों, गो-उपासकों तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं से प्राप्त हुआ ।

देश में पूर्ण गोहत्या बन्दी कानून बनाने में सबसे बड़ी बाधा यह बतलाई जाती है कि बूढ़ी, बीमार, अपंग गायों को कहाँ रखा जायेगा और कौन खिलायेगा । यहाँ प्रयोग किया जिससे ५०,००० से अधिक गायों को कसाइयों से बचाने के बाद भी गौशाला विकास की दिशा में आगे बढ़ रही है । हमारा अभिमत है कि देश में कहीं भी कितनी भी संख्या में गायों को बचाकर रखा जा सकता है । केवल भूमि और जल की व्यवस्था हो जाये तो गायें अपने गोबर-गोमूत्र से भी स्वावलम्बी हो सकती हैं, ऐसा सिद्ध हो चुका है । प्रदेश में जहाँ भी गोपालन-गोसंवर्धन में लोग आगे आ रहे हैं उनको गौशाला से उन्नत किस्म के साँड़, बाछी व बाछे दिये जा रहे हैं । चित्रकूट, गोण्डा, गोपालपुर में भी भारतीय नस्ल की गायें विकसित हों इसके लिए संस्थान ने अपने यहाँ से बछियाँ भेजी है ।

गाँवों, नगरों एवं महानगरों में बढ़ती हुई कूड़े की विकट समस्या है । इस समस्या के समाधान में गायों के गोबर का बहुत बड़ा योगदान हो सकता है । यह प्रयोग संस्थान कर रहा है । इसमें १० फीट लम्बा, ६ फीट चौड़ा एवं ३ फीट ऊँचा एक जालीदार ईंट का घेरा बनाया जाता है, जिसमें कूड़ा, मिट्टी और गोबर डालकर रखने से ७५ से १०० दिन में बहुत अच्छी प्रमाणित खाद तैयार हो जाती है । यह योजना किसानों के लिए गृह-वाटिका, उद्यानों और असिंचित भूमि के लिए अत्यन्त लाभकारी है । इस विधि से निर्मित खाद के प्रयोग से सूखी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है । इस पद्धति को सर्वप्रथम महाराष्ट्र के नडेप काका ने प्रारम्भ किया ।

गोमूत्र का कीटनाशक दवाओं के रूप में, यूरिया खाद के विकल्प के रूप में एवं आयुर्वेदिक औषधि निर्माण में बहुत बड़ा उपयोग है । गौशाला की कृषि में कीटनाशक दवाओं का प्रयोग बन्द कर दिया गया है । जिस जमीन पर गायें खड़ी होती हैं, वहाँ की मिट्टी को बटोर कर खेतों में यूरिया खाद की तरह छींटने से यूरिया की आवश्यकता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं रहती है । गोमूत्र से कामधेनु वटी बनाकर एक सौ ग्यारह रोगों के चिकित्सा में सफलतापूर्वक प्रयोग चल रहा है । इसकी समीक्षा और प्रामाणिकता को सिद्ध करने में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेदिक विभाग के चिकित्सक रुचि ले रहे हैं ।

भारतवर्ष में भ्रामक और गलत प्रचार किया गया कि भारतीय गायों की अपेक्षा विदेशी गायें बहुत लाभकारी हैं और इनके माध्यम से ही देश में श्वेत क्रान्ति सम्भव है । विदेशी संस्कृति से प्रभावित लोग ऐसा प्रचार करते हैं और वे ही गोरक्षा में सबसे अधिक बाधक हैं । उन लोगों का मानना है कि किसानों के घर में परिवार के सदस्यों की तरह पलने वाली भारतीय नस्ल की जो गायें हैं, उनसे तरह-तरह की बीमारियां फैलती हैं, वे दूध कम देती हैं । उनके कारण चारा, दाना, खली महँगा होता है । इसलिए इनको जल्द से जल्द समाप्त करके केवल अधिक दूध देने वाली विदेशी गायों को रखा जाय । इस विषय में मत है कि इन अनुपयोगी या बेकार कही जाने वाली गायों की रोग निवारण क्षमता विदेशी गायों से बहुत अधिक है । कहा जाता है कि देशी गाय विदेशी गायों की तुलना में बहुत कम दिन तक दूध देती है । परन्तु ऐसा नहीं है, उन्हें संतुलित दाना-पानी दिया जाय तो वे भी पूरे दस महीने तक दूध देती हैं । भारतीय गायें भी ६० से ७० लीटर तक दूध दे सकती हैं । ४० लीटर दूध देने वाली गायें वर्तमान में भी देश के अनेक स्थानों पर हैं । अपनी संस्कृति में गाय को परिवार का सदस्य माना गया है और उसका वध किसी भी परिस्थिति में क्षम्य नहीं है । भारतवर्ष में कृषि के लिए बैल, गोबर, गोमूत्र और पीने के दूध की आवश्यकता को देखते हुए भारतीय नस्ल की गाय ही हमारे देश के लिए सर्वाधिक उपयोगी है । रामेश्वर गौशाला में देशी नस्ल की काफी गायें हैं जो १४ लीटर तक दूध दे रही हैं और उनका औसत दूध ५-६ लीटर प्रतिदिन तक गया है । जब गौशाला की बछिया दूध देने लगेगी, तब यह औसत ६ से ८ लीटर तक हो जायेगा । नस्ल सुधार की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहने से दूध का औसत और भी बढ़ेगा ।

देश में ऊसर भूमि को सुधारने की एक जटिल समस्या है । इसके लिए कई प्रदेश की सरकारें सेना से सहयोग ले रही हैं । रामेश्वर क्षेत्र की भूमि ऊसर एवं बंजर थी, वहाँ घास का एक तिनका भी नहीं जमता था । गौशाला की उस भूमि को सुधारने के लिए सामान्यतः प्रयोग में लाया जाने वाला पाईराइट और जिप्सम भी सुलभ नहीं हो पाया । ऐसी परिस्थिति में हमारे सामने एक चुनौती थी । गायों को ऊसर भूमि में बैठाकर गोबर-गोमूत्र डालने से ऊसर भूमि सुधर रही है ।

कृषि उत्पादन में भी गौशाला का कीर्तिमान रहा । वाराणसी की जलवायु में सम्भव सभी प्रकार के हरे चारे का उत्पादन गौशाला में हो रहा है । ऊसर स्वभाव की भूमि में भी ६०० से ८०० क्विंटल प्रति बीघा चारा उत्पादन एक उदाहरण बना है । इसके अतिरिक्त नये-नये किस्मों के फल, सब्जी, अन्न इत्यादि का प्रयोग किसानों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है ।

ग्रामीण महिलाओं की बेकारी दूर करने के लिए सिलाई केन्द्र, बुनाई केन्द्र, फल संरक्षण, अचार, पापड़ इत्यादि का कार्य भी चल रहा है ।

ग्रामीणों की चिकित्सा सुविधा के लिए एक दातव्य होम्योपैथिक अस्पताल चलाया जा रहा है । इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष नेत्र चिकित्सा शिविर, पोलियो शिविर एवं टी० बी० शिविर संस्था द्वारा लगाये जाते हैं । अन्य बीमारियों के समय ग्रामीणों को नगर के अस्पताल में लाकर चिकित्सा सुविधा करवा दी जाती है ।

गोशाला द्वारा अन्नपूर्णा भण्डार चलाया जाता है । जिसमें गौशाला एवं अन्य प्रकल्पों में कार्यरत लगभग २५० लोग नियमित जलपान एवं भोजन करते हैं । समय-समय पर सहभोज का आयोजन होता रहता है ।

व्यसनमुक्ति का गौशाला क्षेत्र में अघोषित आन्दोलन चल रहा है । ग्रामीणों द्वारा गोपालन में लग जाने से उनको प्रातः ३ बजे से ही काम में लगना पड़ता है । इसके अतिरिक्त हर बैठकों में बातचीत में, उनको व्यसन से होने वाली हानि और उससे मुक्त होने वाले लाभ के बारे में बतलाया जाता है । शिशु मन्दिरों में बच्चों एवं आचार्यों का इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान है । सत्संग सभा, संतों का पदार्पण और संस्कार शिविर भी आयोजित किये जाते हैं ।

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये गाय-भैंस हैं, कोई मशीन नहीं

✍ श्री राजेन्द्र कुमार

अपने गाय-भैंस को इंजेक्शन लगायें और दुगुना दूध दूह लें, हमारे किसान भाई अब धीरे-धीरे इस गुरुमंत्र का इस्तेमाल करने लगे हैं । कुछ समय पूर्व तक इसका इस्तेमाल दूध का व्यापार करनेवाले ही करते थे । कृत्रिम हारमोन से बने इन इंजेक्शनों पर कई बार प्रश्नचिह्न लगा है, लेकिन हर बार उत्तर नहीं मिल पाया है । कई इंजेक्शनों पर तो अभी भी कई जगह प्रतिबंध लगा है, ऐसा ही एक प्रतिबंधित इंजेक्शन है—बीएसटी यानी 'बोवाइन सोमेटो डोपेन' । इस पर से अमेरिका ने हाल ही में प्रतिबंध उठाया है । लेकिन ब्रिटेन में अभी भी यह प्रतिबंधित है । लेकिन यूरोपीय समुदाय इस पर से प्रतिबंध उठाने की तैयारी कर रहा है । हमारे इसके इस्तेमाल को लेकर दो गुट बन गये हैं, एक विरोध कर रहा है, तो दूसरा उचित ठहरा रहा है ।

यह बीएसटी भी उस जैव प्रौद्योगिकी की देन है, जो हर प्रकार की जीती-जागती शह को तोड़-मरोड़ कर इन्सान के फायदे लायक बना रही है । कृत्रिम हारमोन से बने इसको यथार्थ की शक्ल में लानेवाली चार बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं । बीएसटी के समर्थकों का कहना है कि इसके इस्तेमाल से कोई सेहत संबंधी खतरा नहीं है, लेकिन वह न तो अपने शोध की जानकारी देते हैं और न 'बीएसटी युक्त' वाली चिप्पियां अपने उत्पाद पर लगवाने के लिए तैयार हैं ।

हमारे देश में आजकल जो इंजेक्शन दूध के लिए पशुओं को लगाया जाता है उसका नाम है—'आक्टीटोसिन' । यह इंजेक्शन भी कृत्रिम हारमोन से बना होता है, वास्तव में यह मानव की भलाई के लिए खोजा गया, लेकिन इससे डेयरीवालों को एक गुरुमंत्र मिल गया, अपना दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए । आक्टीटोसिन इंजेक्शन प्रसवपूर्व आवश्यक होने पर गर्भवती महिलाओं को लगाया जाता है । इसके इस्तेमाल से प्रसव में आसानी होती है । लेकिन आजकल डेयरीवाले धड़ल्ले से दुधारू गाय-भैंसों को लगाकर दूध की एक-एक बूंद दूह लेते हैं । यह अनैतिक कार्य पशुधन की दूध उत्पादकता तो नष्ट करती ही है साथ में दूध पीते बच्चों तथा बीमार व्यक्तियों के लिए घातक है ।

लखनऊ से प्रकाशित एक त्रैमासिक 'पशु पोषण अनुसंधान दर्शन' के एक रिपोर्ट के अनुसार पशुओं को नियमित इंजेक्शन लगा कर निकाले गये पशु के रक्त और अस्थियों का घटक स्रावित होता है । गर्भवती महिलाओं के लिए यह दूध बड़ा ही नुकसानदेय साबित हो सकता है । इस इंजेक्शन का इस्तेमाल करने से पशुओं के दूध में टाक्सिन बढ़ जाती है, जो मानव सेहत के लिए खतरनाक है ।

अब पुनः बीएसटी के इस्तेमाल पर आयें । वास्तव में इसका इस्तेमाल कई आधारभूत सामाजिक, नैतिक व आर्थिक प्रश्न उठाता है । जिसमें से एक यह भी है कि इस आधुनिक विकल्प के होते छोटे-छोटे दूध विक्रेताओं और उससे अपनी आजीविका चलानेवालों का क्या होगा ? बड़े उद्योगपति यदि प्रौद्योगिकी अपनाते हैं, तो दुग्धोत्पादन बढ़ने से दूध की कीमतें अचानक कम हो जायेंगी और गरीब दूधवाले सड़क पर आ जायेंगे ।

इसके अलावा अहम्-सवाल एक यह भी है कि इस कृत्रिम विधि द्वारा जो अतिरिक्त दूध बनाया जाएगा उसका विपरीत प्रभाव गाय के ऊपर या उस दूध को इस्तेमाल करनेवालों के स्वास्थ्य पर पड़ेगा ?

बीएसटी के कई दुष्प्रभाव देखने में आये हैं । उदाहरण के लिए इसके इस्तेमाल से छूत के रोगों में बढ़ोत्तरी, जननक्षमता में गिरावट और गर्मी झेल पाने की क्षमता में भारी कमी (विशेषकर उष्णकटिबंधीय देशों में) देखी गयी है । इसकी कारगरता पर भी संदेह है ।

ब्रिटेन में गुप्त तरीके से बीएसटी पर १० फार्मों में १००० गायों को लेकर एक अध्ययन किया जा रहा है, जिसका वहाँ के उपभोक्ता और वहाँ की 'राष्ट्रीय किसान संगठन' उस पर प्रतिबंध लगाने की मांग कर रहे हैं । हालांकि बीएसटी की उपयोगिता से अमेरिका आशान्वित है और उसने इस पर से प्रतिबंध भी हटा लिया है, वहीं दूसरी ओर यूरोप इसके लिए अभी तैयार नहीं है ।

अब एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हमारे जो लोग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आक्टीटोसिन का इस्तेमाल कर रहे हैं, उन्हें कैसे समझाया जाये ? क्योंकि उन्हें अपने धंधे में तात्कालिक वित्तीय लाभ दिखाई देता है । कालांतर में पशु गर्भधारण करें या न करें, बार-बार इंजेक्शन के इस्तेमाल से पशु उसका आदी हो जाता है, इससे उसे कोई मतलब नहीं । डेयरीवाले केवल दुधारू पशु रखते हैं और दूध कम होने या बंद होने पर उसे बेच देते हैं, फिर उस पशु से उसका कोई लेना-देना नहीं, चाहे वह भले ही कसाईखाने पहुँच जायें । कई उपभोक्ता संगठनों व स्वयंसेवी संस्थाओं ने आवाज उठानी भी शुरू कर दी है । इनका कहना है कि ऐसे इंजेक्शनों की खुली बिक्री पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और पशुपालकों को इसके गुणदोष की जानकारी दी जानी चाहिए, ताकि वे इसके दुरुपयोग से बच सकें ।

एक अध्ययन से पता चला है कि महानगरों व बड़े शहरों की बात दो दूर की बात है, आज गाँव के भोले-भाले किसान भी बिना उचित जानकारी के 'आक्टीटोसिन' इंजेक्शन का धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हैं । पशुपालक पशु को जब इंजेक्शन लगाता है, तो ५-६ मिनट में पशु से तेजी से दूध उतर आता है । वास्तव में मांसपेशियों में तेजी के साथ खिंचाव होने से दूध उतरने की प्रक्रिया बड़ी तेज होती है और दूध का कतरा-कतरा बाहर निकल आता है ।

लेकिन अब वह समय आ गया है कि किसानों सहित डेयरीवालों को इसके दुष्प्रभाव की सही-सही जानकारी मुहैया करायी जाये । उन्हें बताया जाये कि उनकी इस करतूत से पशुधन विकास एवं उत्पादन कुप्रभावित तो होगा ही बल्कि जन सामान्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा । थोड़े से पैसे के लिए उन्हें कोई हक नहीं है कि वे जन स्वास्थ्य से खिलवाड़ करें । लेकिन अब प्रश्न है कि उन्हें यह सब समझायेगा कौन ? तो स्वयंसेवी संगठन व मीडिया को ही यह काम करना होगा, क्योंकि हमारे कार्यपालकों के पास न दृष्टिकोण है और न ही समय ।

◆

गायों के पैरों से शरीर रौंदवाते हैं

मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल झाबुआ जिले के मुख्यालय में दीपों के पर्व के दौरान लक्ष्मी पूजा के दूसरे दिन अनोखा दृश्य देखने को मिलता है । इस दिन गोबर के बने गोवर्धन पर आदिवासी धड़ाधड़ गिरते हैं और हर गिरने वाले आदिवासी का यही प्रयास होता है कि उसके शरीर पर अधिक से अधिक गायें पैर रखकर निकल जाएं ।

यहाँ के गोवर्धननाथ मंदिर का पड़वा के दिन मनाए जाने वाले इस त्यौहार में हजारों आदिवासी हर्षोल्लास के साथ भाग लेते हैं । गाय और गोहरी नाम से प्रचलित उत्सव यहाँ राजाओं के जमाने से मनाया जाता रहा है । पहले आदिवासी राज परिवारों से पुरस्कार पाते थे पर अब मंदिर के न्यासी इन आदिवासियों को पुरस्कृत करते हैं ।

पड़वा के दिन दोपहर से ही यह उत्सव शुरू होता है । मंदिर के बाहर गोबर से गोवर्धन जी बनाये जाते हैं । पूजा-अर्चना की जाती है । आदिवासियों की टोलियां अपने परंपरागत वाद्य यंत्रों—ढोल, थाली, मांदर के साथ दूर दराज इलाकों से अपने पारंपरिक पोशाकों में सजी-धजी वहां नजर आती हैं । मंदिर के मुखिया भक्तजन गाजे-बाजे के साथ संकीर्तन करते परिक्रमा शुरू करते हैं और साथ-साथ चलती हैं गायें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
वाराणसी

(सदर, रामेश्वर, बावनबीघा)

आय-व्यय विवरण
१ अप्रैल १९९३ से ३१ मार्च १९९४

चार्टर्ड एकाउंटेंट

एस० एन० खेमका एण्ड कंपनी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI
(HEAD OFFICE :
BALANCE SHEET AS AT

LIABILITIES		AMOUNT Rs.
GOSHALA FUND		
Balance as per last year (including permanent Fund)	11,99,726.10	
Less : Excess of Expenditure over Receipts	4,73,169.43	7,26,556.67
CAPITAL FUND		
Balance as per last year (Rameshwar Branch)	66,14,311.46	
Add : Transferred during the year	–	66,14,311.46
Gograss Fund		2,53,600.00
Research & Development for Cow Breed Brought Forward from last year		10,00,000.00
Sarang Boundary Fund		36,100.00
Generator Fund as per last year		24,000.00
Khatal Funds as per last year		25,000.00
Bawan Bigha Khatal Fund		1,20,000.00
Bawan Bigha Sumerciable Pump Fund		40,000.00
Satff Assistance Fund		9,100.00
CURRENT LIABILITIES		
Sundry Creditors		
Creditors For milk Coupon	2,82,370.93	
Creditors For Expenses/Services	8,81,073.80	
Other Creditors	7,785.00	11,71,229.73
Temporary overdraft in Union Bank of India		10,765.28
		1,00,30,663.14

PLACE : VARANASI

PRESIDENT SECRETARY TREASURER

DATE : 29.10.94 SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOSHALA & PASHUSHALA

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

GOSHALA & PASHUSHALA, VARANASI
VARANASI)
MARCH 31, 1994

ASSETS

		AMOUNT Rs.
FIXED ASSETS		
As per schedule attached		86,73,980.45
INVESTMENT-With UTI		2,50,000.00
LIVE STOCK		
Opening Stock	7,58,163.00	
Add : Addition	1,82,808.00	
Less : Died during the year	43,264.00	8,97,707.00
CURRENT ASSETS		
Stock of Pashu Ahar (As taken valued certified & shown in the books by the Management)		10,326.00
Advances	29,530.80	
Advances to Staff	14,233.40	43,764.20
CASH IN HAND (As certified)		
Sadar Goshala	33,126.01	
Rameshwar Branch	1,393.94	
Bawan Bigha Branch	3,893.75	38,413.70
BANK BALANCES		
Savings Bank Accounts		
Union Bank of India, Varanasi (A/c No. 6742)	8,380.04	
Union Bank of India, Rameshwar	53,482.39	
Uco Bank (A/c No. 11173/22)	7,292.34	
Uco Bank (A/c No. 8654)	919.52	
Fixed deposit with Banaras State Bank	5,998.50	76,072.79
SECURITY DEPOSITS		
At Rameshwar Branch with VESU	26,976.00	
VESU	430.00	
U.P. Electricity Board	493.00	
Telephone Department (H. O.)	2,900.00	
Telephone Department Rameshwar	9,600.00	40,399.00
		1,00,30,663.14

AUDITOR'S REPORT

As per our report of even date attached.

PLACE : Durgakund Road, Varanasi

DATE : 29-10-94

Partner
S. N. KHEMKA & Co.
Chartered Accountants

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI
(HEAD OFFICE :
RECEIPT AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR

EXPENDITURE		AMOUNT Rs.
TO MILK PRODUCTION EXPENSES		
Pashu Ahar Expenses	6,88,809.54	
Pashu Medical Expenses	50,624.50	
Daily Wages	46,129.80	
Loss of Live Stock	43,264.00	8,28,827.84
TO OTHER ADMINISTRATION EXPENSES		
Salary	1,49,458.00	
Stationery Expenses	15,593.40	
Postage Expenses	1,268.60	
Electricity Expenses	18,945.00	
Miscellaneous Expenses	5,352.70	
Travelling Expenses	–	
Conveyance	2,775.25	
Telephone Expenses	4,314.00	
Legal Expenses	8,419.00	
Moped Repairs & Maintenance	1,013.50	
Petrol Expenses	984.10	
Audit Fees	3,000.00	
Gopastami Expenses	9,280.00	
Building Repairs	48,464.65	
Water Tax	2,585.70	
Smarika Expenses	29,370.00	
Bank Commission	330.00	
Repair and maintenance	9,322.20	
Rates and Taxes	2,112.50	
Staff Welfare	344.90	
Rameshwar Branch Lease Rent	1,219.00	
Cycle Repairs	848.25	3,15,000.75
To Balance Carried Down		3,82,232.49
		15,26,061.08
To Excess of Expenditure over Receipt at		
Bawan Bigha Branch		2,75,445.24
Rameshwar Branch		5,79,956.68
		8,55,401.92

PLACE : VARANASI

PRESIDENT SECRETARY TREASURER

DATE : 29.10.94 **SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOSHALA & PASHUSHALA**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

GOSHALA & PASHUSHALA
VARANASI)
THE YEAR ENDED MARCH 31, 1994

RECEIPTS		AMOUNT Rs.
BY MILK SALES & OTHER RECEIPTS.		
Sale of Milk	10,59,384.25	
Sale of Gobar	2,820.00	
Sale of Bacha	1,988.00	10,64,156.25
By Donation at Gopastami		87,598.31
" Donation at Visheshwarganj		15,585.08
" Golak Peti		10,502.50
" Smarika Advertisement Receipt		75,803.00
" Govardai		–
" Miscellaneous Income		5,944.50
" Lease Rent Received		500.00
" Interest Received from Bank		6,425.89
" Donation		86,354.35
" Gograss		1,71,060.20
" Godakhila		2,131.00
		15,26,061.08
" Excess of Receipts over Expenditure at Head office		3,82,232.49
" Balance transferred to Goshala Fund		4,73,169.43
		8,55,401.92

AUDITOR'S REPORT

As per our report of even date at the foot of the Balance Sheet.

PLACE : Durgakund Road, Varanasi

DATE : 29-10-94

Partner
S. N. KHEMKA & Co.
Chartered Accountants

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI
BAWAN BIGHA
RECEIPT AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR

EXPENDITURE		AMOUNT Rs.
TO COW PROTECTION & DEVELOPMENT EXPENSES		
Pashu Ahar Expenses	1,06,406.30	
Pashu Medical Expenses	1,620.45	
Daily Wages	32,541.15	
Pashu Ahar Cutting charges	13,401.10	1,53,969.00
TO OTHER ADMINISTRATION EXPENSES		
Salary	1,45,217.30	
Staff Welfare Expenses	11,061.10	
Pstage & Telegram	–	
Conveyance Expenses	971.00	
Travelling Expenses	–	
Stationery	440.10	
Rates and Taxes	1,188.05	
Electricity Charges and Repairs	4,986.25	
Moped Running and Maintenance	6,174.34	
Telephone Expenses	3,434.50	
General Repairs & Maintenance	4,299.05	
Repairs and Maintenance Building	2,467.00	
Miscellaneous Expenses	6,863.65	
Cycle Repairs	1,602.85	1,88,705.19
TO AGRICULTURAL EXPENSES		
Bullockcart Repair	3,950.10	
Tractor Repairs	36,933.30	
General Agricultural Expenses	92,027.10	
Diesel and Mobile Expenses	20,344.55	
Tractor Repairs	4,500.00	1,57,755.05
		5,00,429.24

PLACE : VARANASI

PRESIDENT **SECRETARY** **TREASURER**

DATE : 29.10.94 **SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOSHALA & PASHUSHALA**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

GOSHALA & PASHUSHALA BRANCH
THE YEAR ENDED MARCH 31, 1994

RECEIPTS		AMOUNT Rs.
BY MILK SALES & OTHER RECEIPTS		
" Sale of Milk	–	
" Sale of Gobar	4,225.00	4,225.00
" General Donation		323.00
" General Agricultural Income		2,20,431.00
" Govardai		5.00
" Excess of Expenditure over Receipts		2,75,445.24
		5,00,429.24

AUDITOR'S REPORT
As per our report of even date.

PLACE : Durgakund Road, Varanasi
DATE : 29-10-94

Partner
S. N. KHEMKA & Co.
Chartered Accountants

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI
RAMESHWAR BRANCH,
RECEIPT AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE

EXPENDITURE	AMOUNT Rs.
To Pashu Ahar Expenses Net	24,28,627.17
" Pashu Medical Expenses	1,18,712.80
" Salary & Wages	3,99,849.35
" Mess Expenses	4,791.87
" Stationery Expenses	36,064.70
" Repairs & Maintenance	24,465.04
" Pump Set & Irrigation Expenses	6,645.80
" News Paper & Periodicals	5,499.40
" Daily Wages	6,94,621.23
" Telephone Charges	629.25
" Legal Expenses	11,657.00
" Bank Charges	1,457.00
" Travelling & Conveyance Expenses	6,085.57
" Staff Welfare	28,737.03
" Festival Expenses	3,144.55
" Electricity Expenses	16,886.59
" Golak Peti Expenses	522.50
" Agricultural Expenses	92,955.02
" Petrol Mobile & Diesel	1,94,215.02
" Postage & Telegrams	119.00
" Miscellaneous Expenses	24,791.35
" Tempo Repairs	33,219.16
" Building Repairs & Maintenance	32,585.50
" Gobans Expenses Net	27,338.38
" Cycle Repairs	7,374.00
" Machinery & Tractor Expenses	68,311.78
" Bullockcart Expenses	5,453.00
" Vehicle Maintenance	34,560.69
" Accounting Charges	14,400.00
" Insurance Premium	5,028.00
" Land Development Expenses	2,10,547.00
	45,39,294.75

PLACE : VARANASI

PRESIDENT SECRETARY TREASURER

DATE : 29.10.94 SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOSHALA & PASHUSHALA

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

GOSHALA AND PASHUSHALA
VARANASI
YEAR ENDED MARCH 31, 1994

RECEIPTS

	AMOUNT Rs.
By Donation Received	17,81,143.42
" Golak Peti	58,836.05
" Sale of Milk	20,20,725.25
" Sale of Gobar	62,873.00
" Gobans Dakhila	6,352.00
" Agricultural Income	14,980.50
" Donation Received for Homeopathy Medicines Net	399.00
" Interest received	431.00
" Other Income	13,597.85
" Excess of Expenditure	5,79,956.68
	45,39,294.75

AUDITOR'S REPORT

As per our report of even date at the foot of the Balance Sheet.

PLACE : Durgakund Road, Varanasi

DATE : 29-10-94

Partner
S. N. KHEMKA & Co.
Chartered Accountants

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुग्ध उत्पादन
(१ अप्रैल १९९३ से ३१ मार्च १९९४)

		सदर	रामेश्वर
माह		लीटर में	लीटर में
अप्रैल	१९९३	९१९६.५००	२१,५२३.०००
मई	"	९१४९.५००	२१,०५४.५००
जून	"	८२४२.०००	२२,१५६.५००
जुलाई	"	८९६७.५००	२१,०९९.५००
अगस्त	"	८९४७.०००	१९,६९७.५००
सितम्बर	"	९१२७.२५०	१८,७५६.५००
अक्टूबर	"	९५३९.०००	१८,१२५.५००
नवम्बर	"	८८३१.०००	१८,४८९.५००
दिसम्बर	"	८४८३.०००	१९,३६७.०००
जनवरी	१९९४	८६१५.५००	२१,२७२.०००
फरवरी	"	८२२८.०००	२०,१८५.०००
मार्च	"	९७३०.५००	२०,७०३.०००
योग		१,०७,०५६.७५०	२,४२,४२९.५००

गोशाला फार्म पर हरे चारे के उत्पादन का विवरण

		बावनबीघा	रामेश्वर
माह		कुन्तल में	कुन्तल में
अप्रैल	१९९३	२०९.२९	१२२४.००
मई	"	१५.००	१६४२.००
जून	"	३९६.००	२३६७.००
जुलाई	"	६७७.००	२११९.००
अगस्त	"	८५८.५०	२३८०.००
सितम्बर	"	८१२.००	१६९३.००
अक्टूबर	"	३५९.००	९६५.००
नवम्बर	"	३२.२५	६२८.००
दिसम्बर	"	३६०.२२	१३७०.००
जनवरी	१९९४	७७८.८०	२०२७.००
फरवरी	"	१२१०.९५	२१८५.००
मार्च	"	१२७९.८८	२४४०.००
योग		६९८८.८९	२१०४०.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

वर्ष १९९३-९४ में ग्राम समूह इकाई, काशी गोशाला, श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला दुलहिन जी रोड, वाराणसी पर किये गये कार्यों का विवरण

चिकित्सा					बधिया			टीकाकरण						चारावितरण								
बड़े पशु		छोटे पशु		योग			योग						योग									योग
नया	पुराना	नया	पुराना		बड़ा	छोटा		R.P.	T.C. R.P.	H.S.	B.Q.	F.M.D.		M.P. चरी	लोबिया	बरसीम	जई	लूर्सन	सुडान	मक्का	ज्वार	
४३२	१९२	१०१	१६	७४८	१०९	–	१०९	–	१२६५	३६१५	४७०	६००	५९५०	–	–	५० Kg.	१०० Kg.	३० Kg.	१३० Kg.	२५ Kg.		३३५ Kg.

कृत्रिम गर्भाधान			अनुसरण			गर्भित पशु			उत्पन्न बच्चे						बाँझ पशु चिकित्सा-शिविर में आये पशुओं की संख्या			दौड़े का दिन
		योग			योग			योग	गाय		भैंस		योग					
गाय	भैंस		गाय	भैंस		गाय	भैंस		नर	मादा	नर	मादा	नर	मादा	गाय	भैंस	योग	
४५०	२७९	७२९	४६७	२८७	७५४	२५३	१४१	३९४	११७	८५	७०	५१	१८७	१३६	८४	१२	९६	२७१

बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत किये गये कार्यों का विवरण						गोशाला में प्राकृतिक गर्भाधान हेतु आयी गायों की संख्या		
नसबन्दी		योग	अल्प बचत		योग			
महिला	पुरुष		R.D.	N.S.S.		गर्भित गायों की संख्या	गर्भित नहीं हुई गायों की संख्या	योग
१	–	१	रु० २०.०० प्रतिमाह	-	रु० २०.०० प्रतिमाह	-	-	-

परमानन्द सिंह
पशुधन प्रसार अधिकारी
प्रभारी ग्राम समूह इकाई, काशी गोशाला
दुलहिनजी रोड, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

गोशाला के गत १५ वर्षों के प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारियों की नामावली

वि० सं०	सभापति	उपसभापति	प्रधानमन्त्री	उपमन्त्री	कृषि-मन्त्री	कोषाध्यक्ष
२०३४-३५	श्री बृजपालदास	श्री प्रह्लादनारायण झुनझुनवाला ,, गोबर्धनलाल झँवर	श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	श्री अशोककुमार सराफ	श्री जानकीबल्लभ करवा	श्री चाँदरतन चाँडक
२०३५-३६	,,	,, इन्दरचन्द बाजोरिया ,, गोबर्धनलाल झँवर	,,	,, रामसरण सेठ	,,	,, नारायणप्रसाद पसारी
२०३६-३७	,,	,,	,,	,, बलदेवदास गुजराती	,,	,,
२०३७-३८	,,	,,	,,	,,	,,	,,
२०३८-३९	,,	,, शम्भूनाथ चौबे ,, गोबर्धनलाल झँवर	,,	,,	श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला ,, अशोककुमार सराफ	,,
२०३९-४०	,,	,,	,,	,,	,, रामकुमार रूँगटा	,,
२०४०-४१	,,	,, बलदेवप्रसाद अग्रवाल ,, शम्भूनाथ चौबे	,,	,,	,,	,,
२०४१-४२	,,	,, गोबर्धनलाल झँवर	,,	,,	,,	,,
२०४२-४३	,,	,, रामकुमार रूँगटा	श्री दीनानाथ झुनझुनवाला	श्री अशोककुमार सराफ	श्री लक्ष्मणदास अग्रवाल	,,
२०४३-४४	,,	,, राधेश्याम खेमका	,, रघुनाथप्रसाद अग्रवाल	,,	,,	श्री हरिमोहन साह
२०४४-४५	,,	,, दीनानाथ झुनझुनवाला	,,	,, भगवतीप्रसाद बाजोरिया	,,	,, मोहनलाल केडिया
२०४५-४६	,,	,,	,,	,,	,,	,, अरुण आशर
२०४६-४७	,,	,, राधेश्याम खेमका ,, जानकीबल्लभ करवा	श्री अशोककुमार सराफ	,, बजरंग डिडवानिया	,,	,,
२०४७-४८	,,	,,	,,	,, देवेन्द्रकुमार बजाज	,,	,,
२०४८-४९	,,	,,	,,	,, श्रीबल्लभ बाजोरिया	,,	,,
२०४९-५०	,,	,, राधेश्याम खेमका ,, अशोककुमार धवन	,,	,, देवेन्द्रकुमार बजाज	,,	,,
२०५०-५१	,,	,,	,,	,, श्यामसुन्दर गिनोड़िया	,, बालमुकुन्द लोहिया	,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी
पच्चीस वर्षों के शासक-मण्डल के पदाधिकारियों की नामावली

वि० सं०	सभापति	उपसभापति	प्रधानमन्त्री	उपमन्त्री	कोषाध्यक्ष
२०२४-२५	श्री भीषमचन्द्र मूँदड़ा	श्री गोपाल जालान	श्री नन्दलाल जालान	श्री रतनलाल सुरेका	+
२०२५-२६	,,	,,	,,	,,	+
२०२६-२७	,,	,,	,,	श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला	+
२०२७-२८	,,	,,	,,	,,	+
२०२८-२९	श्री बाबूलाल ढाँढनिया	,,	,,	,,	श्री रिषीकेश सराफ
२०२९-३०	,,	,,	,,	श्री महाबीरप्रसाद डिडवानिया	,,
२०३०-३१	,,	,,	,,	,,	,,
२०३१-३२	श्री काशीप्रसाद अग्रवाल	,,	,,	,,	,,
२०३२-३३	,,	,,	,,	,,	,,
२०३३-३४	,,	,,	,,	,,	,,
२०३४-३५	,,	श्री रिषीकेश सराफ	,,	श्री नन्दकिशोर प्रह्लादका	,,
२०३५-३६	,,	,,	श्री काशीनाथ चौधरी	,,	,,
२०३६-३७	,,	,,	,,	,,	श्री महाबीरप्रसाद डिडवानिया
२०३७-३८	,,	,,	,,	,,	,,
२०३८-३९	,,	,,	,,	,,	,,
२०३९-४०	,,	,,	,,	,,	,,
२०४०-४१	,,	,,	श्री मुरारीलाल केडिया	,,	,,
२०४१-४२	,,	,,	,,	,,	,,
२०४२-४३	,,	,,	,,	,,	,,
२०४३-४४	,,	,,	श्री गगनेन्द्र केडिया	श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	,,
२०४४-४५	,,	श्री काशीनाथ चौधरी	श्री राजकुमार जैन	,,	,,
२०४५-४६	,,	,,	,,	,,	,,
२०४६-४७	,,	,,	,,	,,	,,
२०४७-४८	,,	गोपीकुमार सिंहानियाँ	,,	,,	,,
२०४८-४९	,,	,,	,,	,,	श्री गगनेन्द्र केडिया
२०४९-५०	,,	,,	,,	,,	,,
२०५०-५१	श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	,,	,,		,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

अर्धशताब्दी से अधिक आपकी सेवा में

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

बृजरमन दास एण्ड संस

साड़ी विशेषज्ञ

साक्षीविनायक, विश्वनाथ मन्दिर के निकट, वाराणसी
फोन : ३२२३११, ३३३२८७

सहयोगी संस्थान

बटुक प्रसाद अग्रवाल एण्ड संस

फोन : ३३२६६८

बटुक प्रसाद सिल्क एण्ड सारीज़

फोन : ३३३४५१

वी० आर० एण्ड कंपनी

फोन : ३३२६६८

बनारसी साड़ियों के थोक विक्रेता एवं कमीशन एजेन्ट

के० ३७/१३२, गोलघर (मैदागिन के पास), वाराणसी-२२१ ००१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवम् पशुशाला
वाराणसी

गोपाष्टमी संवत् २०५१-५२

१ अप्रैल १९९३ से ३१ मार्च १९९४

गोपाष्टमी धर्मादा

मे० सचिन टेक्सटाइल्स	२५०१.००
मे० चन्देरीवाला गोपीनाथ एण्ड संस	२५००.००
मे० पुरुषोत्तमदास एण्ड कं०	२१०१.००
मे० पामी फूड प्रोडक्ट	२१००.००
मे० पुरुषोत्तमलाल धानुका	२१००.००
श्री रामकुमार जी रूँगटा	२१००.००
श्री कृष्ण प्रभावतीदेवी धर्मादा ट्रस्ट-वाराणसी	२००१.००
मे० धन्नूलाल बालकिशनदास	२००१.००
मे० जी० एन० ब्रदर्स	१५०१.००
मे० कला मंदिर	११०१.००
मे० अग्रवाल स्टोर	११०१.००
मे० अशोक ब्रदर्स	११०१.००
मे० विश्वनाथप्रसाद नन्दलाल	११०१.००
मे० महताबचन्द पन्नालाल	११००.००
मे० रूपश्री	११००.००
गोयनका माँ जी	११००.००
श्री सत्यनारायण जी बाजोरिया	११००.००
मे० वन्दना	११००.००
मे० एकता साड़ी सेन्टर	१००१.००
श्री विश्वनाथ जी केजरीवाल	१००१.००
मे० लक्ष्मी फ्रूट ग्रेन मर्चेन्ट	१००१.००
मे० सीताराम राधेश्याम खेमका	१००१.००
श्री वृजेश जी विशम्भरी	९२४.००
मे० आर० के० ट्रेडर्स	५११.००
श्री रामशरण सेठ	५०१.००
मे० देवकिशन जी अर्जुनलाल	५०१.००
मे० रामजीदास मदनलाल	५०१.००
मे० आर० के० टेन्ट हाउस	५०१.००
मे० तुलस्यान सिंथेटिक	५०१.००
श्री विनोदकुमार सराफ	५०१.००
मे० सीताराम सिल्क सारीज़	५०१.००
मे० शाह ब्रजभूषणदास एण्ड कं०	५०१.००
मे० शाह मधुसूदनदास एण्ड कं०	५०१.००
मे० जगमोहनदास एण्ड ब्रदर्स	५०१.००
मे० एन० डी० जे० डी०	५०१.००
मे० एन० जे० सारीज़	५०१.००
मे० शाह द्वारकादास एण्ड कं०	५०१.००
मे० नवीन साड़ी केन्द्र	५०१.००
मे० विश्वनाथ कं०	५०१.००
मे० विश्वनाथ साड़ी केन्द्र	५०१.००
मे० नायलेक्स ट्रेडर्स	५०१.००
मे० श्याम ब्रदर्स	५०१.००
मे० जगदीशनारायण एण्ड संस	५०१.००
मे० सराफ साड़ी इम्पोरियम	५०१.००
मे० ए० वी० सारीज प्रा० लि०	५०१.००
मे० मकुन्ददास एण्ड कं०	५०१.००
मे० विजया साड़ी इम्पोरियम	५०१.००
मे० विश्वनाथ जी जगदीशकुमार	५०१.००
मे० जगवल ब्रदर्स	५०१.००
श्री महावीरप्रसाद अग्रवाल	५००.००
मे० श्रीराम फैब्रिक्स	५००.००
श्री देवकिशन श्री गोपाल-शिवपुर	३०१.००
मे० गोपीराम श्यामसुन्दर	२५१.००
श्री विश्वनाथप्रसाद नन्दलाल	२५१.००
मे० अग्रवाल आमल एण्ड जेनरल स्टोर	२५१.००
मे० बाबू भाई एण्ड संस	२५१.००
मे० पुरुषोत्तमदास एण्ड संस	२५१.००
मे० गगन सारीज़	२५१.००
मे० मुन्नीलाल टंडन एण्ड संस	२५१.००
मे० मनोज सिल्क स्टोर्स	२५१.००
श्री राजकुमार जैन-चौखम्भा	२५१.००
मे० निरंजन टेक्सटाइल्स	२५१.००
मे० मंजू श्री	२५१.००
श्री मनोहरलाल भालोटिया	२५१.००
श्री नाथदास वृन्दावन वाले	२५१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री नवरगराम सिंहल	२५१.००
मे० पल्प मैटेरियल्स	२५१.००
मे० पेपर टिसूज़	२५१.००
श्री लोकनाथ बूबना	२५१.००
श्री रविकुमार बूबना	२५१.००
मे० राजलक्ष्मी	२५१.००
मे० रामजीवन भरतकुमार	२५१.००
मे० पंकज स्टोर	२५१.००
मे० आर० वी० इन्टरप्राइजेज	२५१.००
श्री जुगुलकिशोर व्यास	२०१.००
श्री शुभकरण	२०१.००
श्री श्यामसुन्दर सराफ	२०१.००
मे० चौधरी ब्रदर्स	२०१.००
श्री गुलाबचन्द खेमका	२०१.००
मे० अरुणा जरी कं०	२०१.००
मे० रमेश टेक्सटाइल्स	२०१.००
श्री अन्नपूर्णा मिल्स	२०१.००
मे० रामचन्द्र रामविलास	२०१.००
मे० गोपालदास श्रीकृष्णदास	२०१.००
श्री विजयकुमार गिनोडिया	२०१.००
श्री अशोककुमार जालान	२०१.००
श्री प्रकाश जी सिंहानिया	२०१.००
नित्यलीला श्रीकृष्ण प्रिया बेरी जी	१५१.००
मे० मदनलाल श्री जगदीशप्रसाद	१५१.००
मे० स्वागत	१५१.००
मे० रामलाल कालीचरन	१५१.००
मे० विजय सारीज	१५१.००
मे० तायल ब्रदर्स	१५१.००
मे० भरत टेक्सटाइल्स	१५१.००
श्री रमा जी सेठ	१५१.००
श्री रामजीलाल सराफ	१५१.००
श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल	१५१.००
श्रीमती उमा अग्रवाल	१५१.००
श्रीमती पुष्पा अग्रवाल	१५१.००
श्री हंसराज कमूई	१५१.००
श्री सीताराम अग्रवाल	१५१.००
मे० कालूराम गौरीशंकर	१५१.००
गुप्तदान	१५१.००
श्रीमती चन्दा बजाज	१५१.००
मे० परमानन्द स्टोर्स	१५१.००
मे० सराफ ब्रदर्स	१५१.००
मे० पोद्दार साड़ी इण्डस्ट्रीज	१५१.००
श्री इन्द्रचन्द श्री वल्लभ जी वाजोरिया	१०५.००
श्री राधाकृष्ण जी	१०५.००
श्री सुरेशकुमार जालान	१०१.००
श्री गनपतराम गिनोडिया	१०१.००
मे० कंचन टेक्सटाइल्स	१०१.००
मे० प्रकाश ट्रेडर्स	१०१.००
मे० वेरोनिका प्रिन्टर	१०१.००
मे० राधेश्याम सिल्क स्टोर	१०१.००
मे० उश्नाकमल	१०१.००
मे० जवाहर साड़ी सेन्टर	१०१.००
मे० फतेहचन्द्र कालूराम	१०१.००
श्री मुकुटविहारी अग्रवाल	१०१.००
श्री विनोदकुमार अग्रवाल	१०१.००
मे० किशनदास जगदीशकुमार	१०१.००
मे० जालान साड़ी हाऊस	१०१.००
मे० जेतली ब्रदर्स	१०१.००
मे० रूप कलर	१०१.००
मे० दीपककुमार ब्रदर्स	१०१.००
मे० रविकुमार एण्ड ब्रदर्स	१०१.०
मे० सतीश टेडर्स	१०१.००
मे० मूलशंकर शुक्ला	१०१.००
मे० अनिल ब्रदर्स	१०१.००
श्री मृत्युंजय जी	१०१.००
श्री काली साड़ी सेन्टर	१०१.००
मे० मदनगोपाल नारायनदास	१०१.००
श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	१०१.००
श्री अरुणकुमार आशर	१०१.००
श्री निर्मलकुमार गोयल	१०१.००
मे० वाराणसी इलेक्ट्रानिक कलर प्रिन्टर्स (प्रा० लि०)	१०१.००
श्रीमती आशा अग्रवाल	१०१.००
मे० झाबरमल ओमप्रकाश	१०१.००
मे० बाबूलाल बनारसीदास	१०१.००
मे० अर्चना	१०१.००
मे० गिन्नी सारीज	१०१.००
श्री हरेकृष्ण अग्रवाल	१०१.००
मे० मूलचन्द गनपतलाल	१०१.००
मे० गनपतलाल एण्ड संस	१०१.००
मे० सिंघी टेक्सटाइल्स	१०१.००
श्री अशोक जी अग्रवाल	१०१.००
मे० खन्ना सिल्क स्टोर्स	१०१.००
श्री जगन्नाथदास मुरब्बावाले	१०१.००
श्री मोहनलाल केडिया	१०१.००
श्री किशन काबरा	१०१.००
मे० अशोक साड़ी इम्पोरियम	१०१.००
मे० अंजनीकुमार श्रीप्रकाश	१०१.००
श्री मुकुन्दलाल रमाशंकर	१०१.००
मे० भण्डारी साड़ी केन्द्र	१०१.००
मे० मनसुखदास वीरचन्द	१०१.००
श्री शिवहारी सराफ	१०१.००
मे० श्यामसुन्दर कृष्णमुरारी	१०१.००
मे० भग्गूलाल रघुनाथप्रसाद	१०१.००
मे० केडिया कला केन्द्र	१०१.००
श्री नन्दकिशोर प्रह्लादका	१०१.००
श्रीमती सत्यभामादेवी	१०१.००
श्री संजय-शिवपुर	१०१.००
मे० नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद	१०१.००
श्री दामोदरजी शर्मा	१०१.००
मे० लक्ष्मणप्रसाद अरुणकुमार	१०१.००
मे० रामलाल सत्यनारायण	१०१.००
मे० रानी सती वस्त्रालय	१०१.००
गुप्तदान	६३.४५
मे० रमेशचन्द्र मानिकचन्द्र	५२.००
श्री लखनलाल-जौनपुर	५१.००
श्री रवि चौबे	५१.००
मे० सुशीलकुमार शैलेन्द्रकुमार	५१.००
मे० गनेश सारीज़	५१.००
मे० धन कला	५१.००
श्री जयशंकर	५१.००
मे० अग्रहरी साड़ी सेन्टर	५१.००
मे० किशन टेक्सटाइल्स	५१.००
मे० मंगल सिल्क पैलेस	५१.००
मे० आर० आर० एण्ड संस	५१.००
श्री सत्यसरन	५१.००
श्रीमती पुलिमादेवी खेमका	५१.००
श्री एम० डी० गुजराती	५१.००
श्री आनन्द जैन	५१.००
श्री अनूप जैन	५१.००
श्री अरविन्द जैन	५१.००
श्री पद्म जैन	५१.००
श्री अनूभ जैन	५१.००
मे० भग्गूराम महादेवप्रसाद	५१.००
श्री नीरजकुमार	५१.००
श्री रामगोपाल टेकड़ीवाल	५१.००
मे० चौधरी सारीज़	५१.००
मे० चौधरी निकेतन	५१.००
धन्नूलाल कैलाशनाथ	५१.००
श्री अनुज डिडवानिया	५१.००
श्री ज्वालाप्रसाद	५१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री जगदम्बाप्रसाद वरनवाल	५१.००
मे० दामोदरदास प्रह्लाददास	५१.००
मे० रामदास भगवानदास	५१.००
श्री मानिकचन्द धानुका	५१.००
श्री सुमित्रकुमार गुजराती	५१.००
मे० अरुण इन्टरप्राइजेज	५१.००
श्री मोहनलाल शाह	५१.००
मे० लक्ष्मी भण्डार	५१.००
मे० संकठाप्रसाद भोलानाथ	५१.००
श्री नन्दलाल जालान	५१.००
श्री कृष्णगोपाल पसारी	५१.००
श्रीमती मधु पसारी	५१.००
श्री विष्णुप्रसाद पसारी	५१.००
श्रीमती चन्द्रकला पसारी	५१.००
श्रीमती तृप्ति पसारी	५१.००
श्रीमती सीमा पसारी	५१.००
श्री रामकिशोर पसारी	५१.००
श्री गोविन्ददास अग्रवाल	५१.००
श्रीमती सुलक्षिणी देवी	५१.००
श्री कृष्णकुमार ग्रोवर	४२.००
मे० घासीराम मोहनलाल	३१.००
मे० अमर सारीज़	२५.००
मे० विनोद ब्रदर्स	२५.००
श्री मिहिरकुमार	२५.००
श्री मधुवनदास	२५.००
श्री अमरनाथ	२१.००
श्री रमेश यादव	२१.००
श्री किशोरीलाल	२१.००
श्री पंचमराम	२१.००
मे० भगवानदास आटा वाले	२१.००
श्री रमाशंकर गुप्ता	२१.००
श्री रतनलाल	२१.००
मे० मधुर श्रृंगार	२१.००
मे० मुरलीगोपाल	२१.००
मे० कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स	२१.००
श्री अशोक अग्रवाल	२१.००
श्रीमती शकुन्तलादेवी	२१.००
श्री मितेश	२१.००
कु० केतकी	२१.००
श्री विशाल	२१.००
श्री अश्विन	२१.००
श्री भूपेन्द्र	२१.००
श्री कश्यप	२१.००
श्री बिरबलप्रसाद गोयल	२१.००
श्री बालमुकुन्द झुनझुनवाला	२१.००
मे० गोपालदास कृष्णदास अग्रवाल	२१.००
गुप्तदान	२१.००
मे० ढांढनिया कंट्रक्शन	२१.००
श्री पूरनमल जी मुरारीलाल	२१.००
श्री अनिलकुमार गांधी	२१.००
श्री किशनलाल साहू	२१.००
मे० किशनलाल रिषीकेश	२१.००
श्री अनुपम	२१.००
श्री मुरारीलाल धानुका	२१.००
श्री उमाशंकर सिंह	२१.००
कुमारी श्रद्धा पसारी	२१.००
कुमारी पूजा पसारी	२१.००
श्री आशीष पसारी	२१.००
कुमारी शैलेजा पसारी	२१.००
श्री केशव पसारी	२१.००
श्री बाबू पसारी	२१.००
श्री गिरधरदास गुजराती	२१.००
गुप्तदान	२०.००
श्री बल्लभदास जी	२०.००
श्री रामअभिलाष शर्मा	११.००
श्री चन्दु	११.००
गुप्तदान	११.००
श्री जगन्नाथराम गुप्ता	११.००
श्री सियारामशरण जी	११.००
श्री विवेककुमार	११.००
श्री रामजी मालवीय	११.००
श्री सरजू दीक्षित	११.००
मे० धेराजिनिस बैकरी	११.००
मे० विश्वनाथ भण्डार	११.००
मे० टी सेन्टर	११.००
श्री प्रकाश तेलंगानी	११.००
श्री पवनकुमार ढांढनिया	११.००
श्री रवि शर्मा	११.००
श्रीमती भगवतीदेवी	११.००
श्री विष्णुप्रसाद गुप्ता	११.००
श्री परमानन्द सिंह	११.००
श्री प्रभातकुमार	११.००
श्री रामगोपाल सराफ	११.००
श्री श्रीराम	५.००
श्री पन्नालाल	५.००
श्री सदानन्द जी	५.००
योग	६८९२०.४५

रोजगार आमदनी

मे० किशनलाल रिषीकेश	४१००.००
योग	७३०२०.४५

गोपाष्टमी श्री झावरमल अग्रवाल द्वारा

श्रीमती धनपत्ति देवी	३६००.००
मे० अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स	१५०१.००
मे० जयकृष्णदास रणजीतप्रसाद	१४११.००
गुप्तदान	१४०१.००
मे० राजेन्द्रकुमार अशोककुमार	१०६३.६१
श्री झावरमल ओमप्रकाश	८५१.००
मे० नरसिंहदास अशोककुमार	७४६.२५
मे० शिवनाथप्रसाद अशोककुमार	५०१.००
मे० प्रकाश ट्रेडर्स	३५१.००
मे० श्रीनिवास सुरेशकुमार	३४१.७०
मे० पुरुषोत्तमदास श्रीकृष्णदास	३०१.००
मे० शशि सप्लाई एजेंसी	१०१.००
मे० हनुमान आयल मिल	१०१.००
गुप्तदान	१०१.००
श्री गोपीचन्द्र अग्रवाल	१०१.००
मे० बनारस वनस्पति कं०	१०१.००
मे० भावसिंहका एजेन्सी	१०१.००
श्री देवेश चौधरी	१०१.००
योग	१२७७५.८६

गोपाष्टमी धर्मादा, गोलादीनानाथ

मे० राजस्थान कारपोरेशन	१२१.००
मे० श्रीराम ओंकारमल	१२१.००
मे० भगवती ट्रेडिंग कं०	१०१.००
मे० हीरालाल गोपालदास	१०१.००
मे० महादेवप्रसाद रामजी केशरी	१०१.००
मे० हीरालाल रामप्रसाद	७५.००
मे० आनन्द ट्रेडिंग कं०	७५.००
मे० लक्ष्मीनारायण ओमप्रकाश	७५.००
मे० सत्यनारायणप्रसाद एण्ड कं०	७१.००
श्री अरुणकुमार केशरवानी	५१.००
श्री बद्रीप्रसाद दलाल	५१.००
मे० अनिलकुमार अरुणकुमार	५१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मे० हीरालाल परसोत्तमदास	४१.००
मे० गिरधारीलाल शरदचन्द्र	३१.००
मे० सुरेशकुमार एण्ड ब्रदर्स	२५.००
श्री बद्रीनाथ बरनवाल	२५.००
मे० हितैषी किराना स्टोर	२१.००
मे० नवीन किराना स्टोर	२१.००
मे० अन्नपूर्णा ट्रेडिंग कं०	२१.००
मे० चिरंजीलाल जयप्रकाश	२१.००
श्री मोहनलाल जी	२१.००
मे० मनीष ट्रेडर्स	२०.००
मे० अमित ट्रेडर्स	१६.००
मे० वाराणसी प्राविजन स्टोर	१५.००
मे० काशीनाथ विनोदकुमार	१५.००
श्री रणछोरदास केशरवानी	१५.००
मे० शीतला किराना स्टोर	१५.००
श्री लालजी केशरवानी	१५.००
मे० अशोककुमार लक्ष्मीनारायन	१५.००
श्री मंगरू साव	१५.००
मे० जयलक्ष्मी केराना स्टोर	१५.००
मे० भगवानदास एण्ड संस (सीताराम जी गोत्रा)	१२.००
मे० लक्ष्मी स्टोर	११.००
मे० जगदीशप्रसाद एण्ड संस	११.००
मे० बसंत एण्ड कम्पनी	११.००
श्री शिवप्रसाद गुप्ता	११.००
श्री राजेश कसोधन	११.००
श्री रूपचन्द कसोधन	११.००
श्री मदनलाल	११.००
मे० शंकर किराना स्टोर	११.००
श्री सरदार जी	११.००
मे० विष्णु केराना स्टोर	११.००
मे० पन्नालाल केराना भण्डार	११.००
मे० कन्हैयालाल सुभाष	११.००
श्री शालिग्राम केशरवानी	११.००
मे० रविप्रकाश अर्जुनकुमार	११.००
श्री बच्चे बाबू	११.००
मे० छेदीलाल गोविन्दप्रसाद	११.००
श्री लालजीप्रसाद मुनीम	११.००
मे० जयअम्बे केराना ट्रेडर्स	११.००
मे० शिव एजेन्सी	११.००
श्री काशीनाथ	११.००
श्री केदारनाथ केसरी	११.००
श्री शिवशंकरप्रसाद केसरी	११.००
मे० बरनवाल केराना स्टोर	११.००
श्री रामजियावन केशरवानी	११.००
श्री गंगाराम केशरवानी	११.००
श्री सीताराम चौधरी	११.००
श्री पप्पू मसालावाले	११.००
मे० जयमातादीन ट्रेडिंग कं०	११.००
मे० कक्कड़ कलर एण्ड कं०	५.००
श्री खैरईराम	५.००
मे० अमित इन्टरप्राइजेज, मंडुवाडीह	५.००
श्री रमेशजी घीवाले	५.००
श्री राजाराम केशरवानी	५.००
श्री मुकुन्ददास केशरवानी	५.००
श्री सूरजप्रसाद केशरवानी	५.००
श्री रामेश्वरप्रसाद मारकण्डे	५.००
श्री राजाराम राजेन्द्रप्रसाद	५.००
मे० पूजा केराना स्टोर्स	५.००
मे० लक्ष्मी केराना स्टोर्स	५.००
मे० भगेलूराम एण्ड संस	५.००
श्री जुहारमल जी	५.००
मे० कैलाश केराना स्टोर्स	५.००
श्री विजय केशरवानी	५.००
श्री बच्चालाल	५.००
मे० ओम्प्रकाश वर्मा प्लास्टिक स्टोर्स	५.००
मे० बाबूलाल जगन्नाथप्रसाद	५.००
श्री सीताराम चौधरी	५.००
श्री पारसनाथ केसरी	५.००
मे० शंकरप्रसाद हींगवाले	५.००
योग	**१८०२.००**

धर्मादा

श्री भानमल गोहाटी	२५०००.००
श्री बंशीधर अग्रवाल चैरिटेबुल ट्रस्ट, कलकत्ता	२१०००.००
श्री अरुणोदय चैरिटेबुल ट्रस्ट	४५०६.००
श्री माधो संस्कृत पाठशाला ट्रस्ट	३१००.००
स्व० श्रीमती आशादेवी	३००१.००
मे० देवता सिल्क हाउस	३०००.००
श्री कमला चौधरीदास	२५००.००
श्री वी० एस० भटनागर	२१४०.००
श्री कोठारी कल्याण कोष	१५००.००
श्री मोदी सेवा ट्रस्ट	१५००.००
मे० अग्रवाल स्टोर्स	११०१.००
मे० आशीष जनरल स्टोर्स	११०१.००
श्री भंवरलाल जी	११००.००
श्री नरसिंह चैरिटेबुल ट्रस्ट	११००.००
श्री जुगलकिशोर मारू	१००१.००
श्री अशोक क्रियेशन	१००१.००
गुप्तदान	९७८.००
श्री के० के० खापरे	७३०.००
श्री गोपालकृष्ण वृन्दावन धाम	५२८.३५
श्री सत्यनारायण जी खेतान	५२८.३५
श्रीमती मांगीदेवी ढाढीया	५०१.००
मे० शुभलक्ष्मी इण्डस्ट्रीज	५०१.००
श्री कृष्ण अर्पण	५०१.००
श्री मनीराम अग्रवाल	५०१.००
श्री बालाजी टेक्सटाईल्स एजेन्सी	५००.००
श्री हर्षवर्धन अग्रवाल	५००.००
श्रीमती आशा अग्रवाल	५००.००
श्री राजेश पोद्दार	५००.००
श्रीमती नूपुर पोद्दार	५००.००
श्री चन्द्रमोहन अग्रवाल	५००.००
श्री ओमप्रकाश जोशी	३००.००
मे० गोरधनदास लक्ष्मीदास	२५२.००
मे० मितेश ट्रेडर्स	२५२.००
डा० जगदम्बाप्रसाद	२५१.००
डा० चन्द्रप्रकाश गोयल	२५१.००
श्रीमती केशरदेवी गोयनका	१०१.००
श्री शारदाप्रसाद मिश्रा	२००.००
श्री गोपालदास पुरुषोत्तमदास	१८७.००
श्री राकेश तुलस्यान	१५१.००
श्री महेन्द्रकुमार अग्रवाल	१५१.००
श्रीमती नाथन	१५०.००
श्री जोशी जी	१४०.००
श्री भगवती अग्रवाल	१४०.००
श्री कैलाशनाथ चौधरी	१४०.००
श्री राजाराम	१४०.००
श्री अनूपकुमार सर्राफ	१४०.००
श्री हरीप्रसाद पोद्दार	११०.००
श्री सीताराम बूबना	११०.००
स्व० काशीप्रसाद जी अग्रवाल	१०८.००
श्रीमती जयाशंकर ठाकुर	१०१.००
गुप्तनाम	१०१.००
मे० नार्दन इण्डिया इण्डस्ट्रीज कार्पोरेशन	१०१.००
श्री वासुदेव जी अग्रवाल	१०१.००
श्री राकेश त्रिवेदी	१०१.००
श्रीमती कान्ताबाई रामदास	१०१.००
श्रीमती नितावेन दोसा	१०१.००
मे० विजया साड़ी इम्पोरियम	१००.००
श्री नंदलाल अग्रवाल	६७.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री रवीन्द्रकुमार	६०.००
श्री जुगलकिशोर श्रीप्रकाश	५५.००
श्री नथमलजी कानोडिया	५५.००
श्री सत्यनारायण केजरीवाल	५१.००
श्री एम० एम० पटेल	५१.००
स्व० कन्हैयालाल भोजक	५१.००
श्री गोविन्दजी तुलसीदास	५१.००
श्री के० वी० रमानी	५१.००
श्री ब्रिजेशकुमार	५०.००
श्री आर० के० खापरे	३०.००
श्री लक्ष्मी रेडियो	२५.००
श्री मदनमोहन सुरेखा	२२.००
श्री राम	२१.००
श्री रामजीलाल नागर	२१.००
मे० सरावगी एण्ड सरावगी	२१.००
श्री देवराज पाण्डेय	२१.००
श्री संतोषकुमार जालान	२१.००
श्री कबीरचन्द्र जैन	२१.००
मे० रामवतीलाल पोपटलाल	११.००
योग	८६३५४.३५

गोग्रास

श्रीमती ताराबेन	१०६००.००
मे० रूपदर्शी सारीज प्रा० लि०	६५००.००
गुप्तनाम	६२६१.००
श्री दास फाउन्डेशन	५९५६.६०
मे० दी इण्डिया टेक्सटाइल्स कं० लि०	५२७९.००
श्री सत्यनारायणजी मोदी	५१००.००
स्व० बाबू श्रीनिवासजी सरावगी	५१००.००
श्री रामनिरंजनजी सराफ	५१००.००
मे० प्रवीणकुमार नवीनकुमार	५१००.००
श्री नित्यानंदजी मेहरोत्रा	५१००.००
गुप्तनाम	४७९३.००
मे० मिथिला प्लाईवुड प्रा० लि०	४५८४.६०
श्री प्रभुनारायणजी	३६००.००
यू० जे० एक्सपोर्ट	३६००.००
मे० नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद	३६००.००
श्री रामकृपा	३६००.००
श्री राजेन्द्र अग्रवाल	३६००.००
श्री राधेश्यामजी खेमका	३६००.००
मे० अमित साड़ी	३६००.००
मे० मोहनदास बृजरतनदास	३६००.००
मे० विश्वनाथ इलेक्ट्रिक इम्पोरियम	३६००.००
श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला	३६००.००
मे० परमेश्वरलाल मानिकचन्द	३६००.००
मे० कलाकुंज एण्ड को०	३६००.००
मे० राजन सिल्क स्टोर	३६००.००
मे० विनायका ट्रेडिंग कं०	३६००.००
मे० भोलाराम मोतीलाल	३६००.००
श्री विश्वम्भरजी अग्रवाल	३६००.००
कुमारी उषा भावसिंहका	३६००.००
श्री महावीरप्रसाद श्यामसुन्दर	३५०१.००
बालव्यास श्रीकान्तजी शर्मा	३१००.००
मे० अभिमन्युकुमार अरुणकुमार	२६००.००
मे० रामबल्लभ गिन्नीप्रसाद	२५००.००
मे० लढ़िया बन्धु	२५००.००
श्रीमती गोमतीदेवी खेमका	२१००.००
स्व० बाबू महादेवप्रसाद डिडवानिया	२१००.००
(डॉ०) श्रीमती प्रेमलता शर्मा	२१००.००
श्री चैनरामजी	२१००.००
श्री जोशीजी	१८००.००
श्री ओमप्रकाश जोशी	१२००.००
श्री केशरीचन्द्र	१२००.००
मे० कौशल इन्जिनियरिंग कं०	१२००.००
श्री राजेन्द्र जैन	१२००.००
श्री नारायणजी खेमका	११००.००
सेठ आनंदराम जैपुरिया स्मृति भवन	११००.००
श्री राजकुमार केजरीवाल	११००.००
मे० डायमण्ड एक्सपोर्ट	१०००.००
श्री चन्द्रमोहनजी	८००.००
श्रीमती मीनाक्षी खेतान	८००.००
गुप्तनाम	७५०.००
श्रीमती रेणुकादेवी आशर	६०२.००
श्री राधेश्यामजी सोनी	५०१.००
श्री ज्वालाप्रसाद	५०१.००
मे० हरदत्त राय रामचन्द्र राइस मिल	५०१.००
गुप्तदान	५००.००
श्री जे० के० सिल्क	३०१.००
श्री कैलाशचन्द्र	३००.००
गुप्तनाम	३००.००
श्री सत्यनारायण केजरीवाल	१५३.००
श्री के० के० खापरे	१५०.००
श्री संतोषकुमार बाजोरिया	११२.००
श्रीमती सत्यभामादेवी	१०१.००
श्री गोपालजी केडिया	१.००.००
श्री नारायणप्रसाद पंसारी	१००.००
श्री वी० एस० भटनागर	१००.००
श्री रघुनाथप्रसाद चौधरी	९१.००
श्री रामजी नागर	६०.००
श्री बच्चेलाल यादव	५१.००
श्री चन्द्रभान शुक्ला	११.००
योग	१,७१,०६०.२०

गोलक पेटी

मे० भालोदिया सिल्क हाउस	२७७१.००
मे० संगम सारीज	१७७०.००
मे० जनकराम बद्रीप्रसाद	१६००.००
मे० नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद	१४१२.००
मे० चौधरी ब्रदर्स	६४२.००
श्री जगदम्बाजी तुलस्यान	६०१.००
मे० दि इण्डियन टेक्सटाइल्स कं० लि०	५१३.७५
मे० श्यामलाल कन्हैयालाल	३४७.००
श्री रामनिरंजन बाजोरिया	३१०.७५
मे० सगुन सारीज	२०१.००
श्री ताराचन्द बर्तनवाले	१८५.००
मे० बालाजी ट्रेडर्स	८०.००
मे० प्रमोदकुमार एण्ड संस	५६.००
श्री घनश्यामदास अग्रवाल	१३.००
योग	१०,५०२.५०

विशेश्वरगंज धर्मादा

मे० आत्माप्रसाद अनन्तराम	७२२६.२३
मे० चौथीराम चुन्नीलाल	१८२७.४०
श्री शिवनारायण शम्भूनारायण	१६५०.००
श्री छेदीलाल हीरालाल	९१२.५९
मे० विकास ट्रेडर्स	७७२.६१
श्री भग्गूलाल रघुनाथप्रसाद	७५३.००
बनारस ट्रेडिंग कं०	५००.००
हनुमान ट्रेडिंग कं०	५००.००
श्री लक्ष्मणप्रसाद अरुणकुमार	४४०.००
मे० बद्रीनारायण विजयकुमार	३२८.७०
मे० मुकुन्दलाल रामशंकरलाल	३०१.००
मे० विश्वनाथप्रसाद अशोककुमार	२२२.५५
मे० इण्डियन ट्रेडर्स	१५१.००
योग	१५५८५.०८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दाताओं से प्राप्त सामग्री

श्री दास फाउन्डेशन	१ ट्रक भूसा
मे० शक्ति इण्डस्ट्रीज	१८० कि० उर्दी चुन्नी
मे० सरायनदास राजेन्द्रप्रसाद	१८० कि० उर्दी चुन्नी
मे० ओमप्रकाश वीरेन्द्रकुमार	१६५ कि० मूंग चुन्नी
मे० ओम दाल मिल	१६५ कि० मूंग चुन्नी
मे० अनिरुद्ध फूड्स प्रा० लि०	३४० कि० चोकर
स्व० अन्नपूर्णादेवी की स्मृति में पति श्री गोपालदास अग्रवाल द्वारा	१ स्टील आलमारी
श्री जमुनादास गुजराती	१ टेबुल ग्लास ३'×२'×१
मे० नेशनल स्टोर्स एजेन्सी	१ टेबुल ग्लास ३'×२'×१ रंगीन
श्री जुगुलकिशोर मारू	१४/२५० कि० गुड़
श्री रामकुमारजी घनानिया-कलकत्ता	४५ कि० गुड़
श्री रामशरण सेठ	६० कि० गुड़
श्री बजरंगलाल पंसारी	४३८ कि० गुड़
श्री प्रो० सी० पी० गोयल	३० कि० गुड़
मे० ओम् खली स्टोर्स	६१ कि० अलसी खली
श्री एल० वी० सिंहल	७० कि० अरहर की चुन्नी
श्री राजकुमार बजाज	१५ बोरी नमक
श्री सी० पी० लड्ढा, मे० इण्डोगल्फ फर्टिलाइजर्स C/o मे० ठाकुरदास लड्ढा एण्ड कं०, बुलानाला	६१×५० कि० रामेश्वर ८५×५० कि० बावनबीघा स्वीपिंग यूरिया
श्री मातादीन अग्रवाल	६ कि० गुड़-४/६०० कि० जौ का आटा
श्री नारायणजी पसारी	३.२६ कि० गुड़
श्री केदारनाथजी केजरीवाल	१.२५ कि० गुड़
श्री दामोदरदासजी (बच्चा बाबू)	४ बोरा करकल
श्री हरेकृष्ण अग्रवाल	३/३०० ग्राम पी० वी० सी० ट्यूब
श्री मोहनलाल सोमानी-बंगलोर	२ बोरी गुड़
श्री रामशरणदास सेठ	१ बोरी गुड़
श्री रामविलास गुप्ता	१ कि० चना दरा हुआ
श्री मुरारी बाबू	५ बोरी नमक
श्री केदारनाथजी केजरीवाल	१ लोहे की नाद छोटी, बाल्टी पीतल १, गाय, बाछा के गले का माला
श्री रामविलासजी	५० कि० चना दरा हुआ
श्री ललित सिंहल-राबर्ट्सगंज	१/४० कि० भूसा

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबू जगमोहनदास साह चैरिटेबुल ट्रस्ट
वाराणसी से
श्री राजकुमार साह द्वारा प्राप्त

		रु०
१.	बावनबीघा खटाल हेतु	१,२०,०००.००
२.	सब-मर्सिबल पम्प हेतु	४०,०००.००

(४०,००० रुपये वर्ष १९९४-९५ में प्राप्त हुआ है)

एनिमल वेलफेयर बोर्ड आफ इण्डिया
मद्रास से प्राप्त

१.	पशुचिकित्सा हेतु	१०,०००.००

गोवंश का विवरण
(१९९३-९४)

	गाय	बैल	सांड़	बाछा	बाछी	योग
सदर (गोलघर)	५८	-	१	१२	५०	१२१
बावनबीघा	८३	११	५	१०	२६	१३५
रामेश्वर	५३१	८७	२२	९४	२०२	९३६
						११९२

बावनबीघा फार्म पर उत्पादित
गेहूँ व धान का विवरण

गेहूँ	२१६.०० कुं०
धान	१४३.५२ कुं०
भूसा	१७५.०० कु०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना =

Suchitra
PRINTS

High range Designer
on
Pure Silk

Marketed By

Vandana®

SAREE EMPORIUM

CK. 23/27, CHOWK, VARANASI
Phone : 320079-320601

Office
``RAMAYAN"
B. 37/116-G, Pt. Benirambagh
Rathyatra Crossing
VARANASI-221010

Phone : 360861-62

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला रामेश्वर, वाराणसी

दानदाताओं की सूची

१ अप्रैल १९९३ से ३१ मार्च १९९४

सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट	१,८५,०००.००
श्री अभिषेकजी	२५,०००.००
सुरभि शोध संस्थान	२५,०००.००
जालान सिन्थेटिक्स	१६,२८८.८१
सुरेका पब्लिक चैरिटी ट्रस्ट नई दिल्ली	१२,०००.००
धर्म साड़ सहायक समिति कलकत्ता	११,०००.००
श्री इन्दरचन्दजी अग्रवाल	१०,८००.००
श्री रामप्रकाशजी, कलकत्ता	१०,०००.००
श्री ओमप्रकाशजी, बम्बई	१०,०००.००
चम्पो कार्पेट, वाराणसी	१०,०००.००
सेठ नन्दलालजी बाजोरिया चैरिटेबुल ट्रस्ट, वाराणसी	८,११०.००
सीतादेवी, वाराणसी	८,०००.००
अरुणोदय चैरिटेबुल ट्रस्ट कलकत्ता	६,०१२.००
श्रीमती श्यामलतादेवी	६,०००.००
श्रीमती गीतादेवी सिन्थोलिया वाराणसी	५,८००.००
श्री ईश्वरबाबू गाडोदिया वाराणसी	५,६००.००
श्री मातादीनजी अग्रवाल वाराणसी	५,५७६.००
काशी इलेक्ट्रिक डीलर एसोशिएसन, वाराणसी	५,१००.००
भारत विकास परिषद् वाराणसी	५,१००.००
श्री सती डाइंग एण्ड प्रिंटिंग वर्क्स, पाली	५,०००.००
श्री भरतजी सर्राफ, वाराणसी	५,०००.००
श्री सीतारामजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री राधेश्यामजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री गोपालजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री मोहनलालजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री गणेशजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री सुरेशजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री राकेशजी, कलकत्ता,	५,०००.००
श्री प्रमोदजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री श्यामप्रकाशजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री विवेकजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री हनुमन्तजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री राजेशजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्री अशोकजी, कलकत्ता	५,०००.००
नेशनल ट्रांसपोर्ट कं० बम्बई	५,०००.००
श्री रघुराजजी, नई दिल्ली	५,०००.००
श्रीमती मधुजी, नई दिल्ली	५,०००.००
श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मृति सेवा ट्रस्ट	५,०००.००
श्री जयरामदासजी, कलकत्ता	५,०००.००
श्रीमती कलावतीदेवी केडिया	५,०००.००
श्री राधेश्यामजी, बम्बई	५,०००.००
श्री सीतारामजी, बम्बई	५,०००.००
श्री शिवशंकरजी, बम्बई	५,०००.००
श्री मनीषजी, बम्बई	५,०००.००
श्री गणेशजी, बम्बई	५,०००.००
श्री सुभाषजी, बम्बई	५,०००.००
श्री लक्ष्मीनारायणजी, बम्बई	५,०००.००
श्री पवनकुमारजी, बम्बई	५,०००.००
श्री सुरेशजी, बम्बई	५,०००.००
श्री महेशजी, बम्बई	५,०००.००
श्री केदारनाथजी, बम्बई	५,०००.००
श्री सत्यनारायणजी, बम्बई	५,०००.००
श्री मोहनलालजी, बम्बई	५,०००.००
श्री श्यामसुन्दरजी, बम्बई	५,०००.००
श्री भगवतीप्रसादजी, बम्बई	५,०००.००
श्री घनश्यामजी, बम्बई	५,०००.००
श्री विवेकजी, बम्बई	५,०००.००
श्री रघुनाथजी, बम्बई	५,०००.००
श्री हरिनारायणजी, बम्बई	५,०००.००
श्री भगवानदासजी, बम्बई	५,०००.००
श्री सुदामाजी, बम्बई	५,०००.००
श्री राजेशजी, बम्बई	५,०००.००
श्री गणपतदासजी, बम्बई	५,०००.००
श्री द्वारिकाप्रसादजी, बम्बई	५,०००.००
श्री राकेशजी, बम्बई	५,०००.००
श्री हरिदासजी, बम्बई	५,०००.००
श्री दिलीपजी, बम्बई	५,०००.००
श्री केशवजी, बम्बई	५,०००.००
मे० अभयराम चुन्नीलाल एण्ड कं० विशेश्वरगंज, वाराणसी	४,४०७.१०
श्री बजरंगलाल पंसारी वाराणसी	४,१२३.००
वाराणसी जूनियर चेम्बर वाराणसी	३,५०१.००
श्री करसनदासजी, बम्बई	३,१५१.००
श्री रामकृपा, वाराणसी	३,४४२.००
श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, वाराणसी	३,६००.००
श्री बालाजी प्रिन्ट्स, वाराणसी	३,१००.००
लायन्स क्लब, वाराणसी	२,५००.००
काशी शिवा जेसीज, वाराणसी	२,५००.००
मंगलम (दीपसेठ), वाराणसी	२,३७१.००
श्री श्यामसुन्दर कानोडिया वाराणसी	३,१००.००
श्रीरामजी बृजेशकुमार एण्ड कं० वाराणसी	२,८०४.००
श्री कृपाशंकर मिश्र, कलकत्ता	२,०००.००
श्री सीताराम परिवार अमेरिका	२,०००.००
श्री राधेश्याम जी, गोरखपुर	२,०००.००
श्री संजय कानोडिया, गोरखपुर	१,८४८.००
मे० शम्भूनाथ अभयकुमार एण्ड कं०, गोरखपुर	१,५३३.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चित्रकला, गोरखपुर	१,५४३.००
तिवारी इलेक्ट्रिक, गोरखपुर	१,५००.००
श्री महाबीरप्रसादजी, गोरखपुर	१,४७६.००
श्री रामअवतार खेमका गोरखपुर	१,२३४.००
श्री नत्थूलालजी शाह गोरखपुर	१,१३५.००
श्री हनुमानप्रसादजी मोदी गोरखपुर	१,२३८.००
श्री वी० के० तोड़ा, बम्बई	१,१११.००
श्री वी० के० देसाई, वाराणसी	१,१००.००
गोयनका माँ जी, वाराणसी	१,१००.००
श्रीमती ताराबाई, कलकत्ता	१,१००.००
श्री मथुरालाल राठी	१,१००.००
श्री बनवारीलालजी, नई दिल्ली	१,१००.००
श्रीमती रुक्मिणीदेवी कलकत्ता	१,१००.००
श्री निर्मलकुमार अग्रवाल वाराणसी	१,१००.००
श्री अरविन्दकुमार गोयनका नई दिल्ली	१,१००.००
श्रीदेवी जालान, राँची	१,१००.००
श्री संजय एवं सावित्री वाराणसी	१,१०१.००
वाराणसी सुगर सप्लाई कं० वाराणसी	१,१००.००
श्री शिवशंकर उमाशंकर वाराणसी	१,१००.००
अम्बर ट्रेडिंग कं०, वाराणसी	१,१००.००
श्री प्रभुरामजी, वाराणसी	१,१००.००
श्री कैलाशप्रसाद राठी वाराणसी	१,१००.००
श्री के० वी० अग्रवाल वाराणसी	१,०००.००
श्री बजरंगलालजी, राँची	१,०००.००
श्रीमती मनसादेवी नई दिल्ली	१,०००.००
श्री गुरुकुल कन्या विद्यालय	१,०००.००
लक्ष्मीजी की माँ, कलकत्ता	१,०००.००
श्री बैजनाथ मोहनलाल वाराणसी	१,०००.००
श्री कृष्णमोहन अढ़तिया वाराणसी	१,०००.००
श्याम पेन्ट्स एण्ड जनरल सप्लायर्स, वाराणसी	१,०००.००
श्री सीताराम शर्मा, वाराणसी	१००१.००
श्री छन्नूलाल राजेशकुमार	९८५.००
श्री किशोरभाई, बम्बई	९२५.००
नानीजी, वाराणसी	९११.००
श्री अशोक शाहजी वाराणसी	९१९.००
श्री सत्यनारायणजी पोद्दार वाराणसी	८५१.००
मौसीजी, वाराणसी	८०६.००
डॉ० पी० सोमानी, वाराणसी	८०५.००
श्री गोपालदास रामकृष्णदास वाराणसी	७५१.००
श्री लक्ष्मीनारायण झँवर वाराणसी	७३२.००
श्री कृष्णदास अग्रवाल वाराणसी	६७६.००
श्री मधुसूदनजी जालान वाराणसी	६८५.००
श्री पेठाभाईजी पटेल वाराणसी	६२४.००
श्री ईश्वरप्रसाद भालोटिया	६२३.००
श्री अरुणकुमार लद्ढा वाराणसी	५९६.००
श्री गौरीशंकर काबरा, वाराणसी	५७६.००
जीवन बीमा निगम अधिकारी वाराणसी	५५१.००
श्री भगवानदासजी अग्रवाल	५१५.००
श्री आत्मारामजी खेमका वाराणसी	७३५.५०
श्री परमानन्दजी खेमका वाराणसी	५१३.००
श्री मनोजजी, वाराणसी	५१४.००
श्री वी० के० जीन्दल, वाराणसी	५०८.००
मेकवेल, बम्बई	५०१.००
वीणा कार्पोरेशन, बम्बई	५०१.००
ज्योति सत्संग मण्डल, बम्बई	५०१.००
श्री मोहनलाल झोलिया मुमुक्षु भवन, वाराणसी	५०१.००
श्री जयकिशन प्रभु	५०५.००
श्री काशीप्रसाद	५०१.००
श्री अन्नपूर्णा सुगर कं०	५०१.००
श्री शंकर सरनलाल कृष्णलाल	५०१.००
शंकर सुगर ट्रेडिंग कं०	५०१.००
श्री रामनारायण काशीनाथ वाराणसी	५०१.००
श्री हीरालाल मनमोहन पाठक वाराणसी	५०१.००
श्री रामचन्द्रजी जायसवाल वाराणसी	५०१.००
दुर्गाबाई गुप्ता, वाराणसी	५०१.००
श्री नागरप्रसाद दधीचि, वाराणसी	५००.००
उमाजी कानोडिया, वाराणसी	५००.००
श्री निरंजनलालजी नरसड़िया वाराणसी	५००.००
श्री जे० के० झाँ, वाराणसी	५००.००
आर० जे० जे० गर्ग नई दिल्ली	५००.००
सुषमाजी, कलकत्ता	५००.००
श्री वंशीलाल, मद्रास	५००.००
कुसुम साड़ी केन्द्र, वाराणसी	४७६.००
श्री विट्ठलदासजी अग्रवाल वाराणसी	४६०.००
श्रीमती विमलावतीदेवी वाराणसी	४५३.००
हरिकीर्तन मण्डली, वाराणसी	४३१.००
श्री नन्दकुमार प्रह्लादका वाराणसी	४३३.५०
श्री एम० पी० अग्रवाल वाराणसी	४३१.००
श्री शैलेश लाडिया, वाराणसी	४१५.००
श्री ओमप्रकाश पोद्दार, वाराणसी	४०६.००
श्री भगवती बाजोरिया, वाराणसी	४१७.००
श्री किशोरजी, वाराणसी	४०३.००
श्री योगेन्द्र कपूर, वाराणसी	४००.००
श्री पवनजी अग्रवाल, वाराणसी	३८५.००
श्री अनिल डिडवानिया, वाराणसी	३७६.००
श्री कंचन बोथरा, वाराणसी	३७५.००
श्री कृष्णकुमार काबरा वाराणसी	३७८.००
श्री अरुण केडिया, वाराणसी	३५८.००
श्री वासुदेव कसेरा, वाराणसी	३५६.००
श्री श्यामसुन्दरजी, वाराणसी	३४१.००
श्री अजीतकुमार जैन, वाराणसी	३३६.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मे० वाराणसी स्पात उद्योग वाराणसी	३०६.००
श्री सूरज यादव, वाराणसी	३०४.००
श्रीमती रामदुलारी सरोजिनी वाराणसी	२५५.००
मामाजी, वाराणसी	२५०.००
श्री आदित्य कावरा, वाराणसी	२५४.००
श्री रामेश्वरदास अग्रवाल वाराणसी	२५२.००
श्री वी० एल० राठी, वाराणसी	२६३.००
श्री लालहरीजी, बम्बई	२५१.००
श्री श्यामसुन्दरजी सर्राफ	२५१.००
श्री रामजी अग्रवाल, वाराणसी	२५०.००
श्री कुंजविहारीजी, वाराणसी	२५०.००
श्री पवन टिकमानी, वाराणसी	२६६.००
श्री पवनकुमार जालान वाराणसी	२०६.००
श्री विश्वनाथप्रसाद केडिया वाराणसी	२०५.००
श्री विजयकुमार मोदी, वाराणसी	२६१.००
श्री एस० के० अग्रवाल वाराणसी	२९६.००
श्री सन्तकृपा, वाराणसी	३८१.००
सत्संग भवन, वाराणसी	२१५.००
हर्ष गैसेज, वाराणसी	२३६.००
ओम टावेल स्टोर्स, वाराणसी	२२५.००
श्री बृजमोहनदासजी राठी वाराणसी	२०५.००
श्री एम० एस० जी पारिख वाराणसी	२१५.००
श्री दीपकजी परिहार, वाराणसी	२३८.००
डॉ० के० पी० अग्रवाल वाराणसी	२३०.००
श्री सुरेश जालान, वाराणसी	२१३.००
खनेजा सत्संग मण्डली, वाराणसी	२०३.००
श्री लक्ष्मीनारायण गोपालदास वाराणसी	२२३.००
श्री शंकरलाल नरसड़िया वाराणसी	२३८.००
श्री लक्ष्मीनारायणजी वाराणसी	२११.००
श्री जीतेन्द्र कपूर, वाराणसी	२०१.००
श्री सांवरमलजी, कलकत्ता	२००.००
श्री बालचन्द खनेजा, वाराणसी	२०१.००
श्री सन्तकुमार लोहिया, वाराणसी	२०२.००
श्री पवनकुमार लोलासका वाराणसी	१७५.००
श्री गोविन्द लोलासका, वाराणसी	१७६.००
श्री गौरीशंकर झुनझुनवाला वाराणसी	१६८.००
श्री ऋषिकेश सिंह रामेश्वर वाराणसी	१५१.००
प्रभा अग्रवाल, वाराणसी	१५१.००
एडवेन्टदासजी, बम्बई	१५१.००
श्री सत्यनारायण धूत	१३६.००
श्री प्रदीपजी पारिख	१३२.००
विद्याबाईजी अग्रवाल	१३०.००
श्री बरगर किंग, वाराणसी	१२५.००
श्री राजकुमार केडिया वाराणसी	१२७.००
श्रीमती निर्मला केजरीवाल वाराणसी	१८०.००
श्री गोविन्ददासजी खेमका वाराणसी	१५७.००
श्री महेशचन्द पाण्डेय, वाराणसी	१५६.००
श्री अशरफीलाल, बरेली	१३०.००
श्री सुशीलजी	१३७.००
श्री जयप्रकाश पटोदिया वाराणसी	१२६.००
श्री अनिल खेमका, वाराणसी	१३८.००
मे० सुन्दर साड़ी सेन्टर वाराणसी	१२१.००
कुसुमबेन, वाराणसी	१११.००
आर० एम० पी० गुप्ता	१०६.००
श्री हरवंशलाल बजाज	१०५.००
मेघा शारदा	१०५.००
श्री प्रेमकुमारजी	१०७.५०
श्री सीताराम पंसारी	१०४.५०
काशी मुमुक्षु भवन	१०१.००
चतुर्भुजदास चैरिटेबुल ट्रस्ट	१०१.००
सत गृहस्त, बम्बई	१०१.००
श्री वी० के० वोडा, बम्बई	१०१.००
श्री जे० डी० वोडा, बम्बई	१०१.००
श्री राजारमन झुनझुनवाले	१०१.००
श्री चोपड़ाजी	१०१.००
श्री राममोहर, हरियाणा	१०१.००
संघ परिवार	१०१.००
श्री वी० डी० नागरजी	१०१.००
श्री बनवारीलालजी	१०१.००
श्री विकास शाह	१०१.००
श्री रामधनीजी	१०१.००
महिला समूह	१०१.००
श्री गोपालकृष्ण अग्रवाल	१०१.००
श्री काले	१०१.००
श्री उदयनारायण सिंह	१०१.००
श्रीमती इन्दिराबाई	१०१.००
श्रीमती लक्ष्मीदेवी सिन्थोलिया	१०१.००
श्री सूरजमल भालोटिया	१०१.००
श्री नरसिंहदासजी	१०१.००
डॉ० परमहंसजी मिश्र वाराणसी	१०५.००
श्री घूरहूराम मौर्य, वाराणसी	१०१.००
श्री छगनलालजी, वाराणसी	१०१.००
जौहरी प्रिन्टर्स, वाराणसी	१०१.००
श्री कान्तीलालजी, नई दिल्ली	१००.००
श्री सुरेश तोदी, वाराणसी	१००.००
श्री रामजनम जायसवाल वाराणसी	१००.००
श्री सोहनलाल सेरवी, वाराणसी	१००.००
श्रीमती शीला गोयल, इंग्लैण्ड	१००.००
दास-गुप्ता, अमेरिका	१००.००
अशोक ट्रेडिंग कं०	१०२.००
श्री अश्विनीकुमार डिडवानिया	१००.००
ए० एफ० ए० अर्लगोनो अमेरिका	१००.००
श्री चन्द्रभूषण शाह, वाराणसी	१०२.००
श्री विश्वम्भरदास अग्रवाल वाराणसी	१००.००
श्री लक्ष्मणदासजी, वाराणसी	१००.००
फुटकर दान	४६,५५०.००
योग	७,९२,३०१.४७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

निरंजन जैन

मे० निरंजन टेक्सटाइल्स

कलात्मक बनारसी साड़ियों के थोक विक्रेता

चौखम्भा, वाराणसी

फोन : ३३०६७८, ३२०६४७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूयवसा भगवती भूयादथो वयं भगवन्तः स्याम ।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ।।
क्षीरोदार्णवसम्भूते सुरासुरनमस्कृते ।
सर्वदेवमये मातर्गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ।।

हे गो-माता ! तुम जंगलों में घूमती हुई सदा घास चरती रहो और शुद्ध जल पीती रहो । सुन्दर घास चरने से तुम ऐश्वर्यवती बनो और हम भी तुम्हारी कृपा से ऐश्वर्यवान् हों । हे माता ! तुम क्षीरसमुद्र से प्रकट हुई हो; समस्त देवता और दानव तुम्हारी वन्दना करते हैं । हे सर्वदेवमयी ! मेरे अर्घ्य को ग्रहण करो, तुम्हें नमस्कार है ।

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

रघुनाथप्रसाद अग्रवाल

७८ ए, रवीन्द्रपुरी

वाराणसी-२२१ ००५

फोन : ३११५९६, ३१०२८५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

झाबरमल ओमप्रकाश

चावल, गल्ला, तेलहन आदि
के कमीशन एजेन्ट

विशेश्वरगंज, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३३१२०० (दुकान), ३३१२५६ (निवास)

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

विट्ठलदास अग्रवाल

चम्पा लाल

थोक व फुटकर विक्रेता एवम् आर्डर सप्लायर्स

बिन्नी लि०, ओ० सी० एम०, जियाजी, बाम्बे डाइंग,
बी० एस० एल०, विमल, रेमण्ड, माडर्न सूटिंग एवं विनायका सिन्थेटिक्स

चौक, वाराणसी
फोन : ३२०४०६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

JAIRAM DAS SHAH

MANISH KUMAR MANOJ KUMAR

MONIKA SAREES

K. 38/6, BARE MAHARAJ KA MANDIR
GOLGHAR (Near Maidagin)
VARANASI-221 001

Manufacturers Wholesale Dealers & Commission Agents Of
ALL KINDS OF BANARASI SILK & COTTON SAREES

Phone : 333260 (Shop), 312692 (Resi.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

आनन्द प्रकाश

मूलचंद गनपतलाल

चीनी, आटा, मैदा, सूजी, वनस्पति, तेल
आदि के थोक विक्रेता

विशेश्वरगंज, वाराणसी

फोन : कार्यालय : ३३१९४४
निवास : ३३१८४४, ३३३०२५

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

रामजीलाल शाह

संजीव इण्टरप्राइजर्स

चीनी, खांडसारी, वनस्पति तथा सभी प्रकार के तेल
और तिलहन के विक्रेता

के० ४७/३४४, विशेश्वरगंज, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : कार्यालय : ३३०७१६
निवास : ३११९६४, ३१०५५३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'गोपाष्टमी' पत्रिका के

प्रकाशन पर

हमारी हार्दिक शुभकामना

चन्द्रमोहन सरावगी

के० संजय एण्ड कम्पनी

१५ वी० वी० ऐयंगर रोड

बंगलोर - ५३

गोदान महादान

गो-सेवा महान सेवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

गांडीव

स्थापित : १९५० ई०

उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक बिक्रीवाला सान्ध्य दैनिक

पो० बा० : ११४३
नीचीबाग, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३२२९६९, ३२२९७९

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

श्री नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद

उच्चकोटि के मेवे, मसाले, किराना
तथा स्वादिष्ट एवं पौष्टिक दूध मसाले के विक्रेता

चौक, वाराणसी

फोन : ३२०१६२ (दुकान), ३२२३५६, ३२२७१८ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः । गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके ।।
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः । नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः ।।
कल्पवृक्षस्वरूपायै प्रदाञ्यै सर्वसम्पदाम् । श्रीदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः ।।
शुभदायै प्रसन्नायै गोप्रदायै नमो नमः । यशोदायै सौख्यदायै धर्मज्ञायै नमो नमः ।।

हे देवी, महादेवी, सुरभिदेवी ! आपको बार-बार प्रणाम है । हे सम्पूर्ण गौओं की आदि-बीजस्वरूपा जगज्जननी ! आपको प्रणाम है । हे राधिकाप्रिये, लक्ष्मीस्वरूपिणी ! आपको प्रणाम है । हे कृष्णप्रिये गौओं की जननी ! आपको प्रणाम है । हे कल्पवृक्षस्वरूपा ! समस्त सम्पदाओं को प्रदान करनेवाली, श्री-धन और बुद्धि देनेवाली आपको प्रणाम है । हे परम प्रसन्नरूपा समस्त शुभ और गौ की प्रदाता ! आपको प्रणाम है । हे यश और सौख्य प्रदान करनेवाली धर्मज्ञादेवी आपको बार-बार प्रणाम है ।

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

राधेश्याम पेपर स्टोर्स

प्रमुख विक्रेता

ओरियन्ट पेपर मिल्स

अमलाई

ओरियन्ट पेपर मिल्स

ब्रजराजनगर

दी सीरपुर पेपर मिल्स लि०

कागजनगर

के० ६२/६३, कर्णघंटा, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३५३६५२, ३५३५४६, ३५४८२६ (आ०), ५२२८४, ५३४०७, ५७१७० (नि०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

राजकुमार भालोटिया

SUMEET KALA KENDRA

CK. 13/48, PASHUPATESHWAR, 1st FLOOR (MISRA BHAWAN)
VARANASI-221 001

***Dealers in* : BANARASI & PRINTED SAREES**

Hello : 321909 (Shop, Resi.)

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

Mr. Asif Mahmood
Mr. Sajid Mashood

M/s. AMINIA EXTENSION

Ist Floor, Aminia Market
Jangambari, Madanpura Road, VARANASI

Phone : 323126

For Exclusive Printed Sarees

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

sava enterprises

Govt. Recognised Export House
For Home Furnishing Textiles
Decorative Cushion Covers
Bed Covers, Table Lenen
Kitchen Accessories
Furnishing Fabrics
Durries

C-2/9 COMMUNITY CENTRE
ASHOK VIHAR-II
DELHI-110 052

Tele : 7111974, 7119748, 7229032, 7429942, 7429629, 7429827
Cables : **SILKOTEX**
Telex : 31-79066 **SAVA IN**
Telefax : 011-7229033
Resi. Tel. : 7216651, 7274222

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

श्यामकृष्ण अग्रवाल

सुरेखा आर्ट्स

बनारसी तथा छपी साड़ियों के विक्रेता

के० ६०/३, सिद्धमाता गली (गोलघर के निकट)
वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३३३२०७ (दुकान), ४४२२६ (निवास)

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

वासुदेव सिंघी

सिंघी ब्रदर्स

बनारसी और छपी साड़ियों के विक्रेता

सहयोगी संस्थान

सिंघी टेक्सटाइल्स

के० ३३/१, गुजराती धर्मशाला, गोलघर, वाराणसी-२२१ ००१
फोन : ३३४८६६ (आ०), ३१४२१७ (नि०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

N. D. Agrawal

G. N. BROS.

Specialist in Banarasi Silk Sarees

K. 37/34 G. M. K. Complex
Golghar, Varanasi-221 001

Phone : 333427 (S.), 320245 (R.)

Associate Firms

G. N. ARTS
G. N. EXPORTS

Residence
28/55, Govind Ji Nayak Lane
Varanasi-221 001

Phone : 320245

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

सुशीलकुमार अग्रवाल

बंशीधर अग्रवाल चैरिटेबुल ट्रस्ट

२३८-बी (चौथा तल्ला), आचार्य जगदीशचन्द्र बोस रोड
कलकत्ता-७०० ०२०

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

काशीप्रसाद मेहरोत्रा

भगवतीप्रसाद एण्ड कम्पनी

सहयोगी प्रतिष्ठान
ए० के० ट्रेडर्स
अधिकृत विक्रेता
ओसवाल प्रीमियम
सूटिंग्स, शर्टिंग्स एण्ड ड्रेस मैटेरियल

सी-के० १३/४०, फाटक सुखलाल साव, वाराणसी
फोन : ३२१४२८ (दुकान), ३३०३६६ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं

पशुशाला, वाराणसी के

गोपाष्टमी के शुभ पर्व पर

हार्दिक शुभकामना

राजमणी सेवाश्रम

मैगनेट थिरेपी चिकित्सा केन्द्र

४३, जवाहरनगर एक्सटेंशन

वाराणसी

निःशुल्क होमियोपैथी चिकित्सालय

साह गोपालदास लेन

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

EXOTICA **ARCHIES Gallery**
OH, BEAUTIFUL WORLD !

FOR GREETING CARDS, POSTERS, STATIONERY, STUFF TOYS, GIFT ITEMS & MANY MORE FUN THINGS

DHARAM SANGH COMPLEX
(Opp. DURGAKUND PETROL PUMP)
VARANASI-221 010

Phone : 310245

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

INDO GULF FERTILIZERS & CHEMICALS CORPORATION LTD.

Regd. Office
P. O. Jagdishpur Industrial Area
Distt. SULTANPUR-227 817 (U.P.)

Marketing Head Office
14-A/5, Park Road, LUCKNOW-226 001 (U.P.)

Buffer Stockist
M/s. THAKURDAS LADHA & Co.
K. 61/19, Bulanala, VARANASI-221 001

Phone : 332970, 332971 Fax : 0542-333283 Gram : LADHAGENT

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

PRADEEP TULSYAN

MAIHAR CEMENT

Office
JAI DAYAL & Co.
K. 53/46-C, Visheshwarganj
VARANASI-221 001

Residence
TULSYAN NIKETAN
76, Jawahar Nagar, Bhelupur, VARANASI

Phone : 331369, 331898, 331316 (Off.)
310056, 312554 (Resi.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संचय नहीं, सेवा

गंगा मैया का नित्य प्रति अवगाहन, गीता आदि सद्ग्रन्थों का पारायण ।
गो-दुग्ध-दही-घृत तक्र का सेवन, गोपालन, गो संवर्धन के लिए समर्पण ।।
सज्जनों का संगठन एवं सज्जनता का संवर्धन ही मेरा दिनचर्या है ।

—*रामकुमार रूँगटा*

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

रूँगटाजी के प्रतिष्ठान

रूँगटा प्रोजेक्ट्स लि०

कलकत्ता, राँची, वाराणसी

रूँगटा इरीगेशन लि०

दिल्ली, हैदराबाद

आलोक कोल एजेंसी

बीना (म० प्र०)

रूँगटा लीजिंग लि०

कलकत्ता, राँची, वाराणसी

सेवासंस्थान

मोहिनी देवी रूँगटा शिशु शिक्षा सदन, तुलसीपुर, वाराणसी
मोहिनी देवी रूँगटा सेवासदन, अररिया (आर० एस०), जिला-पूर्णिया (बिहार)
जानकी देवी रूँगटा अतिथि भवन, पोस्ट-मण्डेला (झूंझुनूँ), राजस्थान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From :

R. R. Filaments (P.) Ltd.

Dealing in Nylon Yarn, Polyster Yarn, Viscose Rayon Yarn, Texturised Yarn etc.

CK. 5/1, Thatheri Bazar, Varanasi - 221 001

Phone : 320266, 320478

Regd. Office :

BINNANY BUILDING, 43, STRAND ROAD, CALCUTTA - 700 007

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर शुभकामना

राजकुमार बजाज

दुर्गा साल्ट ट्रेडर्स

आयोडाइज नमक के विक्रेता एवं कमीशन एजेन्ट

के. ४७/३३८ ए. विशेश्वरगंज,
वाराणसी - २२१ ००१

फोन : दूकान : ३३०६४७
निवास : ३३१५४०, ३३२५१६

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर शुभकामना

प्रकाशचन्द्र झुनझुनवाला

अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स

नमक विक्रेता एवम् आर्डर सप्लायर्स

मछोदरी, विशेश्वरगंज, वाराणसी

☎ दूकान : ३३००४२
निवास : ३३१३४२

प्रधान कार्यालय
ए ६/६६ प्रह्लादघाट, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर शुभकामना

शान्तीलाल जैन

JAIN TRADING COMPANY

सूरजमल जैन

JAIN ENTERPRISES

सुरेन्द्रकुमार जैन

JAIN & COMPANY

सुनीलकुमार जैन

JAIN SONS

Convassing Agents

VANASPATI & EDIBLE OILS

K 37/16 SORA KUWAN
VARANASI - 221 001

☎ : 3334-29, 3334-36, 3334-67, 3334-79, 3347-79

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From :

Over 39 years of
Customer Satisfaction
Through Safe & Scheduled Deliveries

EAST INDIA TRANSPORT AGENCY

Head Office :
20 B, Abdul Hamid Street,
Calcutta-700 069

Varanasi Booking Delivery Office :
G. T. Road, Chandpur,
Varanasi-6
Phone : 730479

City Booking Office :
C 21/4/A, Maldahiya, **Varanasi**
Phone : 54878

Branches all over India & Nepal

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From :

CHOUBEY OVERSEAS CORPORATION

MANUFACTURERS & EXPORTERS

Specialist in :

KATAN, SPUN SILK, MATKA, TASSAR & ALL TYPE OF SILK FABRICS

K. 60/4-5, Sidhmata Lane, Golghar
Varanasi-221 001 (India)

☎ Offi : 333225
Resi : 43072

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From :

RAJESH ENTERPRISES

Stockist

HINDUSTAN LEVER LTD.

LIPTON INDIA LTD.

PARLE PRODUCTS LTD.

PHILIPS INDIA

(PEICO ELECTRONICS & ELECTRICALS LTD.)

Rathyatra Crossing, Varanasi

Office Tel. No. : 361980

RAMCO CONFECTIONERY PVT. LTD.

Rathyatra Crossing, Varanasi

Manufacturer of Quality Sweets and Toffees

Phone : 361980

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी शुभकामना

श्री विश्वनाथ मिष्ठान भंडार

शुद्ध घी से निर्मित
आधुनिकतम मिठाईयाँ एवं नमकीन
तथा
सर्वश्रेष्ठ रसगुल्लों के निर्माता

विशेश्वरगंज, वाराणसी

शादी विवाह के अवसर पर
आदेशानुसार मिठाई की
आपूर्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From :

Hast Kala

Exclusive Sarees

3, Tirupati Apartment, Bhulabhai Desai Road,
Mahalaxmi Temple, **Bombay-400 026**

Phone : 4925431
4932853

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

केडिया कला केन्द्र

(वातानुकूलित)

बनारसी साड़ियों एवं प्लेन पोत के
निर्माता एवं विक्रेता

चित्रा सिनेमा भवन
चौक, वाराणसी

सहयोगी प्रतिष्ठान
सुमित उद्योग

फोन : ३५२०४०, ३५२६७५ (दुकान)
३६०३८७, ३६०३८६ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

विजयकुमार पंसारी

Vishal Sarees

Manufacturers & Suppliers

ORGANJA, TISSU, EMBROIDERY PRINTED

DRESS MATERIALS ETC.

CK. 13/78-79, 1st Floor, CHANDRA MARKET

PASHUPATESHWER, CHOWK, VARANASI-221 001

Phone : 310389, 311291 (Resi.), 326137 (Shop)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम् ।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु ।।

गौओं ! तुम कृश शरीरवाले व्यक्ति को हृष्ट-पुष्ट कर देती हो, एवं तेजोहीन को देखने में सुन्दर बना देती हो । इतना ही नहीं, तुम अपने मङ्गलमय शब्द से हमारे घरों को मङ्गलमय बना देती हो । इसी से सभाओं में तुम्हारे ही महान् यश का गान होता है ।

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

मोहनलाल शाह
मनोजकुमार शाह

आशीर्वाद साड़ी एम्पोरियम

फैंसी छपी तथा बनारसी साड़ियों के
थोक व फुटकर विक्रेता

के० ३६/१, दुलहिनजी रोड
वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३३२४७४ (आ०), ५३८५० (नि०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर शुभकामना :-

हिमालय की वन औषधियों से निर्मित

जी० के० बर्मन का

गौतम

हिमगंगे

सिरदर्द नाशक, शीतल आयुर्वेदिक केश तैल

जी० के० बर्मन हर्बल ग्रामोद्योग संस्थान

बुलानाला, वाराणसी

वितरक

गौतम बर्मन (प्रा०) लि०

बुलानाला, वाराणसी

फोन : ३३३३३९, ३१०१६२, ३१४२१४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः ।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् ।।
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम् ।
पावनं सर्वभूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च ।।
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि ।
ऋषीणामग्निहोतृणां गावो होमप्रतिष्ठिकाः ।।

गौओंके अङ्गोंसे सदा सुगन्ध आती है, उनके शरीरसे गूगुलकी-सी गन्ध निकलती है । गौएँ समस्त प्राणियोंका आधार हैं । गौएँ मङ्गलकी बहुत बड़ी खान हैं । गौएँ ही हमारे लिये अन्न उत्पन्न करनेके सर्वश्रेष्ठ साधन हैं तथा गौएँ ही देवताओंके लिये घृतरूप उत्तम हवि उत्पन्न करती हैं । वे समस्त प्राणियोंको पवित्र करनेवाली हैं, वे दूध एवं अन्नके द्वारा हमारी रक्षा करती हैं और अपनी सन्तान—बैलोंके रूपमें हमारा बोझ ढोती हैं । ये मन्त्रोंसे पवित्र किये हुए हविसे स्वर्गके देवताओंको तृप्त करती हैं और अग्निहोत्र करनेवाले ऋषियोंका हवन सिद्ध करती हैं ।

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामना :

रामेश्वरदास पन्नालाल

सभी प्रकार के वनस्पति, तेल तथा
चीनी के प्रमुख विक्रेता

विशेश्वरगंज, वाराणसी-२२१ ००१

तार : भरतिया

फोन : कार्यालय : ३३१४३७, ३३०१३२
निवास : ३२३१७८, ३२३१८०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

VISHAL AGRAWAL
(Radhey)

AGRAWAL FERTILIZER AGENCY

C.7/39 C-1, SENPURA, VARANASI

Phone : 55044, 54513

AGRAWAL CEMENT AGENCY

CHOWK, MAUNATH BHANJAN

Phone : 820490, 821694, 821695

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

Binod Kr. Agrawal

Daga AIR AGENTS

CUSTOMS AGENTS

INTERNATIONAL & DOMESTIC AIRFRIEGHT
FORWARDERS R.B.I. AUTHORISED CONSOLIDATORS

Head Office : P-2, New CIT Road, CALCUTTA-700 073
Phone : 26-0336, 27-9029 Gram : AIRGENTS

BRANCHES

BOMBAY
3, Roy Apartments, Block-A
Opp. Cargo Complex
Sahar, Bombay-400 009
Phone : 6325095, 6329561
Gram : AIRLIFTERS
Telex : 001-79122 DAGA IN

JAIPUR
10, Park Street
Jaipur-302 001
Gram : AIRGENTS

NEW DELHI
Bhanot Chambers
IInd Floor, 3 Community Centre
Aram Bagh, New Delhi-110 055
Phone : 7538847, 528398
Fax : 753-8849

VARANASI
Daga Niwas
K.38/12, Gol Ghar
Varanasi-221 001
Phone : 333449, 334541
Gram : AIRGENTS

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

PRAMOD KUMAR RASTOGI

नारायनदास विजयकुमार

सी-के० १३/१ ए, लक्खी चौतरा
वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३२००६५ (दुकान), ३२१८६६ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय धर्म तथा संस्कृति की प्रमुख संस्था

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

के

१०८वें पुनीत गोपाष्टमी पर्व

के

शुभ अवसर पर हमारी शुभकामनाएँ

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः ।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्त्रम् ।।

गौएँ हमारा मुख्य धन हों, इन्द्र हमें गोधन प्रदान करें तथा यज्ञों की प्रधान वस्तु सोमरस के साथ मिलकर गौओं का दूध ही उनका नैवेद्य बने । जिसके पास ये गौएँ हैं, वह तो एक प्रकार से इन्द्र ही है । मैं अपने श्रद्धायुक्त मन से गव्य पदार्थों के द्वारा इन्द्र (भगवान्) का यजन करना चाहता हूँ ।

दी इण्डियन टेक्सटाइल्स कम्पनी लिमिटेड

ज्ञानवापी, वाराणसी

फोन : ३२१७३५

आधुनिक बनारसी साड़ियाँ, रॉ सिल्क के निर्माता तथा निर्यातकर्ता

कलकत्ता, बंगलोर, बम्बई, दिल्ली, भागलपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

शंकरलाल जालान
आशीष जालान

BISHWANATH RAMAUTAR

SHREE NAVNEET TEXTILES

CLOTH MERCHANTS

&

COMMISSION AGENTS

157/5, Cavel X Lane
3rd Floor, Dr. Vigas Street (Gaiwadi)
BOMBAY - 400 002

Phone : Office : 2016273, 2063172 Resi. : 4224150, 4379695

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

SADBHAVNA ENTERPRISES

Dealers In :

BANARASI PLAIN POT, DRESS MATERIALS & SAREES

CK. 57/1-4, Govindpura
CHOWK, VARANASI-221 001

Phone : 353076 (Shop), 310612, 310613 (Resi.)
Gram : **RATERIA**

Associates

SADBHAVNA SAREES

An Exclusive Show Room
for
FANCY SAREES

Rangila Park, Ghur-Dor Road
SURAT-395 007

Phone : 670215 (Resi.), 670568 (Off.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गावो ममुपतिष्ठन्तु हेमशृङ्ग्यः पयोमुचः । सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागरं यथा ।।
गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु माँ सदा । गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ।।

जैसे नदियाँ समुद्र के पास जाती हैं, उसी तरह सोने से मढ़े हुए सींगोंवाली दुग्धवती, सुरभि और सौरभेयी गौएँ मेरे निकट आवें । मैं सदा गौओं का दर्शन करूँ और गौएँ मुझ पर कृपादृष्टि करें । गौएँ मेरी हैं और मैं गौओं का हूँ, जहाँ गौएँ रहें, वहाँ मैं भी रहूँ ।

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

संगम साड़ीज

सी- के. २३/२३, विजयश्री मार्केट
तीसरी मंजिल, रानीकुआँ
चौक, वाराणसी-२२१ ००१

आरगंजा, टिसू एवं अन्य सभी बनारसी कपड़ों के
विक्रेता एवं एक्सपोर्ट्स सप्लायर

फोन : ३२१६१०, ३२२७६२
फैक्स : ३२१६१०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

U. J. Exports (P.) Ltd.

EXPORTER OF ALL KINDS OF FABRICS

LAL BAZAR, JHARIA
(Dhanbad), BIHAR

Branch
D. 36/192, AUGUST KUNDA
VARANASI

Phone : 321698

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः ।
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु ।।

गौओं ! बहुत-से बच्चे जनो, चरने के लिए तुम्हें सुन्दर चारा प्राप्त हो तथा सुन्दर जलाशय में तुम शुद्ध जल पीती रहो । तुम चोरों तथा दुष्ट हिंसक जीवों के चंगुल में न फँसो और रुद्र का शस्त्र तुम्हारी सब ओर से रक्षा करे ।

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

भगवानदास अग्रवाल

मेघराज भगवानदास

एम० बी० सारीज़ प्रा० लि०

बनारसी प्रिण्ट तथा प्लेन मैटेरियल के
प्रमुख विक्रेता

सीके० १३/६६, लखीचौतरा
वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३२०११३ (दुकान), ३११११३ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रमुख फोन नंबर

प्रशासनिक अधिकारियों के फोन

	कार्यालय	निवास
आयुक्त (कमिश्नर, वाराणसी मंडल)	३४८०५२	३८२३३३, ३८२४४४
जिलाधिकारी (कलक्टर)	३४८५८५	३४८१८१, ३४८०८०
मुख्य विकास अधिकारी	३४८४४२	३८२४२६
मुख्य नगर अधिकारी	३६१७०२	३८२४२१, ३८२६०१
अपर जिलाधिकारी (प्रोटोकल एवं आपूर्ति)	४६५६८	४६३३०
अपर जिलाधिकारी (नगर)	३४८२६६	३४८२११
अपर जिलाधिकारी (प्रशासन)	३४८०६५	३४८०५६
अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व)	३४८०१८	३४८४४०
मुख्य राजस्व अधिकारी	४३०१६	४६१११
अपर आयुक्त (प्रशासन)	४२७१२	३८२४४५
सिटी मजिस्ट्रेट	४६३३६	४५१६६
डिप्टी कमिश्नर सेल्सटैक्स	५३६४७	५५४४३
तहसीलदार (सदर)	३८२३८७	
जिला सूचना अधिकारी	५४८५६	४३६१२
आकाशवाणी महमूरगंज	३६१०५३, ३६०४६७	३६१३००
सचिव विकास प्राधिकरण	३८२४५०	३४८१८६
सरकिट हाउस	३४८०५५	
जिला पूर्ति अधिकारी		३४८१६६
कन्जरवेटर आफ फारेस्ट	३८५४४४	३८५३३३

पुलिस अधिकारी

डी० आई० जी०	३४८६२१	३४८१७१
डी० आई० जी० (पी० ए० सी०)	३४८२८५	३४८३१६
एस० एस० पी०	३४८०४०	३४८०६०
एस० पी० सिटी	३५४१४१	३८२४१५
एस० पी० (आर० ए०)	३४८०४०	३४८०७१
सी० ओ० सिटी फर्स्ट कोतवाली	३३०५२८	४६०४२
सी० ओ० सिटी सेकेण्ड दशाश्वमेध	३५२६६६	४६५२०
सी० ओ० सिटी थर्ड चेतगंज	३५४२२८	४६२०४
सी० ओ० सिटी फोर्थ, कैंट	३४८०४०	४६२६१
सी० ओ० भेलूपुर	४६२०४	३६०३७७

पुलिस स्टेशन

सारनाथ	३८५४०६
शिवपुर	३८२०३०
आदमपुरा	३३०६४५
भेलूपुर	३२३१७६
कैण्ट	४३४४२
चेतगंज	३५४६५२
चौक	३५३७७७
दशाश्वमेध	३५२६५०
जैतपुरा	३३०६४३
कोतवाली	३३०६५३
लंका	३१०६५६
मंडुवाडीह	३७००१८
सिगरा	५४६३५
लक्सा	३२०७७५
पुलिस	१००
इमरजेन्सी एण्ड कन्ट्रोल रूम	५६०५०, ५४०२०, ५४२२८
फायर स्टेशन, भेलूपुर	३२२८८८
फायर स्टेशन, चेतगंज	३५४३६३
जिला नियन्त्रण कक्ष	४६२०१
जी० आर० पी० कैण्ट	४६३१४

अस्पताल

रेलवे कैंसर हास्पिटल	४२५३८
बिरला हास्पिटल, मच्छोदरी	३३०३५७
हिन्दू सेवा सदन, बाँसफाटक	३५२१०६, ३५२६११
	३२०६८८ ३५२१४३
ईश्वरी मेमोरियल फॉर वोमैन, कबीरचौरा	३३३७०५, ३३३७११
जामिया हास्पिटल, पीलीकोठी	३३१७२६
लालबहादुर शास्त्री हास्पिटल, रामनगर	३३१७५०
कुष्ट सेवा आश्रम, पड़ाव, राजघाट	३३२२६६
मेन्टल हास्पिटल	४२८७६
माता आनन्दमयी अस्पताल, शिवाला	३१०२३०, ३१०१८६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैटर्निटी एण्ड चाइल्ड वेलफेयर, बेनियाबाग	३५४४८४
पब्लिक वेलफेयर हास्पिटल, कमच्छा	३२१६६०, ३२०७६६
रामकृष्ण मिशन (कौड़िया), लक्सा	३२१७२७
एस० एल० मारवाड़ी हास्पिटल, गोदौलिया	३२२६११, ३२१४५६
सर सुन्दरलाल हास्पिटल, बी० एच० यू०	३११८३३
श्री शिवप्रसाद गुप्त हास्पिटल, कबीरचौरा	३३३७१६, ३३३७२३
मौलाना आजाद बुनकर हास्पिटल, बड़ी बाजार	३३०६१७
बल्लभराम सालिगराम मेहता हास्पिटल, रामघाट	३२१६६०, ३२१८२६
पंजाबी हास्पिटल, सलारपुर	३८५१७७
मेहता पैथोलॉजी क्लीनिक	३२१७४३, ३६०२०१

एम्बुलेंस

इण्डियन मेडिकल एसोसियेशन, लहुराबीर	३५४१२२

एयरलाइन्स

रिजर्वेशन	४५६५६
कम्प्यूटर रूम	४३७४६
एयरपोर्ट	४३७४२
स्टेशन मास्टर	४४५३७

होटल तथा विश्राम भवन

अजय, लहुराबीर	४४७६३, ४३७०३
अशोक, विद्यापीठ रोड	५२०५८, ५४३६१, ५४३६२
क्लार्क्स, कैण्ट	३४८५०१-३४८५१०
डायमण्ड, भेलूपुर	३१०६६६-३१०७०३
डी पेरिस	४६६०१-४६६०५
जय गंगेज, मलदहिया	४५६५१-४५६५४
संजय, बड़ादेव	६२३२५
वाराणसी अशोक, कैण्ट	४२५५०-५५१, ४६०२०-३२
होटल हिन्दुस्तान इण्टरनेशनल	५७०७५-५७०८२
बनारस लॉज, दशाश्वमेध	३२१०५०
होटल गंगेज, दशाश्वमेध	३२१०६७
मारवाड़ी भोजनालय	३३३५५०
होटल फारान, नई सड़क	५३६५३
ताज गंगेज, नदेसर	४६०६२-४६०६४
पल्लवी, चेतगंज	५६६३६-५६६४२
गौतम, रामकटोरा रोड	४६२३६, ४६२४१, ४६४५०
जयपुरिया अतिथि भवन गोदौलिया	३५२६७४, ३५२७०६, ३५२७६६
बेरीवाला अतिथि भवन	३२१५५०, ५७११७
होटल बारादरी, मैदागिन	३३०५८१
होटल गौरव	५६२२४
होटल सिद्धार्थ	५४१६१, ५३८५२
जय इण्डिया, कैण्ट	४३६३४, ४५१७४, ४५१६१
नटराज, लहुराबीर	४३६५२
पुष्पाञ्जलि, लहुराबीर	४३७७६
मुमुक्षु भवन, अस्सी	३१००६०, ३१११८७
मारवाड़ी सेवा संघ, अस्सी	३१०४५६, ३१०२२६
मारवाड़ी युवक संघ, लक्सा	५४६१२
कन्हैया मैत्री मन्दिर, मच्छोदरी	३३०३०७
प्रशासक विश्वनाथ मंदिर (नि०)	३२२६२६

विद्युत सप्लाई

जाँच और पूछताछ

बी० एच० यू०	३११३०१
भिखारीपुर	३११४६१
चौकाघाट	४२०२४
सिगरा	५४७५२
भेलूपुर	३२२०११
चेतगंज	३२२०२४
गोदौलिया	३२२०१६
काशी	३३२४२६
पन्नालाल पार्क	३८२४००
रामनगर	६६३१८
साहूपुरी	३३२२०७
शान्कुलधारा	३१११८१
टाउनहाल	३३३३६५

यू० पी० रोडवेज

बस स्टेशन कैन्ट	४३४७६
गोलगड्डा	३३०७४०

अन्य

वाटर सप्लाई	३२३६५६
पर्यटक पूछताछ	४३७४२

टेलीफोन विभाग

टाइम	१७४
स्पेशल इन्फार्मेशन	१७६
डायरेक्टरी इन्क्वायरी	१६७
असिस्टेन्स एण्ड मार्निंग अलार्म	१७३,१६६
कम्प्लेन्ट बेनियाबाग	५२१६८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कम्प्लेन्ट नागरी प्रचारिणी	३३२१९८
कम्प्लेन्ट कैण्ट	४२१९८
फोनोग्राम बुकिंग	१८५, ४२००४
फोनोग्राम इन्क्वायरी	४३१७९
ट्रंक असिस्टेन्ट	१८१
ट्रंक इनलैण्ड बुकिंग	१८०
ट्रंक मानीटर	४३५७१, ४३५९१
ट्रंक ओवरसीज बुकिंग	१८६

गैस सप्लाई

लक्ष्मी गैस सर्विस, हथुआ मार्केट	५४८७४
बनारस गैस सर्विस, मलदहिया	६४४११
मुकुन्द गैस सर्विस, लंका	३११२२८
सहगल गैस सर्विस, कमच्छा	३२२१८०
हर्ष गैस सर्विस, महमूरगंज	३६०४०५, ३६०४१६
काशी गैस एण्ड एलीएन्स, सिगरा	५२४१२, ५६०३५
राजश्री गैस सर्विस, वरुणापुल	४३८१३
वैष्णव गैस सर्विस, अर्दली बाजार	३८२०५९
मिश्रा गैस सर्विस, मच्छोदरी	३३०१५८
भाग्यश्री गैस सर्विस, नीचीबाग	३३३८७७

समाचार पत्र

आज, कबीरचौरा	३२३९८१-३२३९८५
आज, लंका	३१०२६६, ३१०६२३, ३६२५२८
जागरण	४३३००, ४३३०१
गांडीव	३२२९६९, ३२२९७९
जनवार्ता	४३४१४, ४६१४४
राष्ट्रीय सहारा	३१०६२१
नार्दर्न इंडिया पत्रिका	३२१२६३
टाइम्स आफ इंडिया	३३३४३०
सन्मार्ग	३३३२२०
जयदेश	३३३२०६
कौमी मोर्चा	३३०१७७, ३३१४४७
निष्पक्ष भारतदूत	४६६६७, ४६०९६
जनमुख	३२३७६०
पी० टी० आई० (डा० कवीन्द्र नारायण)	३५४८२८, ३३३७२१
यू० एन० आई०	३२१२६४
जिला सूचना कार्यालय	५४८५९
पत्र सूचना कार्यालय	४६२४२

प्रमुख पत्रकार

	निवास
श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा, ८६ ईश्वरगंगी, वाराणसी	३३२२८८
श्री मोहनलाल गुप्त, सी० ९/४, चेतगंज, वाराणसी	५३७७०
श्री लक्ष्मीशंकर व्यास, कालभैरव, वाराणसी	३३३०६९
श्री चन्द्रकुमार बी० ३७/११७, बी-१ निराला निवेश वाराणसी	३६१२७८
डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह 'आज', के० ४/३७ लालघाट, वाराणसी	३३१०३०
श्री गोपेश पाण्डेय 'आज', बी० २६/८९, नवाबगंज वाराणसी	३११९११
श्री दयानन्द 'आज', के० ६७/८१ ए-१, भरत मिलाप कालोनी, ईश्वरगंगी, वाराणसी	३३००९२
श्री सुशील त्रिपाठी 'आज', बी० २/२२५ सी भदैनी, वाराणसी	३१२०२५
श्री रजनीश त्रिपाठी, बी० २/६३ सी-१क, भदैनी वाराणसी	३१२५३३
श्री जगतनारायण शर्मा, कलाभारती ४ नेहरू मार्केट, वाराणसी	३३०२४४
श्री युगलकिशोर जालान 'जागरण' जे० १२/७९ बी-१ नाटी इमली, वाराणसी	४४२८१
श्री आशीष बागची 'जागरण' जे० १२/१५ एच-४ ए-क, रामकटोरा	४६७६७
श्री आर० के० जैन 'सन्मार्ग', सीके० ६५/५१५ बड़ी पियरी, वाराणसी	५६९३०
श्री ईश्वरदेव मिश्र 'जनवार्ता', एफ-३ आई० डी० एच० कालोनी	३८६४६४
श्री शिवदेवनारायण राय, 'सण्डे आब्जर्वर', डी० ४५/११ नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी	३२०९४३, ४४०५५
श्री बंशीधर राजू, 'जनवार्ता', के० ५३/४७ गणेशगंज, वाराणसी	३३२०७६
श्री हिमांशु उपाध्याय, के० ५/६, गायघाट, वाराणसी	३३१८८६
श्री मनोहर खाडिलकर, एल० ६/५९, शास्त्री नगर सिगरा, वाराणसी	५२५९१
श्री नन्दलाल 'टाइम्स आफ इंडिया' सीके० १५/१८ सोराकुआँ, वाराणसी	३३३४३०
श्री गणेश पाण्डेय 'मंजुल', 'जयदेश', ४९ नगर महापालिका कालोनी, शिवपुर, वाराणसी	३८२११४
श्री जियालालजी 'यू० एन० आई०', डी० १७/९० ए, दशाश्वमेध रोड, वाराणसी	३२१२६४
श्री राजीव सिंह 'राष्ट्रीय सहारा', निराला निवेश, रथयात्रा, वाराणसी	३६०६८१, ३६१२६०
श्री भोलानाथ बरनवाल 'जन इच्छा'	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विशेश्वरगंज के प्रमुख व्यवसायियों के फोन नंबर

गल्ला व्यवसायी

	दुकान	घर
आत्माप्रसाद अनन्तराम	३३१८२०	३३०७७२
लक्ष्मणप्रसाद अरुणकुमार	३३११४७	३१११२२
गणेशप्रसाद जित्तूलाल	३३०२२०	३३१४६६
अभयराम चुन्नीलाल	३३०६१०	३३३३२६
विशम्भर ट्रेडर्स	३३०६३५	३३१८७४
दी गुप्ता ट्रेडर्स	३३०५७६	४२२५३
अशोककुमार अनिलकुमार	३३१३८३	
शिवचन्द राजीवकुमार	३३२८०७	
बनारस ट्रेडिंग कम्पनी	३३०७४१	३३१३४५
(चम्पालालजी)	३३१०६६	
रामशरन सिंह उमेशकुमार	३३०१०५	३१२०१८
जयकृष्णदास रंजीतप्रसाद	३३०८८२	३३००१६
रामसुमेर विजयनारायण	३३१७०६	५५२४८
मुकुन्दलाल ओमप्रकाश	३३१०११	३३२०६२
श्री अन्नपूर्णा भण्डार	३३१०१६	३३१०१७
श्री अग्रहरी टे० कं०	३३१६१२	
राजकृष्णदास रामकृष्णदास	३३१०४६	३३२३२५
दिलीपकुमार भैरोप्रसाद	३३०८४८	
मंगलचन्द अरविन्दकुमार	३३०७७०	५२६००
मुरारीलाल गिरधारीलाल	३३०४६१	३३१६२०
श्रीराम रामखेलावन	३३०८६२	
बद्रीनारायण विजयकुमार	३३०८७०	३३१४८५
श्री अशोक ट्रेडर्स	३३१७५८	३३१३८२
विकास ट्रेडर्स	३३१३२६	
मे० कुमार ब्रदर्स	३३०५१७	३३०५१७
राजाराम सत्यनारायणप्रसाद	३३१४८३	३३०४८३
रामलखन सन्तोषकुमार	३३२००५	३३०१४१
नन्दलाल राजनारायण	३३००६६	३३०१२८
जायसवाल एण्ड भण्डार	३३०६०४	३३२७३६
शिवम् ट्रेडर्स	३३१६६७	
संकठाप्रसाद रामजी	३३०४४१	
भग्गूराम महादेवप्रसाद	३३०२०४	३३४५६४
कृष्णकुमार विष्णुकुमार	३३०३०६	३३१८०१
सरजूप्रसाद राजकुमार	३३०३३४	
गंगाप्रसाद गनेशप्रसाद	३३१६८२	३३०७१७
छन्नूलाल शिवनाथप्रसाद	३३१८७६	
शोभनाथ एण्ड कैलाश ब्रदर्स	३३१३८५	

	दुकान	घर
मुन्नूराम गनेशप्रसाद	३३०१३७	
रघुनाथप्रसाद कुमुदकुमार	३३१२५३	
माहेश्वरी एण्ड कं०	३३०३७४	५७२३४
हरीशचन्द नीतेशकुमार	३३२०३२	
शिवप्रकाश शियाराम	३३१७४२	
श्री बालाजी गल्ला भण्डार	३३४६१६	
कुबेरजी गल्ला भण्डार	३३४००६	३३४००६
राजेन्द्रप्रसाद अशोककुमार	३३०००५	
रमेशचन्द्र अग्रवाल	३३१६६१	
जनरल इलेक्ट्रिक कं०	३५२७२३	
बांसफाटक	३५२०५५	३१२००१
राममोहन कृष्णमोहन पाठक	३३१८४६	३३३५६२
राजेश स्टोर राजेश चाय	३३१०८१	
मुरारीराम महंगीराम	३३०८१३	
मैहर सीमेन्ट	३३१८६८	३१००५६
	३३१३१६	३१२५५४
महादेव भोला	३३४८००	
नन्दलालजी यादव		
(श्रमिक संघ मंत्री)	३३१६६७	
शिवनरायन शम्भूनरायन	३३१४२६	३३१३५७
छन्नूलाल बालकृष्णदास	३३१२७६	३३३४२३
गोपीचन्द अग्रवाल खाद्यवाले	३३०२३२	३३३४६६
प्रकाश ट्रेडर्स	३३०४६६	३३१४४०
	३३०८१५	
सीताराम एण्ड सन्स	३८६०३३	
शिवशंकर रमाशंकर	३३१२०३	३३१६१४
पुरुषोत्तमदास श्रीकृष्णदास	३३०१३६	३२०५११
	३३१७४१	
झाबरमल ओमप्रकाश	३३१२५६	३३१२५६
	३३१२००	३३१२००
सीताराम राकेशकुमार	३३२११३	४४११०
	३३०२४८	
संजयकुमार विकासकुमार	३३४१७५	३३२०८३
चाय घर, रामागंज बाड़ा		३३१८१०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	दुकान	घर
मदनलाल जगदीशप्रसाद	३३१३४६	३३१३४६
विश्वनाथप्रसाद अशोककुमार	३३०६४२	३३१५०३
छन्नूलाल लालजी	३३१४२१	६३४६६
विश्वनाथप्रसाद कन्हैयालाल	३३१०५७	३३२०५८
गुप्ता ब्रदर्स (चायवाले)	३३२४४१	३१०७८१
शिवकुमार राजकुमार, हरतीरथ (चुड़ावाले)	३३२४६०	३२२५८६
गौरीशंकर कृष्णकान्त	३३१३२७	३३१६४६
विशेश्वरगंज	३३१४०६	३३१५७७
श्री रामजानकी राइस एण्ड	३३११६१	३३११६१
दाल मिल	३३२१३०	३३२१३०
जायसवाल ट्रेडिंग कम्पनी विशेश्वरगंज (दाऊजी)	३३१३३७	३३१३४५
शिवनाथप्रसाद आलोककुमार	३३०२२०	
रामागंज बाड़ा, विशेश्वरगंज	(P.P.)	
शिवशक्ति उद्योग, रामागंज बाड़ा	३३१५६६	३३०८६३
श्रीराम बृजेशकुमार रामागंज बाड़ा	३३१२७०	४४१२४
शंकर रामराजकुमार	३३०१०२	
प्रेमचन्द अजयकुमार	३३०६५५	
राणीसती इण्टरप्राइज़ेज	३३०६४०	३११६४०
श्री आढ़त रविशंकर रवीन्द्रकुमार	३३१८३४	
श्री ओम दाल भण्डार	३३०७५०	
श्री शारदाप्रसाद बृजेशकुमार (शारदाप्रसाद सिंह)	३३१४५२	
श्री नरसिंहदास अशोककुमार	३३११६४	
	३३२३६४	
श्री चौथीराम चुन्नीलाल	३३१४४८	३३१७६७
श्री मुकुन्दलाल रमाशंकर	३३१७२६	
श्री शम्भूनाथ अभयकुमार	३३१२४२	३३४०५०
श्री कृष्णमुरारी गोपालदास	३३११६६	३३०६४०
श्री छेदीलाल हीरालाल	३३१६४१	४२७१०
		४२२५६
श्री छन्नूलाल लक्ष्मीनरायन	३३००६८	
श्री विमल ब्रदर्स	३३२५८७	
श्री भोलानाथ हृदयनाथ	३३१६६०	
इण्डियन (Indian) ट्रेडर्स	३३१८४७	४६६४७
श्री गोवर्धनदास सुधीरकुमार	३३००५५	३६११५५
	३३१६२०	३५१२३

	दुकान	घर
श्री ओमप्रकाश श्रीप्रकाश	३३१८२७	६२६०२
श्री आशुतोष दाल मिल, पड़ाव	३३२२७१	
श्री धीरज दलाल, चेतगंज	३३२५६४	
श्री विशेश्वरप्रसाद गुलाबदास धोइयावाले, विशेश्वरगंज	३३१८५३	५२६२३
श्री श्रीनिवास सुरेशकुमार	३३११४६	३३११४६
		३३३४७७
श्री अग्रवाल इलेक्ट्रिक कम्पनी	३३१६७०	३१०७३५
	३३१६७१	३१२००१
श्री प्रेमचन्द जायसवाल	३३०८४१	३५४१३३
श्री गोपालदास श्रीकृष्णदास	३३०५४२	३३०४६७
श्री छन्नूलाल दामोदरदास अग्रवाल	३३०५५८	३३०५५३
अग्रवाल ट्रेडर्स	३८२६००	
भग्गूलाल रघुनाथप्रसाद	३३१६०६	३३१७६८
श्यामसुन्दर अग्रवाल, मच्छोदरी	३३३१२३	३३०५०६
बीरमचन्दजी अग्रवाल, मच्छोदरी	३३२६६१	

दाल मिल

गनेश दाल मिल, लहरतारा	३७००१४	
लवकुश उद्योग	४३१८३	४४१२
संगीता दाल मिल		३१२५४७
अजय दाल मिल	३७००१४	
साहू ट्रेडर्स	३११३७६	
लोकमणी ट्रेडर्स	३७०५६२	
अश्वनि भण्डार (लौटूसाव)	३७००१३	
अनन्तराम एण्ड सन्स (अन्तूसाव)	३७०००६	
कन्हैया दाल मिल, खोजवाँ	३१०५८४	
दीनदयाल भण्डार	३७०६१३	
सूरज इन्टरप्राइज़ेज (अंग्रेज)	३७०२३३	
दशमीसाव	३७०३३२	
गुप्ता ब्रदर्स	३७०३३६	
विनोदकुमार एण्ड ब्रदर्स	३७०००७	
जवाहरलाल रमेशचन्द		३७०५६७

केराना व्यवसायी

गोविन्द ट्रेडर्स	३२६६८८	
राधेलाल एण्ड संस	३३०४१८	
मुकुन्दलाल एण्ड कम्पनी	३३०४६८	
श्रीराम ट्रेडिंग कं०	३३३६२३	३३३६५८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	दुकान	घर
भीरूराम मथुराप्रसाद घनश्याम ट्रेडिंग कं०	३३१९०८	३३०८७३
जगरनाथप्रसाद रघुनन्दनप्रसाद	३३०४७३	३५४२१४
रघुनाथप्रसाद लक्ष्मीनरायण	३३०१२०	३३२६११
	३३०९२९	३३१०००
माल पानी ट्रेडर्स	३३०६१६	
अमित ट्रेडर्स	३३१६५७	
जगरनाथप्रसाद प्रेमनरायन	३३१००५	३३१९४३
अमरेन्द्रकुमार मनोजकुमार	३३०१५९	५७२२१
श्री काशी केराना कंपनी	३३१०८८	३०६६०
रतनलालजी अग्रवाल खटाईवाले	३३०९२६	
माताप्रसाद जायसवाल	३३१६४६	

नमक व्यवसायी

जीतमल	३३१६६३	३३२६७६
अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स	३३००४२	३३१३४२
दुर्गा साल्ट ट्रेडर्स	३३०९४७	३३१५४०
महेशप्रसाद केदारनाथ	३३००२४	३३०२७८

चीनी व्यवसायी

गणेश सुगर कं०	३३००९५	
आनन्द ट्रेडिंग कं०	३३०६८७	३३०३१३
यू० एस० चौधरी एण्ड ब्रदर्स	३३०५६९	३३०८८६
	३३०६६९	३३१०७७
दमड़ीशाह राकेशकुमार	३३०९७४	४२५७४
मे० भुरारिया ब्रदर्स	३३०१८५	४५१८५
मे० रामप्रसाद प्रेमचन्द	३३१५९१	३१२१५२
मे० हीरालाल मनमोहन पाठक	३३२९१६	३३१०६०
अन्नपूर्णा सुगर ट्रेडिंग कं०	३३१७३१	
प्रभुराम रामजी	३३१३१९	३३०९१०
छन्नूलाल राजेशकुमार	३३०८७६	३५४१३७
संकठा सुगर ट्रेडिंग कं०	३३०६९६	३३२७२१
शरन शंकरलाल कृष्णकान्त	३३४५११	
शंकर सुगर ट्रेडिंग कं०	३३०८५४	
जायसवाल ट्रेडिंग कं०	३३१४६४	
महाबीरसिंह हरिहरसिंह	३३१७९४	

वनस्पति-तेल एवं आटा, मैदा व्यवसायी

श्री ओम खली स्टोर्स	३३०१३०	३१०४७२
श्री शशि सप्लाई एजेन्सी	३३००३२	३३०१४९

	दुकान	घर
श्री बजरंग आयल मिल	३३१३०५	३१०२८५
श्री मानसिंहका एजेन्सी (गोवर्धनबाबू)	३३३९८०	४३९९७
श्री हनुमान आयल मिल (रामबाबू बाजारिया)	३३०६१२	३३०६७८
	३३०६३०	
श्री शान्तिलाल जैन	३३३४६७	३३३४३६
सोराकुआँ	३३३४६९	३३३४२९
श्री महालक्ष्मी आयल स्टोर	३३४६०	५५३५८
श्री शंकर तेल भण्डार	३३११८३	५२५२१
अमित इण्टरप्राइजेज़ (नरेश)	३३१५५२	३३०८९१
श्री रमेशकुमार वीरेन्द्रकुमार	३३०३९८	३३२९२७
श्री सेठ स्टोर्स, विशेश्वरगंज	३३१९७९	३३१२२४
श्री विजय आयल स्टोर्स	३३१३३४	३११९५९
श्री कामताप्रसाद रामप्रताप	३३००८५	३३०२९४
श्री मूलचन्द गनपत लाल	३३१९४४	३३१८४४
श्री आर० के० ट्रेडिंग कं०	३३०६००	३१२४०१
		३१०४००
श्री कृष्णा एण्ड कं०	३३१५०८	४४००४
(किशन चौधरी)		४४६६१
श्री प्रभात इण्टरप्राइज़ेज	३३१६९७	५२१९७
अग्रवाल आयल ट्रेडर्स (शम्भू)	३३१६६८	३१०९९८
श्री हरी आयल स्टोर, मच्छोदरी	३३२५८२	३६१०४१
संजीव इण्टरप्राइज़ेज	३३२५११	३१०५५३
वाराणसी इस्पात उद्योग	३३०७९५	३१०८६३
अशोकजी झुनझुनवाला	३३११२०	
उमा इण्टरप्राइज़ेज	३३०२३३	
रामेश्वरदास पन्नालाल	३३१४३७	३२३१७८
प्रभात इण्टरप्राइज़ेज	३३१६९७	५२१९७
श्रीमनमोहन कालड़ा	५५५८१,८२,८४	
श्यामसुन्दर कृष्णमुरारी	३३०९४०	३३०८४४
	३३५१७२	३३२९९७
मे० बजरंग ट्रेडर्स (निरमावाले)	३३१२४१	३३१९४१
जवाहिरलाल मोतीलाल	३३१६५३	५२२०७
श्री गणपति ट्रेडर्स	३३४१२९	

विशेश्वरगंज के बैंक

सेन्ट्रल बैंक	३३०५७४
स्टेट बैंक	३३०१५४
पंजाब बैंक	३३०५३९
जयपुर बीकानेर बैंक	३३००५१, ३३०४२८
यूनियन बैंक	३३३२३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-क्रम

१.	शासक-मंडल-सदस्य, प्रबन्धकारिणी समिति-सदस्य		२
२.	कैलेण्डर वर्ष १९९५		३
३.	पर्व-त्यौहार वर्ष १९९५		४
४.	वार्षिक कार्य-विवरण		५
५.	गोग्रास निधि		८
६.	संदेश, उपमुख्यमंत्री, राजस्थान		९
७.	निवेदन, गोग्रास दाताओं से		१०
८.	गोग्रास-दाता		११
९.	फोन विवरण, शासक-मंडल एवं प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों का		१२
१०.	गो वध धार्मिक अधिकार नहीं : सु प्रीम को र्ट		१३
११.	गोवध : इस्लाम और न्यायालय		१४
१२.	गोरक्षा का अर्थ	*महात्मा गांधी*	१५
१३.	गौ रूपी शतधार झरना	*वासुदेवशरण अग्रवाल*	१७
१४.	गो-सेवा में तन-मन-धन से जुटने का आह्वान	*डॉ० प्रेमलता शर्मा*	२७
१५.	गोहत्या और नरहत्या में कोई अन्तर नहीं है	*श्री कैलाश बाजपेयी*	२९
१६.	सहकारी डेयरी आंदोलन	*श्री वी० कुरियन*	३३
१७.	गाय : राष्ट्रीय पशु	*अशोककुमार सराफ*	३७
१८.	गौ का मालिक	*अमृता प्रीतम*	३९
१९.	गोकुल का आशीर्वाद		४३
२०.	दूध को बहने दो	*दीनानाथ मिश्र*	४९
२१.	गर्भवती गाय तथा नवजात बच्चे की देखभाल		५३
२२.	भारतेन्दु कृत—गोमहिमा	*हरिश्चन्द्र*	५८
२३.	गोबर आयात की असलियत	*श्री राय सिंह*	५९
२४.	गौ : भारतीय सं स्कृ ति की पर्या य	*श्री श्यामसु न्दर गिनो ड़ि या*	६३
२५.	गौ-माता की महिमा : एक सत्यकथा	*डॉ० जगदम्बाप्रसाद बरनवाल*	६४
२६.	मुगल शासन में गोवध निषेध	*श्री गोवर्धनलाल पुरोहित*	६७
२७.	गाय मानव जीवन का प्रतीक है	*श्री बी० डी० अग्रवाल*	६९
२८.	संस्कृत वाङ्मय में गो की महिमा	*श्री नयनेशकुमार शाह*	७१
२९.	अमरत्व का रहस्य		७७
३०.	जीवन-रक्षक है दही		७८
३१.	गोरक्षा : अस्तित्व और बोध का प्रश्न	*श्री रामेश्वर मिश्र 'पंकज'*	७९
३२.	पूर्ण गोहत्या बंदी कानून की आवश्यकता	*श्री राधेश्याम खेमका*	८१
३३.	गोवंश की रक्षा से ही समग्र विकास संभव	*श्री सूर्यकान्त जालान*	८३
३४.	ये गाय-भैंस हैं, कोई मशीन नहीं	*श्री राजेन्द्रकुमार*	८५
३५.	श्री काशी जीवदया वि० गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी का आय-व्यय विवरण (१९९३-९४)		८७
३६.	गोपाष्टमी धर्मादा विवरण (१९९३-९४)		१०१
३७.	गोशाला, वाराणसी दानदाताओं की सूची (१९९३-९४)		१०९
३८.	प्रमुख फोन नंबर		१५०
३९.	विशेश्वरगंज के प्रमुख व्यवसायियों के फोन नंबर		१५३
४०.	रेलवे समय-सारिणी (१-७-९४ से लागू)		१५७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेलवे समय-सारिणी (१-७-६४) से लागू

वाराणसी कैण्ट से

आगमन	प्रस्थान	ट्रेन नम्बर अप	ट्रेनों के नाम	ट्रेन नम्बर डाउन	आगमन	प्रस्थान
02.00	02.10	3151	स्यालदह-जम्मूतवी एक्सप्रेस	3152	01.15	01.25
–	3.00	1LV	वाराणसी-लखनऊ पैसेंजर वाया फैजाबाद	2LV	23.25	–
04.00	–	1093	महानगरी (वाराणसी-बम्बई बी० टी०)	1094	–	11.30
–	05.05	1V.P.L.	वाराणसी-प्रतापगढ़-लखनऊ पैसेंजर	2V.P.L.	21.30	–
–	05.15	4227	वाराणसी-लखनऊ (वरुणा एक्सप्रेस)	4228	23.10	–
06.25	06.40	3307	धनबाद-लुधियाना एक्सप्रेस	3308	20.15	20.35
06.53	–	4245	बु०, श० - ताप्ती-गंगा एक्सप्रेस (सूरत-वाराणसी) - बु०, रवि०	4246	–	18.40
07.25	07.35	8475	सो०, बु०, श० - नीलांचल एक्सप्रेस (पुरी-निजामुद्दीन) - रवि०, मं०, शु०	8476	19.50	20.05
08.30	08.45	3049	हावड़ा-अमृतसर एक्सप्रेस	3050	19.05	19.30
–	8.55	4265	जनता एक्सप्रेस (वाराणसी-देहरादून)	4266	18.30	–
10.05	10.50	1026	गोरखपुर-दादर एक्सप्रेस	1027	12.55	13.20
10.20	10.35	3005	हावड़ा-अमृतसर मेल (पंजाब मेल)	3006	16.50	17.05
–	10.30	9166	शु०, रवि० - साबरमती एक्सप्रेस (वाराणसी-अहमदाबाद) - बु०, श०	9165	12.25	–
10.45	–	1D.M.U.	पटना-वाराणसी पैसेंजर	2D.M.U.	–	11.00
04.15	11.30	3009	हावड़ा-देहरादून एक्सप्रेस	3010	16.00	16.15
–	11.50	4260	सारनाथ एक्सप्रेस (वाराणसी-दुर्ग)	4259	16.10	–
11.50	12.10	4007	वृ०, श० - सद्भावना एक्सप्रेस (समस्तीपुर-दिल्ली) - बु०, शु०	4008	09.00	09.15
11.50	12.10	4007/A	सो०, बु० - सद्भावना एक्सप्रेस (मुजफ्फरपुर-दिल्ली) - श०, सो०	4008/B	09.00	09.15
12.00	12.35	3413	रवि०, मं०, शु० - फरक्का एक्सप्रेस (वाया सुल्तानपुर) - मं०, वृ०, रवि०	3414	14.15	15.20
12.00	12.35	3483	सो०, बु०, शु०, श० - फरक्का एक्सप्रेस (वाया फैजाबाद) - सो०, बु०, शु०, श०	3484	14.55	15.20
–	13.10	1108	बुन्देलखण्ड (वाराणसी-ग्वालियर)	1107	10.10	–
–	14.00	4057	काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस	4058	6.00	–
14.25	–	4247	पवन एक्सप्रेस (वाराणसी-कुर्ला)	4228	–	23.30
14.40	14.50	3073	रवि०, बु०, शु० - हिमगिरि एक्सप्रेस (हावड़ा-जम्मूतवी) - सो०, मं०, शु०	3074	20.50	21.05
15.05	15.20	2401	श्रमजीवी एक्सप्रेस (पटना-नई दिल्ली)	2402	02.35	02.45
–	15.45	1S.J.V.	वाराणसी-सुल्तानपुर पैसेंजर	2S.J.V.	12.10	–
–	16.40	1V.P.	वाराणसी-प्रतापगढ़ पैसेंजर	2V.P.	09.25	–
17.20	17.35	1M.F.	मुगलसराय, फैजाबाद पैसेंजर	2M.F.	08.15	08.35
–	17.45	1066	मं०, गु०, शु० - रत्नागिरि (वाराणसी-बम्बई बी० टी०) - मं०, गु०, शुक्र०	1065	08.00	–
–	17.45	6040	सो०, बु० - गंगा-कावेरी (वाराणसी-मद्रास) - सोम०, बुध०	1065	08.00	–
17.50	–	3D.M.U.	बक्सर-वाराणसी पैसेंजर	4D.M.U.	–	18.10
18.15	18.45	4649	मं०, शु०, रवि० - सरयू-यमुना (मुजफ्फरपुर-दिल्ली) - मं०, वृ०, रवि०	4650	12.30	12.45

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आगमन	प्रस्थान	ट्रेन नम्बर अप	ट्रेनों के नाम	ट्रेन नम्बर डाउन	आगमन	प्रस्थान
19.45	20.00	2381	बुध, वृ०, रवि० - पूर्वा० एक्सप्रेस - मं०, बु०, शनि	2382	04.50	05.10
–	21.00	135	वाराणसी-बरेली पैसेंजर	136	06.10	–
22.00	–	129	आसनसोल-वाराणसी पैसेंजर	130	–	04.35
–	22.10	7490	शुक्रवार - कोचीन एक्सप्रेस (वाराणसी-कोचीन) - वृहस्पतिवार	7489	05.00	–
–	22.10	7492	वृ०, रवि० - तिरुपति एक्सप्रेस - शुक्र, रवि०	7491	05.00	–
04.30	04.45	5004	गोरखपुर-कानपुर (चौरी-चौरा) एक्सप्रेस	5003	23.40	23.55
11.30	–	5101	गोरखपुर-वाराणसी प्रतिदिन (केवल रविवार छोड़कर)	5102	–	17.15
–	06.00	507	वाराणसी-इलाहाबाद सिटी	508	09.20	–
–	18.00	509	वाराणसी-इलाहाबाद सिटी	510	20.28	–
–	05.30	5104	वाराणसी-गोरखपुर एक्सप्रेस	5103	09-30	–
10.45	–	511	भटनी-वाराणसी पैसेंजर	512	–	07.00
07.00	–	513	भटनी-वाराणसी पैसेंजर	514	–	10.15
22.15	–	575	भटनी-वाराणसी पैसेंजर	516	–	14.15
08.00	–	519	गोरखपुर-वाराणसी (भटनी-मऊ होकर) पैरोंजर	520	–	22.30
			वाराणसी सिटी (छोटी लाइन) की ट्रेनें			
22.20	–	279	वाराणसी सिटी/छपरा जं०	280	–	04.00
16.20	–	69	वाराणसी सिटी-बलिया	70	–	07.30
12.30	–	77	वाराणसी सिटी-बलिया	78	–	11.50
09.40	–	5329	भागीरथी एक्सप्रेस, वाराणसी सिटी-छपरा जं०	5330	–	17.45
03.45	–	71	वाराणसी सिटी-सोनपुर	72	–	23.15
			मुगलसराय जं० से			
00.40	01.00	2423	वृहस्पतिवार - राजधानी एक्सप्रेस (पटना होकर गुवाहाटी) - मंगलवार	2424	02.07	02.27
00.45	01.00	2421	सोमवार - राजधानी एक्सप्रेस (गया होकर भुवनेश्वर) - शनिवार	2422	02.07	02.19
00.18	00.38	2305	सो०, शुक्र० - राजधानी एक्सप्रेस (पटना होकर) - बुध०, शनि०	2306	02.22	02.42
00.26	00.38	2301	मं०, बु०, वृ०, श०, रवि० राजधानी एक्स० (गया) रवि०, सो०, मं०, वृ०, शु०	2302	02.22	02.34
01.04	01.24	3151	स्यालदह-जम्मूतवी एक्सप्रेस	3152	02.10	02.45
01.25	01.45	3007	तूफान एक्सप्रेस	3008	01.05	01.25
03.17	03.37	1159	सो०, श०, रवि - हावड़ा-ग्वालियर एक्सप्रेस - रवि, सोम, मंगल	1160	19.20	19.35
03.17	03.37	1171	मं०, बु०, वृ० - क्षिप्रा एक्सप्रेस - वृ०, शु०, शनि०	1172	19.20	19.35
03.17	03.37	1181	शुक्रवार - हावड़ा-आगरा-ग्वालियर एक्सप्रेस - बुधवार	1182	19..20	19.35
03.30	04.00	4083	महानन्दा एक्सप्रेस	4084	21.00	21.20
04.07	04.30	3417	रवि, मं०, बु०, शु० - कुर्ला-भागलपुर एक्सप्रेस - सो०, बु०, शुक्र, शनि०	3418	03.05	03.25
04.07	04.30	5114	सोम, वृ०, शनि - छपरा-कुर्ला एक्सप्रेस - मं०, वृ०, रवि०	5113	03.05	03.25
04.07	04.30	2815	रवि, मं०, वृ०, शु० - पुरी-नयी दिल्ली एक्सप्रेस - सो०, बु०, वृ०, शनि०	2816	18.00	18.20
05.25	05.45	3307	गंगा-सतलज एक्सप्रेस	3308	21.20	21.40
06.15	06.45	2311	कालका एक्सप्रेस	2312	20.00	20.28

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आगमन	प्रस्थान	ट्रेन नम्बर अप	ट्रेनों के नाम	ट्रेन नम्बर डाउन	आगमन	प्रस्थान
6.35	06.55	8475	सोम, बुध, शनि - नीलांचल एक्सप्रेस - रवि, मंगल, शुक्र	8476	20.50	21.10
7.25	7.45	3049	हावड़ा-अमृतसर एक्सप्रेस	3050	20.30	20.55
07.38	07.58	3003	हावड़ा-बम्बई मेल	3004	23.55	00.10
08.15	08.35	5621	नार्थईस्ट एक्सप्रेस	5622	17.40	18.00
09.28	09.48	3005	हावड़ा-अमृतसर मेल (पंजाब मेल)	3006	17.55	18.15
10.00	10.40	1B.M.B.	बक्सर-मुगलसराय-वाराणसी पैसेंजर	2B.M.B.	11.45	12.15
10.15	10.40	3009	हावड़ा-देहरादून एक्सप्रेस	3010	17.00	17.25
11.00	11.20	3483	सो०, बु०, वृ०, श० - फरक्का एक्सप्रेस (वाया फैजाबाद) - सो०, बु०, शु०, श०	3484	16.05	16.35
11.00	11.20	3413	रवि, मं०, शु० - फरक्का एक्सप्रेस (वाया सुल्तानपुर) - मं०, वृ०, रवि०	3414	16.05	16.35
11.50	12.10	3111	स्यालदह-जयपुर एक्सप्रेस	3112	14.00	14.20
12.35	–	349	गया-मुगलसराय पैसेंजर (जुलाई से मार्च तक)	350	–	15.35
10.45	–	349	गया-मुगलसराय पैसेंजर (अप्रैल से जून तक)	350	–	15.35
13.47	14.07	3039	हावड़ा-दिल्ली जनता एक्सप्रेस	3040	11.33	11.53
110.5	11.15	3073	रवि०, बुध०, शनि० - हिमगिरि - सोम, मंगल, शुक्र	3074	22.00	22.10
14.25	14.35	2401	श्रमजीवी एक्सप्रेस (पटना-नई दिल्ली)	2402	03.25	03.35
15.50	–	127	बरवाडीह-मुगलसराय पैसेंजर	128	–	09.15
16.25	16.45	2801	रवि०, सो०, बु०, वृ०, श० - पुरुषोत्तम एक्सप्रेस - सो०, मं०, बु०, शु०, श०	2802	10.10	10.30
–	16.35	1M.F.	मुगलसराय-फैजाबाद पैसेंजर	2M.F.	09.50	–
–	16.45	4307	मुगलसराय-लखनऊ पैसेंजर	4308	13.00	–
16.45	17.00	3B.M.B.	बक्सर-मुगलसराय-वाराणसी-पटना पैसेंजर	4B.M.B.	18.55	19.10
17.26	17.46	4055	ब्रह्मपुत्र मेल (तिनसुकिया)	4056	06.20	06.40
18.15	–	3133	स्यालदह-मुगलसराय मेल	3134	–	15.05
18.50	19.10	1118	मंगलवार - श्रमशक्ति एक्सप्रेस - सोमवार	1117	09.55	10.15
18.50	19.00	6044	शनिवार - पटना-मद्रास एक्सप्रेस - शनिवार	6043	07.35	07.50
18.50	19.10	5646	सोम, वृहस्पतिवार - गुवाहाटी-दादर एक्सप्रेस - रवि, वृहस्पतिवार	5643	09.55	10.15
18.50	19.10	2381	रवि, बु०, वृ० - पूर्वा० एक्सप्रेस (गया होकर) - मं०, बु०, शनि०	2382	05.55	06.15
20.25	20.45	2303	सो०, मं०, शु० - पूर्वा० एक्सप्रेस (पटना होकर) - रवि, सो०, बु०, शु०	2304	04.05	04.25
20.50	21.10	129	बनारस-आसनसोल पैसेंजर	130	05.30	05.50
20.50	–	3B.M.	बक्सर-मुगलसराय पैसेंजर	2B.M.	–	02.56
21.55	–	407	मुगलसराय-दिलदारनगर पैसेंजर	408	–	05.30
22.20	22.40	2391	मगध एक्सप्रेस	2392	07.10	07.30
08.40	–	1B.M.	मुगलसराय-पटना पैसेंजर	4B.M.	–	08.55

सही समय सारिणी तैयार करने में हर संभव सावधानी बरती गयी है, त्रुटि या अचानक परिवर्तन से बचने के लिए यात्रा से पूर्व पूछताछ कार्यालय से सम्पर्क कर लें ।

पूछताछ कार्यालय

वाराणसी कैण्ट : ३४८०३१, ३४८१३१, ३४८२३१ मुगलसराय : ६२-५७०३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

किंग आफ बनारसी साड़ी

चौधरी ब्रदर्स

वातानुकूलित शोरूम

ठठेरी बाजार

वाराणसी - २२१ ००१

फोन : ३२०४६९, ३२०५६७ (शोरूम), ३२१८७६ (निवास)

उत्कृष्ट बनारसी, सिल्क प्रिण्ट
अरगंजा प्रिण्ट, क्रेप डी सीन
एवं साउथ सिल्क व काटन
साड़ियों का अपूर्व भण्डार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर

हमारी विनम्र

शुभकामना

गोरधनदास
लक्ष्मीदास

लखी चौतरा, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : ३२०१०८, (प्रतिष्ठान), ३३३२१२, 3३३४८७ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना :

My Fair Lady

Retail Division of

VIJAY SILK HOUSE LTD.

92, WALKESHWAR ROAD
OPPOSITE WHITE HOUSE
BOMBAY-400 006

PHONE : 363 3843-3641474

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi